Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

NR2mN
15260.4

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

NR2mN 8379
152G0.4
Bhargava, Dukkala, ea
Sudha.

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

NR2mN
152G0.4
8379

नवकर्णाक

वर्ष ४ ; खंड १ | श्रावण, ३०८ तु० सं० (AUGUST, 1930) | संख्या १ ; पूर्ण संख्या ३७

SHRI JAGADGURU VISHWARADHYA JNANAMANDIR
(LIBRARY)
JANGAMAWADIMATH, VARANASI

Please return this volume on or before the date last stamped
Overdue volume will be charged 1/- per day.

साधारण
वार्षिक मूल
छमाही मूल
एक प्रति क
विदेश में

अ

१) मूल्य का "के
मूल्य निकालदी
पत्रिका हिं

मनजर सुधा, लखनऊ

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

NR2m.N 8379
15240.4
Bhargava, Dulakela, ea
Sudha.

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वर्ष

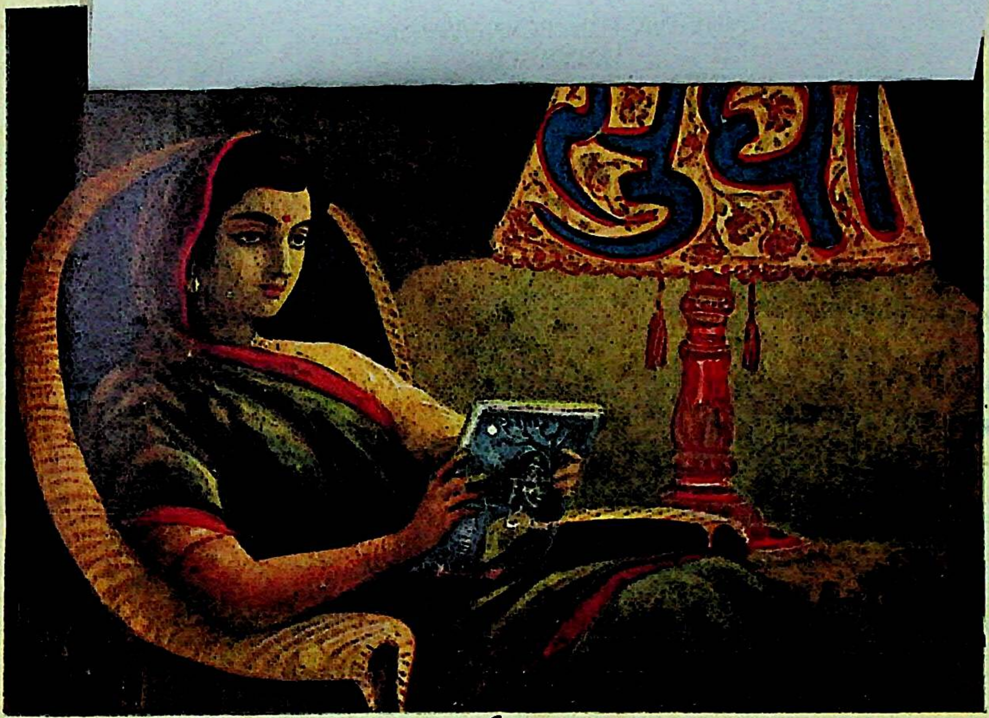

साधारण संस्करण		प्रधान संपादक	राजसंस्करण	
वार्षिक मूल्य	६॥)	श्रीदुलारेलाल भार्गव	वार्षिक मूल्य	१०)
छमाही मूल्य	३॥)		छमाही मूल्य	५)
एक प्रति का	॥-)		एक प्रति का	१)
विदेश में	७॥)		विदेश में	१२)

सुधा की आकार-वृद्धि

अब सुधा में प्रति मास १४४ पृष्ठ, ४-५ दुरंगे और तिरंगे चित्र, २-३ कार्टून और अनेक सादे चित्र रहेंगे।

इसके अतिरिक्त

१) मूल्य का "केन"-नामक उपन्यास सब नए और पुराने ग्राहकों को मुफ़्त दिया जायगा। इसका मूल्य निकालदीजिए, तो मानो सुधा ५॥) में ही ग्राहकों को मिल रही है। क्या इतनी सस्ती कोई पत्रिका हिंदी में है? फ़रवरी में फिर एक विशेषांक निकालने का प्रबंध हो रहा है।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

NR2mN
1520,4

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDAL
LIBRARY
Jangamwadi Math, Varanasi
ACC No. 8379

बेकारों के लिये स्वर्ण-संयोग !

धनियों के लिये अपूर्व अवसर !!

शाखाओं और एजेंसियों का आयोजन !!!

गंगा-पुस्तकमाला की पुस्तकें भारत के कोने-कोने में प्रसिद्ध हैं। सुदूरवर्ती मद्रास, बलोचिस्तान, नैपाल, आसाम, ब्रह्मा, फ़िजी तथा जर्मनी तक से हमारी पुस्तकों की धड़ाधड़ माँगें आ रही हैं। इसीलिये

ग्राहकों की सुविधा के विचार से

भारतवर्ष के प्रत्येक प्रांत के प्रसिद्ध नगरों में हम अपनी एजेंसियाँ, सोल एजेंसियाँ और शाखाएँ खोलना चाहते हैं। अतएव इस पृष्ठ पर इधर-उधर, दोनो ओर, लिखे हुए या अन्य नगरों में जो सज्जन आधा रुपया लगाकर हमारे साझे में या (ज़मानत देकर) मासिक वृत्ति पर हमारी शाखा अथवा एजेंसी का भार लेना चाहें, वे शीघ्र ही हमें पत्र लिखें। अधिक-से-अधिक रुपया कमाने के इस अवसर को न चूकें !

नगरों के नाम

कलकत्ता -
पटना - - -
मुज़फ़्फ़रपुर-
बनारस - -
कानपुर -
दिल्ली *
लाहौर -

नगरों के नाम

प्रयाग - - -
आगरा- - -
शिमला -
मंसूरी †
नैनीताल
जबलपुर - -
बंबई - - -

* एजेंसियाँ खुल गईं।

† केवल गर्मियों के लिये।

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लेख-सूची

पृष्ठ

१. सिद्धराज (खंड काव्य)—[लेखक, श्रीमैथिलीशरण गुप्त १

२. अप्सरा (सामाजिक उपन्यास)—[लेखक, श्रीयुत पं० सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला" ६

३. लखनऊ-विश्वविद्यालय (सचित्र)—[लेखक, श्रीपृथ्वीपालसिंह बी० ए० ... २६

४. वर्ण-व्यवस्था (१)—[लेखक, प्रोफ़ेसर जीवनशंकर याज्ञिक एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, इँगलिश-अध्यापक काशी-विश्व-विद्यालय ४७

५. प्रसादजी का एक नाटक—[लेखक, श्रीयुत कृष्णानंद गुप्त ५२

६. पावस-प्रमोद (कविता)—[लेखक, साहित्य-रत्न ठाकुर गुरुभक्तसिंह 'भक्त' बी० ए०, एल्-एल्० बी० ... ६५

३) में ३ घड़ियाँ और २६ चीज़ें मुफ़्त इनाम

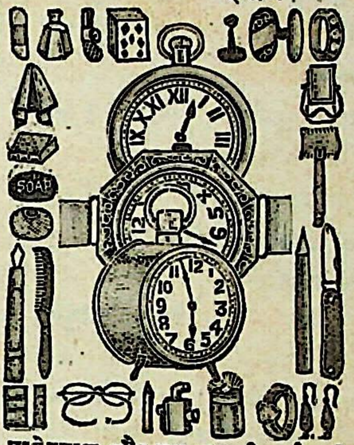

हमारी मशहूर दाद की दवा से ख़राब-से-ख़राब दाद १२ घंटे में साफ़ हो जाता है। दाम फ़ी डिब्बी ।) १२ डिब्बी एक साथ लेने से १ फ़ैशनेबुल टाप रिस्टवाच, एक ख़ूबसूरत टाप पाकेटवाच और एक असली जर्मन वी टाइमपीस घड़ी ५ वर्ष की गारंटी सहित मुफ़्त इनाम। साथ में चित्र की २६ चीज़ें भी इनाम। डा०.ख़० ॥=) दो दर्जन डिब्बी लेने से १ ग्रामोफ़ोन इनाम।

पता—रेल वाच कंपनी,
२६७।१ अपरचीतपुर रोड, कलकत्ता

श्वेतकुष्ठ को फ़क़ीरी जड़ी

प्रिय पाठकगण, एक रोज़ में सिर्फ़ तीन ही बार के लेप से सफ़ेद दाग़ एकदम आराम न हो, तो दूना मूल्य वापस। जो चाहें, एक आने का टिकट भेजकर प्रतिज्ञा-पत्र लिखवा लें। मूल्य ३) रु०। एक बार अवश्य परीक्षा करें।

सफ़ेद बाल ७ दिन में जड़ से काला

फ़ायदा न हो तो दाम वापस। विश्वास न हो तो शर्त लिखवा लें। मूल्य ३) रु०

सुज़ाक की अक्सीर दवा

इस दवा के खाने से नया पुराना सुज़ाक तीन दिन में जड़ से आराम, अधिक तारीफ़ व्यर्थ। मूल्य ३) रु०

वैद्यवर पंडित कन्हैया मिश्र
मैनेजर बिहार-औषधालय
नंबर १४, पो० मधुबनी, (दरभंगा)

इंजन मार्का की असली रेलवे

"रेग्यूलेटर वाच"

गारंटी आठ साल।

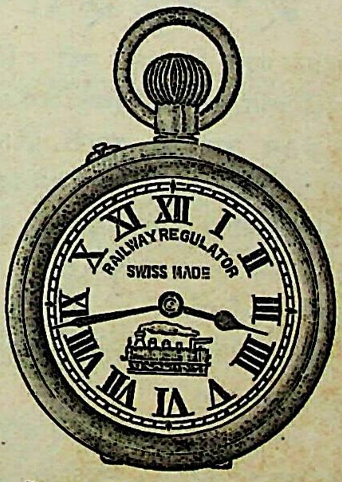

उम्दा क़िस्म।

रेलवे के मुलाज़िम और जेंटिलमैन इसको इसलिये पसंद करते हैं कि यह बहुत ख़ूबसूरत, मज़बूत, पायदार, ठीक वक़्त देनेवाली और बिगड़ने का नाम न लेनेवाली घड़ी है। घड़ी, बक्स और ज़ंजीर-समेत ३'=) तीन रुपया छः आना। वेस्टर्न वाच एजेंसी, लुधियाना, पंजाब।

Western Watch Agency
Ludhiana (Punjab)

नोट—ऑर्डर देते समय कृपया यह अवश्य लिखें कि 'सुधा' में विज्ञापन देखकर माल मँगाया है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पृष्ठ

७. शिल्प और जीवन का योगसूत्र—[लेखक, प्रसिद्ध चित्रकार श्रीअसितकुमार हाल्दार, प्रिंसिपल स्कूल ऑफ़् आर्ट एंड क्राफ़्ट, लखनऊ ६७

८. कोटर और कुटीर (कहानी)—[लेखक, श्रीसियारामशरण गुप्त ... ७३

९. मारवाड़-नरेश महाराजा अजितसिंह (५)—[लेखक, साहित्याचार्य पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ ७८

१०. गीत (कविता)—[लेखक, श्रीयुत "निराला" ९१

११. गहरी निगाह (कविता)—[लेखक, पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध" ... ९२

१२. संगीत-साधना—[शब्दकार, अज्ञात; स्वरकार, कुमारी गोपालदेवी 'हिंदी-प्रभाकर' ९३

१३. कुसुम-कुंज—[लेखकगण, प्रो० विश्वनाथप्रसाद एम्० ए०, साहित्य-रत्न, श्रीयुत ब्रह्मदत्त मिश्र एम्० ए०, श्रीयुत "अधीर",

चूहा-घूस-नाशक दवाई

इससे चूहे और घूस मर जाते हैं और बाक़ी बचे हुए सब भाग जाते हैं। खेत, बग़ीचे और मकान में सर्वत्र इसका व्यवहार किया जा सकता है। मूल्य प्रति पुड़िया =), १२ का १), ४० का ३) १२ पैकेट से कम का वी० पी० नहीं भेजा जाता। पोस्टेज ४० पैकेट तक का ।) ११३

डॉ० गुने, पो० कराड, ज़ि० सतारा

५००) इनाम

महात्मा-प्रदत्त विषनाशक जड़ी। विश्वास तब तक नहीं होगा, जब तक इसके चमत्कार को नहीं देखे। न इस जड़ी को लगाना पड़ता, न छूना पड़ता, न सूँघना पड़ता है, सिर्फ़ इसे दिखाने से ही भयानक-से-भयानक बिच्छू, मधुमक्खी, हड्डा का विष तुरंत आराम हो जाता है। लाखों को आराम कीजिए, सैकड़ों वर्ष पड़ी रहे, पर गुण में ज़रा भी कमी नहीं आती। मूल्य १) बेफ़ायदा साबित करने पर ५००) इनाम।

२।१०।२७ के 'लीडर' में श्रीयुत रामाज्ञा द्विवेदी "समीर" एम्० ए० लिखते हैं—इस आश्चर्यकारक जड़ी को मैंने बहुत गुणकारी पाया, एक जड़ी सैकड़ों आदमियों को आराम कर सकती है।

अखिलकिशोरराम
नं० ५८, कतरीसराय
गया

हिंदुस्तानी एकेडेमी संयुक्त-प्रांत द्वारा प्रकाशित व्याख्यानमाला

(१) मध्यकालीन भारत की सामाजिक अवस्था

व्याख्यानदाता—अल्लामा अब्दुल्लाह यूसुफ़-अली एम्० ए०, एल्-एल्० एम्०, सी० बी० ई०। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के १०० पृष्ठों का मूल्य उर्दू अथवा हिंदी केवल १।)

(२) मध्यकालीन भारतीय संस्कृति

व्याख्यानदाता—रायबहादुर महामहोपाध्याय गौरीशंकर-हीराचंद ओझा। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के २३० पृष्ठों और २४ हाफ़टोन चित्रों-सहित का मूल्य केवल ३)

(३) कविरहस्य

व्याख्यानदाता—महामहोपाध्याय डॉक्टर गंगा-स्वरूप का। सुंदर छपाई, ऐंटिक काग़ज़, कपड़े की सुंदर सुनहली जिल्द, रायल साइज़ के १२० पृष्ठों का मूल्य केवल १।)

मिलने का पता—जनरल सेक्रेटरी हिंदुस्तानी एकेडेमी यू० पी०, इलाहाबाद

नोट—ऑर्डर देते समय कृपया यह अवश्य लिखें कि 'सुधा' में विज्ञापन देखकर माल मँगाया है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पृष्ठ

श्रीयुत बलभद्र शर्मा द्विवेदी, श्रीयुत देवीप्रसाद गुप्त "कुसुमाकर" बी० ए०, एल्-एल्० बी०, श्रीहनूमान शर्मा और पं० लज्जाराम मेहता (बूँदी) ... ९५

१४. विज्ञान-वैचित्र्य—[लेखक, पं० नाथूराम शुक्ल १०५

१५. स्त्री-समाज—[लेखिका, श्रीमती कुमारी शकुंतला गुप्ता "हिंदी-प्रभाकर" ... ११०

१६. व्यायाम—[लेखक, पं० गणेशदत्त शर्मा गौड़ "इंद्र" ११२

१७. व्यंग्य-विनोद—[लेखक, महामहोपाध्याय श्रीमान् जटाटंकी पग ... ११८

१८. समाज-सुधार—[लेखक, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम्० ए० ... ... १२१

१९. पाक-शास्त्र—[लेखिका, श्रीमती कृष्णावतीदेवी श्रीवास्तव १२५

२०. शिशु-पालन—[लेखक, श्रीयुत अत्रिदेव गुप्त १२६

RAM LAL

DENTIST

27, AMINABAD PARK, LUCKNOW

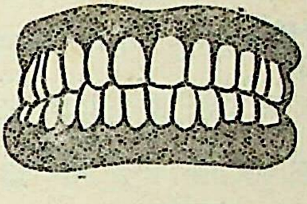

All Sorts of Dental Works

ARE EXECUTED PROMPTLY

—AT—

Reasonable Rates

हज़ारों बचाइए ! हज़ारों कमाइए !!

"सुगंधी-व्यापारियों के लिये अमूल्य संधि"

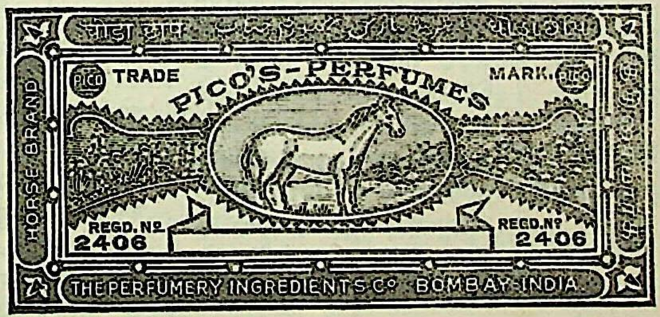

हमारे कार्यालय के प्रख्यात एवं अधिक दिनों तक टिकाऊ एसेंस काम में लाने से आपको हज़ारों रुपयों की बचत होगी, क्योंकि अल्प मूल्य में ही उनसे बहुत माल बनता है।

हर प्रकार की नित्य व्यवहार की सुगंधित चीज़ें जैसे सुगंधित तेल, ओटो, इत्र, सेंट, साबुन, गुलाब-जल, धूप-बत्ती, ज़र्दा-तमाखू, पान के मसाले, गोलियाँ, बाम, लवेंडर, क्रीम, मुँह में लगाने के पाउडर, मरहम, लोशन, सुगंधित नास (हुलास) इत्यादि इसी प्रकार की हज़ारों चीज़ें तैयार करने में सहायता देता है। असली स्वदेशी घोड़ा छाप एसेंस, अर्क़, मसाले इत्यादि हमारे यहाँ कम मूल्य पर तैयार भी मिलते हैं। मूल्य-पत्रिका मुफ़्त।

डी० जी० गोरे की कं० ३१, मंगलदास रोड, बंबई नं० २

नोट—ऑर्डर देते समय कृपया यह अवश्य लिखें कि 'सुधा' में विज्ञापन देखकर माल मँगाया है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पृष्ठ

२१. गृह-चिकित्सा—[लेखक, भिषक् महावीरप्रसाद चतुर्वेदी १२६

२२. पुस्तक-परीक्षा—[लेखकगण, श्रीयुत सुधींद्र वर्मा एम्० ए०, श्रीयुत कालिदास कपूर एम्० ए० और श्रीयुत भगीरथप्रसाद दीक्षित १३०

२३. साहित्य-सूची १३५

२४. संपादकीय १३६

अद्भुत चमत्कृत फलादेश

हर प्रकार के प्रश्न, उत्तमोत्तम मुहूर्त, जन्मपत्र, वर्षफलादि का विचार, जो इच्छा हो पूछिए। जन्मपत्र की नक़ल या पत्र लिखने का समय भेजने से १) में वर्षफल। ५) में जन्मफल। हरएक प्रश्न व मुहूर्त १) में। प्रश्नोत्तर व फलादेश शर्तिया निश्चय सत्य होंगे। यथार्थ न मिलने पर दक्षिणा वापस कर दूँगा। बिना टिकट के उत्तर नहीं मिलेगा। बैरन् पत्र नहीं लिया जायगा।

श्रीकृष्ण ज्योतिर्विद् पुरानी अंजही, मिर्ज़ापुर

प्रत्यक्ष फल देनेवाले अत्यंत चमत्कारिक यंत्र

यदि आपको यंत्रों से लाभ न हो, तो दाम वापस किए जायँगे। हरएक यंत्र के साथ इस गारंटी-पत्र भेजते हैं।

नवग्रह-यंत्र—इसको धारण करने से मुक़दमे में जीत, नौकरी मिलना, कामों की तरक़्क़ी, सुखपूर्वक प्रसव, गर्भ और वंश की रक्षा होती है। मूल्य ४)

शनि-यंत्र—धारण करने से शनि का कोप होने पर भी संपत्ति नाश नहीं होती; बल्कि धन, आयु, यश, मानसिक शांति, कार्य-सिद्धि, सौभाग्य और विवाद में जीत होती है। मूल्य ३।=)

सूर्य-यंत्र—कठिन रोगों से आराम होने की एक ही उत्तम औषध है। मूल्य २=)

धनदा-यंत्र—इसको धारण करने से अल्प आयास से बहुत धन-लाभ हो सकता है। मनुष्य अपने मन में जो चिंता करता है, धनदा-कवच के प्रभाव से सब प्राप्त होता है। और आयु, आरोग्य, विभव, विजय, प्रतिष्ठा-लाभ होता है। लक्ष्मीदेवी कवच धारणकारी के घर में निश्चित वास करेंगी, और इसके प्रभाव से ग़रीब भी राजा के समान धनी हो सकता है। मूल्य ७॥=)

महाकाल-यंत्र—वंध्या-बाधक और मृतवत्सा नारियों को सच्चा फल देनेवाला है। मूल्य ३=)

श्यामा-यंत्र—इसको धारण करने पर क़र्ज़ से छुटकारा, अधिक धन और पुत्र-लाभ का एक ही उपाय है। इस कवच के धारण करनेवाले की कुछ भी बुराई शत्रु से नहीं हो सकती, और वे उसको हरा सकते हैं। मूल्य ६॥=)

वशीकरण-यंत्र—इसको धारण करने से अभीष्ट मनुष्य जनों को वश और स्वकार्य साधन-योग्य कर सकता है। वशीभूत मनुष्य इतना बाध्य रहता है कि उससे इच्छानुसार सब काम करा सकता है। मूल्य ४॥-)

महामृत्युंजय यंत्र—किसी प्रकार के मृत्यु-लक्षण क्यों न देख पड़ें, उन्हें नष्ट करने में ब्रह्मास्त्र है। मूल्य ८=)

हाईकोर्ट के जज, एकाउंटेंट जेनरल, गवर्नमेंट लीडर, नवाब, राजा और ज़मींदार महाशयों से अत्युत्तम सहायता प्राप्त।

ज्योतिर्विद्, पंडित श्रीवसंतकुमार भट्टाचार्य ज्योतिर्भूषण, एफ़्० टी० एस्०

हेड ऑफ़िस १०५ (सु), ग्रे स्ट्रीट कलकत्ता

नोट—ऑर्डर देते समय कृपया यह अवश्य लिखें कि 'सुधा' में विज्ञापन देखकर माल मँगाया है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust, Funding by MoE-IKS

चित्र-सूची

(क) रंगीन — पृष्ठ

१. नंद-दुलारे (तिरंगा)—[संपादक के चित्र-संग्रह से १
२. गंगा-पुस्तकमाला का पूर्णोत्सव (दुरंगा) ३२
३. एक सुशिक्षित परिवार (दुरंगा) ... ३३
४. नूरजहाँ और जहाँगीर (तिरंगा)—[संपादक के चित्र-संग्रह से ... ७३
५. नारद-मोह (तिरंगा)—[रामायण-चित्रावली से १०५
६. श्रीमती ऊर्मिलादेवी शास्त्री (दुरंगा) १२८
७. श्रीमती इंदुमती गोयनका (दुरंगा) १२९
८. कुमारी रामेश्वरीदेवी गोयल बी० ए० (दुरंगा) १३०
९. पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए० (दुरंगा) १४४
१०. ट्रिब्यून के उप-संपादक श्रीयुत जंग-बहादुरसिंह बी० ए० और उनकी विदुषी धर्मपत्नी श्रीमती ज्ञानदेवी स्नातिका, विशारदा (दुरंगा) ... १४५

सुधा

में यदि आज तक आपने अपना विज्ञापन नहीं छपाया है, तो अब ट्रायल ऑर्डर के तौर पर तीन मास तक छपाकर देख लीजिए कि कितना अधिक लाभ होता है। आप अवश्य संतुष्ट होंगे।

मैनेजर सुधा, लखनऊ

शक्ति का ख़ज़ाना यानी पृथ्वी पर का अमृत

मदनमंजरी

यह दिव्य गोलियाँ दस्त साफ़ लाती हैं, वीर्य-विकार संबंधी तमाम शिकायतें नष्ट करती हैं और मानसिक व शारीरिक प्रत्येक प्रकार की कमज़ोरी को दूर करके नया जीवन देती हैं। क़ी० गोली ४० की डिब्बी १ का १)

बंबई ब्रांचः— ३६३ कालवा देवी | राजवैद्य नारायणजी-केशवजी। हेड-ऑफ़िस जामनगर, (काठियावाड़) लखनऊ एजेंटः—निगम मेडिकल हॉल

१४ सोने और चाँदी के तमग़े इनाम में मिला हुआ—

डायमंड सोप कंपनी, बंबई नं० ४.

(१) ख़ुशबूदार साबुन—मनोहर ख़स, गुलाब वग़ैरह।

(२) दवाइयाना साबुन—ख़ुजली वग़ैरह के वास्ते कारबोलिक मिला हुआ।

(३) कपड़े धोने का साबुन—डायमंड वाशर का डबल बट्टा।

(४) कपड़े रँगने का साबुन—गुलाबी, पीला, लाल वग़ैरह ११ पक्का रंग में बना हुआ।

हमारी कंपनी का प्रसिद्ध ख़ालिस स्वदेशी साबुन इस्तेमाल करके ख़ातरी कीजिए और परदेशी वस्तु का इस्तेमाल छोड़ स्वदेशी माल का गौरव बढ़ाइए। यह साबुन हरएक जगह दूकान पर मिल सकता है।

स्त्री-मात्र का रक्षक व परम हितैषी इष्ट-मित्र जगत्-विख्यात

Registered **'कौनटैक्स'** रजिस्टर्ड

इसके सेवन से गर्भ स्थापित नहीं होता, जो स्त्रियाँ गर्भ धारण करना और अधिक संतान उत्पन्न करना नहीं चाहतीं वे 'कौनटैक्स' के सेवन से कभी गर्भवती नहीं होतीं। क़ीमत फ़ी शीशी १॥) रु० डाक-ख़र्च ।≈)

पता—आनंदजीवन-फ़ार्मेसी, आगरा

नोट—ऑर्डर देते समय कृपया यह अवश्य लिखें कि 'सुधा' में विज्ञापन देखकर माल मँगाया है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पृष्ठ

(ख) व्यंग्य

१. स्वागत (मौलाना शौकतअली का, लखनऊ में) १२६
२. स्वराज्य की मिठाई—[चित्रकार, श्रीयुत डी० बनर्जी १६०

(ग) सादे

१. श्रीपृथ्वीपालसिंह बी० ए० ... ... २६
२. सर हारकोर्ट बटलर के० सी० आई० ई०, के० सी० एस्० आई० ... ३०
३. कैनिंग कॉलेज-भवन का मनोहर दृश्य ... ३२
४. किंग-जॉर्ज मेडिकल कॉलेज-भवन ... ३२
५. सर हारकोर्ट बटलर चैंसलर (भूतपूर्व) तथा श्रीडॉक्टर जी० एन्० चक्रवर्ती वाइस-चैंसलर (भूतपूर्व) ३४
६. डॉक्टर एम्० बी० कैमरन एम्० ए०, डी० लिट्, सी० आई० ई०, भूतपूर्व वाइस-चैंसलर ३५

सर्व रोग को दूर करनेवाला
(भारत-सरकार से रजिस्टर्ड)
जीवनधारा
र० ट्रेड मार्क 'जेनस' नं० ३०२

हर समय अपने पास रखिए। यह पेट-संबंधी विकार, हैज़ा या दाढ़ का दर्द, सर्दी, सूजन, घाव, कमज़ोरी, प्रदर, प्रमेह, हर तरह का बुख़ार, संधिवात, सिरदर्द, बवासीर, ज़हरी डंक, हाथ, पाँव और बदन का दुखना आदि बहुत-से दर्द को शर्तिया आराम करता है। दाम बड़ी शीशी १॥) रु०, आधी शीशी १) रु०, छोटी शीशी ।) महसूल अलग। सूचीपत्र मुफ़्त मिलेगा। देखिए, यह "जीवनधारा" सब जगह मिलता है।

पता—जे० एन्० सेठना, मु० पो० नड़ियाद [गुजरात]

अपूर्व अवसर! जल्दी कीजिए!
वेदांत-पुस्तकें
ब्रह्मनिष्ठ श्रीरामगुरु-कृत
पंचीकरण
तथा
ब्रह्मनिष्ठ पंडित श्रीजयकृष्ण-कृत गुजराती टीका जो स्वामी श्रीयुगलानंद द्वारा हिंदी-भाषा में अनुवादित है। मूल्य २)

न्यायसारः श्रीभासर्वज्ञप्रणीत
An ancient work on logic by an eminent scholar of the 9th centur A. D. Edited with notes by VISHVANATH P. VAIDYA. B. A., J. P., M. R. A.S. Bar-at-Law. Price Rs. 2/4/- 2nd Edition.
डाक-ख़र्च अलग—व्यापारी को उत्तम लाभ।
मिलने का पता—मैनेजर वेदधर्मसभा
२१, फ़ोरबेस स्ट्रीट, बंबई

पि० वेंकटाचल पंडित की आयुर्वेदीय
लोकामयहर कस्तूरी गोलियाँ

ये गोलियाँ बहुमूल्य पदार्थों से जैसे सोना, चाँदी, नेपाली कस्तूरी, मूँगा आदि से बनाई गई हैं। इनको अलग अलग या २ से ४ तक पान में खाने से हाज़मा बढ़ता है। हर प्रकार का बुख़ार दूर होता है। जल-वायु और भोजन के परिवर्तन का असर बराबर होता है। रक्त साफ़ होता है। तथा -सकी चाल अबाध्य होती है। खाँसी, सरदी, ज़ुकाम, पेट का दर्द, क़ब्ज़ियत, कमर और छाती का दर्द, कमज़ोरी, जूड़ी, बुख़ार और प्लेग को नाश करती हैं। जिस स्थान में छूत की बीमारियाँ फैली हों, वहाँ नित्य पान के साथ ३-४ गोलियाँ लीजिए। बच्चों के रोग में जादू के समान असर दिखाएँगी। दाम ३०० गोलियों की बोतल का १) डाक-महसूल अलग। ६ बोतलों का ११॥), १२ बोतलों का मूल्य डाक-व्यय-सहित २॥-)
२५ ,, ,, ,, ४=)

मिलने का पता—
श्रीसीताराघव वैद्यशाला, मैसूर

नोट—ऑर्डर देते समय कृपया यह अवश्य लिखें कि 'सुधा' में विज्ञापन देखकर माल मँगाया है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पृष्ठ

७. पं० जगतनारायणजी मुल्ला ... ३६
८. पं० जगमोहननाथ चक बी० ए० ... ३७
९. डॉक्टर वलीमोहम्मद एम्० ए०, पी-एच्० डी०... ... ... ३७
१०. डॉक्टर राधाकुमुद एम्० ए०, पी-एच्० डी०, पी० आर० एस्०, विद्या-वैभव, इतिहास-शिरोमणि ३७
११. डॉक्टर राधाकमल मुकर्जी एम्० ए०, पी-एच्० डी०, पी० आर० एस्० ... ३७
१२. मिस्टर के० ए० सुब्रह्मण्य अय्यर एम्० ए० ३८
१३. श्री० प्रो० के० एस्० हजेला एम्० ए०, एम्० एस्-सी०, एल्-एल्० एम्० ... ३८
१४. पं० बदरीनाथ शास्त्री एम्० ए० ... ३८
१५. डॉक्टर एम्० बी० रहमान एम्० ए०, पी-एच्० डी० ... ... ३८
१६. सैयद मसूदहुसेन रिज़वी एम्० ए० ... ३९
१७. श्री० वी० के० नंदन मेनन ... ३९
१८. डॉक्टर ई० अशीरवादम बी० ए०, बी० डी०, पी-एच्० डी० ... ... ३९

प्रदर-विनाशक

स्त्रियों के लिये टानिक दवा

(रजिस्टर्ड नं० ३१०)

इस दवा से प्रदर (कम ताक़त) अनियमित ऋतुस्राव, रक्तप्रदर, छोड़ हिस्टोरिया, कमर पेड़ू का दुखना, सीने में अगन, हाथ-पैर की झन-झन, सावण, सुवारोग और दूसरे सब रोग जड़ से नष्ट होते हैं। एक बक्स का मूल्य २॥) डा० म० ।≈)

भेंट—जो सज्जन १५ नाम मय पूरे पते के भेजेंगे उनको १००० वर्ष का कलेंडर मुफ़्त भेजा जायगा।

पता—प्रदर-विनाशक ऑफ़िस
खंभातजी (खेड़ा) नं० २९

दी इंडियन टेलरिंग कालेज

होशियारपुर (पंजाब)

११० लिबास सीखकर अपनी सूटिंग-शाप खोल लें। याद रक्खो धनी पुरुष धनी नहीं—हुनरमंद पुरुष धनी है। नियम मुफ़्त मँगावें।

अद्वितीय पुस्तकें हिंदी-उर्दू

५ कोट, १७२ प्रश्न कपड़ा लगाने पर, ४८ चित्र	१।)	पतलून ब्रीचिस नीकर	१)
१२ कमीज़, २५८ प्रश्न कपड़ा लगाने पर, २६ चित्र	।॥)	लासानी वस्ली ९२ प्रश्न	॥)
८ पाजामे	८॥)	फ्राक पिनी फोर	॥)
तीन अंगी चार जंपर दो ब्लोस पैरी कोट	।॥)	दौलत दर्ज़ीयाँ उर्दू ५) हिंदी	५)

नोट—ऑर्डर देते समय कृपया यह अवश्य लिखें कि 'सुधा' में विज्ञापन देखकर माल मँगाया है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पृष्ठ
१९. डॉ० करमनारायण बाल डी० फ़िल, डी० एस्-सी० ... ... ४०
२०. युनिवर्सिटी-सेना के भीम ... ४१
२१. श्रीमती फूलवतीजी शुक्ला एम्० ए० ... ४२
२२. 'लखनऊ-युनिवर्सिटी-यूनियन' की कार्य-कारिणी समिति (१९२९-३०) ... ४३
२३. छुट्टी के दिन विश्वविद्यालय के कुछ विद्यार्थी 'रेज़ीडेंसी-उद्यान' में ... ४५
२४. सूर्य-मोटर १०६
२५. नई बंदूक़ १०७
२६. विचित्र घड़ी १०८
२७. सौंदर्य की कुंजी १०८
२८. बुड्ढों को जवान बनानेवाला डॉ०वेरोनाफ़ १०९
२९-३१. व्यायाम-संबंधी तीन चित्र ... ११४, ११६ और ११७

PRINT ANY THING PRINT EVERY THING PRINT ANY TIME
BY HOME PRINTER
COMPLETE PRINTING OUTFIT
WITH
ENGLISH, HINDI OR BENGALI TYPES.
for Private and Commercial use.
Most reliable Teak-wood Press, Set up with Iron and Brass Parts, for PERFECT PRINTING Simple in operation, Fine in impresion and durable, in Constraction Guarantee for 30 lacks fine impresion with satisfaction or full money back.

No.	Size of Hand Press.	Size of Paper.	Accessories.	Lead Type.	Price.	
0	17" x 12"	Foolscap Half Size.	30	1500	Rs. 37	30 lbs.
1	12" x 10"	Demy Quarter Size.	25	1100	" 27	22 lbs.
2	9" x 6"	Letter Paper Size.	17	1000	" 17	10 lbs.
3	7" x 4"	Post Card Size.	16	700	" 12	6 lbs.
4	6" x 3"	Visiting Card Size.	16	500	" 8	4 lbs.

N.B.—Order should be made with the name of nearest Ry or Steamer Stn and ¼ advance.
AGARWAL TRADING CO.
80, Lower Chitpur Road, Burrabazar, Calcutta.

पी० के० सेन ऐंड संस का
डूग और केमिकल्स वर्क्स,
हेड ऑफ़िस—चिटागांग।
शाखा—८९ दशाश्वमेध, बनारस।
पी० के० सेन का "चालमूगरा मलहम"—हर प्रकार के चर्मरोग की रामबाण औषधि। कोढ़ तक आराम होता है। बड़ी डिब्बी ॥=), छोटी =)
पी० के० सेन का "चालमूगरा साबुन"—औषधि-मिश्रित ख़ुशबूदार, सबसे अच्छा साबुन। रोज़ाना इस्तेमाल से चर्मरोग नहीं होता। मूल्य ।)
पी० के० सेन का "चालमूगरा तैल"—असली कच्चा चालमूगरा तैल। कोढ़ की सबसे अच्छी दवा। दाम १)
पी० के० सेन का "फ़ोव्हरेक्स"—हर क़िस्म के बुख़ार की लाजवाब दवा। मूल्य १) शीशी।
पी० के० सेन की "शक्ति पिल्स"—धातु-क्षीणता नामर्दी दूर करता है। मूल्य १।) शीशी।
पी० के० सेन का "शोराब"—सबसे बढ़िया ख़ुशबूदार तैल। मूल्य ॥=)
To be had of :—
P. K. SEN & SONS
MERCHANTS
Chittagong

नोटिस

बअदालत जनाब बाबू तिरबेनीप्रसाद साहब मुंसिफ़ फ़तेहपुर मुक़ाम बाराबंकी।
मुक़द्दमा इजराय डिगरी नं० ३६० सन् १९३० ई०
बालगोविंद वल्द छंगालाल क़ौम हलवाई साकिन नवाबगंज ज़िला बाराबंकी डिगरीदार
बनाम
राजधर वल्द सरजूप्रसाद क़ौम कायस्थ साकिन गोकुलपुर असेनी परगना देवकी ज़िला बाराबंकी मदयून
बनाम राजधर वल्द सरजूप्रसाद क़ौम कायस्थ साकिन गोकुलपुर असेनी परगना देवकी ज़िला बाराबंकी मदयून। बज़रिए नोटिस हाज़ा बमुक़द्दमा मुंदर्जा उनवान तुमको इत्तिला दी जाती है कि डिगरीदार ने एक दरख़्वास्त इजरा अदालत हाज़ा में गुज़रानी है कि जायदाद जो तुम्हारे क़ब्ज़ा में है मौरूसी है या ग़ैर मौरूसी लिहाज़ा तुम बतारीख़ १३ माह सितंबर सन् १९३० ई० को हाज़िर अदालत हाज़ा होकर पैरवी व जवाबदही दरख़्वास्त की करो कि मौरूसी है या ग़ैर मौरूसी वरना मुक़द्दमा की समाअत तुम्हारे अदम हाज़िरी में की जावेगी फ़क़त आज बतारीख़ २८ माह अगस्त सन् १९३० ई० मेरे दस्तख़त और मोहर अदालत से जारी किया गया।

दस्तख़त रघुनंदनलाल दीक्षित मुंसरिम

CC-0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

खुल गया ! खुल गया !! खुल गया !!!

हमारा चित्रकला-विभाग

(Our Fine Art Department)

समाचार-पत्रों, मासिक पत्रों तथा पुस्तक-प्रकाशकों के लिये सब प्रकार के चित्रों, कार्टूनों इत्यादि के डिज़ाइनों का प्रबंध हो गया !

अगर आपको छोटे या लाइफ़-साइज़ में अपनी जीती-जागती तस्वीर बनवानी हो, तो हमारे पास ऑर्डर भेजिए। उचित मूल्य ही लिया जायगा। बुरे से भी बुरा फ़ोटो क्यों न हो, हम उसका रंगीन या सादा इन्लार्जमेंट, हर साइज़ में, तैयार कर देंगे। वाटर-कलर या ऑयल-कलर का काम सिर्फ़ हमीं भारतवर्ष-भर में आपको, ऐरोग्राफ़-मशीन (Airograph Machine) से, बहुत सुंदर रूप में, बनाकर दे सकते हैं।

डिज़ाइन		
रंगीन चित्र	...	३०) से १००) तक
सादा एकरंगा चित्र		१०) से २५) ,,
लाइन-वर्क	...	६) से २०) ,,

फ़ोटो इन्लार्जमेंट १०×१२ इंच		
ऐरोग्राफ़ से तैयार किया हुआ	सीपिया या ब्लैक सादा	१०)
	,, ,, ,, रंगीन	२०)
पेंटिंग ऑयल-कलर	... ...	३०)

पोर्टरेट		
ऑयल-कलर लाइफ़ साइज़	मज़बूत कैनवेस पर	१०००)
,, ,,	बस्ट ,, ,, ,, ...	५००)

नोट—बड़े इन्लार्जमेंटों की क़ीमत असल फ़ोटो देखकर बतलाई जा सकती है।

Manager, The Ganga Fine Art Press, Lucknow.

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection. Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नंद-दुलारे
[संपादक के चित्र-संग्रह से]
पट, मुरली, माला, मुकट, धरि तन, कर, उर, भाल ;
मंद-मंद हँसि बसि हियें, नंद दुलारेलाल ।

Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सुधा की आकार-वृद्धि !

नव वर्ष का नम्र निवेदन !!

इस अंक से 'सुधा' अपने छोटे-से जीवन के ४थे वर्ष में प्रवेश कर रही है। अब तक उसने हिंदी की जो कुछ थोड़ी-बहुत सेवा की, उससे हिंदी-संसार भली भाँति परिचित है। अपने सुंदर सचित्र यात्रा-विवरणों, गूढ़ ऐतिहासिक विवेचनों, प्रगाढ़ दार्शनिक लेखों, मनोमोहक गाथाओं तथा सामाजिक उन्नतिकारी नोटों द्वारा उसने अपने लिये हिंदी-प्रेमी हृदयों में एक विशेष स्थान बना लिया है। भारत के प्रत्येक प्रांत में, सुदूरवर्ती जर्मनी और अमेरिका तक में, उसके प्रेमियों की एक बहुत बड़ी संख्या, इन्हीं तीन वर्षों में, उत्पन्न हो गई है। 'सुधा' की लोक-प्रियता और उपादेयता का इससे बढ़कर और कौन-सा प्रमाण हो सकता है ?

किंतु 'सुधा' को अपनी इस सफलता पर हर्ष नहीं। उसे अपनी बहुत-सी त्रुटियों का पूरा ज्ञान है। अतएव वह प्रति वर्ष उन्हें दूर करने का प्रयत्न करती रही है। इस वर्ष तो उसने अपना कलेवर ही बदल डालने का निश्चय कर लिया है।

अब सुधा नए रूप में, अनुपम सज-धज के साथ, निकला करेगी। इस वर्ष की विशेषताएँ होंगी—

१. प्रतिमास १५० पृष्ठ।

२. प्रतिमास ४-५ तिरंगे और दुरंगे चित्र।

३. भारतवर्ष के प्रसिद्ध नर-नारी-रत्नों के फ़ोटो।

४. प्रतिमास ३ श्रेष्ठ लेखकों की सुंदर गल्पें।

५. हिंदी के महाकवि बाबू मैथिलीशरणजी गुप्त का बिलकुल नया खंड काव्य "सिद्धराज" और सुकवि पाठकजी का "विभूति" नाम का काव्य (भाद्रपद से) क्रमशः निकलेंगे। पुस्तकाकार छपने पर इन दोनो का मूल्य १॥) से कम न होगा।

६. हिंदी के प्रसिद्ध कवि श्री'निराला'जी-लिखित 'अप्सरा'-उपन्यास के धारावाहिक अंश। पुस्तकाकार छपने पर इसका मूल्य १) होगा।

७. 'स्त्रियों के सचित्र व्यायाम'-नामक एक धारावाहिक लेख। छपने पर मूल्य होगा १॥)

८. 'प्रसूति-तंत्र'-नामक एक उपयोगी जनन-विषयक धारावाहिक लेख। लेखक, डॉक्टर रामदयाल कपूर एम्० बी०, बी० एस्०, प्रोफ़ेसर गुरुकुल काँगड़ी। छपने पर मूल्य होगा १॥)

९. इनके अतिरिक्त हिंदी के प्रसिद्ध विद्वानों के लेखों का विशेष प्रबंध किया गया है।

१०. महिलाओं और बालकों के लिये पाक-शास्त्र, गृह-प्रबंध, घरेलू दवाइयाँ आदि स्तंभों के अतिरिक्त अन्य कई स्तंभों का नया आयोजन।

११. नवीन तथा पुराने ग्राहकों को श्रीकृष्णानंद गुप्त-लिखित 'केन'-नामक प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास का उपहार। मूल्य १)। अर्थात् उपहार का मूल्य निकाल देने पर सुधा का वार्षिक मूल्य ५॥) ही रह जाता है। और, साल-भर में ५॥) की तो पुस्तकें ही सुधा में निकल जायँगी। बाक़ी मैटर मुफ़्त। हिंदी में है कोई ऐसी सस्ती पत्रिका।

इन क्रांतिकारी परिवर्तनों के कारण अब 'सुधा' हिंदी के गौरव की वस्तु हो जायगी। समय की पाबंदी का भी समुचित प्रबंध कर लिया गया है। सुधा प्रतिमास अंतिम सप्ताह में निकलेगी। सितंबर का अंक भी १०-१२ दिन में, ३० सितंबर तक, निकल जायगा। ग्राहकों को मनीआर्डर या वी० पी० का रुपया मिलते ही भेजा जायगा।

कृपाया उधर पढ़िए।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हमें पूर्ण आशा है, अब आप अवश्य ही 'सुधा' के अनन्य भक्त हो जायँगे तथा अपने इष्ट-मित्रों में भी उसकी अनवरत चर्चा करके उन्हें उसका ग्राहक बनाकर हमारी सहायता करेंगे।

आपकी सहानुभूति और सहायता से 'सुधा' की दिनों-दिन श्री-वृद्धि होगी, ऐसा हमारा विश्वास है। आशा है, आप हमारा हाथ बँटावेंगे।

सुधा-कार्यालय,
लखनऊ, १५ । ६ । ३०

दुलारेलाल भार्गव

प्रधान संपादक और अध्यक्ष

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

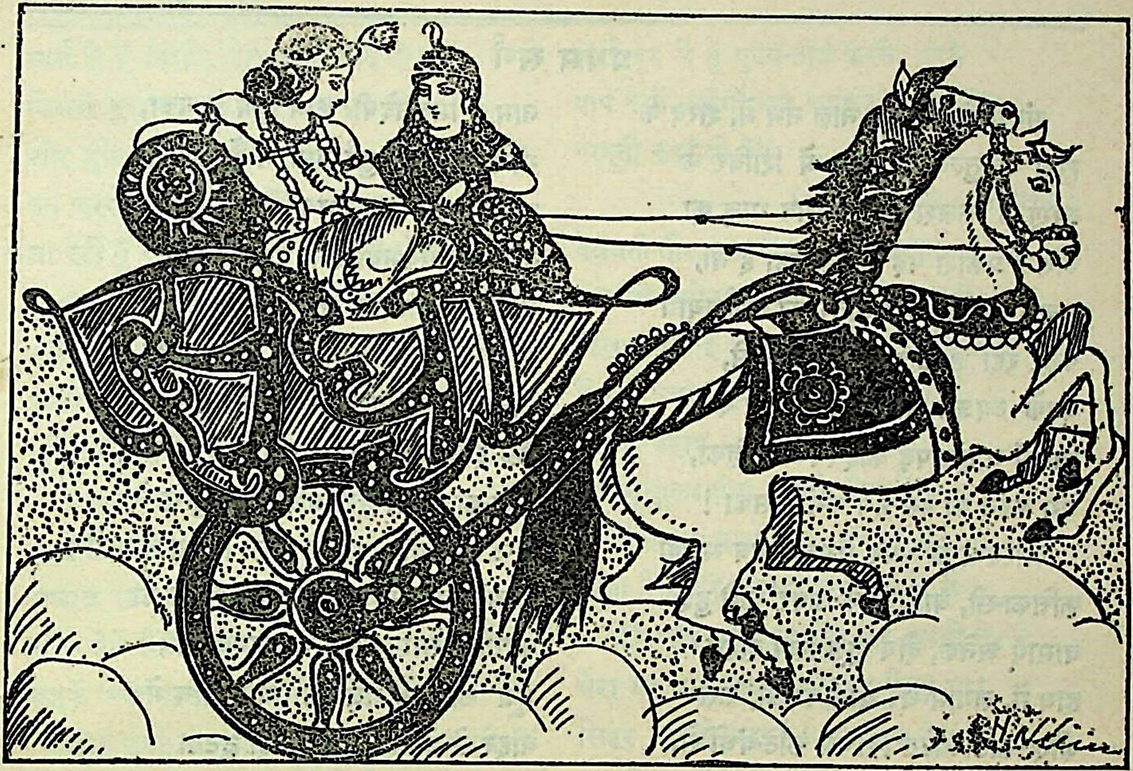

"कीन्हेहु सुलभ सुधा बसुधा हू।"
(गो० तुलसीदास)

वर्ष ४ खंड १ } श्रावण, ३०८ तुलसी-संवत् (१९८७ वि०)— अगस्त, १९३० { संख्या १ पूर्ण संख्या ३७

सिद्धराज

(खंड काव्य)

[श्रीमैथिलीशरण गुप्त]

मंगलाचरण

आप अवतीर्ण हुए दुःख देख जन के;
भ्रातृ-हेतु राज्य छोड़, वासी बनें वन के।
राक्षसों को मार भार मेटा धरा-धाम का;
वंश बढ़े दया-दान-युद्ध-वीर राम का।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रथम सर्ग

संध्या हो रही है। नील नभ में, शरद के
शुभ्र घन-तुल्य, हरे वन में शिविर के
स्वर्ण के कलश पर अस्तंगत भानु का
अरुण प्रकाश पड़ झलक रहा है यों,
छलक रहा हो भरा भीतर का वर्ण ज्यों।
फहर रहा है केतु उस पर धीरे से,
बनके व्यजन राज-मंगल-कलश का,
जिसमें न टूट पड़े कोई विघ्न-मक्षिका,
भंग करने को रस-रंग कभी उसका !
अश्विनी के ऊपर सुभव्य भाव भरणी
कृत्तिका-सी, वामियों के ऊपर चढ़ी हुई
वामाएँ अनेक, दीर्घ शूल लिए दाहने
हाथ में, लगाम धरे वाम कर में, कसे
क्षीण कटि जटित विचित्र कटि-बंधों से,
पीठ पर बाल छोड़े ढाल के-से ढंग से,
हैम शिरस्त्राण बाँधे, मोतियों की कलगी,
जिन पर खेलती है स्वच्छ गुच्छरूपिणी।
कंचुक-कवच सब एक ही-से पहने,
गहने हैं बेंदी, कर्णफूल, हार जिनके,
कंकण करों में और नूपुर पदों में हैं,
शौर्य-वीर्य-साहस की प्रतिमा सजीव-सी
मंदिर-समान उस सुंदर शिविर की
मंडल बनाकर परिक्रमा हैं करती !
स्वप्न नहीं, सत्य ; किंतु गत वे दिवस हैं,
विक्रम की द्वादश शताब्दि की ये बातें हैं ;
वामा-व्यूह आज हमें जान पड़े सपना ;
देश था स्वतंत्र तब, राजा आप अपना।
जननी प्रसिद्ध सिद्धराज जयसिंह की,
नाम है मिलनदेवी, काम शुभ जिनका,
सोमनाथ जाती हुई मार्ग में हैं ठहरी।
बाहर अपूर्व राज-वैभव-विकास है,
गज-रथ-अश्वमयी सेना बहु संग है ;
भीतर परंतु उदासीनता की मूर्ति हैं।
सोलंकी-शशांक स्वर्गवासी कर्णदेव की
विधवा वे वर्षीयसी, त्यागिनी, तपस्विनी
बैठी हैं अकेली, खड़ी आड़ में हैं दासियाँ।
शांत-कांत-रूप, मुख प्रौढ़ पक्व बुद्धि से
दीप्त यथा दीप, सौम्य नासा शिखा-रूपिणी ;
संध्योपासना में प्रभु और निज पति का
करती हैं स्मरण सदा वे शरणागता ;
गूँज उठती है गज-घंटा-ध्वनि बीच में
बाहर से आकर, परंतु नहीं टूटता
ध्यान जा लगा है पतिदेव में जो उनका ;
नीचे बैठ ऊपर को देख कहती हैं वे—
"छोड़ा तीन वर्ष का था नाथ, जिसे तुमने
और हतभागिनी को छोड़ा यहाँ जिसके
कारण, तुम्हारा जयसिंह वही अधुना
हो गया युवक, इस योग्य—निज राज्य जो
आप ही सँभाले और पाले प्रजा प्रीति से—
नीति से, उचित रीति रक्खे, भीति छोड़ के
कर सके योग्य व्यवहार शत्रु-मित्र से।
रोता रहा मेरा मृदु माँ का मन, फिर भी
मैंने दृढ़ होकर दिलाई उसे शिक्षा है ;
दे जो सकती थी एक नारी, कुल-दीक्षा दी,
जानेगी परिस्थिति परीक्षा करके उसे,
प्रस्तुत है प्रभु की कृपा से वह सर्वदा।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वर्ग से हे स्वामी, तुम आशीर्वाद दो उसे,
जिससे तुम्हारा सुत संतत सफल हो,
और मुझे आज्ञा दो कि आऊँ पद-पद्मों में,
उन चरणों की बन जाऊँ अनुचारिणी,
जा रही हूँ नाथ, सोमनाथ यही माँगने।"
कहते हुए यों, भक्ति-भाव से भरी हुई,
पृथ्वी पर माथा टेक रानी नत हो गई,
उज्ज्वल सजल तारा, नाति शुभ्रवसना,
मूर्तिमती मानो सौम्य संध्या प्रकटी वहाँ।
उठकर राजमाता बैठी स्वस्थ भाव से,
"कौन है ?" पुकारा, दौड़ आईं बहु दासियाँ,
"आज रात्रि-यात्रा नहीं होगी, यह कह दो,
श्रांति मेटें सैनिकाएँ जाकर शिविर में।"
कहके "जो आज्ञा" एक किंकरी चली गई।
शब्द हुआ सहसा—"दुहाई राजमाता की !"
चौंक उठीं और बढ़ीं तत्क्षण वे द्वार की
ओर, कुछ सैन्यजन एक बली बाल को
घेरे लिए आ रहे थे और माता उसकी
देती थी दुहाई—"यह कैसी अनरीति है !"
बोली राजजननी—"बुलाओ इन्हें, कौन हैं ?"
लाए गए माता-पुत्र दोनों झट सामने,
बोला एक सैनिक कि "ये हैं राज-विद्रोही।"
"राम-राम !" बोली वह नारी घृणा-भाव से;
"तो फिर तुम्हें ये घर लाए क्यों, तुम्हीं कहो,
सच बतलाना।"
"देवि, मैं हूँ एक क्षत्राणी,
जनती हैं जूझने के अर्थ ही जो पुत्र को।
मृत्यु-भय से भी फिर झूठ क्यों कहूँगी मैं ?
विधवा हूँ, जीवन का मोह नहीं मुझको।
आई दूर से हूँ पुण्य-तीर्थ करने यहाँ,
पाप क्यों करूँगी झूठ कहकर आपसे ?"
"रहती कहाँ हो ?"
["उस विश्रुत जुझौती में]
वेत्रवती-तीर पर, नीर धन्य जिसका,
गंगा-सी पुनीत जो सहेली यमुना की है;
किंतु रखती है छटा दोनों से निराली जो;
जिसमें प्रवाह हैं, प्रपात और ह्रद हैं;
काटके पहाड़ मार्ग जिसने बनाए हैं;
देवगढ़-तुल्य तीर्थ जिसके किनारे हैं;
देवश्री मदन वर्मा सदन सुकर्मों के
राजा हैं हमारे, राजधानी है महोबे में।
वीर-गति पाई जब मेरे शूर स्वामी ने,
मेरा यह बेटा तब दुग्ध-पोष्य शिशु था।
सिहर उठी हैं अहा ! आप, दया-मूर्ति हैं।
अनुचित लाभ, किंतु आपकी दया का मैं
लेना नहीं चाहती हूँ कहकर बातें वे।
पाला इसे मैंने, किंतु अबला थी, इससे
आँखों से हटा सकी न दूर, तो भी गाँव में
पंडित हैं एक, वे पुरोहित हमारे हैं;
उनसे दिलाई इसे शिक्षा निज धर्म की,
सीखा कुल-कर्म ज्ञाति-बंधुओं में इसने।
अब इस योग्य हो गया है, यह अपनी
सेवा करे अर्पित स्वदेश को, स्वराज्य को;
किंतु तीर्थ-यात्रा करने की मुझे इच्छा थी,
व्रज तो हमारे प्रांत का ही प्रतिवेशी है;
जाके वहाँ इच्छा हुई—द्वारका भी जाऊँ मैं,
माखन चुराकर हमारे हरि भागके
राजा बन बैठे जहाँ !"

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नारी भक्ति-गद्‌गदा
आँखें पोंछ मानो साँस लेने लगी रुकके।
मानस तरंगित था राजजननी का भी,
किंतु हँस बोली वे कि "गोकुल की गोपी-सी
आईं तुम खोजने को चित्त-चोर अपना,
किंतु याद रखना, यहाँ भी हैं सपत्नियाँ !"
"देवि, मेरे हरि पर स्वत्व नहीं किसका ?
चाहे जहाँ विचरें—रहें वे, मौज उनकी।
किंतु प्रार्थना है यही, रक्खें सुध सबकी,
और इस जन की भी संग-संग सबके।
हरि के हृदय हर, सोमनाथ भेटने
जा रही थी; किंतु मिले बहु जन मार्ग में,
दर्शन विना ही फिरे आ रहे थे दुःखी जो।
जैसे किसी वृक्ष पर पक्षी दूर-दूर से
उड़कर आश्रयार्थ आवें; किंतु देखके
लिपटा विशाल एक अजगर उससे,
भागें सब भीत होके। ज्ञात हुआ पूछा जो,
राजकर लगता है यात्रियों से, उसको
दे जो नहीं सकते हैं, लौटा दिए जाते हैं
दर्शन विना ही। यह सुनकर सहसा
बोली मैं, 'यहाँ भी क्या निपूता राजकर है ?'
शांति-मूर्ति आप भ्रू चढ़ावें नहीं, सोच लें,
राज का या कर का विशेषण निपूता है,
पुत्रवती शत्रु को भी ऐसा शाप देगी क्या ?
मेरे पुत्र ने भी कहा—'ईश पर भी यहाँ
राज्य ने किया है अधिकार मानो अपना !'
उस समुदाय में था गुप्तचर आपका।
वह कुछ इससे विवाद करने लगा।
घेर हम दोनो यहाँ लाए गए अंत में;
दीजे योग्य आज्ञा आप, आपकी विजय हो।"
क्षण-भर मौन रही रानी स्तब्ध भाव से,
मानो किसी भावी भावना से हुई भाविता।
बोली फिर नारी से कि "मुक्ति मिली तुमको,
किंतु यदि सच्ची तुम पुत्रवती माता हो,
तो मनाओ मेरा पुत्र पावे पुत्र वैसा ही।"
"देवि, मेरे बच्चे को जिन्होंने यों बचाया है,
प्रार्थना करूँगी क्यों न पुत्र-हेतु उनके ?
माँगूँगी प्रथम यही जाके सोमनाथ से।"
"किंतु अब सोमनाथ जाना नहीं होगा मा !"
"जाना क्यों न होगा लाल ?" बाल चुप ही रहा।
राजजननी ने अब देखा उसे ध्यान से।
सुंदर युवक बाल निर्भय खड़ा था यों,
गढ़कर मानो उसे विधि ने बनाया है।
बोली राजमाता, "भद्र, जाओगे न क्यों वहाँ ?"
"देवि, क्षमा चाहता हूँ, दर्शनार्थ जिसके
देके कुछ रौप्य-खंड आज्ञा-पत्र लेना हो,
नंदीश्वर है या वह बंदी तुच्छ नर का—
राजा या पुजारी फिर कोई वह क्यों न हो ?
मेरे चित्रकूट ही में मेरे राम आए थे,
मेरे शिवशंकर भी मेरे घर आयँगे।"
"देना नहीं होगा तुम्हें राजकर, उलटा
दूँगी पुरस्कार तुम्हें मैं सौ स्वर्ण-मुद्राएँ।"
"आपकी दया है देवि, किंतु मेरी माता ने
आप अपना ही सब द्रव्य किया दान है,
आपकी उदारता के भागी भूरि-भूरि हैं।"
"क्या तुम्हारे अर्थ कुछ रक्खा नहीं माता ने ?"
"देवि, मैंने रक्खा कुल-मान-धन इसका,
और पुरखों की धरा धन्य धान्य-जननी,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

द्रव्य तो हमारे महाराज के निधान में
इसके अपेक्षा-योग्य रक्षित यथेष्ट है,
पारस प्रसिद्ध है महोबे के महीपों का।"
"किंतु, जयसिंह के भी कोष में कमी नहीं,
चाहो तो बनाऊँ मैं सहेली तुम्हें अपनी;
पुत्र को तुम्हारे उच्च सैन्य पद दूँ अभी?
गर्व नहीं करती हूँ, मेरे जयसिंह की
समता करे जो आज, ऐसा कौन राजा है?
पृथिवी पृथुल, और पार्थिव अनेक हैं,
कोई देव और कोई दैत्य होंगे उनमें;
किंतु मनुष्यत्व मेरे पुत्र का ही भाग है;
क्षुद्र अमरत्व मृत-रूप है नरत्व का,
और प्रभुता तो असुरत्व में भी होती है।"
"जैसे न हों, थोड़े वही लाल ऐसी माई के!
सेवा में रहें जो आपके-से सेवनीयों की,
ईर्ष्या करने के योग्य उनका सुकृत है।
आकर्षण किंतु जन्म-भूमि का प्रबल है।
देवि, वह बंधन भी है संबंध सबका।"
"किंतु यह देश तो है ऐसा, जहाँ व्रज को
छोड़के तुम्हारे भगवान भी पधारे थे!"
"देवि, वे हमारे ही नहीं थे, आपके भी थे!
मानती हूँ यह भी मैं, बाहर निकलके
व्रज के गुपाल द्वारका के धनी होते हैं।
होती घर बैठने से उन्नति नहीं कभी।
विश्व परिवार है उदार वृत्तवालों का।
राम की अयोध्या सदा राम के ही साथ है।
तो भी देवि, सेवाएँ हमारी, जो नगण्य हैं,
अर्पित उन्हीं के लिये हो चुकी हैं पूर्व ही,
पीढ़ियों से पा रहे हैं वृत्ति हम जिनकी।
फिर भी सदैव शुभ कामना करूँगी मैं
आपकी, न भूलूँगी कदापि कृपा-करुणा।
सर्व सुख पावें महाराज पुत्र आपके;
हाथ जोड़ माँगूँगी यही मैं सोमनाथ से।"
बोली फिर पुत्र को निहार वह नारी यों—
"सोमनाथ जाना क्यों न होगा लाल, विभु तो
विश्व-भर में हैं व्याप्त, किंतु किसी क्षेत्र का
उनके प्रभाव से प्रताप बढ़ जाता है,
जाते हैं उसे ही हम मस्तक झुकाने को।
सबमें रमे हैं राम, तदपि अयोध्या में,
चित्रकूट, पंचवटी और रामेश्वर में
उनके चरित्र हमें करते पवित्र हैं।
ऐसे शुभ स्थानों का मिला है भार जिनको,
वे भी पूजनीय हैं हमारे धन्य सुकृती।
कर कहो, शुल्क कहो, भेट कहो, उनको
यदि हम दे सकें, तो देंगे नम्र भाव से।
शिव के लिये ही सोमनाथ नहीं जाती मैं,
वे तो हैं विराजे सदा मेरे ही शिवाले में।
उनके उपासकों के भावों की विभूति को
भेटने मैं जा रही हूँ भेटने को लालसा;
आते खजुराहो यथा आर्य, बौद्ध, जैन हैं।
तर्क-बुद्धि से ही सब काम किए जाते हैं,
किंतु भगवान में तो श्रद्धा-भक्ति ही भली;
नास्तिकों के हेतु लोष्ट-मात्र जो है, उसमें
पाती भगवान को है भावुकों की भावना।
मानिए तो शंकर हैं, कंकर हैं अन्यथा।"
बोला हँस बाल—"मा, तुम्हें जो मनःपूत हो,
बाधा नहीं देगा कभी मेरा तर्क उसमें;
जो तुम्हारी इच्छा।" तब राजमाता बोली यों—

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"किंतु अब रात हुई, मेरे ही अतिथि हो,
मैं भी जा रही हूँ सोमनाथ, साथ चलना।"
मस्तक झुकाया उन्हें माता और पुत्र ने,
और पहुँचाए गए दोनो एक डेरे में,
पाके राजभोग वहाँ सोए नींद सुख की।
किंतु उस रात राजमाता नहीं सो सकीं,
हो सकीं न स्वस्थ वे विचारों के प्रवाह में!
लौटा दिया भोजन का थाल बिना खाए ही,
पीकर रहीं वे एक पात्र जल-मात्र ही।
था मुंजाल मंत्री साथ, पूछा जब उसने
उनसे अभोजन का हेतु तब बोलीं वे—
"कैसे वह पाप-अन्न खाऊँ अब और मैं,
ऐसे पाप-कर से कमाते तुम हो जिसे?"
"पाप-कर कैसे देवि, यात्रियों को कितनी
सुविधा सयत्न दिन-रात हम देते हैं!"
"साधु-साधु! सुविधा क्या साधारण? तुम तो
अपनी अवनि पर, अपने गगन के
नीचे उन्हें आश्रय दे अपने पवन में
साँस लेने देकर न केवल जिलाते हो,
अपने महेश से भी उनको मिलाते हो!
प्रस्तुत हों लोग कुछ और तुम्हें देने को
तो तुम न-जाने और क्या-क्या सुविधा न दो!
देव, विप्र, वणिक तुम्हारे सब उनसे
पाते हैं यथेष्ट पूजा, दान, लाभ, फिर क्यों
कोरे रह जाओ तुम्हीं करके भी इतना!
ओरे दीन मानवो, अकिंचन ओ साधुओ,
लौट जाओ, तुमको कहीं भी ठौर है नहीं,
भेट गए-हेतु कुछ गाँठ में नहीं है तो
हर के यहाँ भी सुनवाई बस हो चुकी!
जानती थी मैं कि मेरे राज्य-भर में कहीं
कोई अनरीति नहीं और इसी हेतु मैं
करती थी शांतिमयी मृत्यु की ही कामना,
जाऊँ सुनिश्चित ससंतोष जहाँ जाना है।
किंतु यह तो दिए के नीचे ही अँधेरा है!"
"श्रीकौटिल्य ने भी निज 'अर्थ-शास्त्र' ग्रंथ में
पूर्ण प्रतिपादन किया है तीर्थ-कर का।"
"श्रीकौटिल्य तो थे राजनीतिक ही सर्वथा,
किंतु धर्म-यात्रा करने को जा रही हूँ मैं।"
"तो जो चाहिए सो देवि, आज्ञा मुझे दीजिए,
पालन करूँ मैं, किंतु प्रार्थना है इतनी
कर को जो 'बलि' कहते हैं, सो यथार्थ है,
बलि है सदैव बलि, कर है कठिन ही,
सहज कहीं भी उसे देते नहीं लोग हैं।"
"तब तो जहाँ-तहाँ न लेना उसे चाहिए,
डाकिनी नहीं है राजनीति, वह धात्री है,
डाइन भी एक घर छोड़ चली जाती है,
किंतु आज्ञा देना, यह मेरा नहीं राजा का
काम है, भले ही उसे सम्मति मैं दे सकूँ।"
"आप तो हैं राजप्रसू, आपका निदेश तो
राजा भी करेंगे शिरोधार्य, आप कृपया
भोजन न छोड़ें, अहा! अन्नमय प्राण हैं।"
बोली हँस देवी—"आत्मघातिनी न हूँगी मैं,
जानो उपवास इसे, चारों ओर चित्त के
कूड़ा और कर्कट इकट्ठा जब होता है,
तब जठराग्नि की सहायता से उसको
दग्ध कर आत्म-शुद्धि पाता उपवासी है—
साधारण अग्नि में ज्यों सोना शुद्ध होता है।
जानती हूँ, जो कुछ करूँगी, जयसिंह को

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

होगा शिरोधार्य वह, किंतु हम सबको
मान्य हैं स्वतंत्र अधिकार सदा सबके।
मेरी गोद में है सदा मेरा पुत्र राजा भी,
किंतु मेरा राजा वही मेरे सिर-माथे है !
जब युवराज है बनाता पिता पुत्र को,
बनता है आप तब छत्रधर उसका।
"एक माता-पुत्र यहाँ मेरे दो अतिथि हैं,
उनका प्रबंध कर देना, सोमनाथ की
यात्रा सब भाँति शांति-सौख्यकर हो उन्हें,
सुंदर सिरोही शस्त्र-वस्त्र मेरी ओर से
देना पुरस्कार उस क्षत्रिय-कुमार को,
जाऊँगी अभी मैं लौट।"
"दर्शन किए बिना ?"
"किसके ? तुम्हारी उस पत्थर की पिंडी के,
जिसको दिखाकर कमाते तुम लाखों हो ?
मंदिर का द्वार जो खुलेगा सबके लिये,
होगी तभी मेरी वहाँ विश्वंभर-भावना।"
लौट गई राजमाता प्रातःकाल-पूर्व ही
रथ में विराज, शत सैनिकाएँ संग ले ;
पीछे रही अन्य सेना, कोलाहल आगे था।
पाके वीर-नारियों का गुल्फ-स्पर्श हींसके
ग्रीवा-भंग-पूर्वक तुरंग चले नाचते,
देते हुए ताल लय बाँध टाप-थापों से।
मानो उड़ जाते अश्व, यदि गज-शुण्डों-सी
दो-दो ऊरुओं से कसे होतीं वे न उनको !
हाथों में विशाल शूल चमचम होते थे,
भालों पर भृकुटि-सुचाप चढ़े आप थे,
दमक रहे थे मुख-दर्पण ज्यों धूप में,
देख सकता था कौन आँखवाला सामने ?
झनन-झनन नाद हो रहा था रथ का !
किंतु जयसिंह मिला बीच में ही माता से,
आ रहा था आप भी जो पीछे चल उनके।
दोनों दल एक हुए मिल दो प्रवाह से ;
युवक उदार वीर उच्च उदयाद्रि के
शिखर-समान, चित्रभानु-सा किरीट था,
सहज प्रसन्न-मुख, लोचन विशाल थे,
भाल पर भौंहें दृढ़ निश्चय की रेखा-सी,
लाल-लाल होंठों पर सूक्ष्म मसि-लेखा थी।
किंतु पड़ती थी दृष्टि जाके वहीं उलटी,
हेतु हो रहा था आप डीठ का डिठोना ही !
पीन वृष-स्कंध, क्षीण सिंह-कटि, साहसी,
दीर्घ हस्ति-हस्त, मानो पशुता के गुण्य की
देव-साधना का वह पुण्य नर-क्षेत्र था !
सत्वर ससंभ्रम बढ़ा यों वीर माता की
ओर उत्तरीय फहराता हुआ अपना,
जैसे लता-क्रोड़ पर फैलाकर पत्रों को
टूटे कलकंठ ! मा ने उस नत होते को
बल से समेट झट छाती से लगा लिया।
"दर्शन करूँगा माँ, तुम्हारे साथ, सोच के
आ रहा था, किंतु तुम लौटी हुई जा रहीं !"
"वत्स, मुझे साहस न हो सका कि जाऊँ मैं
भीम विरूपाक्ष के समक्ष, विश्वनाथ वे,
विश्व के लिये है खुला द्वार सदा उनका,
किंतु हम द्वारी उन्हें देते नहीं घुसने,
घूँस नहीं पाते हाय ! जिन हतभागों से।
देव-कर राज्य का चुका जो नहीं सकते,
दर्शन बिना ही उन्हें लौटा दिया जाता है।
रोते हैं, कलपते हैं, कोसते हैं वे हमें,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

होते हैं निराश।" भर आए अश्रु अंबा के !
"आहा ! यह बात है ? परंतु अपराध की
अंब, क्षमा माँगनी पड़ेगी हमें, अन्यथा
और भी बढ़ेगा वह, लौट चलो, चिंता क्या ?
जो हैं आशुतोष, क्षमा कर देंगे वे हमें।"
लौटाकर माँ को वीर बाहुलोड़ पहुँचा।
पंचकुल लोगों से मँगाया वहाँ उसने
कर का निदेश-पत्र और लेखा उसका
देखा, उससे है प्रतिवर्ष लाभ लाखों का।
फाड़ फेका तो भी वह पत्र मातृभक्त ने,
माँ के चरणों पर चढ़ाया पत्र-पुष्प-सा !

गद्‌गद हो माँ ने उसे छाती से लगा लिया,
और कहा—"पूर्ति कैसे होगी राजकोष की ?"
"राजकोष रिक्त हो, तो चिंता नहीं मुझको,
राज्य में प्रजा की सुख-सिद्धि, निधि-वृद्धि हो ;
पुष्ट प्रजा-जन ही हैं सच्चे धन राजा के।"
"हर-हर महादेव ! जै-जै राजमाता की !"
गूँज उठा सोमनाथ-मंदिर सुनाद से।
पाके कर-बाधा-मुक्ति धनियों के साथ ही
दर्शन अकिंचनों ने पाया और गाया यों—
"हर-हर महादेव ! जै-जै राजमाता की !"

[क्रमशः

प्रकाशित हो रहा है ! प्रकाशित हो रहा है !!

वर्तमान हिंदी का सर्वोत्कृष्ट महाकाव्य !

साकेत

यह अनूठा महाकाव्य हिंदी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि श्रीमैथिलीशरणजी गुप्त की चमत्कार-पूर्ण लेखनी से लिखा गया है। यह ग्रंथ उनकी आजीवन साधना का फल है। पुस्तकाकार प्रकाशित होने के पहले ही यह सहस्रों हिंदी-प्रेमियों का हृदय मुग्ध कर चुका है। आज से चौदह-पंद्रह वर्ष पूर्व इसके कुछ अंश "सरस्वती" में प्रकाशित होते समय सर्वत्र इसकी चर्चा हो चुकी है। तब से हिंदी के साहित्य-सेवी विद्वान् बड़ी उत्कंठा के साथ इसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। भाव, भाषा, माधुर्य, ओज और विषय, सभी दृष्टियों से यह अभूतपूर्व है। हमारा विश्वास है कि गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी के श्रीरामचरितमानस के बाद रामचरित को लेकर आज तक किसी ने ऐसे उच्चकोटि का काव्य नहीं लिखा। इस ग्रंथ से हिंदी-भाषा का मस्तक ऊँचा होगा। इस प्रकार के महत्त्व-पूर्ण ग्रंथ शताब्दियों में एकआध बार ही अवतरित होते हैं। कुछ समय के बाद "साकेत" की यह प्रथमावृत्ति एक मूल्यवान् ऐतिहासिक वस्तु हो जायगी और इसकी एक-एक प्रति के लिये लोग सैकड़ों रुपए खर्च करने के लिये तैयार होंगे। गुप्तजी की 'भारत-भारती', 'जयद्रथ-वध' और 'हिंदू' नामक पुस्तकों के पहले संस्करण महीने दो-दो महीने में ही समाप्त हो गए थे। अतएव इस अपूर्व ग्रंथ के लिये आप आज ही अपना आर्डर हमारे पास नोट करा दीजिए, जिसमें आप इसे प्रकाशित होते ही निश्चय रूप से प्राप्त कर सकें। ग्रंथ ३२ पौंड के सुंदर एंटिक पेपर पर छप रहा है। पृष्ठ-संख्या ४०० से अधिक, सुंदर जिल्द, मूल्य केवल तीन रुपए। पता:—

प्रबंधक साहित्य-सदन, चिरगाँव (झाँसी)

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अप्सरा

(सामाजिक उपन्यास)

[श्रीयुत पं० सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"]

(१)

इडन-गार्डन में, कृत्रिम सरोवर के तट पर, एक कुंज के बीच, शाम सात बजे के क़रीब, जलते हुए एक प्रकाश-स्तंभ के नीचे पड़ी हुई एक कुर्सी पर, सत्रह साल की चंपे की कली-सी एक किशोरी बैठी हुई, सरोवर की लहरों पर चमकती हुई चाँद की किरणें और जल पर खुले हुए, काँपते, बिजली की बत्तियों के कमल के फूल एकचित्त से देख रही थी। और दिनों से आज उसे कुछ देर हो गई थी। पर इसका उसे ख़याल न था।

युवती एकाएक चौंककर काँप उठी। उसी बेंच पर एक गोरा बिलकुल उससे सटकर बैठ गया। युवती एक बग़ल हट गई। फिर कुछ सोचकर, इधर-उधर देख, घबराई हुई, उठकर खड़ी हो गई। गोरे ने हाथ पकड़कर ज़बरन बेंच पर बैठा लिया। युवती चीख़ उठी।

बाग़ में उस समय इक्के-दुक्के आदमी रह गए थे। युवती ने इधर-उधर देखा, पर कोई नज़र न आया। भय से उसका कंठ भी रुक गया। अपने आदमियों को पुकारना चाहा, पर आवाज़ न निकली। गोरे ने उसे कसकर पकड़ लिया।

गोरा कुछ निश्छल प्रेम की बातें कह रहा था कि पीछे से किसी ने उसके कालर में उँगलियाँ घुसेड़ दीं, और गर्दन के पास कोट के साथ पकड़कर साहब को एक बित्ता बेंच से ऊपर उठा लिया, जैसे चूहे को बिल्ली। साहब के क़ब्ज़े से युवती छूट गई। साहब ने सर घुमाया। आगंतुक ने दूसरे हाथ से युवती की तरफ़ सर फेर दिया—"अब कैसी लगती है?"

साहब झपटकर खड़ा हो गया। युवक ने कालर छोड़ते हुए ज़ोर से सामने ठेल दिया। एक पेड़ के सहारे साहब सँभल गया, फिरकर उसने देखा, एक युवक अकेला खड़ा है। साहब को अपनी वीरता का ख़याल आया। "टुम पीछे से हमको पकड़ा" कहते-कहते साहब युवक की ओर लपका। "तो अभी दिल की मुराद पूरी नहीं हुई?" युवक तैयार हो गया। साहब को बाक्सिंग (घूँसेबाज़ी) का अभिमान था, युवक को कुश्ती का। साहब के वार करते ही युवक ने कलाई पकड़ ली, और वहीं से बाँधकर बहल्ले में दे मारा, छाती पर चढ़ बैठा, कई रद्दे कस दिए। साहब बेहोश हो गया। युवती खड़ी सविस्मय ताकती रही। युवक ने रुमाल भिगोकर साहब का मुँह पोछ दिया। फिर उसी को सर पर रख दिया। जेब से काग़ज़ निकाल बेंच के सहारे एक चिट्ठी लिखी, और साहब की ज़ेब में रख दी। फिर युवती से पूछा—"आपको कहाँ जाना है?"

"मेरी मोटर रास्ते पर खड़ी है। उस पर मेरा ड्राइवर और बूढ़ा अर्दली बैठा होगा। मैं हवाख़ोरी के लिये आई थी। आपने मेरी रक्षा की। मैं सदैव—सदैव आपकी कृतज्ञ रहूँगी।"

युवक ने सर झुका लिया। "आपका शुभ नाम?" युवती ने पूछा।

"नाम बतलाना अनावश्यक समझता हूँ। आप जल्द यहाँ से चली जायँ।"

युवक को कृतज्ञता की सजल दृष्टि से देखती हुई युवती चल दी। रुककर कुछ कहना चाहा, पर कह न सकी। युवती फ़ील्ड के फाटक की ओर चली, युवक हाईकोर्ट की तरफ़ चला गया। कुछ दूर जाने के बाद युवती फिर लौटी। युवक नज़र

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

से बाहर हो गया था। वहीं गई, और साहब की जेब से चिट्ठी निकालकर चुपचाप चली आई।

(२)

कनक धीरे-धीरे सोलहवें वर्ष के पहले चरण में आ पड़ी। अपार, अलौकिक सौंदर्य, एकांत में, कभी-कभी अपनी मनोहर रागिनी सुना जाता; वह कान लगा उसके अमृत-स्वर को सुनती; पान किया करती। अज्ञात एक अपूर्व आनंद का प्रवाह अंगों को आपाद-मस्तक नहला जाता, स्नेह की विद्युत्-लता काँप उठती। उस अपरिचित कारण की तलाश में विस्मय से आकाश की ओर ताककर रह जाती। कभी-कभी खिले हुए अंगों के स्नेह-भार में एक स्पर्श मिलता, जैसे अशरीर कोई उसकी आत्मा में प्रवेश कर रहा हो। उस गुदगुदी में उसके तमाम अंग काँपकर खिल उठते। अपनी देह के वृंत पर अपलक खिली हुई, ज्योत्स्ना के चंद्र-पुष्प की तरह, सौंदर्योज्ज्वल पारिजात की तरह एक अज्ञात प्रणय की वायु से डोल उठती। आँखों में प्रश्न फूट पड़ता, संसार के रहस्यों के प्रति विस्मय।

कनक गंधर्व-कुमारिका थी। उसकी माता सर्वेश्वरी बनारस की रहनेवाली थी। नृत्य-संगीत में वह भारत में प्रसिद्ध हो चुकी थी। बड़े-बड़े राजे-महाराजे जलसे में उसे बुलाते, उसकी बड़ी ख़ातिर करते थे। इस तरह सर्वेश्वरी ने अपार संपत्ति एकत्र कर ली थी। उसने कलकत्ता-बहूबाज़ार में आलीशान अपना एक ख़ास मकान बनवा लिया था, और व्यवसाय की वृद्धि के लिये, उपार्जन की सुविधा के विचार से, प्रायः वहीं रहती भी थी। सिर्फ़ बुढ़वा-मंगल के दिनों, तवायफ़ों तथा रईसों पर अपने नाम की मुहर मार्जित कर लेने के विचार से, काशी आया करती थी। वहाँ भी उसकी एक कोठी थी।

सर्वेश्वरी की इस अथाह संपत्ति की नाव पर एक-मात्र उसकी कन्या कनक ही।कर्णधार थी। इसलिये कनक में सब तरफ़ से ज्ञान का थोड़ा-थोड़ा प्रकाश भर देना भविष्य के सुख-पूर्वक निर्वाह के लिये, अपनी नाव खेने की सुविधा के लिये, उसने आवश्यक समझ लिया था। वह जानती थी, कनक अब कली नहीं, उसके अंगों के कुल दल खुल गए हैं, उसके हृदय के चक्र में चारो ओर के सौंदर्य का मधु भर गया है। पर उसका लक्ष्य उसकी शिक्षा की तरफ़ था। अभी तक उसने उसकी जातीय शिक्षा का भार अपने हाथों नहीं लिया। अभी दृष्टि से ही वह कनक को प्यार कर लेती, उपदेश दे देती थी। कार्यतः उसकी तरफ़ से अलग थी। कभी-कभी, जब व्यवसाय और व्यवसायियों से फ़ुर्सत मिलती, वह कुछ देर के लिये कनक को बुला लिया करती थी। और, हर तरफ़ से उसने कन्या के लिये स्वतंत्र प्रबंध कर रक्खा था। उसके पढ़ने का घर ही में इंतज़ाम कर दिया था। एक अँगरेज़-महिला, श्रीमती कैथरिन, तीन घंटे उसे पढ़ा जाया करती थीं। दो घंटे के लिये एक अध्यापक आया करते थे।

इस तरह वह शुभ्र-स्वच्छ निर्झरिणी विद्या के ज्योत्स्नालोक के भीतर से मुखर शब्द-कलरव करती हुई ज्ञान के समुद्र की ओर अबाध बह चली। हिंदी के अध्यापक उसे पढ़ाते हुए अपनी अर्थ-प्राप्ति की कलुषित कामना पर पश्चात्ताप करते, कुशाग्रबुद्धि शिष्या के भविष्य का पंकिल चित्र खींचते हुए मन-ही-मन सोचते, इसकी पढ़ाई ऊसर पर वर्षा है, तलवार में शान, नागिन का दूध पीना। इसका काटा हुआ एक क़दम भी नहीं चल सकता। पर नौकरी छोड़ने की चिंता-मात्र से व्याकुल हो उठते थे। उसकी अँगरेज़ी की आचार्या उसे बाइबिल पढ़ाती हुई, बड़ी एकाग्रता से उसे देखती और मन-ही-मन निश्चय करती थीं कि किसी दिन उसे प्रभु ईसा की शरण में लाकर कृतार्थ कर देंगी। कनक भी अँगरेज़ी में जैसी तेज़ थी, उन्हें अपनी सफलता पर ज़रा भी द्विधा न थी। उसकी माता सोचती, इसके हृदय को जिन तारों से बाँधकर मैं इसे सजाऊँगी, उनके स्वर-झंकार से एक दिन संसार के लोग चकित हो जायँगे; इसके द्वारा अप्सरा-लोक में एक नया ही

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

परिवर्तन कर दूँगी, और वह केवल एक ही अंग में नहीं, चारो तरफ़; मकान के सभी शून्य छिद्रों को जैसे प्रकाश और वायु से भरते रहते हैं, आत्मा का एक ही समुद्र जैसे सभी प्रवाहों का चरम परिणाम है।

इस समय कनक अपनी सुगंध से आप ही आश्चर्य-चकित हो रही थी। अपने बालपन की बालिका-तन्वी कवयित्री को चारो ओर केवल कल्पना का आलोक देख पड़ता था, उसने अभी उसकी किरण-तंतुओं से जाल बुनना नहीं सीखा था। काव्य था पर शब्द-रचना नहीं, जैसे उस प्रकाश में उसकी तमाम प्रगतियाँ फँस गई हों, जैसे इस अवरोध से बाहर निकलने की वह राह न जानती हो। यही उसका सबसे बड़ा सौंदर्य, उसमें नैसर्गिक एक अतुल विभूति थी। संसार के कुल मनुष्य और वस्तुएँ उस-की दृष्टि में मरीचिका के ज्योति-चित्रों की तरह आतीं, अपने यथार्थ स्वरूप में नहीं।

कनक की दिन-चर्या बहुत साधारण थी। दो दासियाँ उसकी देख-रेख के लिये थीं। पर उन्हें प्रतिदिन दो बार उसे नहला देने और तीन-चार बार वस्त्र बदलवा देने के इंतज़ाम में ही जो कुछ थोड़ा-सा काम था, बाक़ी समय यों ही कटता था। कुछ समय साड़ियाँ चुनने में लग जाता था। कनक प्रतिदिन शाम को मोटर पर क़िले के मैदान की तरफ़ निकलती थी। ड्राइवर की बग़ल में एक अर्दली बैठता था। पीछे की सीट पर अकेली कनक। कनक प्रायः आभरण नहीं पहनती थी। कभी-कभी हाथों में सोने की चूड़ियाँ डाल लेती थी, गले में एक हीरे की कनी का जड़ाऊ हार; कानों में हीरे के दो चंपे पड़े रहते थे। संध्या-समय, सात बजे के बाद से दस तक, और दिन में भी इसी तरह सात से दस तक पढ़ती थी। भोजन-पान में बिलकुल सादगी, पर पुष्टिकारक भोजन उसे दिया जाता था।

(३)

धीरे-धीरे, ऋतुओं के सोने के पंख फड़का, एक साल और उड़ गया। मन के खिलते हुए प्रकाश के अनेक झरने उसकी कमल-सी आँखों से होकर बह गए। पर अब उसके मुख से आश्चर्य की जगह ज्ञान की मुद्रा चित्रित हो जाती, वह स्वयं अब अपने भविष्य के पट पर तूलिका चला लेती है। साल-भर से माता के पास उसे नृत्य और संगीत की शिक्षा मिल रही है। इधर उसकी उन्नति के चपल क्रम को देख सर्वेश्वरी पहले की कल्पना की अपेक्षा शिक्षा के पथ पर उसे और दूर तक ले चलने का विचार करने लगी, और गंधर्व-जाति के छूटे हुए पूर्व-गौरव को स्पर्द्धा से प्राप्त करने के लिये उसे उत्साह भी दिया करती। कनक अपलक ताकती हुई माता के वाक्यों को सप्रमाण सिद्ध करने की मन-ही-मन निश्चय करती, प्रतिज्ञाएँ करती। माता ने उसे सिखलाया—"किसी को प्यार मत करना। हमारे लिये प्यार करना आत्मा की कमज़ोरी है। यह हमारा धर्म नहीं।"

कनक ने अस्फुट वाणी में मन-ही-मन प्रतिज्ञा की—"किसी को प्यार नहीं करूँगी। यह हमारे लिये आत्मा की कमज़ोरी है, धर्म नहीं।"

माता ने कहा—"संसार के और लोग भीतर से प्यार करते हैं, हम लोग बाहर से।"

कनक ने निश्चय किया—"और लोग भीतर प्यार करते हैं, मैं बाहर से करूँगी।"

माता ने कहा—"हमारी जैसी स्थिति है, इस पर ठहरकर भी हम लोक में वैसी ही विभूति, वैसा ही ऐश्वर्य, वैसा ही सम्मान अपनी कला के प्रदर्शन से प्राप्त कर सकती हैं; साथ ही, जिस आत्मा को और लोग अपने सर्वस्व का त्याग कर प्राप्त करते हैं, उसे भी हम लोग अपनी कला के उत्कर्ष के द्वारा, उसी में, प्राप्त करती हैं; उसी में लीन होना हमारी मुक्ति है। जो आत्मा सभी सृष्टियों की सूक्ष्मतम तंतु की तरह उनके प्राणों के प्रियतम संगीत को झंकृत करती, जिसे लोग बाहर के कुल संबंधों को छोड़, ध्यान के द्वारा तन्मय हो प्राप्त करते, उसे हम अपने बाह्य अंग

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के तारों से झंकृत कर, मूर्ति में जगा लेती, फिर अपने जलते हुए प्राणों का गरल, उसी शिव को, मिलकर पिला देती हैं। हमारी मुक्ति इस साधना के द्वारा होती है। इसीलिये ऐश्वर्य पर हमारा सदा ही अधिकार रहता है। हम बाहर से जितनी सुंदर, भीतर से उतनी ही कठोर इसीलिये हैं। और-और लोग बाहर से कठोर पर भीतर से कोमल हुआ करते हैं, इसीलिये वे हमें पहचान नहीं पाते, और, अपने सर्वस्व तक का दान कर, हमें पराजित करना चाहते हैं, हमारे प्रेम को प्राप्त कर, जिस पर केवल हमारे कौशल के शिव का ही एकाधिकार है। जब हम लोग अपने इस धर्म के गर्त से, मौखरिए की रागिनी सुन मुग्ध हुई नागिन की तरह, निकल पड़ती हैं, तब हमारे महत्त्व के पति भी हमें कलंकित अहल्या की तरह शाप से बाँध, पतित कर चले जाते हैं; हम अपनी स्वतंत्रता के सुखमय विहार को छोड़ मौखरिए की संकीर्ण टोकरी में बंद हो जाती हैं, फिर वही हमें इच्छानुसार नचाता, अपनी स्वतंत्र इच्छा के वश में हमें ग़ुलाम बना लेता है। अपनी बुनियाद पर इमारत की तरह तुम्हें अटल रहना होगा, नहीं तो फिर अपनी स्थिति से ढह जाओगी, बह जाओगी।"

कनक के मन के होंठ काँपकर रह गए—"अपनी बुनियाद पर मैं इमारत की तरह अटल रहूँगी।"

(४)

अख़बारों में बड़े-बड़े अक्षरों में सूचना निकली—

"कोहनूर थिएटर में"

शकुंतला ! शकुंतला !! शकुंतला !!!

शकुंतला—मिस कनक

दुष्यंत—राजकुमार वर्मा एम्० ए०

प्रशंसा में और भी बड़े-बड़े आकर्षक शब्द लिखे हुए थे। थिएटर के शौक़ीनों को हाथ बढ़ाकर स्वर्ग मिला। वे लोग थिएटरों का तमाम इतिहास कंठाग्र रखते थे, जितने ऐक्टर (अभिनेता) और मशहूर बड़ी-छोटी जितनी भी ऐक्ट्रेस (अभिनेत्रियाँ) थीं, उन्हें सबके नाम मालूम थे, सबकी सूरतें पहचानते थे। पर यह मिस कनक अपरिचित थी। विज्ञापन के नीचे कनक की तारीफ़ भी ख़ूब की गई थी। लोग टिकट ख़रीदने के लिये उतावले हो गए। टिकट-घर के सामने अपार भीड़ लग गई, जैसे आदमियों का सागर तरंगित हो रहा हो। एक-एक झोंके से बाढ़ के पानी की तरह वह जन-समुद्र इधर-से-उधर डोल उठता था। बाक्स, आर्केस्ट्रा, फ़र्स्ट क्लास में भी और-और दिनों से ज़्यादा भीड़ थी।

विजयपुर के कुँवर साहब भी उन दिनों कलकत्ते की सैर कर रहे थे। इन्हें स्टेट से छः हज़ार मासिक जेब-ख़र्च के लिये मिलता था। वह सब नई रोशनी, नए फ़ैशन में फूँककर ताप लेते थे। आपने भी एक बाक्स किराए कर लिया। थिएटर की मिसों की प्रायः आपकी कोठी में दावत होती थी, और तरह-तरह के तोहफ़े आप उनके मकान पहुँचा दिया करते थे। संगीत का आपको अज़हद शौक़ था। ख़ुद भी गाते थे। पर आवाज़ जैसे ब्रह्मभोज के पश्चात् कराह रगड़ने की। लोग इस पर भी कहते थे, क्या मँजी हुई आवाज़ है! आपको भी मिस कनक का पता मालूम न था। इससे और उतावले हो रहे थे। जैसे ससुराल जा रहे हों, और स्टेशन के पास गाड़ी पहुँच गई हो।

देखते-देखते संध्या के छः का समय हुआ। थिएटर-गेट के सामने पान खाते, सिगरेट पीते, हँसी-मज़ाक़ करते हुए बड़ी-बड़ी तोंदवाले सेठ, छड़ियाँ चमकाते, सुनहली डंडी का चश्मा लगाए हुए कॉलेज के छोकड़े, अँगरेज़ी अख़बारों की एक-एक प्रति लिए हुए हिंदी के संपादक, सहकारियों पर अपने अपार ज्ञान का बुख़ार उतारते, पहले ही से कला की कसौटी पर अभिनय की परीक्षा करने की प्रतिज्ञा करते हुए टहल रहे थे। इन सब बाहरी दिखलावों के अंदर सबके मन की आँखें मिसों के आगमन की प्रतीक्षा कर रही थीं; उनके चकित दर्शन, चंचल चलन को देखकर चरितार्थ होना चाहती थीं। जहाँ बड़े-बड़े आदमियों का यह हाल

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

था, वहाँ थर्ड क्लास तिमंज़िले पर, फटी-हालत, नंगे-बदन, रूखी-सूरत बैठे हुए बीड़ी-सिगरेट के धुएँ से छत भर देनेवाले, मौक़े-बेमौक़े तालियाँ पीटते हुए इनकोर-इनकोर के अप्रतिहत शब्द से कानों के पर्दे पार कर देनेवाले, अशिष्ट, मुँह-फट, कुली-क्लास के लोगों का बयान ही क्या ? वहीं इन धन-कुबेरों और संवाद-पत्रों के सर्वज्ञों, वकीलों, डॉक्टरों, प्रोफ़ेसरों और विद्यार्थियों के साथ ये लोग भी कला के प्रेम में साम्यवाद के अधिकारी हो रहे थे ।

देखते-देखते एक लॉरी आई । लोगों की निगाह तमाम बाधाओं को चीरती हुई, हवा की गोली की तरह, निशाने पर, जा बैठी। पर, उस समय, गाड़ी से उतरने पर, वे जितनी, मिस डली, मिस कुंदन, मिस हीरा, पन्ना, मोती, पुखराज, रमा, क्षमा, शांति, शोभा, किशमिस और अंगूर बालाएँ थीं, जिनमें किसी ने हिरन की चाल दिखाई, किसी ने मोर की, किसी ने हस्तिनी की, किसी ने नागिन की, सब-की-सब जैसे डामर से पुती, आफ़्रिका से हाल ही आई हुई, प्रोफ़ेसर डोवर या मिस्टर चटर्जी की सिद्ध की हुई, हिंदोस्तान की आदिम जाति की ही कन्याएँ और बहनें थीं, और ये सब इतने बड़े-बड़े लोग इन्हें ही कला की दृष्टि से देख रहे थे । कोई छः फ़ीट ऊँची, तिस पर नाक नदारद ; कोई डेढ़ ही हाथ की छटंकी, पर होंठ आँखों की उपमा लिए हुए आकर्ण-विस्तृत ; किसी की साढ़े तीन हाथ की लंबाई-चौड़ाई में बदली हुई—एक-एक क़दम पर पृथ्वी काँप उठती, किसी की आँखें मक्खियों-सी छोटी और गालों में तबले मढ़े हुए ; किसी की उम्र का पता नहीं, शायद सन् ५७ के ग़दर में मिस्टर हडसन को गोद खिलाया हो, इस पर जैसी दुलकी चाल सबने दिखाई, जैसे घुल-घुल में पैर पड़ रहे हों। जनता गेट से उनके भीतर चले जाने के कुछ सेकेंड तक तृष्णा की विस्तृत अपार आँखों से कला के उस अप्राप्य अमृत का पान करती रही ।

कुछ देर के बाद एक प्राइवेट मोटर आई । बिना किसी इंगित के ही जनता की क्षुब्ध तरंग शांत हो गई, सब लोगों के अंग रूप की तड़ित् से प्रहत निश्चेष्ट रह गए । यह सर्वेश्वरी का हाथ पकड़े हुए कनक मोटर से उतर रही थी । सबकी आँखों के संध्याकाश में जैसे सुंदर इंद्र-धनुष अंकित हो गया। सबने देखा, मूर्तिमती प्रभात की किरण है । उस दिन घर से अपने मन के अनुसार सर्वेश्वरी उसे सजा-कर लाई थी । धानी रंग की रेशमी साड़ी पहने हुए, हाथों में सोने की, रोशनी से चमकती हुई चूड़ियाँ, गले में हीरे का हार, कानों में चंपा, रेशमी फ़ीते से बँधे, तरंगित खुले लंबे बाल, स्वस्थ सुंदर देह, कान तक खिंची, किसी की खोज-सी करती हुई बड़ी-बड़ी आँखें, काले रंग से कुछ स्याहकर तिरछाई हुई भौंहें, पैरों में लेडी स्टाकिंग और सुनहले रंग के जूते । लोग स्टेज की अभिनेत्री शकुंतला को मिस कनक के रूप में अपलक नेत्रों से देख रहे थे । लोगों के मनोभावों को समझकर सर्वेश्वरी देर कर रही थी । मोटर से सामान उतरवाने, ड्राइवर को मोटर लाने का वक़्त बतलाने, नौकर को कुछ भूला हुआ सामान मकान से ले आने की आज्ञा देने में लगी रही । फिर धीरे-धीरे कनक का हाथ पकड़े हुए, अपने अर्दली के साथ, ग्रीन-रूम की तरफ़ चली गई । लोग जैसे स्वप्न देखकर जागे । फिर चहल-पहल मच गई । लोग मुक्त कंठ से प्रशंसा करने लगे । धन-कुबेर लोग दूसरे परिचितों से आँख के इशारे बतलाने लगे । इन्हीं लोगों में विजयपुर के कुँवर साहब भी थे । और न-जाने कौन-कौन-से राजे-महाराजे सौंदर्य के समुद्र से अतंद्र अम्लान निकली हुई इस अप्सरा की कृपा-दृष्टि के भिक्षुक हो रहे थे । जिस समय कनक खड़ी थी, कुँवर साहब अपनी आँखों से नहीं, ख़ुर्दबीन की आँखों से उसके बृहत् रूप को देख, रूप के अंश में अपने को सबसे बड़ा हक़दार साबित कर रहे थे, और इस कार्य में उन्हें संकोच नहीं हुआ । कनक उस समय मुस्किरा रही थी । भीड़ तितर-बितर होने लगी । अभिनय के लिये पौन घंटा और रह गया ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लोग पानी-पान-सोडा-लेमनेड आदि खाने-पीने में लग गए। कुछ लोग बीड़ियाँ फूँकते हुए खुली असभ्य भाषा में कनक की आलोचना कर रहे थे।

ग्रीन-रूम में अभिनेत्रियाँ सज रही थीं। कनक नौकर नहीं थी, उसकी मा भी नौकर नहीं थी। उसकी मा उसे स्टेज पर, पूर्णिमा के चाँद की तरह, एक ही रात में, लोगों की दृष्टि में खोलकर प्रसिद्ध कर देना उचित समझती थी। थिएटर के मालिक पर उसका काफ़ी प्रभाव था। साल में कई बार उसी स्टेज पर टिकट ज़्यादा बिकने के लोभ से थिएटर के मालिक उसे गाने तथा अभिनय करने के लिये बुलाते थे। वह जिस रोज़ उतरती, रंग-मंच दर्शक-मंडली से भर जाता था। कनक रिहर्सल में कभी नहीं गई, यह भार उसकी माता ने ले लिया था।

कनक को शकुंतला का वेश पहनाया जाने लगा। उसके कपड़े उतार दिए गए। एक साधारण-सा वस्त्र वल्कल की जगह पहना दिया गया, गले में फूलों का हार। बाल अच्छी तरह खोल दिए गए। उसकी सखियाँ अनसूया और प्रियंवदा भी सज गईं। उधर राजकुमार को दुष्यंत का वेश पहनाया जाने लगा। और-और पात्र भी सजाकर तैयार कर दिए गए।

राजकुमार भी कंपनी में नौकर नहीं था। वह शौक़िया बड़ी-बड़ी कंपनियों में उतरकर प्रधान पार्ट किया करता था। इसका कारण वह ख़ुद मित्रों से बयान किया करता। वह कहा करता था, हिंदी के स्टेज पर लोग ठीक-ठीक हिंदी-उच्चारण नहीं करते, वे उर्दू के उच्चारण की नक़ल करते हैं, इससे हिंदी का उच्चारण बिगड़ जाता है, हिंदी के उच्चारण में जीभ की स्वतंत्र गति होती है, यह हिंदी ही की शिक्षा के द्वारा दुरुस्त होगी। कभी-कभी हिंदी में वह स्वयं नाटक लिखा करता। यह शकुंतला-नाटक उसी का लिखा हुआ था। हिंदी की शुभ-कामना से प्रेरित हो, उसने विवाह भी नहीं किया। इससे उसके घरवाले उस पर नाराज़ हो गए थे। पर उसने परवा नहीं की। कलकत्ता सिटी-कॉलेज में वह हिंदी का प्रोफ़ेसर है। शरीर जैसा हृष्ट-पुष्ट, वैसा ही वह सुंदर और बलिष्ठ भी है। कलकत्ते की साहित्य-समितियाँ उसे अच्छी तरह पहचानती हैं।

तीसरी घंटी बजी। लोगों की उत्सुक आँखें स्टेज की ओर देखने लगीं। पहले बालिकाओं ने स्वागत-संगीत गाया। पश्चात् नाटक शुरू हुआ। पहले-ही-पहल कण्व के तपोवन में शकुंतला के दर्शन कर दर्शकों की आँखें तृप्ति से खुल गईं। आश्रम के उपवन की वह खिली हुई कली अपने अंगों की सुरभि से कंपित, दर्शकों के हृदय को, संगीत की एक मधुर मीड़ की तरह काँपकर उठती हुई देह की दिव्य द्युति से, प्रसन्न-पुलकित कर रही थी। जिधर-जिधर चपल तरंग की तरह डोलती, फिरती, लोगों की अचंचल अपलक दृष्टि, उधर-ही-उधर, उस छवि की स्वर्ण-किरण से लगी रहती। एक ही प्रत्यंग-संचालन से उसने लोगों पर जादू डाल दिया। सब उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे। उसे गौरव-पूर्ण आश्चर्य से देखते लगे।

महाराज दुष्यंत का प्रवेश होते ही, उन्हें देखते ही कनक चौंक उठी। दुष्यंत भी अपनी तमाम एकाग्रता से उसे अविस्मय देखते रहे। यह मौन अभिनय लोगों के मन में सत्य के दुष्यंत और शकुंतला की झलक भर गया। कनक मुस्किराई। दोनो ने दोनो को पहचान लिया।

उनके आभ्यंतर भावों की प्रसन्नता की छाया दर्शकों पर भी पड़ी। लोगों ने कहा—बहुत स्वाभाविक अभिनय हो रहा है। क्रमशः आलाप-परिचय, रंग-रस-प्रियता आदि अभिनीत होते रहे। रंगशाला में बिलकुल सन्नाटा था, जैसे सब लोग निर्वाक्, कोई मनोहर स्वप्न देख रहे हों। गांधर्व रीति से विवाह होने लगा। लोग तालियाँ पीटते, सीटियाँ बजाते रहे। शकुंतला ने अपनी माला दुष्यंत को पहना दी; दुष्यंत ने अपनी, शकुंतला को। स्टेज खिल गया।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ठीक इसी समय, बाहर से भीड़ को ठेलते, चेकरों की परवा न करते हुए, कुछ कांस्टेब्लों को साथ ले, पुलिस के दारोग़ाजी, बड़ी गंभीरता से, स्टेज के सामने, आ धमके। लोग विस्मय की दृष्टि से एक दूसरा नाटक देखने लगे। दारोग़ाजी ने मैनेजर को पुकारकर कहा—"यहाँ, इस नाटक-मंडली में, राजकुमार वर्मा कौन है? उसके नाम वारंट है, हम उसे गिरफ़्तार करेंगे।"

तमाम स्टेज थर्रा गया। उसी समय लोगों ने देखा, राजकुमार वर्मा, दुष्यंत की ही सम्राट्-चाल से, निश्शंक, वन्य दृश्य-पट के किनारे से, स्टेज के बिलकुल सामने, आकर खड़ा हो गया, और वीर की दृष्टि से दारोग़ा को देखने लगा। वह दृष्टि कह रही थी, हमें गिरफ़्तार होने का बिलकुल ख़ौफ़ नहीं। शकुंतला-कनक भी अभिनय को सार्थक करती हुई, किनारे से चलकर अपने प्रिय पति के पास आ, हाथ पकड़, दारोग़ा को निस्संकोच दृप्त दृष्टि से देखने लगी। कनक को देखते ही शहद की मक्खियों की तरह दारोग़ा की आँखें उससे लिपट गईं। दर्शक नाटक देखने के लिये चंचल हो उठे।

"हमने रुपए ख़र्च किए हैं, हमारे मनोरंजन का टैक्स लेकर फिर उसमें बाधा डालने का सरकार को कोई अधिकार नहीं। यह दारोग़ा की मूर्खता है, जो वह अभियुक्त को यहाँ क़ैद करने आया। उसे निकाल दो।" कॉलेज के एक विद्यार्थी ने ज़ोर से पुकारकर कहा।

"निकाल दो—निकाल दो—निकाल दो" हज़ारों कंठ एक साथ कह उठे।

ड्रॉप गिरा दिया गया।

"निकल जाओ—निकल जाओ" पटापट तालियों के वाद्य से स्टेज गूँज उठा। सीटियाँ बजने लगीं। "अहा हाहा! क़ुर्बान जाऊँ साफ़ा! क़ुर्बान जाऊँ डंडा!! छछूँदर-जैसी मूँछें! यह कद्दू-जैसा मुँह!!"

दारोग़ाजी का सर लटक पड़ा। "भागो—भागो" के बीच उन्हें भागना ही पड़ा। मैनेजर ने कहा, नाटक हो जाने के बाद आप उन्हें गिरफ़्तार कर लीजिए। मैं उनके पास गया था। उन्होंने आपके लिये यह संवाद भेजा है। दारोग़ा को मैनेजर गेट पर ले जाने लगे, पर उन्होंने स्टेज के भीतर रहकर नाटक देखने की इच्छा प्रकट की। मैनेजर ने टिकट ख़रीदने के लिये कहा। दारोग़ाजी एक बार शान से देखकर रह गए। फिर अपने लिये एक आर्केस्ट्रा का टिकट ख़रीद लिया। कांस्टेब्लों को मैनेजर ने थर्ड-क्लास में ले जाकर भर दिया। वहाँ के लोगों को मनोरंजन की दूसरी सामग्री मिल गई।

थिएटर होता रहा। मिस कनक द्वारा किया हुआ शकुंतला का पार्ट लोगों को बहुत पसंद आया। एक ही रात में वह शहर-भर में प्रसिद्ध हो गई।

नाटक समाप्त हो गया। राजकुमार ग्रीन-रूम से निकलने पर गिरफ़्तार कर लिया गया।

(५)

एक बड़ी-सी, अनेक प्रकार के देश-देश की अप्सराओं, बादशाहज़ादियों, नर्तकियों के सत्य तथा काल्पनिक चित्रों तथा बेल-बूटों से सजी हुई दालान; झाड़-फ़ानूस टँगे हुए; फ़र्श पर क़ीमती ग़लीचे-सा कारपेट बिछा हुआ; मख़मल की गद्दीदार कुर्सियाँ, कोच और सोफ़े तरह-तरह की मेज़ों के चारो ओर क़ायदे से रक्खे हुए; बीच-बीच बड़े-बड़े, आदमी के आकार के ड्योढ़े, शीशे, एक तरफ़ टेबल-हारमोनियम और एक तरफ़ पियानो रक्खा हुआ; और-और यंत्र भी—सितार, सुर-बहार, एसराज, वीणा, सरोद, बैंजो, बेला, क्लारिओनेट, कार्नेट, मँजीरे, तबले, पखावज, सरंगी आदि यथास्थान सुरक्षित रक्खे हुए; कहीं-कहीं छोटी-छोटी मेज़ों पर चीनी मिट्टी के क़ीमती बर्तन साज के तौर पर रक्खे हुए; किसी-किसी में फूलों के तोड़े; रंगीन शीशे-जड़े तथा झँझरियोंदार डबल दरवाज़े लगे हुए, दोनो किनारों पर मख़मल की सुनहरी जालीदार झूलें चौथ के चाँद के आकार से

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पड़ी हुई; बीच में छः हाथ की चौकोर क़रीब डेढ़ हाथ की ऊँची गद्दी, तकिए लगे हुए, उस पर अकेली बैठी हुई, रात आठ बजे के लगभग, कनक सुर-बहार बजा रही है। मुख पर चिंता की एक रेखा स्पष्ट खिंची हुई उसके बाहरी सामान से चित्त बहलाने का हाल बयान कर रही है। नीचे लोगों की भीड़ जमा है। सब लोग कान लगाए हुए सुर-बहार सुन रहे हैं।

एक दूसरे कमरे से एक नौकर आया। कहा, माजी कहती हैं, कुछ गाने के लिये कहो। कनक ने सुन लिया। नौकर चला गया। कनक ने अपने नौकर से बाक्स हारमोनियम दे जाने के लिये कहा। हारमोनियम ले आने पर उसने सुर-बहार बढ़ा दिया। नौकर उस पर गिलाफ़ चढ़ाने लगा। कनक दूसरे सप्तक के "सी" स्वर पर अँगुली रख बेलो करने लगी। गाने से जी उचट रहा था, पर माता की आज्ञा थी, उसने गाया—

"प्यार करती हूँ आलि, इसलिये मुझे भी करते हैं वे प्यार,
बह गई हूँ अजान की ओर, इसलिये बह जाता संसार।
रुके नहीं धनि चरण घाट पर,
देखा मैंने मरण बाट पर,
टूट गए सब आठ-ठाट घर,
छूट गया परिवार—
तभी सखि, करते हैं वे प्यार।
आप बही या बहा दिया था,
खिंची स्वयं या खींच लिया था,
नहीं याद कुछ कि क्या किया था,
हुई जीत या हार—
तभी री करते हैं वे प्यार।
खुले नयन जब रही सदा तिर,
स्नेह-तरंगों पर उठ-उठ गिर,
सुखद पालने पर मैं फिर-फिर,
करता थी शृंगार—
मुझे तब करते हैं वे प्यार।
कर्म-कुसुम अपने सब चुन-चुन,
निर्जन में प्रिय के गिन-गिन गुण,
गूथ निपुण कर से उनको सुन,
पहनाया था हार—
इसलिये करते हैं वे प्यार।"

कनक ने कल्याण में भरकर इमन गाया। नीचे कई सौ आदमी मंत्र-मुग्ध-से खड़े हुए सुन रहे थे। गाने से प्रसन्न हो सर्वेश्वरी भी अपने कमरे से उठकर कनक के पास आकर बैठ गई। गाना समाप्त हुआ। सर्वेश्वरी ने प्यार से कन्या का चिंतित मुख चूम लिया।

नीचे से एक नौकर ने आकर कहा, विजयपुर के कुँवर साहब के यहाँ से एक बाबू आए हैं, कुछ बात-चीत करना चाहते हैं।

सर्वेश्वरी नीचे अपने दो मंज़िलेवाले कमरे में उतर गई। यह कनक का कमरा था। अभी थोड़े ही दिन हुए, कनक के लिये सर्वेश्वरी ने सजाया है।

कुछ देर बाद सर्वेश्वरी ऊपर आई। कनक से कहा, कुँवर साहब, विजयपुर, तुम्हारा गाना सुनना चाहते हैं।

"मेरा गाना सुनना चाहते हैं?" कनक सोचने लगी। "अम्मा!" कनक ने कहा—"मैं रईसों की महफ़िल में गाना नहीं गाऊँगी।"

"नहीं, वे यहीं आएँगे। बस, दो-चार चीज़ें सुना दो। तबियत अच्छी न हो, तो कहो, कह दें, और कभी आएँगे।"

"अच्छा अम्मा, किसी पत्ते पर, क़ीमती—ख़ूबसूरत पत्ते पर पड़ी हुई ओस की बूँद अगर हवा के झोंके से ज़मीन पर गिर जाय, तो अच्छा या प्रभात के सूरज से चमकती हुई उसकी किरणों से खेलकर फिर अपने मकान, आकाश को चली जाय, तो अच्छा?"

"दोनो अच्छे हैं उसके लिये। हवा के झूले का आनंद किरणों से हँसने में नहीं, वैसे ही किरणों से हँसने का आनंद हवा के झूले में नहीं। और, घर तो वह पहुँच ही जाती है, गिरे या डाल ही पर सूख जाय।"

"पर अगर हवा में झूलने से पहले ही वह सूखकर उड़ गई हो।"

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"तब तो बात ही और है।"

"मैं उसे यथार्थ रंगीन पंखोंवाली परी मानती हूँ।"

"क्या तू ख़ुद ऐसी ही परी बनना चाहती है ?"

"हाँ अम्मा, मैं कला को कला की दृष्टि से देखती हूँ। उससे अर्थ-प्राप्ति करना उसके महत्त्व को घटा देना नहीं ?"

"ठीक है, पर यह एक प्रकार बदला है। अर्थ-वाले अर्थ देते हैं, और कला के जानकार उसका आनंद। संसार में एक-दूसरे से ऐसा ही संबंध है।"

"कला के ज्ञान के साथ-ही-साथ कुछ ऐसी गंदगी भी हम लोगों के चरित्र में रहती है, जिससे मुझे सख़्त नफ़रत है।"

माता चुप रही। कन्या के विशद अभिप्राय को ताड़कर कहा—"तुम इससे बची हुई भी अपने ही ज़ीने से छत पर जा सकती हो, जहाँ सबकी तरह तुम्हें भी आकाश तथा प्रकाश का बराबर अंश मिल सकता है।"

"मैं इतना यह सब नहीं समझती। समझती भी हूँ, तो भी मुझे कला को एक सीमा में परिणत रखना अच्छा लगता है। ज़्यादा विस्तार से वह कलुषित हो जाती है, जैसे बहाव का पानी, उसमें गंदगी डालकर भी लोग उसे पवित्र मानते हैं। पर कुएँ के लिये यह बात नहीं। स्वास्थ्य के विचार से कुएँ का पानी बहते हुए पानी से बुरा नहीं। विस्तृत व्याख्या तथा अधिक बढ़ाव के कारण अच्छे-से-अच्छे कृत्य बुरे धब्बों से रँगे रहते हैं।"

"प्रवृत्ति के वशीभूत होकर पश्चात् लोग अनर्थ करने लगते हैं। यही अत्याचार धार्मिक अनुष्ठानों में प्रत्यक्ष हो रहा है। पर बृहत् अपनी महत्ता में बृहत् ही है। बहाव और कुएँवाली बात जँचकर फीकी रही।"

"अम्मा, बात यह, तुम्हारी कनक अब तुम्हारी नहीं रही। उसके सोने के हार में ईश्वर ने एक नीलम जड़ दिया है।"

सर्वेश्वरी ने तअज्जुब की निगाह से कन्या को देखा। कुछ-कुछ उसका मतलब वह समझ गई। पर उसने कन्या से पूछा—"तुम्हारे कहने का क्या मतलब ?"

"यह।"

कनक ने हाथ की एक चूड़ी, कलाई उठाकर, दिखाई।

सर्वेश्वरी हँसने लगी।

"तमाशा कर रही है ? यह कौन-सा खेल ?"

"नहीं अम्मा।" कनक गंभीर हो गई, चेहरे पर एक प्रकार स्थिर प्रौढ़ता झलकने लगी—"मैं ठीक कहती हूँ, मैं ब्याही हुई हूँ, अब मैं महफ़िल में गाना नहीं गाऊँगी। अगर कहीं गाऊँगी भी, तो ख़ूब सोच-समझकर, जिससे मुझे संतोष रहे।"

सर्वेश्वरी एक दृष्टि से कनक को देखती रही।

"यह विवाह कब हुआ, और किससे हुआ ? किया किसने ?"

"यह विवाह आपने किया, ईश्वर की इच्छा से, कोहनूर-स्टेज पर, कल, हुआ, दुष्यंत का पार्ट करने-वाले राजकुमार के साथ, शकुंतला सजी हुई तुम्हारी कनक का। ये चूड़ियाँ (एक-एक दोनो हाथों में) इस प्रमाण की रक्षा के लिये मैंने पहन लीं। और देखो"—कनक ने ज़रा-सी सेंदुर की एक बिंदी सर पर लगा ली थी, "अम्मा, यह एक रहस्य हो गया। राजकुमार को—"

माता ने बीच ही में हँसकर कहा—"सुहागिनें अपने पति का नाम नहीं लिया करतीं।"

"पर मैं लिया करूँगी। मैं कुछ घूँघट काढ़नेवाली सुहागिन तो हूँ नहीं; कुछ पैदायशी स्वतंत्र हक़ मैं अपने साथ रक्खूँगी। नहीं तो कुछ दिक़्क़त पड़ सकती है। गाने-बजाने पर भी मेरा ऐसा ही विचार रहेगा। हाँ, राजकुमार को तुम नहीं जानतीं, इन्हीं ने मुझे इडन-गार्डेन में बचाया था।"

कन्या की भावना पर, ईश्वर के विचित्र घटनाओं के भीतर से इस प्रकार मिलाने पर, कुछ देर तक

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सर्वेश्वरी सोचती रही। देखा, उसके हृदय के कमल पर कनक की इस उक्ति की किरण सूर्य की किरण की तरह पड़ रही थी, जिससे आप-ही-आप उसके सब दल प्रकाश की ओर खुलते जा रहे थे। तरंगों से उसका स्नेह-समुद्र कनक के रेखा-तट को छाप जाने लगा। इस एकाएक स्वाभाविक परिवर्तन को प्रत्यक्ष कर सर्वेश्वरी ने अप्रिय विरोधी प्रसंग छोड़ दिया। हवा का रुख़ जिस तरफ़ हो, उसी तरफ़ नाव को बहा ले जाना उचित है, जब कि लक्ष्य केवल सैर है, कोई गम्य स्थान नहीं।

हँसकर सर्वेश्वरी ने पूछा—"तुम्हारा इस प्रकार स्वयंवरा होना उन्हें भी मंज़ूर है न, या अंत तक शकुंतला ही की दशा तुम्हें भोगनी होगी? और वे तो क़ैद भी हो गए हैं?"

कनक संकुचित लज्जा से द्विगुणित हो गई। कहा—"मैंने उनसे तो इसकी चर्चा नहीं की। करना भी व्यर्थ। इसे मैं अपनी ही हद तक रक्खूँगी। किसके कैसे ख़यालात हैं, मुझे क्या मालूम? अगर वे मुझे मेरे कुल का विचार कर ग्रहण न करें, तो इस तरह का अपमान बरदाश्त कर जाना, मेरी शक्ति से बाहर है। वे क़ैद शायद उसी मामले में हुए हैं।"

"उनके बारे में और भी कुछ तुम्हारा समझा हुआ है?"

"मैं और कुछ भी नहीं जानती अम्मा। पर कल तक......सोचती हूँ, थानेदार को बुलाकर कुल बातें पूछूँ। और पता लगाकर भी देखूँ कि क्या कर सकती हूँ।"

सर्वेश्वरी ने कुँवर साहब के आदमियों के पास कहला भेजा कि कनक की तबियत अच्छी नहीं, इसलिये किसी दूसरे दिन गाना सुनने की कृपा करें।

(६)

बड़ा बाज़ार थाने में एक पत्र लेकर नौकर दारोग़ाजी के पास गया। दारोग़ाजी बैठे हुए एक मारवाड़ी को किसी काम में शहादत के लिये समझा रहे थे कि उनके लिये और ख़ास तौर से सरकार के लिये यह इतना-सा काम कर देने से वे मारवाड़ी महाशय को कहाँ तक पुरस्कृत कर सकते हैं, सरकार की दृष्टि में उनकी कितनी इज़्ज़त होगी, और आर्थिक उन्हें कितने बड़े लाभ की संभावना है। मारवाड़ी महाशय बड़े नम्र शब्दों में, डरे हुए, पहले तो इनकार कर रहे थे, पर दारोग़ाजी की वक्तृता के प्रभाव से अपने भविष्य के चमकते हुए भाग्य का काल्पनिक चित्र देख-देख, पीछे से हाँ-ना के बीच खड़े हुए मन-ही-मन हिल रहे थे, कभी इधर, कभी उधर। उसी समय कनक के जमादार ने ख़त लिए हुए ही घुटनों तक झुककर सलाम किया। दारोग़ा साहब ने "आज तख़त बैठो दिल्लीपति नर" की नज़र से क्षुद्र जमादार को देखा। बढ़कर उसने चिट्ठी दे दी।

दारोग़ाजी उसी समय चिट्ठी को फाड़कर पढ़ने लगे। पढ़ते हुए मुस्किराते जाते थे। पढ़कर जेब में हाथ डाला। एक नोट पाँच रुपए का था। नौकर को दे दिया। कहा तुम चलो। कह देना, हम अभी आए। अँगरेज़ी में पत्र यों था—

३, बहू बाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता,
३—४—१८

प्रिय दारोग़ा साहब,

आपसे मिलना चाहती हूँ। जब से स्टेज पर से आपको देखा—आहा! कैसी ग़ज़ब की आपकी आँखें—दोबारा जब तक नहीं देखती, मुझे चैन नहीं। क्या आप कल नहीं मिलेंगे?

आप ही की
कनक

थानेदार साहब ख़ूबसूरत नहीं थे। पर उन्हें उस समय अपने सामने शाहज़ादे सलीम का रंग भी फीका और किसी परीज़ाद की आँखें भी छोटी जान पड़ीं। तुरंत उन्होंने मारवाड़ी महाशय को बिदा कर दिया। तहक़ीक़ात करने के लिये मछुआ बाज़ार जाना था, काम छोटे थानेदार के सिपुर्द कर दिया, यद्यपि वहाँ बहुत-से रुपए गुंडों से मिलनेवाले थे।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उठकर कपड़े बदले और सादी सफ़ेद पोशाक में वह बाज़ार की सैर करने चल पड़े। पत्र जेब में रखने लगे, तो फिर उन्हें अपनी आँखों की बात याद आई। झट शीशे के सामने जाकर खड़े हो गए, और तरह-तरह से मुँह बना-बनाकर, आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगे। उनके मन को, उस सूरत से, उन आँखों से, तृप्ति न थी; पर ज़बरन मन को अच्छा लगा रहे थे। दस मिनट तक इसी तरह सूरत देखते रहे। शीशे के सामने वैसलीन ज़्यादा-सा पोत लिया। मुँह धोया। पाउडर लगाया। एसेंस छिड़का। फिर आईने के सामने खड़े हो गए। मन को फिर न अच्छा लगा। पर ज़ोर दे-देकर अपने को अच्छा साबित करते रहे। कनक के मंत्र ने स्टेज पर ही इन्हें वशीभूत कर लिया था। अब पत्र भी आया, और वह भी प्रणय-पत्र के साथ-साथ प्रशंसा-पत्र, उनकी विजय का इससे बड़ा और कौन-सा प्रमाण होता? कहाँ उन्हें ही उसके पास प्रणय की भिक्षा के लिये जाना था, कहाँ वही उनके प्रेम के लिये, उनकी जादू भरी निगाह के लिये पागल है। उस पर भी उनका मन उन्हें सुंदर नहीं मानता। यह उनके लिये सहन कर जानेवाली बात थी? एक कांस्टेबुल को टैक्सी ले आने के लिये भेज दिया था। बड़ी देर से खड़ी हुई टैक्सी हार्न कर रही थी, पर उस समय वे अपने बिगड़े हुए मन से लड़ रहे थे। कांस्टेबुल ने आकर कहा, दारोग़ाजी, बड़ी देर से टैक्सी खड़ी है। आपने छड़ी उठाई, और थाने से बाहर हो गए। सड़क पर टैक्सी खड़ी थी। बैठ गए, कहा, बहूबाज़ार। ड्राइवर बहूबाज़ार चल दिया। जब ज़करिया स्ट्रीट के बराबर टैक्सी पहुँची, तब आपको याद आई कि टोपी भूल गए। कहा, अरे ड्राइवर, भई ज़रा फिर थाने चलो। गाड़ी फिर थाने आई। आप अपने कमरे से टोपी लेकर फिर टैक्सी पर पहुँचे। टैक्सी बहूबाज़ार चली।

तीन नंबर के आलीशान मकान के नीचे टैक्सी खड़ी हो गई। पुरस्कृत जमादार ने लौटकर अपने पुरस्कार का हाल कनक से कह दिया था। कनक ने उसे ही द्वार पर दारोग़ा साहब के स्वागत के लिये रक्खा था, और समझा दिया था, बड़े अदब से, दो मंज़िलेवाले कमरे में, जिसमें मैं पढ़ती थी, बैठाना, और तब मुझे ख़बर देना। जमादार ने सलाम कर थानेदार साहब को उसी कमरे में ले जाकर एक कोच पर बैठाया, और फिर ऊपर कनक को ख़बर देने के लिये गया।

उस कमरे में, शीशेदार आलमारियों में, कनक की किताबें रक्खी थीं। उनकी जिल्दों पर सुनहरे अक्षरों से किताबों के नाम लिखे हुए थे। दारोग़ाजी विद्या की तौल में कनक को अपने-से जितना छोटा, इसलिये अमान्य समझ रहे थे, उन किताबों की तरफ़ देखकर उसके प्रति उनके दिल में कुछ इज़्ज़त पैदा हो गई। उसकी विद्या की मन-ही-मन बैठे हुए थाह ले रहे थे।

कनक ऊपर से उतरी। साधारणतः जैसी उसकी सज्जा मकान में रहती थी, वैसी ही थी, सभ्य तरीक़े से एक ज़री की किनारीदार देशी साड़ी, लेडी मोज़े और जूते पहने हुए।

कनक को आते देखकर थानेदार साहब खड़े हो गए। कनक ने हँसकर कहा—"गुड मॉर्निंग।" थानेदार कुछ झेंप गए। डरे कि कहीं बातचीत का सिलसिला अँगरेज़ी में इसने चलाया, तो नाक ही कटेगी। इस व्याधि से बचने के लिये उन्होंने स्वयं ही हिंदी में बातचीत छेड़ी—"आपका नाटक कल देखा, मैं सच कहता हूँ, ईश्वर जाने, ऐसा नाटक ज़िंदगी-भर मैंने नहीं देखा।"

"आपको पसंद आया, मेरे भाग्य। माजी तो उसमें तरह-तरह की त्रुटियाँ निकालती हैं। कहती हैं, अभी बहुत कुछ सीखना है—तारीफ़वाली कोई बात नहीं हुई।"

कनक ने रुख़ बदल दिया। सोचा, इस तरह व्यर्थ ही समय नष्ट करना होगा।

"आप हम लोगों के यहाँ जलपान करने में शायद संकोच करें?"

मोटी हँसी हँसकर दारोग़ा ने कहा—"संकोच?

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संकोच का तो वहाँ नाम नहीं और फिर तु—आ—आपके यहाँ।"

कनक ने दारोग़ाजी को पहचान लिया। उसने नौकर को आवाज़ दी। नौकर आया। उससे खाना लाने के लिये कहकर, आलमारी से, ख़ुद उठकर एक रेडलेब्ल और दो बोतलें लेमोनेड की निकालीं।

शीशे के एक ग्लास में एक पेग शराब ढालते हुए कनक ने कहा—"आप मुझे तुम ही कहें। कितना मधुर शब्द है तुम! 'तुम' मिलानेवाला है, 'आप' शिष्टता की तलवार से दो जुड़े-हुओं को काटकर जुदा कर देनेवाला।"

दारोग़ाजी बाग़-बाग़ हो गए। बादल-से काले मुँह की हँसी में सफ़ेद दाँतों की क़तार बिजली की तरह चमक उठी। कनक ने बड़े ज़ोर से सिर गड़ाकर हँसी रोकी।

थानेदार साहब की तरह अपने जीवन का पहला ही कटाक्ष कर कनक ने देखा, तीर अचूक बैठा। पर उसके कलेजे में बिच्छू डंक मार रहे थे।

कनक ने ग्लास में लेमोनेड कुछ डालकर थानेदार साहब को दिया। उन्होंने हाँ-ना बिना किए ही लेकर पी लिया।

कनक ने दूसरा पेग ढाला। उसे भी पी गए। तीसरा ढाला, उसे भी पी लिया।

तब तक नौकर खाना लेकर आ गया। कनक ने सहूलियत से मेज़ पर रखवा दिया।

थानेदार साहब ने कहा—"अब मैं तुम्हें पिलाऊँ?"

कनक ने भौंहें चढ़ा लीं। "आज शाम को नवाब साहब मुर्शिदाबाद के यहाँ मेरा मोजरा है, माफ़ कीजिएगा। किसी दूसरे दिन आइएगा, तब पिऊँगी। पर मैं शराब नहीं पीती, पोर्ट पीती हूँ। आप मेरे लिये एक लेते आइएगा।"

थानेदार साहब ने कहा—"अच्छा, खाना तो साथ खाओ।" कनक ने एक टुकड़ा उठाकर खा लिया। थानेदार भी खाने लगे। कनक ने कहा—"मैं नाश्ता कर चुकी हूँ, माफ़ फ़र्माइएगा, बस।" उसने वहीं, नीचे रक्खे हुए, ताँबे के एक बड़े-से बर्तन में हाथ-मुँह धोकर डब्बे से निकालकर पान खाया। दारोग़ाजी खाते रहे। कनक ने डरते हुए चौथा पेग तैयार कर सामने रख दिया। खाते-खाते थानेदार साहब उसे भी पी गए। कनक उनकी आँखें देख रही थी।

थानेदार साहब का प्रेम धीरे-धीरे प्रबल रूप धारण करने लगा। शराब की-जैसी वृष्टि हुई थी, उनकी नदी में वैसी ही बाढ़ भी आ गई। कनक ने पाँचवाँ पेग तैयार किया। थानेदार साहब भी प्रेम की परीक्षा में फ़ेल हो जानेवाले आदमी नहीं थे। उन्होंने इनकार नहीं किया। खाना खा चुकने के बाद नौकर ने उनके हाथ धुला दिए।

धीरे-धीरे उनके शब्दों में प्रेम का तूफ़ान उठ चला। कनक डर रही थी कि वह इतना सब सहन कर सकेगी या नहीं। वह उन्हें माता की बैठक में ले गई। सर्वेश्वरी दूसरे कमरे में चली गई थी।

गद्दी पर पड़ते ही थानेदार साहब लंबे हो गए। कनक ने हारमोनियम उठाया। बजाते हुए पूछा—"वह जो कल दुष्यंत बना था, उसे गिरफ़्तार क्यों किया आपने, कुछ समझ में नहीं आया।"

"उससे हैमिल्टन साहब सख़्त नाराज़ हैं। उस पर बदमाशी लगाई गई है।" करवट बदलकर दारोग़ाजी ने कहा।

"ये हैमिल्टन साहब कौन हैं?"

"ये सुपरिंटेंडेंट पुलिस हैं।"

"कहाँ रहते हैं?" कनक ने एक गत का एक चरण बजाकर पूछा।

"रौडन स्ट्रीट नं० ५ इन्हीं का बँगला है।"

"क्या राजकुमार को सज़ा हो गई?"

"नहीं, कल पेशी है, पुलिस की शहादत गुज़र जाने पर सज़ा हो जायगी।"

"मैं तो बहुत डरी, जब आपको वहाँ देखा।"

आँखें मूँदे हुए दारोग़ाजी मूछों पर ताव देने लगे।

कनक ने कहा—"पर मैं कहूँगी, आपके-जैसा

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ख़ूबसूरत जवान बना-चुना मुझे दूसरा नहीं नज़र आया।"

दारोग़ाजी उठकर बैठ गए। इसी सिलसिले में प्रासंगिक-अप्रासंगिक, सुनने-लायक़, न-सुनने-लायक़ बहुत-सी बातें कह गए। धीरे-धीरे लड़कर आए हुए भैंसे की आँखों की तरह आँखें म्लान हो चलीं। भले-बुरे की लगाम मन के हाथ से छूट गई। इस अनर्गल शब्द-प्रवाह को बेहोश होने की घड़ी तक रोक रखने के अभिप्राय से कनक गाने लगी।

गाना सुनते-ही-सुनते मन विस्मृति के मार्ग से अंधकार में बेहोश हो गया।

कनक ने गाना बंद कर दिया। उठकर दारोग़ाजी के पॉकेट की तलाशी ली। कुछ नोट थे, और उसकी चिट्ठी। नोटों को उसने रहने दिया, और चिट्ठी निकाल ली।

कमरे के तमाम दरवाज़े बंद कर ताली लगा दी।

(७)

कनक घबरा उठी। क्या करे, कुछ समझ में नहीं आ रहा था। राजकुमार को जितना ही सोचती, चिंताओं की छोटी-बड़ी अनेक तरंगों, आवर्तों से मन मथ जाता। पर उन चिंताओं के भीतर से उपाय की कोई भी मणि नहीं मिल रही थी, जिसकी प्रभा उसके मार्ग को प्रकाशित करती। राजकुमार के प्रति उसके प्रेम का यह प्रखर बहाव, बँधी हुई जल-राशि से छूटकर अनुकूल पथ पर बह चलने की तरह, स्वाभाविक और सार्थक था। पहले ही दिन, उसने राजकुमार के शौर्य का जैसा दृश्य देखा था, उसके सबसे एकांत स्थान पर, जहाँ तमाम जीवन में मुश्किल से किसी का प्रवेश होता है, पत्थर के अक्षरों की तरह उसका पौरुष चित्रित हो गया था। सबसे बड़ी बात जो रह-रहकर उसे याद आती थी, वह राजकुमार की उसके प्रति श्रद्धा थी। कनक ने ऐसा चित्र तब तक नहीं देखा था। इसीलिये उस पर राजकुमार का स्थायी प्रभाव पड़ गया। माता की केवल ज़बानी शिक्षा इस प्रत्यक्ष उदाहरण के सामने पराजित हो गई। और, वह जिस तरह की शिक्षा के भीतर से आ रही थी, परिचय के पहले ही प्रभात में किसी मनोहर दृश्य पर उसकी दृष्टि का बँध जाना, अटक जाना, उसके उस जीवन की स्वच्छ अबाध प्रगति का उचित परिणाम ही हुआ। उसकी माता शिक्षित तथा समझदार थी। इसीलिये उसने कन्या के सबसे प्रिय जीवनोन्मेष को बाहरी आवरण द्वारा ढक देना उसकी बाढ़ के साथ ही जीवन की प्रगति को भी रोक देना समझा था।

सोचते-सोचते कनक को याद आया, उसने साहब की जेब से एक चिट्ठी निकाली थी, फिर उसे अपनी फ़ाइल में रख दिया था। वह तुरंत चलकर फ़ाइल की तलाशी लेने लगी। चिट्ठी मिल गई।

साहब की जेब से यह राजकुमार की चिट्ठी निकाल लेना चाहती थी, पर हाथ एक दूसरी चिट्ठी लगी। उस समय घबराहट में वहीं उसने पढ़कर नहीं देखा। घर में खोला, तो काम की बातें न मिलीं। उसने चिट्ठी को फ़ाइल में नत्थी कर दिया। उसने देखा था, युवक ने पेंसिल से पत्र लिखा है। पर यह स्याही से लिखा गया था। इसकी बातें भी उस सिलसिले से नहीं मिलती थीं। इस तरह, ऊपरी दृष्टि से देखकर ही, उसने चिट्ठी रख दी थी। आज निकालकर फिर पढ़ने लगी। एक बार, दो बार, तीन बार पढ़ा। बड़ी प्रसन्न हुई। यह वही हैमिल्टन साहब थे। वे हों, न हों, पर यह पत्र हैमिल्टन साहब ही के नाम लिखा था उसके एक दूसरे अँगरेज़ मित्र मिस्टर चर्चिल ने। मज़मून रिश्वत और अन्याय का, कनक की आँखें चमक उठीं।

इस कार्य की सहायता की बात सोचते ही उसे श्रीमती कैथरिन की याद आई। अब कनक पढ़ती नहीं, इसलिये श्रीमती कैथरिन का आना बंद है। कभी-कभी आकर मिल जाती, मकान में पढ़ने की किताबें पसंद कर जाया करती हैं। कैथरिन अब भी कनक को वैसे ही प्यार करती हैं। कभी-कभी पश्चिमी आर्ट, संगीत और नृत्य की शिक्षा के लिये साथ

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

योरप चलने की चर्चा भी करती हैं। सर्वेश्वरी की उसे योरप भेजने की इच्छा थी। पर पहले वह अच्छी तरह उसे अपनी शिक्षा दे देना चाहती थी।

कनक ने ड्राइवर को मोटर लगाने के लिये कहा। कपड़े बदलकर चलने के लिये तैयार हो गई।

मोटर पर बैठकर ड्राइवर से पार्क स्ट्रीट चलने के लिये कहा।

कितनी व्यग्रता! जितने भी दृश्य आँखों पर पड़ते हैं, जैसे विना प्राणों के हों। दृष्टि कहीं भी नहीं ठहरती। पलकों पर एक ही स्वप्न संसार की अपर कल्पनाओं से मधुर हो रहा है। व्यग्रता ही इस समय यथार्थ जीवन है, और सिद्धि के लिये वेदना के भीतर से काम्य साधना। अंतर्जगत् के कुल अंधकार को दूर करने के लिये उसका एक ही प्रदीप पर्याप्त है। उसके हृदय की लता को सौंदर्य की सुगंध से भर रखने के लिये उसका एक ही फूल बस है। तमाम भावनाओं के तार अलग-अलग स्वरों में झंकार करते हैं, उसकी रागिनी से एक ही तार मिला हुआ है। असंख्य तारात्रों की उसे आवश्यकता नहीं, उसके झरोखे से एक ही चंद्र की किरण उसे प्रिय है। तमाम संसार जैसे अनेक कलरवों के बुद्बुद-गीतों से समुद्वेलित क्षुब्ध और पैरों को स्खलित कर बहा ले जानेवाला विपत्ति-संकुल है। एक ही बए को हृदय से लगा तैरती हुई वह पार जा सकेगी। सृष्टि के सब रहस्य इस महाप्रलय में डूब गए हैं, उसका एक ही रहस्य, तपस्या से प्राप्त अमर वर की तरह, उसके साथ संबद्ध है। शंकित दृष्टि से वह इस प्रलय को देख रही है।

पार्क स्ट्रीट आ गया। कैथरिन के मकान के सामने गाड़ी खड़ी करवा कनक उतर पड़ी। नौकर से ख़बर भेज दी। कैथरिन अपने बँगले से निकल आई, और बड़े स्नेह से कनक को भीतर ले गई।

कैथरिन से कनक की अँगरेज़ी में बातचीत होती थी। आने का कारण पूछने पर कनक ने साधारण कुल क़िस्सा बयान कर दिया। कैथरिन सुनकर पहले कुछ चिंतित हो गई। फिर क्या सोचकर मुस्किराई। प्रेम की सरल बातों से उसे बड़ा आनंद हुआ। "तुम्हारा विवाह चर्च में नहीं, थिएटर में हुआ; तुमने एक नया काम किया।" उसने कनक को इसके लिये धन्यवाद दिया।

"कल पेशी है" कनक उत्तर-प्राप्ति की दृष्टि से देख रही थी।

"मेरे विचार से मिस्टर हैमिल्टन के पास इस समय जाना ठीक नहीं। वे ऐसी हालत में बहुत बड़ा ज़ोर कुछ दे नहीं सकते। और, उन पर इस पत्र से एक दूसरा मुक़द्दमा चल सकता है। पर यह सब मुफ़्त ही दिक़्क़त बढ़ाना है। अगर आसानी से अदालत का काम हो जाय, तो इतनी परेशानी से क्या फ़ायदा?"

"आसानी से अदालत का काम कैसे?"

"तुम मकान जाओ, मैं हैमिल्टन को लेकर आती हूँ, मेरी उनकी अच्छी जान-पहचान है। ख़ूब सजकर रहना और अँगरेज़ी तरीक़े से नहीं, हिंदोस्तानी तरीक़े से।" कहकर कैथरिन हँसने लगी।

आचार्या से मुक्ति का अमोघ मंत्र मिलते ही कनक ने भी परी की तरह अपने सुख के काल्पनिक पंख फैला दिए।

कैथरिन गैरेज में अपनी गाड़ी लेने चली गई, कनक रास्ते पर टहलती रही।

कैथरिन हँसती हुई, "जल्दी आओ" कहकर रोडन स्ट्रीट की तरफ़ चली; कनक बहूबाज़ार की तरफ़।

घर में कनक माता से मिली। सर्वेश्वरी को दारोग़ा की गिरफ़्तारी से कुछ भय था। पर कनक की बातों से उसकी शंका दूर हो गई। कनक ने माता को अच्छी तरह, थोड़े शब्दों में, समझा दिया। माता से उसने कुछ ज़ेवर पहना देने के लिये कहा, सर्वेश्वरी हँसने लगी। नौकर को बुलाया। ज़ेवर का बाक्स उठवा तिमंज़िले पर कनक के कमरे को चली।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सब रंगों की रेशमी साड़ियाँ थीं। कनक के स्वर्ण-रंग को दोपहर की आभा में कौन-सा रंग ज़्यादा खिला सकता है, सर्वेश्वरी इसकी जाँच कर रही थी। उसकी देह से सटा-सटाकर उसकी और साड़ियों की चमक देखती थी। उसे हरे रंग की साड़ी पसंद आई। पूछा—"बता सकती हो, इस समय यह रंग क्यों अच्छा होगा?"

"ऊहूँ" कनक प्रश्न और कौतुक की नज़र से देखने लगी।

"तेज़ धूप में हरे रंग पर नज़र ज़्यादा बैठती है, उसे आराम मिलता है।"

उस बेशक़ीमत कामदार साड़ी को निकालकर रख लिया। कनक नहाने चली गई।

माता एक-एक सब बहुमूल्य, हीरे-पन्ने-पुखराज के जड़ाऊ ज़ेवर निकाल रही थी; कनक नहाकर धूप में खड़ी चारदीवार के सहारे, पीठ के बल खड़ी, बाहर बालों को खोले हुए सुखा रही थी। मन राजकुमार के साथ अभिनय के सुख की कल्पना में लीन था। वह अभिनय को प्रत्यक्ष की तरह देख रही थी, उन्होंने कहा है, सोचती, मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूँगा। अमृत से सर्वांग तर हो रहा था। बाल सूख गए, वह खड़ी ही रही।

माता ने बुलाया। ऊँची आवाज़ से कल्पना की तंद्रा छूट गई। वह धीरे-धीरे माता के पास चली।

सर्वेश्वरी कन्या को सजाने लगी। पैर, कमर, कलाई, बाज़ू, वक्ष, गला और मस्तक अलंकारों से चमक उठे। हरी साड़ी के ऊपर तथा भीतर से रत्नों के प्रकाश की छटा, छुरियों-सी निकलती हुई, किरणों के बीच उसका सुंदर, सुडौल चित्र-सा खिंचा हुआ मुख, एक नज़र आपाद-मस्तक देखकर माता ने तृप्ति की साँस ली।

कनक एक बड़े आईने के सामने जाकर खड़ी हो गई। देखा, राजकुमार की याद आई, कल्पना में दोनो की आत्माएँ मिल गईं; देखा, आईने में वह हँस रही थी।

नीचे से आकर नौकर ने ख़बर दी, मेम साहब के साथ एक साहब आए हुए हैं।

कनक ने ले आने के लिये कहा।

कैथरिन ने हैमिल्टन साहब से कहा था कि उन्हें ऐसी एक सुंदरी भारतीय पढ़ी-लिखी युवती दिखाएँगी, जैसी उन्होंने शायद ही कहीं देखी हो, और वह गाती भी लाजवाब है, और अँगरेज़ों की ही तरह उसी लहजे में अँगरेज़ी भी बोलती है।

हैमिल्टन साहब, कुछ दिल से और कुछ पुलिस में रहने के कारण, सौंदर्योपासक बन गए थे। इतनी ख़ूबसूरत पढ़ी-लिखी समझदार युवती से, बिना परिश्रम के ही, कैथरिन उन्हें मिला सकती हैं, ऐसा शुभ अवसर छोड़ देना उन्होंने किसी सुंदरी के स्वयंवर में बुलाए जाने पर भी लौट आना समझा। कैथरिन ने यह भी कहा था कि आज अवकाश है, दूसरे दिन इतनी सुगमता से भेंट भी नहीं हो सकती। साहब तत्काल कैथरिन के साथ चल दिए थे। रास्ते में कैथरिन ने समझा दिया था कि किसी अशिष्ट व्यवहार से वह अँगरेज़ जाति को कलंकित नहीं करेंगे, और यदि उसे अपने प्रेम में ला सकें, तो यह जाति के लिये गौरव की बात होगी। साहब दिल-ही-दिल प्रेम की परीक्षा में कैसे उत्तीर्ण होंगे, इसका प्रश्न-पत्र हल कर रहे थे। तब तक ऊपर से कनक ने बुला भेजा।

कैथरिन आगे-आगे, साहब पीछे-पीछे चले। साहब भी मर्दानी पोशाक से ख़ूब लैस थे। चलते समय चमड़े के कलाई-बंद में बँधी हुई घड़ी देखी। बारह बज रहे थे।

नौकर दोनो को तिमंज़िले पर ले गया। मकान देखकर साहब के दिल में अदेख सुंदरी के प्रति इज़्ज़त पैदा हुई थी, कमरा देखकर साहब आश्चर्य में पड़ गए। सुंदरी को देखकर साहब के होश उड़ गए। दिल में कुछ घबराहट हुई। पर कैथरिन कनक से बातचीत करने लगी, तो कुछ सँभल गए। सामने दो कुर्सियाँ पड़ी थीं। कैथरिन और साहब बैठ गए। यों दूसरे दिन उठकर कनक कैथरिमि मिलती थी,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पर आज वह बैठी ही रही। कैथरिन इसका कारण समझ गई। साहब ने इसे हिंदोस्तानी कुमारियों का ढंग समझा। कनक ने सूरत से साहब को पहचान लिया। पर साहब उसे नहीं पहचान सके। तब से इस सूरत में साज के कारण बड़ा फ़र्क़ था।

साहब अनिमेष आँखों से उस रूप की सुधा पीते रहे। मन-ही-मन उन्होंने उसकी बड़ी प्रशंसा की। उसके लिये, यदि वह कहे तो, साहब सर्वस्व देने को तैयार हो गए। श्रीमती कैथरिन ने साहब को समझा दिया था कि उसके कई अँगरेज़ प्रेमी हैं, पर अभी उसका किसी पर प्यार नहीं हुआ, यदि वे उसे प्राप्त कर सकें, तो राजकन्या के साथ ही राज्य भी उन्हें मिल जायगा; कारण, उसकी मा की जायदाद पर उसी का अधिकार है।

कैथरिन ने कहा—"मिस, एक गाना सुनाओ, ये मि० हैमिल्टन पुलिस सुपरिंटेंडेंट, २४ परगना, हैं, तुमसे मिलने के लिये आए हैं।"

कनक ने उठकर हाथ मिलाया। साहब उसकी सभ्यता से बहुत प्रसन्न हुए।

कनक ने कहा—"हम लोग पृथक्-पृथक् आसन से वार्तालाप करेंगे, इससे आलाप का सुख नहीं मिल सकता। साहब अगर पतलून उतार डालें, मैं उन्हें धोती दे सकती हूँ, तो संग-सुख की प्राप्ति पूरी मात्रा में हो। कुर्सी पर बैठकर पियानो, टेबल हार-मोनियम बजाए जा सकते हैं, पर आप लोग यहाँ हिंदोस्तानी गीत ही सुनने के लिये आए हैं, जो सितार और सुर-बहार से अच्छी तरह अदा होंगे, और उनका बजाना बराबर ज़मीन पर बैठकर ही हो सकता है।"

कनक ने अँगरेज़ी में कहा। कैथरिन ने साहब की तरफ़ देखा।

नायिका के प्रस्ताव के अनुसार ही उसे ख़ुश करना चाहिए; साहब ने अपने साहबी ढर्रे से समझा, और उन्हें वहाँ दूसरे प्रेमियों से बढ़कर भी अपने प्रेम की परीक्षा देनी थी। उधर कैथरिन की मौन चितवन का मतलब भी उन्होंने यही समझा।

साहब तैयार हो गए। कनक ने एक धुली ४८ इंच की बढ़िया धोती मँगा दी। साहब को कैथरिन ने धोती पहनना बतला दिया। दूसरे कमरे से साहब धोती पहन आए, और कनक के बराबर, गद्दी पर, बैठ गए, एक तकिए का सहारा कर लिया।

कनक ने सुर-बहार मँगवा लिया। तार स्वर से मिलाकर पहले एक गत बजाई। स्वर की मधुरता के साथ-साथ साहब के मन में उस परी को प्राप्त करने की प्रतिज्ञा भी दृढ़ होती गई। कैथरिन ने बड़े स्नेह से पूछा—"यह किससे सीखा?—अपनी मा से?"

"जी हाँ।" कनक ने सिर झुका लिया।

"अब एक गाना गाओ, हिंदोस्तानी गाना; फिर हम जायँगे, हमको देर हो रही है।"

कनक ने एक बार स्वरों पर हाथ फेर लिया। फिर गाने लगी—

गाना

(सारंग)

याद रखना, इतनी ही बात।
नहीं चाहते, मत चाहो तुम,
मेरे अर्घ्य-सुमन-दल नाथ।
मेरे वन में भ्रमण करोगे जब तुम,
अपना पथ-श्रम आप हरोगे जब तुम,
ढक लूँगी मैं अपने दृग-मुख,
छिपा रहूँगी गात—
याद रखना, इतनी ही बात।
सरिता के उस नीरव निर्जन तट पर,
आओगे जब मंद चरण तुम चलकर,
मेरे शून्य घाट के प्रति करुणाकर,
हेरोगे नित प्रात—
याद रखना, इतनी ही बात।
मेरे पथ की हरित लताएँ, तृण-दल,
मेरे श्रम-सिंचित, देखोगे, अचपल,
पलकहीन नयनों से तुमको प्रतिपल
हेरेंगे अज्ञात—
याद रखना, इतनी ही बात।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मैं न रहूँगी जब, सूना होगा जग,
समझोगे तब यह मंगल-कलरव सब,
था मेरे ही स्वर से सुंदर जगमग ;
चला गया सब साथ—
याद रखना इतनी ही बात ।

साहब एकटक मन की आँखों से देखते, हृदय के कानों से सुनते रहे। उस स्वर की सरिता अनेक तरंग-भंगों से बहती हुई जिस समुद्र से मिली थी, वहाँ तक सभी यात्राएँ पर्यवसित हो जाती थीं। श्रीमती कैथरिन ने पूछा—"कुछ आपकी समझ में आया ?" साहब ने अनजान की तरह सिर हिलाया, कहा—"इनका स्वरों से खेलना मुझे बहुत पसंद आया। पर मैं गाने का मतलब नहीं समझ सका।"

कैथरिन ने मतलब थोड़े शब्दों में समझा दिया।

"हिंदोस्तानी भाषा में ऐसे भी गाने हैं ?" साहब तअज्जुब करने लगे।

कनक को साहब देख रहा था, उसकी मुद्राएँ, भंगिमाएँ, गाने के समय, इस तरह अपने मनोभावों को व्यंजित कर रही थीं, जैसे वह स्वर के स्रोत में बहती हुई, प्रकाश के द्वार पर आ गई हो, और अपने प्रियतम से कुछ कह रही हो, जैसे अपने प्रियतम को अपना सर्वस्व पुरस्कार दे रही हो। संगीत के लिये कैथरिन ने कनक को धन्यवाद दिया, और साहब को अपने चलने का संवाद ; साथ ही उन्हें समझा दिया कि उनकी इच्छा हो, तो कुछ देर वह वहाँ ठहर सकते हैं। कनक ने सुर-बहार एक बग़ल रख दिया। एकांत की प्रिय कल्पना से, अभीप्सित की प्राप्ति के लोभ से साहब ने कहा—"अच्छा, आप चलें, मैं कुछ देर बाद आऊँगा।"

कैथरिन चली गई। साहब को एकांत मिला। कनक बातचीत करने लगी।

साहब कनक पर कुछ अपना भी प्रभाव जतलाना चाहते थे, और दैवात् कनक ने प्रसंग भी वैसा ही छेड़ दिया, "देखिए, हम हिंदोस्तानी हैं, प्रेम की बातें हिंदी में कीजिए। आप २४ परगने के पुलिस-सुपरिंटेंडेंट हैं।"

"हाँ।" ठोढ़ी ऊँची करके साहब से जहाँ तक तनते बना, तन गए।

"आपकी शादी तो हो गई होगी ?"

साहब की शादी हो गई थी। पर मेम साहब को कुछ दिन बाद आप पसंद नहीं आए, इसलिये इनके भारत आने से पहले ही वह इन्हें तलाक़ दे चुकी थीं, एक साधारण से कारण को बहुत बढ़ाकर, पर यहाँ साहब साफ़ इनकार कर गए, और इसे ही उन्होंने प्रेम बढ़ाने का उपाय समझा।

"अच्छा, अब तक आप अविवाहित हैं ? आपसे किसी का प्रेम नहीं हुआ ?"

"हमको अभी टक कोई पसंड नईं आया। हम टुमको पसंड करटा है।" साहब कुछ नज़दीक खिसक गए।

कनक डरी। उपाय एक ही उसने आज़माया था, और उसी का उपयोग वह साहब के लिये भी कर बैठी।

"शराब पीजिएगा ? हमारे यहाँ शराब पिलाने की चाल है।"

साहब पीछे क़दम रखनेवाले न थे। उन्होंने स्वीकार कर लिया। कनक ने ईश्वर को धन्यवाद दिया।

नौकर से शराब और सोडावाटर मँगवा लिया।

"तो अब तक किसी को नहीं प्यार किया ?—सच कहिएगा।"

"हम सच बोलटा, किसी को नहीं।"

साहब को तैयार कर एक ग्लास में उसी तरह दिया। साहब बड़े अदब से पी गए। दूसरा, तीसरा, चौथा। पाँचवें ग्लास पर इनकार कर गए। अधिक शराब जल्दी में पी जाने से नशा बहुत तेज़ होता है। यह कनक जानती थी। इसीलिये वह फ़ुर्ती कर रही थी। उधर साहब को भी अपनी शराब-पाचन-शक्ति का परिचय देना था, साथ ही अपने अकृत्रिम प्रेम की परीक्षा।

कनक ने सोचा, भूत-सिद्धि की तरह, हमेशा भूत

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

को एक काम देते रहना चाहिए। नहीं तो, कहा गया है, वह अपने साधक पर ही सवारी कस बैठता है।

कनक ने तुरंत फ़र्माया—"कुछ गाओ और नाचो, मैं तुम्हारा नाच देखना चाहती हूँ।"

"टब टुमबी आओ; हियाँ डांसिंग-स्टेज कहाँ?"

"यहीं नाचो, मुझे नाचना नहीं आता, मैं तो सिर्फ़ गाती हूँ।"

"अच्छा, टुम बोलटा, तो हम नाच सक्टा।"

साहब अपनी भोंपू-आवाज़ में गाने और नाचने लगे। कनक देख-देखकर हँस रही थी। कभी-कभी साहब का उत्साह बढ़ाती—बहुत अच्छा हो रहा है।

साहब की नज़र पिआनो पर पड़ी। कहा—"डेक्खो, आबी हम पिआनो बजाटा, फिर टुम कहेगा, टो हम नाचेगा।"

"अच्छा बजाओ।"

साहब पिआनो बजाने लगे। कनक ने तब तक अँगरेज़ी गीतों का अभ्यास नहीं किया था। उसे, कविता के यतिभंग की तरह, सब स्वरों का सम्मिलित विद्रोह असह्य हो गया। उसने कहा—"साहब, हमें तुम्हारा नाचना गाने से ज़्यादा पसंद है।"

साहब अब तक औचित्य की रेखा पार कर चुके थे। आँखें लाल हो रही थीं। प्रेमिका को नाच पसंद है, सुनकर बहुत ही ख़ुश हुए, और शीघ्र ही उसे प्रसन्न कर वर प्राप्त कर लेने की लालसा से नाचने लगे।

नौकर ने बाहर से संकेत किया। कनक उठ गई। नौकर को इशारे से आदेश दे लौट आई।

धड़-धड़-धड़, कई आदमी ज़ीने पर चढ़ रहे थे। आगंतुक बिलकुल कमरे के सामने आ गए। हैमिल्टन को नाचते हुए देख लिया। हैमिल्टन ने भी देखा, पर उस दूसरे की परवा न की, नाचते ही रहे।

"ओ! टुम दूसरे हो, रॉबिंसन।" हैमिल्टन ने पुकारकर कहा।

"नहीं, मैं चौथा हूँ" रॉबिंसन ने बढ़ते हुए जवाब दिया।

तितलियों-सी मूछें, लंबे, तगड़े रॉबिन्सन साहब मैजिस्ट्रेट थे। कैथरिन के पीछे कमरे के भीतर चले गए। कई और आदमी साथ थे। कुर्सियाँ ख़ाली थीं, बैठ गए। कैथरिन ने कनक से रॉबिंसन साहब से हाथ मिलाने के लिये कहा। कहा—"यह मैजिस्ट्रेट हैं, तुम अपना कुल क़िस्सा इनसे बयान कर दो।"

हैमिल्टन को धोती पहने नाचता हुआ देख रॉबिंसन बारूद हो गए थे। कनक ने हैमिल्टन की जेब से निकाली हुई चिट्ठी साहब को दे दी। पहले ही आग में पेट्रोल पड़ गया। कनक कहने लगी—"एक दिन मैं इडन गार्डेन में तालाब के किनारेवाली बेंच पर अकेली बैठी थी। हैमिल्टन ने मुझे पकड़ लिया, और मुझे जैसे अशिष्ट शब्द कहे, मैं कह नहीं सकती। उसी समय एक युवक वहाँ पहुँच गया। उसने मुझे बचाया। हैमिल्टन उससे बिगड़ गया, और उसे मारने के लिये तैयार हो गया। दोनो में कुछ देर हाथापाई होती रही। उस युवक ने हैमिल्टन को गिरा दिया, और कुछ रद्दे जमाए, जिससे हैमिल्टन बेहोश हो गया। तब उस युवक ने अपने रूमाल से हैमिल्टन का मुँह धो दिया, और सिर में उसी की पट्टी लपेट दी। फिर उसने एक चिट्ठी लिखी, और इनकी जेब में डाल दी। मुझसे जाने के लिये कहा। मैंने उससे पता पूछा। पर उसने नहीं बतलाया। वह हाईकोर्ट की राह चला गया। अपने बचानेवाले का पता मालूम कर लेना मैंने अपना फ़र्ज़ समझा। इसलिये वहीं फिर लौट गई। चिट्ठी निकालने के लिये जेब में हाथ डाला। पर भ्रम से युवक की चिट्ठी की जगह यह चिट्ठी मिली। एकाएक कोहनूर-स्टेज पर मैं शकुंतला का अभिनय करने गई। देखा, वही युवक दुष्यंत बना था। थोड़ी ही देर में दारोग़ा सुंदरसिंह उसे गिरफ़्तार करने गया, पर दर्शक बिगड़ गए थे। इसलिये अभिनय समाप्त हो जाने पर गिरफ़्तार किया। राजकुमार का क़ुसूर कुछ नहीं, अगर है, तो सिर्फ़ यही कि उसने मुझे बचाया था।"

अक्षर-अक्षर साहब पर चोट कर रहे थे। कनक ने

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कहा—"और देखिए, यह हैमिल्टन के चरित्र का दूसरा पत्र।"

कनक ने दारोग़ा की जेब से निकाला हुआ दूसरा पत्र भी साहब को दिखाया। इसमें हैमिल्टन के मित्र, सुपरिंटेंडेंट मिस्टर मूर ने दारोग़ा को बिला वजह राजकुमार को गिरफ़्तार कर बदमाशी के सुबूत दिखाकर सज़ा करा देने के लिये लिखा था। उसमें यह भी लिखा था कि इस काम से तुम्हारे ऊपर हम और हैमिल्टन साहब बहुत ख़ुश होंगे।

मैजिस्ट्रेट रॉबिंसन ने उस पत्र को भी ले लिया। पढ़कर दोनो की तिथियाँ मिलाईं। सोचा। कनक की बातें बिल्कुल सच जान पड़ीं। रॉबिंसन कनक से बहुत ख़ुश हुए।

कनक ने उभड़कर कहा—"वह दारोग़ा साहब भी यहीं तशरीफ़ रखते हैं। आपको तकलीफ़ होगी। चलकर आप उनके भी उत्तम चरित्र के प्रमाण ले सकते हैं।"

रॉबिंसन तैयार हो गए। हैमिल्टन को साथ चलने के लिये कहा। कनक आगे-आगे नीचे उतरने लगी।

सुंदरसिंह के कमरे की ताली नौकर को दी, और कुल दरवाज़े खोल देने के लिये कहा। सब दरवाज़े खोल दिए गए। भीतर सब लोग एक साथ घुस गए। दारोग़ा साहब करवट बदल रहे थे। रॉबिंसन ने एक की छड़ी लेकर खोद दिया। तब तक नशे में कुछ उतार आ गया था। पर फिर भी वे सँभलने लायक़ नहीं थे। रॉबिन्सन ने डाँटकर पुकारा। साहबी आवाज़ से वह घबराकर उठ बैठे। कई आदमियों और अँगरेज़ों को सामने खड़ा हुआ देख चौंककर खड़े हो गए। पर सँभलने की ताब न थी। कटे हुए पेड़ की तरह वहीं ढेर हो गए। होश दुरुस्त थे। पर शक्ति नहीं थी। दारोग़ा साहब फूट-फूटकर रोने लगे।

"साहब खड़े हैं, और आप लेटे रहिएगा?" कनक के नौकर खोद-खोदकर दारोग़ा साहब को उठाने लगे। एक ने बाँह पकड़कर खड़ा कर दिया। उन्हें विवश देख रॉबिंसन दूसरे कमरे की तरफ़ चल दिए, कहा—"इसको पड़ा रहने दो, हम समझ गया।"

यह वही कमरा था, जहाँ कनक पढ़ा करती थी। पुस्तकों पर नज़र गई; रॉबिंसन खोलकर देखने के लिये उत्सुक हो गए। नौकर ने आलमारियों की ताली खोल दी। साहब ने कई पुस्तकें निकालीं, उलट-पुलटकर देखते रहे। इज़्ज़त की निगाह से कनक को देखकर अँगरेज़ी में कहा—"अच्छा मिस," कनक मुस्किराई, "तुम क्या चाहती हो?"

"सिर्फ़ इंसाफ़।" कनक ने मँजे स्वर से कहा।

साहब सोचते रहे। निगाह उठाकर पूछा—"क्या तुम इन लोगों पर मुक़द्दमा चलाना चाहती हो?"

"नहीं।"

साहब कनक को देखते रहे। आँखों में तअज्जुब और सम्मान था। पूछा—"फिर कैसा इंसाफ़?"

"राजकुमार को बिला वजह के तकलीफ़ दी जा रही है, वह छोड़ दिए जायँ।" कनक की पलकें झुक गईं।

साहब कैथरिन को देखकर हँसने लगे। कहा—"हम कल ही छोड़ देगा। तुमसे हम बहुत ख़ुश हुआ है।"

कनक चुपचाप खड़ी रही।

"तुम्हारी पतलून क्या हुई मिस्टर हैमिल्टन?" हैमिल्टन को घृणा से देखकर साहब ने पूछा।

अब तक हैमिल्टन को होश ही नहीं था कि वह धोती पहने हुए हैं। नशा इस समय भी पूरी मात्रा में था। जब एकाएक यह मुक़द्दमा पेश हो गया, तब उनके दिल से प्रेम का मनोहर स्वप्न सूर्य के प्रकाश से कटते हुए अंधकार की तरह दूर हो गया। एकाएक चोट खाकर नशे में होते हुए भी वह होश में आ गए थे। कोई उपाय न था, इसलिये मन-ही-मन पश्चात्ताप करते हुए यंत्र की तरह रॉबिंसन के पीछे-पीछे चल रहे थे। मुक़द्दमे के चक्कर से बचने के अनेक प्रकार के उपायों का आविष्कार करते हुए वे अपनी हालत को भूल ही गए थे। अब पतलून की जगह धोती होने से, और वह भी एक दूसरे अँगरेज़ के सामने, उन्हें कनक पर बड़ा ग़ुस्सा आया। मन में बहुत ही

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

क्षुब्ध हुए। अब तक वीर की तरह सज़ा के लिये तैयार थे, पर अब लज्जा से आँखें झुक गईं।

एक नौकर ने पतलून लाकर दिया। बग़ल के एक दूसरे कमरे में साहब ने पहन लिया।

कनक को धैर्य देकर रॉबिंसन चलने लगे। हैमिल्टन और दारोग़ा को शीघ्र निकाल देने के लिये एक नौकर से कहा।

कनक ने कहा—"ये लोग शायद अकेले मकान तक नहीं जा सकेंगे। आप कहें, तो मैं ड्राइवर से कह दूँ, इनको छोड़ आवे।"

रॉबिंसन ने सर झुका लिया, जैसे इस तरह अपना अदब ज़ाहिर किया हो। फिर धीरे-धीरे नीचे उतरने लगे। कैथरिन से उन्होंने धीमे शब्दों में कुछ कहा, नीचे उसे अलग बुलाकर। फिर अपनी मोटर पर बैठ गए।

कनक ने अपनी मोटर से हैमिल्टन और दारोग़ा को उनके स्थान पर पहुँचवा दिया ❀।

[क्रमशः

❀ यह उपन्यास आगामी तीन संख्याओं में समाप्त हो जायगा।—संपादक

खेतीबारी के काम के लिये

हमारे यहाँ की बनी हुई मज़बूत

लोहे की रहँट

को

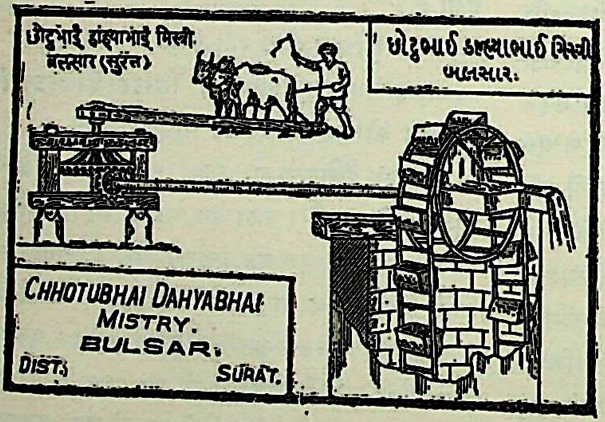

उपयोग में लाइए इससे बहुत कम ख़र्चे और आसानी से कुआँ और नदी से बैलों और भैंसों की सहायता द्वारा काफ़ी पानी निकाल सकते हैं। हमारी रहँट बहुत उपयोगी पाई जाने के कारण हमें सरकारी नुमायशों से सुवर्ण के तमग़े मिले हैं।

यदि आप इससे लाभ उठाना चाहते हैं, तो सचित्र सूचीपत्र के लिये आज ही लिखिए।

पता—छोटूभाई, डाह्याभाई (रहँट बनानेवाले)
अंडरसन रोड, बलसार (ज़िला सूरत) बी० बी० सी० आई० रेलवे

CHHOTUBHAI DAHYABHAI
Anderson Road, Bulsar (Dist. Surat.) B. B. & C. I. Railway.

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लखनऊ-विश्वविद्यालय

[श्रीपृथ्वीपालसिंह बी० ए०]

विकास का युग था। देश-भर में उथल-पुथल मची हुई थी, चारो ओर विभिन्न आंदोलनों की सृष्टि हो रही थी। लखनऊ अपनी पुरानी रफ़्तार से चला जा रहा था। इस सुंदर सलोने रम्य नगर में कई छोटे-छोटे स्कूल थे और दो-तीन छोटे-छोटे कॉलेज भी।

संक्षिप्त इतिहास

एक दिन की बात है, हमारे सुप्रसिद्ध महाराज महमूदाबाद साहब के हृदय में सहसा एक विचार उठा। आपने लखनऊ को शिक्षा का एक बड़ा केंद्र बनाने का विचार किया। विश्वविद्यालय स्थापित करने की लगन आपके हृदय में पैदा होने की देरी थी कि आंदोलन प्रारंभ हो गया। आपने प्रयाग के सुप्रसिद्ध दैनिक 'पायोनियर' में इसी आशय का एक लेख भी छपवाया। दैवयोग से इसी समय सर हारकोर्ट बटलर महोदय इस प्रांत के गवर्नर होकर आ गए। कहते हैं, आपका मिज़ाज बचपन ही से आशिक़ाना था। लखनऊ की काट-छाँट और मनमोहनी बनावट देखकर आप मुग्ध हो गए। उसी घड़ी से आप लखनऊ से प्रेम करने लगे। कुछ ही काल में लखनऊ को सर हारकोर्ट बटलर ने चमन बना दिया, और अपने हाथों सींची फुलवाड़ी के बीच अपने स्मृति-स्वरूप एक विश्वविद्यालय भी स्थापित कर गए।

❀ ❀ ❀

१० नवंबर, १९१९ को लखनऊ-गवर्नमेंट-हाउस में इस प्रांत के प्रसिद्ध शिक्षा-प्रेमी विद्वान् इकट्ठा हुए, और उन्होंने लखनऊ में, १९१७ के 'कलकत्ता-विश्वविद्यालय-कमीशन' के बताए हुए ढंग पर, एक 'स्थानीय विश्व-

श्रीपृथ्वीपालसिंह बी० ए० ❀

* चिरंजीव पृथ्वीपालसिंह से 'सुधा' के पाठक अच्छी तरह परिचित हैं। आप हिंदी के बड़े ही होनहार लेखक हैं। आपके लेख 'सुधा' में निकलते रहते हैं। १९२९ ई० में कॉलेज-होस्टेल की एक प्रतियोगिता में आप प्रथम हुए और रजत 'ट्राफ़ी' तथा पदक से पुरस्कृत किए गए। इसी तरह लखनऊ-विश्वविद्यालय के हिंदी-संस्कृत-विभाग की एक वाक्-प्रतियोगिता में भी आपने प्रथम पुरस्कार (स्वर्ण-पदक) प्राप्त किया। आप लखनऊ-विश्वविद्यालय की ज्ञानवर्द्धिनी सभा के भूतपूर्व मंत्री हैं, और लखनऊ-युनिवर्सिटी-जर्नल, हिंदी-विभाग के संपादक। आशा है, आप दत्तचित्त होकर हिंदी की सेवा करते रहेंगे। हम आपकी उन्नति के इच्छुक हैं।—सुधा-संपादक

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विद्यालय' (Residential University) स्थापित करने का प्रस्ताव पास कर दिया।

उस समय प्रांत के 'डॉइरेक्टर ऑफ़् पब्लिक इंस्ट्रक्शन' (Director of Public Instruction) थे श्रीयुत महाशय सी० एफ़्० डेज़ाफ़ोस। उन्होंने १२ अगस्त, १९२० को लखनऊ-विश्वविद्यालय-स्थापन-संबंधी प्रस्ताव प्रांतीय व्यवस्थापिका-सभा में पेश किया। प्रस्ताव ८ ऑक्टोबर, १९२० को पास हो गया, और २५ नवंबर को गवर्नर जनरल के उ... र हस्ताक्षर भी हो गए।

१९ जुलाई, १९२१ से लखनऊ-विश्वविद्यालय ने कला, विज्ञान, व्यापार आदि विभागों में शिक्षा देना प्रारंभ कर दिया। १ जुलाई, १९२२ को कैनिंग कॉलेज तथा १ मार्च, १९२२ को मेडिकल कॉलेज और चिकित्सालय (King George's Medical College & King George's Hospital) प्रांतीय सरकार ने विश्वविद्यालय के सिपुर्द कर दिए।

लखनऊ-विश्वविद्यालय ने अपने जन्म-दिवस के उपलक्ष में बड़े बहुमूल्य उपहार पाए। कैनिंग कॉलेज और मेडिकल कॉलेज सरकार ने भेट किए। ताल्लुक़ेदारों ने विश्वविद्यालय को तीस लाख के लगभग रुपया प्रदान किया। महाराजा महमूदाबाद ने अकेले ही एक लाख की थैली भेट की।

सचमुच लखनऊ-विश्वविद्यालय के जन्म और स्थापन का सारा श्रेय श्रीऑनरेबुल महाराजा सर मोहम्मद-अली मोहम्मदख़ाँ के० सी० आई० ई० आदि तथा सर हारकोर्ट बटलर के० सी० आई० ई०, के० सी० एस्० आई० को ही प्राप्त है।

७ जनवरी, १९२४ को सर आशुतोष मुकर्जी ने सर हारकोर्ट बटलर की मूर्ति उद्घाटन करते हुए कहा था—

"........I maintain that he (Sir Harcourt Butler) has created a record which it will be difficult to beat. But when all is said and done, I do not hesitate to maintain that ever if the public services of Sir Harcourt Butler should fade away from the memory of the people of this country still his greatest achievement will be the foundation of the Lucknow University."

'मैं दावे के साथ कहता हूँ कि उन्होंने (श्रीमान् हारकोर्ट बटलर ने) जो कार्य संपन्न किया है, उसका उन्मूलन करना अति दुष्कर ही नहीं, वरन् असंभव होगा। किंतु यदि यह भी मान लिया जाय कि श्रीमान् बटलर महोदय के सर्व सार्वजनिक कार्यों की स्मृति जनता के हृदय-पटल से कभी मिट जायगी, तो भी मुझे दृढ़ विश्वास है कि लखनऊ-विश्वविद्यालय की स्थापना का सेहरा सदैव उनके सिर पर ही बाँधा जायगा।"

❀ ❀ ❀

लखनऊ-विश्वविद्यालय की आधार-शिला बटलर महोदय ने ही रक्खी थी। इस विश्वविद्यालय का सबसे पहला उपाधि-वितरण-महोत्सव ३० ऑक्टोबर,

सर हारकोर्ट बटलर के० सी० आई० ई०, के० सी० एस्० आई०

(लखनऊ-विश्वविद्यालय के जन्मदाता तथा प्रथम कुलपति)

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

१९२२ को हुआ था। लखनऊ-विश्वविद्यालय के जन्म दाता तथा विश्वविद्यालय के सर्वप्रथम कुलपति श्रीसर हारकोर्ट बटलर को विश्वविद्यालय ने इस अवसर पर 'डॉक्टर ऑफ़् लेटर्स' (Doctor of Letters) की उपाधि से सम्मानित किया था। कर्मवीर बटलर का लगाया वृक्ष आज हरा-भरा और पल्लवित हो रहा है।

लखनऊ-विश्वविद्यालय के अंतर्गत दो कॉलेज हैं—

सांकेतिक विवरण

एक तो सुप्रसिद्ध 'किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज' और दूसरा 'कैनिंग-कॉलेज'। चिकित्सा-विभाग के विद्यार्थियों के लिये मेडिकल कॉलेज है, तथा अन्य विभागों के छात्रों के लिये कैनिंग कॉलेज; पास ही में देवियों के लिये 'आइसोबेला थोबर्न-कॉलेज' है। लखनऊ-विश्वविद्यालय 'स्थानीय विश्वविद्यालय' (Residential University) है। अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिये बँगले और छात्रालय युनिवर्सिटी की सीमा के अंदर ही बने हैं। लगभग तीस बँगले इस समय तक बन चुके हैं। प्रोफ़ेसरों को इन बँगलों का ख़ासा किराया देना पड़ता है। छात्रालयों के निरीक्षक, कॉलेज के अधिष्ठाता आदि इस दंड से मुक्त हैं।

सन् १९२८ की लखनऊ-विश्वविद्यालय की रिपोर्ट से पता चलता है कि उस वर्ष मेडिकल कॉलेज में २७० विद्यार्थी शिक्षा पाते थे। उनमें से २१८ विद्यार्थी छात्रालयों में रहते थे, शेष अपने माता-पिता और संबंधियों के साथ नगर में। इसी तरह कला (Arts), विज्ञान (Science) और व्यापार (Commerce)-विभाग में कुल मिलाकर ८४४ छात्र थे, और केवल क़ानून-विभाग (Faculty of Law) में ३७७। इनमें से ४१४ छात्र छात्रालयों में रहते थे। आइसोबेला थोबर्न कॉलेज की ३९ देवियाँ भी छात्रालय में ही निवास करती थीं। प्रत्येक वर्ष विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती जाती है, संस्था उन्नति कर रही है।

रहने का प्रबंध

यद्यपि यह 'रेज़ीडेंशल युनिवर्सिटी' है, फिर भी अभी तक अपने छात्रों के रहने के लिये उपयुक्त प्रबंध न कर सकी। मेडिकल कॉलेज के विद्यार्थियों के लिये कमरों की कमी नहीं पड़ती, परंतु कैनिंग-कॉलेज के विद्यार्थियों को प्रत्येक वर्ष मुसीबत का सामना करना पड़ता है। चार छात्रालय हैं—डियट-होस्टल, हारकोर्ट-होस्टल, मेस्टन-होस्टल तथा महमूदाबाद-होस्टल। प्रत्येक 'होस्टल' में सौ से अधिक छात्रों के रहने का प्रबंध है। छात्रों की संख्या-वृद्धि हो रही है। बेचारे इन होस्टलों में कमरे नहीं पाते; कहीं लोहे के पुल के निकटवाले 'लाल बँगले' में ठहरा दिए जाते हैं, तो कहीं किसी अन्य कोठी में। विश्वविद्यालय के अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकर्षित है। एक पाँचवाँ छात्रालय भी बनकर तैयार है। आशा है, शीघ्र ही कमरों का अकाल दूर हो जायगा।

❀ ❀ ❀

लखनऊ-विश्वविद्यालय गोमती नदी के तट पर, उस पार, बसा है। दूर ही से लखनऊ-विश्वविद्यालय की गगन-स्पर्शी अट्टालिका दिखाई देने लगती है।

विश्वविद्यालय का दर्शन

विश्वविद्यालय की सीमा के अंदर प्रवेश करते ही बाईं ओर एक इमारत मिलती है। रजिस्ट्रार (Registrar), वाइस-चैंसलर (Vice-Chancellor) आदि के दफ़्तर इसी में हैं। गेरू से पुती हुई यह क्षुद्र इमारत वाइस-चैंसलर और रजिस्ट्रार के दफ़्तर के लिये सर्वथा अयोग्य, निकम्मी और हास्यास्पद है। सच बात तो यह है कि अपने विशाल दफ़्तर को देखकर अधिकारी स्वयं ही लज्जा से गड़े जा रहे हैं। विश्वविद्यालय के पास कोई 'सेनेट हॉल' (Senate Hall) भी नहीं। उपाधि-वितरण-उत्सव सदा शामियाने के नीचे ही मनाया जाता है। सुनते हैं, बहुत शीघ्र ही इसके लिये आयोजन होने जा रहा है, लाखों की लागत का भवन बनने-वाला है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

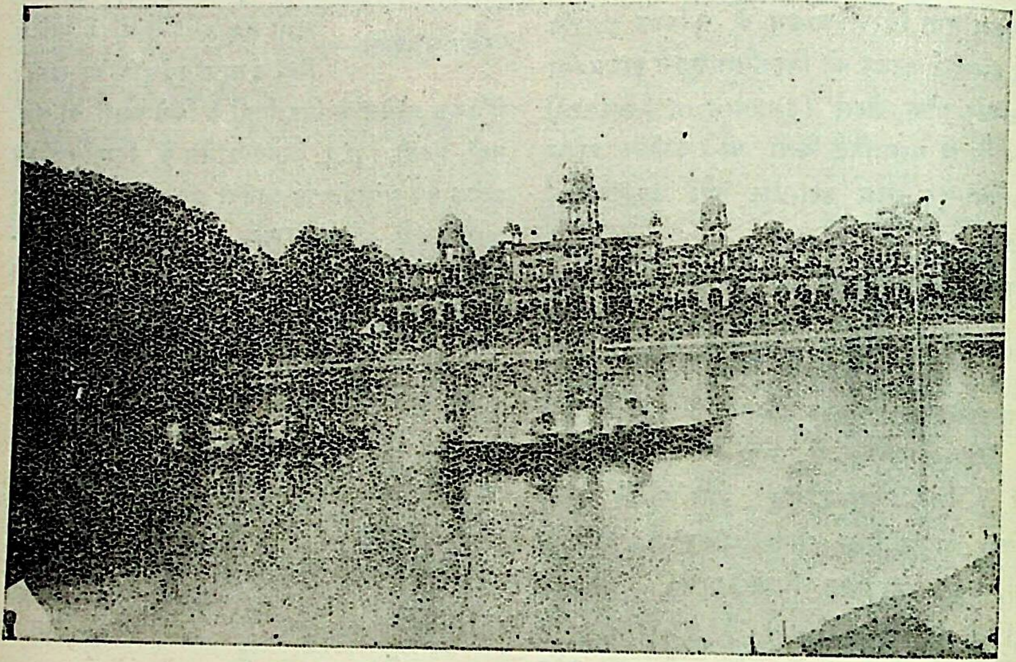

कैनिंग कॉलेज-भवन का मनोहर दृश्य

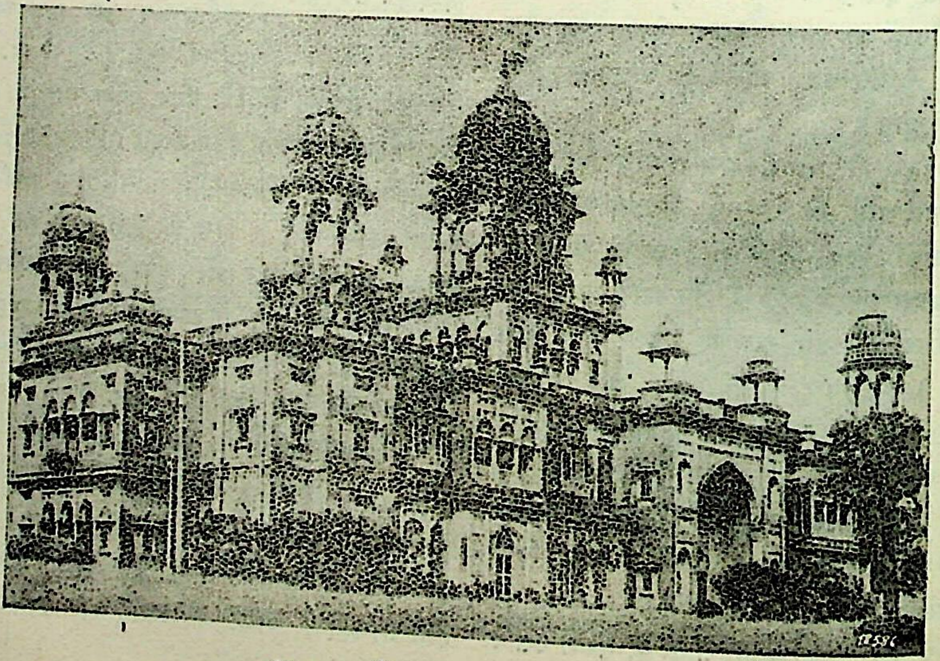

किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज-भवन

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गंगा-पुस्तकमाला का पूर्णोत्सव [वसंत-पंचमी १६८६]

बाईं ओर से, बैठे हुए—१. पं० रमाशंकर मिश्र श्रीपति २. पं० भागीरथप्रसाद दीक्षित ३. पं राधेनारायण वाजपेयी ४. पं० रूपनारायण पांडेय ५. पं० दुलारेलाल भार्गव ६. प्रो० आद्यादत्त ठाकुर एम्० ए० ७. प्रो० बदरीनाथ भट्ट बी० ए० ८. कवि श्री 'निराला' ६. पं० उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' बी० ए० (ऑनर्स)

CC-0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एक सुशिक्षित परिवार

कुमारी शीलवतीदेवी (भानजी)
श्रीमती गार्गीदेवी 'हिंदीरत्न' (पुत्री)

श्रीमती दि्ग्विजयादेवी 'हिंदीरत्न' (धर्मपत्नी)

कुमारी सुमित्रादेवी 'हिंदीरत्न' (पुत्री)
कुमारी सुशीलादेवी 'हिंदीरत्न' (साली)

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विश्वविद्यालय के मुख्य दफ़्तर के आगे बढ़ते ही हमें कैनिंग-कॉलेज की ख़ास इमारत दृष्टि-गोचर होती है। कला, व्यापार तथा क़ानून-विभाग की शिक्षा-दीक्षा इसी भवन में होती है। युनिवर्सिटी-कॉलेज के अधिष्ठाता (Principal) का आफ़िस, विश्वविद्यालय का पुस्तकालय तथा सुप्रसिद्ध 'बेनेट-हॉल' इसी भवन में है।

पुस्तकालय

लखनऊ-विश्वविद्यालय के पुस्तकालय का प्रबंध इतना सुगढ़ और इतने कमाल का है कि देखकर दाँतों-तले उँगली दबानी पड़ती है। इस समय लखनऊ-विश्वविद्यालय में लगभग चालीस हज़ार पुस्तकें हैं। नित्य-प्रति ढाई-तीन सौ पुस्तकों की निकासी होती है। साल-भर में चालीस हज़ार से ऊपर पुस्तकें, पढ़ने के लिये, बाहर जाती हैं, और अस्सी हज़ार के लगभग पुस्तकालय के अंदर पढ़ने के लिये निकाली जाती हैं। दिनोदिन पुस्तकालय विकास कर रहा है। पुस्तकालय की उन्नति का श्रेय इसके अध्यक्ष श्रीडॉक्टर वलीमोहम्मद को ही प्राप्त है।

बेनेट हाल

कैनिंग-कॉलेज-भवन के मध्य-भाग में विश्वविद्यालय का विशाल बेनेट-हॉल स्थित है। बेनेट-हॉल एक लंबा-चौड़ा विशाल कमरा है। इसी कमरे में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की सभाएँ, वाद-विवाद, कवि-सम्मेलन, मुशायरा आदि होते हैं। बेनेट-हॉल श्रीबेनेट महोदय, सर हारकोर्ट बटलर, लार्ड कैनिंग तथा भूतपूर्व वाइस-चैंसलर आदि के चित्रों से सुसज्जित है। छत के किनारे-किनारे, दीवाल में, संसार के सुप्रसिद्ध विद्वानों के नाम बड़े सुंदर अक्षरों में अंकित हैं। बेल-बूटों के बीच कालिदास, फ़िरदौसी, अरिस्टाटल आदि के दिव्य नामों की मनोहर मणिमाला-सी लटक रही है। नीचे चारो ओर दीवाल पर चमकता हुआ काष्ठ मढ़ा है, और उन पर सुनहले अक्षरों में कॉलेज के उन विद्यार्थी-रत्नों का नाम अंकित है, जो विविध परीक्षाओं में अब तक सर्वप्रथम उत्तीर्ण होते आए हैं।

विश्वविद्यालय का सबसे विराट्, विशाल तथा विस्तृत कमरा यही है। बेनेट-हॉल ही युनिवर्सिटी का मुख्य परीक्षा-भवन, सेनेट-हाल तथा विद्यार्थियों का पार्लामेंट-भवन आदि-आदि सब कुछ है।

कैनिंग-कॉलेज-भवन के आगे विज्ञान-विभाग की इमारतें हैं। कई लाख की लागत का रसायन-शास्त्र-ब्लाक (Chemistry Block) अभी हाल ही में बना है। इसके बन जाने से युनिवर्सिटी की आभा द्विगुणित हो गई है। विज्ञान-विभाग में बेतार का तार तथा अजायब-घर दर्शनीय हैं। विज्ञान-विभाग के एक कमरे में बैठकर हज़ारों मील दूर के गाने की मधुर ध्वनि का आनंद उठाइए, तथा अजायब-घर में कीड़े-मकोड़ों, पशु-पक्षियों के मृत शरीर, अस्थि-पिंजर देखिए। एम्० एस्० सी० के विद्यार्थियों को 'बेतार के तार' की शिक्षा प्राप्त करनी होती है। तथा विज्ञान-विभाग के विद्यार्थी पशु-पक्षियों के अस्थि-पिंजरों को देख-भालकर उनके भिन्न-भिन्न अवयवों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। और वनस्पति-शास्त्र, भौतिक विज्ञान, रसायन-शास्त्र आदि का अध्ययन करते हैं।

विज्ञान-विभाग की इमारतों के बाँई ओर पर नव्वाबी ज़माने की बारादरी दिखाई पड़ती है। इसकी बनावट, काट-छाँट, रूप-रंग सब कुछ नव्वाबी है। इस बारादरी का एक भाग 'विश्वविद्यालय-सैनिक-संघ' (University Training Corps) के हाथ में है, तथा दूसरा है 'लखनऊ-विश्वविद्यालय-विद्यार्थी-संघ' (Lucknow University Union) के हाथ में। इसी बारादरी में लखनऊ विश्वविद्यालय की व्यायामशाला तथा विद्यार्थी-संघ का वाचनालय, 'क्रीड़ा-कुटीर' (Sports Room) तथा 'जलपानशाला' (Refreshment Room) हैं। लखनऊ-विश्वविद्यालय का डाकख़ाना भी इसी बारादरी में है।

बारादरी के आगे चलने पर हमें 'प्रिंसपल', 'प्रौक्टर', प्रोफ़ेसरों के बँगले तथा छात्रालय मिलते हैं। नगर के जिस भाग में ये इमारतें बनी हैं, तथा यह विश्वविद्यालय स्थापित है, वह 'बादशाह-बाग़' के नाम से प्रसिद्ध है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

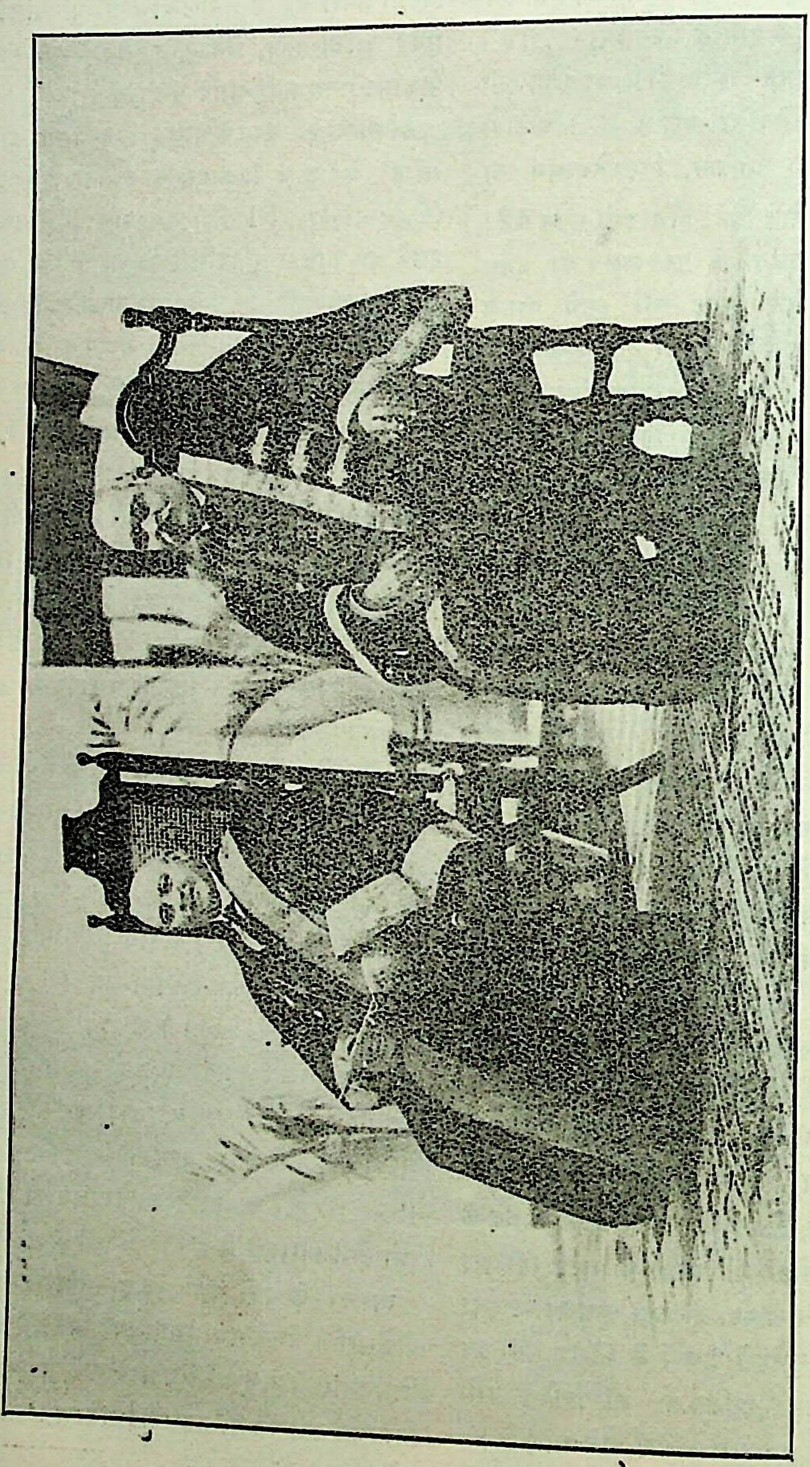

सर हारकोट बटलर (भूतपूर्व) तथा श्रीडॉक्टर जी० एन० चक्रवर्ती वाइस-चैंसलर (भूतपूर्व)

[ऑक्टोबर ३०, १९२२ के उपाधि-वितरण-उत्सव के अवसर पर]

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वर्तमान समय में श्रीसर माल्कम हेली इस प्रांत के गवर्नर ही लखनऊ-विश्वविद्यालय के कुलपति (Chancellor) हैं । श्रीडॉक्टर एम्० बी० कैमरन सी० आई० ई० * वाइस-चैंसलर हैं । जब लखनऊ-विश्वविद्यालय का जन्म नहीं हुआ था, तभी से आप कैनिंग-कॉलेज की सेवा कर रहे हैं । आप प्रोफ़ेसर, प्रिंसपल और वाइस-चैंसलर की हैसियत से

अधिकारी, अध्यापक, शिक्षा आदि

डॉक्टर एम्० बी० कैमरन एम्० ए०, डी० लिट, सी० आई० ई०, भूतपूर्व वाइस-चैंसलर

* अब आपके स्थान पर श्री० पं० जगतनारायणजी मुल्ला वाइस-चैंसलर नियुक्त हुए हैं । वयो-वृद्ध श्रीडॉक्टर कैमरन रिटायर होकर अपनी मातृ-भूमि चले गए ।—संपादक

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कैनिंग-कॉलेज के विद्यार्थियों के प्रति अथाह प्रेम का परिचय देते रहे। डॉक्टर कैमरन शीघ्र ही रिटायर होकर अपनी मातृ-भूमि जानेवाले हैं, सभी को इसका दुःख है। पर यह सचमुच बड़े हर्ष की बात है डॉक्टर कैमरन के स्थान पर लखनऊ के मौरमुकुट श्री पं० जगतनारायणजी मुल्ला उप-कुलपति नियुक्त हुए हैं। आप हिंदी के परम हितैषी और राष्ट्र-भाषा के बड़े प्रेमी हैं।

पं० जगतनारायणजी मुल्ला
[वाइस-चैंसलर लखनऊ-युनिवर्सिटी]

लखनऊ-विश्वविद्यालय में अभी तक हिंदी की बड़ी उपेक्षा हुई है, परंतु अब पूर्ण आशा है कि श्री पं० जगतनारायणजी मुल्ला की छत्र-छाया में हिंदी ख़ूब फूले-फलेगी। हिंदी-संसार नवीन कुलपति की ओर आशा-भरे नेत्रों से देख रहा है।

युनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार हैं श्री० मिस्टर आर० आर० खन्ना एम्० एस्-सी०। आप पहले नागपुर-विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार थे, अब आप लखनऊ-विश्वविद्यालय का कार्य बड़ी कुशलता से कर रहे हैं। प्रोफ़ेसर जे० ए० स्ट्रैंग युनिवर्सिटी के अवैतनिक 'प्रोक्टर' हैं। 'प्रोक्टर' की हैसियत से विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के शील, आचार-व्यवहार और चरित्र की देख-रेख करते हैं।

कैनिंग-कॉलेज के प्रिंसपल हैं प्रोफ़ेसर एम्० बी० स्मिथ, मेडिकल-कॉलेज के हैं लेफ़्टीनेंट कर्नल एच्० स्टॉट तथा आइज़ाबेला थोबर्न-कॉलेज की प्रिंसपल हैं मिस मेरी ई० शैनन।

युनिवर्सिटी के अंतर्गत पाँच विभाग हैं—चिकित्सा (Medicine), कला (Arts), विज्ञान (Science), व्यापार (Commerce) तथा क़ानून (Law)-विभाग। प्रत्येक विभाग का एक-एक अध्यक्ष है, जिसे 'डीन' (Dean) कहते हैं। हर विभाग में भिन्न-भिन्न विषयों के अलग-अलग प्रधान अध्यापक (Head of the Department), अध्यापक (Reader) और उप-अध्यापक (Lecturer) होते हैं। इस विश्वविद्यालय में अधिकारियों तथा प्रोफ़ेसरों को वेतन-स्वरूप बड़ी-बड़ी लंबी रक़में मिलती हैं।

लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रत्येक विभाग में भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वान् इस समय काम कर रहे हैं। उदाहरणार्थ डॉक्टर राधाकुमुद मुकर्जी एम्० ए०, पी० एच्० डी०, पी० आर० एस्०, 'विद्या-वैभव' आज कल भारतीय इतिहास-विभाग के प्रधान अध्यापक हैं। डॉक्टर राधाकमल मुकर्जी एम्० ए०, पी० एच्० डी०, पी० आर० एस्० अर्थशास्त्र (Economics) तथा समाज-शास्त्र (Sociology)-विभाग के प्रधान अध्यापक हैं। संस्कृत, हिंदी और प्राकृत भाषा के प्रधान अध्यापक हैं श्री० के० ए० सुब्रह्मण्य अय्यर। इसी विभाग में हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री-पं० बदरीनाथजी भट्ट, श्री पं० अयादत्तजी ठाकुर, श्री-पं० बद्रीनाथजी शास्त्री आदि अध्यापक हैं। उर्दू, परशियन और अरबी-विभाग के प्रधान अध्यापक हैं सुप्रसिद्ध डॉक्टर एम्० बी० रहमान एम्० ए०, पी० एच्० डी०। श्री प्रो० एन० के० सिद्धांत एम्० ए० अंगरेज़ी-विभाग के प्रधान अध्यापक हैं। राजनीति-विभाग के प्रधान

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

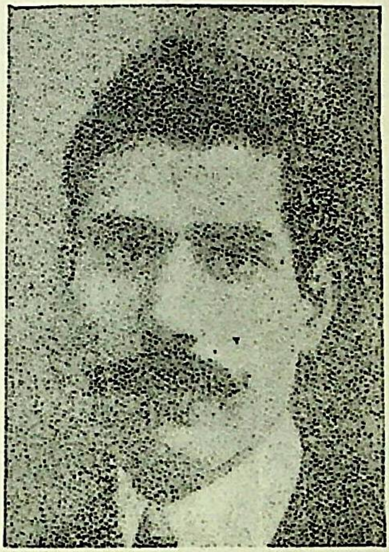

पं० जगमोहननाथ चक बी० ए०
[क़ानून-विभाग के डीन]

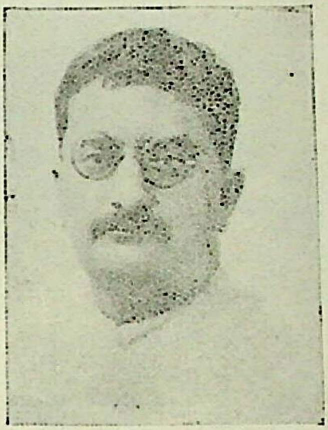

डॉक्टर राधाकुमुद एम्० ए०, पी-एच्० डी०, पी० आर० एस्०, विद्या-वैभव, इतिहास-शिरोमणि
[प्रधान अध्यापक 'भारतीय इतिहास-विभाग']

डॉक्टर वलीमोहम्मद एम्० ए०, पी-एच्० डी०,
[विज्ञान-विभाग के डीन तथा विश्वविद्यालय के लाइब्रेरियन]

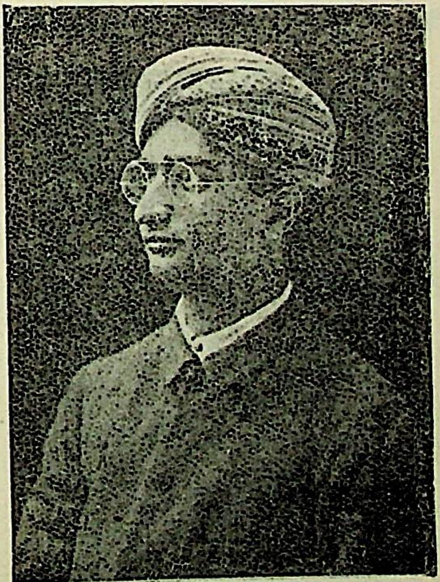

डॉक्टर राधाकमल मुकर्जी एम्० ए०, पी-एच्० डी०, पी० आर० एस्०
[अर्थशास्त्र तथा समाज-शास्त्र-विभाग के प्रधान अध्यापक]

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

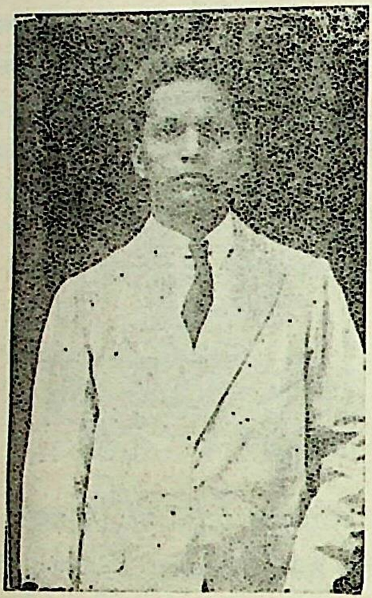

मिस्टर के० ए० सुब्रह्मण्य अय्यर एम्० ए०
[संस्कृत, प्राकृत तथा हिंदी-विभाग के प्रधान अध्यापक]

पं० बदरीनाथ शास्त्री एम्० ए०
[अध्यापक संस्कृत-हिंदी-विभाग]

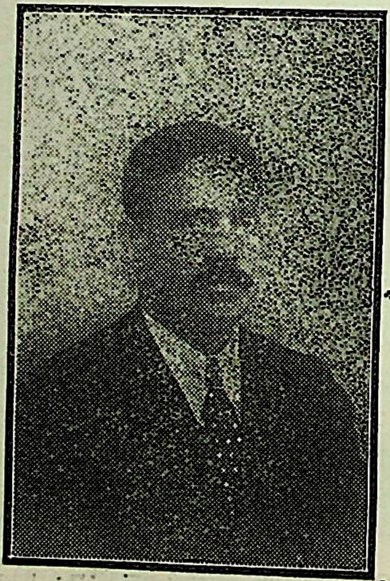

श्री० प्रो० के० एस्० हजेला एम्० ए०, एम्० एस्-सी०, एल्-एल्० एम्०
[अध्यापक क़ानून-विभाग]

डॉक्टर एम्० बी० रहमान एम्० ए०, पी-एच्० डी०

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अध्यापक डॉक्टर बी० एस्० राम एम्० ए०, पी-एच्० डी० तथा अध्यापक श्री० वी० के० नंदन मेनन, डॉक्टर ई० अशीरवादम आदि का नाम भी उल्लेखनीय है। क़ानून-विभाग में श्रीप्रोफ़ेसर कृपाशंकर हजेला एम्० ए०, एम्० एस्-सी०, एल्-एल्० एम्० तथा डॉक्टर जयकरणनाथ मिश्र प्रभृति विद्वान् काम कर रहे हैं। क़ानून-विभाग के डीन हैं श्रीपं० जगमोहननाथ चक्र बार-एट-ला।

उधर विज्ञान-विभाग में डॉक्टर वलीमोहम्मद एम्० ए०, पी-एच्० डी०, आई० ई० एस्, डॉक्टर बीरबल साहनी एम्० ए०, एस्० सी० डी०, डी० एस्-सी०, एफ़्० जी० एस्०, एफ़्० ए० एस्० बी०, डॉक्टर करमनारायण भाल डी० फ़िल, डी० एस्० सी० आदि

श्री० वी० के० नंदन मेनन
[अध्यापक राजनीति-विभाग]

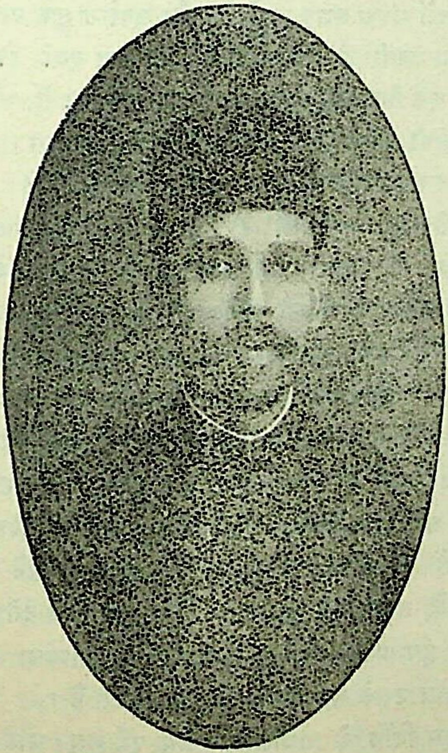

सैयद मसूद हुसेन रिज़वी एम्० ए०
[अध्यापक उर्दू-विभाग]

डॉक्टर ई० अशीरवादम बी० ए०, बी० डी०, पी-एच्० डी०
[अध्यापक राजनीति-विभाग]

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

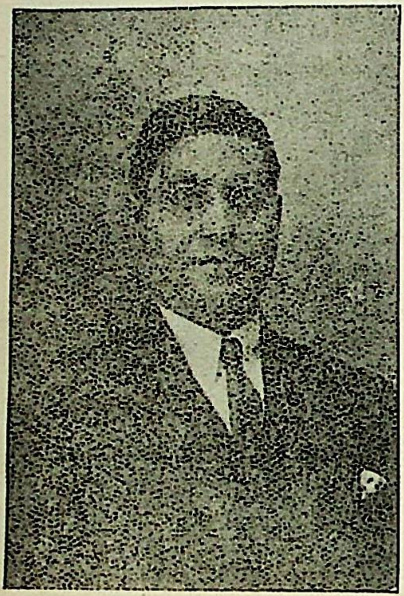

डॉ० करमनारायण भाल डी० फ़िल, डी० एस्० सी०
[विज्ञान-विभाग के अध्यापक]

भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों में से हैं । इसी प्रकार विश्वविद्यालय के प्रत्येक विभाग में देश के चुने हुए माणिक-मुक्ता जगमगा रहे हैं । यदि प्रत्येक व्यक्ति का परिचय अलग-अलग दिया जाय, तो कदाचित् पाठक पढ़ते-पढ़ते ऊब जायँगे ।

संयुक्त प्रांत-भर में चिकित्सा की शिक्षा के लिये केवल 'किंग जार्जमेडिकल कॉलेज' ही एक ख़ास संस्था है । इस कॉलेज में भरती होने के लिये प्रति वर्ष सहस्रों प्रवेश-पत्र आते हैं । इन सहस्रों उम्मीद्-वार विद्यार्थियों की परीक्षा ली जाती है, और चुने हुए उत्तीर्ण विद्यार्थी ही एम्० बी० बी० एस्०-कक्षा में लिए जाते हैं ।

लखनऊ-विश्वविद्यालय के कला-विभाग में अँगरेज़ी, दर्शन-शास्त्र, इतिहास, राजनीति, अर्थ-शास्त्र, संस्कृत, हिंदी, अरबी, फ़ारसी, उर्दू आदि की शिक्षा दी जाती है । हिंदी-उर्दू के अतिरिक्त यहाँ अन्य विषयों में एम्० ए० तक शिक्षा दी जाती है । भारतवर्ष की राष्ट्र-भाषा की अभी तक उपेक्षा की गई है, यह लखनऊ-विश्वविद्यालय के लिये बड़ी लज्जा की बात है । अभी तक हिंदी में एम्० ए०-क्लास नहीं खोला गया है, बेचारी उर्दू की भी वैसी ही अवहेलना की गई है । सुनते हैं, इसका सारा दोष है प्रांतीय सरकार के सिर पर । अभी तक हिंदी-उर्दू में एम्० ए०-क्लास खोलने के लिये धन की मंज़ूरी ही नहीं हुई । प्रांतीय सरकार को अपने कोष की रक्षा का एकमात्र यही साधन दिखाई पड़ा ! अधि-कारियों को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिए ।

विश्वविद्यालय में वकालत के दर्जे ख़ूब हरे-भरे रहते हैं । एम्० ए० और एल्० एल्० बी० दोनो ही उपाधियाँ साथ-ही-साथ दो ही वर्ष के व्यय से मिल जाती हैं । यह एक बड़ी सुविधा की बात है । वकालत के दर्जे संध्या-समय लगते हैं, और सूर्यास्त तक पढ़ाई हुआ करती है । दो सौ विद्यार्थियों का दर्जा होता है, एक मेला-सा लग जाता है । इस जमघट में, कौन किसकी हाज़िरी बोल रहा है, पता नहीं चलता ।

लखनऊ-विश्वविद्यालय की शिक्षा-प्रणाली में 'विशेष पाठन-प्रणाली' (Tutorial System) शिक्षा की एक नवीन उल्लेखनीय विधि है । जब डाक्टर कैमरन कैनिंग-कॉलेज के प्रिंसपल थे, तभी यह नवीन-रीति प्रचलित हुई थी । इस नीति के अनुसार प्रत्येक कक्षा के विद्यार्थी पाँच-पाँच, छः-छः की टोलियों में विभाजित कर दिए जाते हैं, और भिन्न-भिन्न विषयों के अध्यापक प्रत्येक टोली को प्रति सप्ताह एक घंटे अपने विषय में विशेष शिक्षा देते हैं । विद्या-र्थियों की कठिनाइयाँ दूर करते हैं, लेख लिखने को देते हैं, तथा उनके साप्ताहिक लेखों पर नंबर देते हैं, और इस प्रकार प्रत्येक विद्यार्थी की योग्यता का अंदाज़ा उसके साप्ताहिक काम से लगाते हैं ।

इस विधि के प्रचलित होने के पूर्व कुछ और ही दशा थी । प्रोफ़ेसर अपनी कक्षा के विद्यार्थियों को पहचानते तक न थे । विद्यार्थियों और प्रोफ़ेसरों में बड़ा फ़ासला था । विद्यार्थियों को अपनी कठिनाइयों को दूर

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

और शंकाओं का समाधान करवाने का कोई साधन ही न था। इस 'ट्यूटोरियल सिस्टम' को सभी लाभदायक माना है, सभी ने पसंद किया है। अभी तक क़ानून-विभाग में ही यह नीति प्रचलित नहीं की गई है। सुनते हैं, कदाचित् कुछ बात-चीत हो रही है।

❀ ❀ ❀

स्वास्थ्य, व्यायाम, खेल-कूद। विद्यार्थियों के शारीरिक गठन के लिये कॉलेज में हॉकी, फ़ुटबाल, क्रिकेट, टेनिस आदि खेलों का प्रबंध है। व्यायाम-शाला भी है। विश्वविद्यालय के प्रत्येक विद्यार्थी के शरीर और स्वास्थ्य की परीक्षा ली जाती है। जो विद्यार्थी दुर्बल अथवा अति क्षीण पाए जाते हैं, उनके माता-पिता को इसकी सूचना दे दी जाती है। विश्वविद्यालय में एक औषधालय भी है। मामूली ज्वर आदि के लिये इसी औषधालय से दवा मिल जाती है। विशेष रोगी मेडिकल कॉलेज के 'स्टूडेंट्स वार्ड' में भरती करवा दिए जाते हैं। वहाँ बड़ी सावधानी से रोगी की देख-भाल की जाती है।

विश्वविद्यालय में सैनिक शिक्षा का भी प्रबंध है। "बी० कंपनी थर्ड (यू० पी०) बटैलियन युनिवर्सिटी ट्रेनिंग कार्प्स इंडियन टेरीटोरियल फ़ोर्स" के नाम से एक सेना है, जिसमें इच्छुक विद्यार्थी सैनिक शिक्षा के लिये भरती होते हैं। इस सेना के सेनापति हैं कैप्टन जे० ए० स्ट्रैंग। सैनिक विद्यार्थियों को वर्दी, अस्त्र-शस्त्र सब निःशुल्क दिए जाते हैं। विद्यार्थी बड़े उत्साह से इस सेना में भरती होते हैं। भारत के लिये सैनिक शिक्षा की कितनी आवश्यकता है, यह बताना व्यर्थ है।

बी० ए० और बी० एस्-सी० के सभी विद्यार्थियों को प्रत्येक दूसरे दिन एक घंटा शारीरिक व्यायाम करना पड़ता है। नियम-पूर्वक शिक्षक हाज़िरी लेता है, उड़ जानेवाले विद्यार्थियों पर जुर्माना होता है। सैनिक विद्यार्थी शारीरिक व्यायाम की क़ैद से मुक्त कर दिए जाते हैं। स्वास्थ्य के हित के लिये व्यायाम सचमुच अनिवार्य है। लेकिन शारीरिक गठन का सारा भार विश्वविद्यालय अपने मस्तक पर ले ले,

युनिवर्सिटी-सेना के भीम

[सुहृदवर श्री० जी० एन्० सिंह—बी० ए० के एक विद्यार्थी]

यह भी सर्वथा अवांछनीय है। कुछ विद्यार्थियों को प्रातः ७ बजे भी व्यायाम करने जाना पड़ता है। भला पूछिए कि प्रातःकाल पढ़ने के समय एक घंटे डंड निकलवाना, उठक-बैठक करवाना यह कहाँ की बुद्धिमत्ता है। जो विद्यार्थी सात से आठ तक व्यायाम करेगा, उसकी एक-एक नस तो खिंच जायगी, ऐसी अवस्था में प्रातःकाल वह क्या ख़ाक पढ़ सकेगा? यह ज़बरदस्ती, और फिर शारीरिक व्यायाम के लिये, सर्वथा अनुचित है। प्रत्येक विद्यार्थी इस अवस्था में अपना हानि-लाभ समझने लगता है। शारीरिक व्यायाम एक बंधन बना देना मूर्खता है। किसी हद तक अपने पैरों खड़े होने की नीति का भी प्रयोग करना अच्छा ही होता है। शारीरिक व्यायाम को बंधन बनाकर अधिकारियों ने इसे एक खिलवाड़ बना दिया है। कोई भी विद्यार्थी इस बंधन-युक्त शारीरिक व्यायाम को अच्छी दृष्टि से नहीं देखता।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

युनिवर्सिटी में एक 'बोट-क्लब' भी है। युनिवर्सिटी की ओर से कई हल्की-हल्की नौकाएँ और पतवार मिले हैं। विद्यार्थी तीन रुपए वार्षिक चंदा देकर इस 'बोट-क्लब' के सदस्य हो जाते हैं। केवल तैराक विद्यार्थी ही इस क्लब के सदस्य बनाए जाते हैं। फूल-सी नौकाएँ हैं, तनिक भी अव्यवस्थित हो जाने में लुढ़क जाने का ख़तरा रहता है। संध्या के समय नवयुवक 'आक्सफ़ोर्ड' और 'कैंब्रिज' के विद्यार्थियों की तरह गोमती में छोटी-छोटी नौकाओं पर क्रीड़ा करते दृष्टि-गोचर होते हैं।

विश्वविद्यालय में खेल-कूद के लिये विस्तृत क्षेत्र है। शारीरिक, मानसिक, सभी वृत्तियों के विकास के लिये साधन मौजूद हैं। विश्वविद्यालय के अंतर्गत अनेकों छोटी-छोटी सभाएँ हैं। छोटी-छोटी सभाओं में संस्कृत-हिंदी-विभाग की 'ज्ञानवर्द्धिनी सभा' का नाम उल्लेखनीय है। यह सभा संस्कृत और राष्ट्र-भाषा हिंदी में व्याख्यान और वाद-विवाद संगठित करती रहती है। सबसे बड़ी संस्था है 'लखनऊ-युनिवर्सिटी-यूनियन'। इस यूनियन की स्थापना हुई थी सन् १९२२ में। आजकल यह यूनियन, विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक जीवन में, एक विशेष स्थान रखती है। विश्वविद्यालय का प्रत्येक विद्यार्थी इस संस्था का सदस्य है। प्रति वर्ष प्रत्येक सदस्य को तीन रुपए मासिक चंदा देना होता है। इस संघ की वार्षिक आय लगभग तीन हज़ार के होती है। यह सब धन 'युनिवर्सिटी-यूनियन-जनरल' (त्रैमासिक पत्रिका), वाद-विवाद, कवि-सम्मेलन, मुशायरा, नाटक आदि करने में व्यय हो जाता है। साल ख़त्म होने के पहले ही कोष लगभग ख़ाली हो जाता है। संघ ने बारादरी में अपना वाचनालय, पुस्तकालय आदि स्थापित कर रक्खा है। इसी संघ की देख-रेख में एक 'रेस्टोराँ' भी है, जहाँ विद्यार्थी चाय-पानी करते हैं। समय-समय पर देश के नेता इस सभा की ओर से निमंत्रित किए जाते हैं, और उनके शिक्षाप्रद व्याख्यान होते हैं। उपाधि-वितरण-सप्ताह में बड़ी चहल-पहल रहती है।

श्रीमती फूलवतीजी शुक्का एम्० ए०
[सर्व प्रथम महिला-प्रेसिडेंट लखनऊ-युनिवर्सिटी यूनियन]

नाटक, मुशायरा सब कुछ इसी सप्ताह में होता है। 'अंतर-विश्वविद्यालय ट्राफ़ी-वाद-विवाद' बड़ा मज़ेदार होता है। देश के कोने-कोने से कॉलेजों और विश्व-विद्यालयों के प्रतिनिधि आते हैं। राष्ट्र के भावी 'बर्क' और 'शेरीडनों' के गर्जन-तर्जन सुनने का सुअवसर मिलता है। विश्वविद्यालय-जीवन का यह संघ एक

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मुख्य अंग है। प्रत्येक विद्यार्थी इस संघ में बड़े उत्साह से भाग लेता है। पदाधिकारियों के चुनाव में कौंसिल और एसेंबली के चुनाव से भी अधिक आनंद आता है।

❁ ❁ ❁

रहन-सहन और वातावरण

लखनऊ की शान-शौक़त, बाह्य आडंबर, तड़क-भड़क प्रसिद्ध है। बाहर के लोग इस विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के रहन-सहन और ठाठ-बाट का बड़ा ऊँचा अनुमान लगाते हैं। लखनऊ-विश्वविद्यालय

'लखनऊ-युनिवर्सिटी-यूनियन' की कार्यकारिणी समिति (१६२६-३०)

बैठे हुए—(बाईं ओर से) डॉक्टर एम्० बी० रहमान, श्री० अनादिनाथ बनर्जी (भूतपूर्व प्रधान), डॉक्टर एम्०
बी० कैमरन (भूतपूर्व उप-कुलपति), प्रो० एन्० के० सिद्धांत, डॉक्टर एस० के० बनर्जी
द्वितीय पंक्ति—श्री० एम्० डी० राय, श्री० एन० सी० मुकर्जी, श्री० एम्० के० किदवाई, श्री० पृथ्वीपालसिंह,
श्रीवलीमोहम्मद, श्री० जे० के० बनर्जी ('मंत्री', जेल में)
तृतीय पंक्ति—श्री० सी० ए० बक, श्री० क्यू० एम्० फ़रीद, श्री० एस० एन्० सान्याल, श्री० रामप्रसाद शर्मा

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के विद्यार्थी न तो कोरे 'भगवन्' ही हैं, और न बिल्कुल लखनऊ के नवाब ही। ठाट-बाट साधारण रखते हैं, वित्ति-भर चलते हैं। सूट-बूट पहनना शास्त्र-विरुद्ध नहीं समझते और पाश्चात्य वेश-भूषा के बिल्कुल गुलाम भी नहीं हैं। राजनीतिक जागृति और स्वदेशी आंदोलन का बड़ा प्रभाव पड़ा है, सूट-बूट की प्रथा उठ-सी रही है। आजकल तो युनीवर्सिटी-सीमा के अंदर अधिकतर खद्दरधारी ही नज़र आते हैं। छैला बनकर आनेवालों को आजकल सब घृणा की दृष्टि से देखते हैं। लखनऊ-विश्वविद्यालय में देवियाँ भी युवकों के साथ पढ़ती हैं। देवियाँ स्वभाव ही से वेश-भूषा और शृंगार की ओर विशेष ध्यान रखती हैं, कुछ इने-गिने युवक भी अपनी वेश-भूषा और केश-कलाप का बड़ा ख़याल रखते हैं। संगति का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है।

छात्रालय में रहनेवाले विद्यार्थी का प्रतिमास साधारणतया पचास रुपए मासिक व्यय होता है। जो एम्० ए० और एल्०-एल्० बी० दोनो के विद्यार्थी होते हैं, उनका व्यय इससे भी अधिक होता है। छात्रालय में रहने के लिये एक कमरे का छः रुपए मासिक देना पड़ता है। छात्रालय की सुंदर अट्टालिका में बिजली से आलोकित एक कमरा प्रत्येक विद्यार्थी को मिलता है। कमरे में एक निवाड़ का पलंग, एक बड़ी मेज़, एक चाय की मेज़, एक बेंत की कुर्सी, आलमारी आदि होती हैं। नित्य प्रातःकाल छात्रालय का एक सेवक कमरा साफ़ कर जाता है। प्रत्येक छात्रालय में कई सेवक और चपरासी होते हैं, जो सदैव छात्रों का हुक्म बजाने के लिये हाथ बाँधे खड़े रहते हैं। प्रत्येक छात्रालय में स्नानागार, भोजनालय, वाचनालय आदि होते हैं। विद्यार्थियों की सुविधा और सुख के लिये यहाँ क्या सुलभ नहीं? खाने-पीने के लिये सात-आठ विद्यार्थी मिलकर अपना भोजनालय स्वयं ही चलाते हैं। मांसाहारी और वैष्णवी अपनी-अपनी रुचि के अनुसार भिन्न-भिन्न भोजनालयों के सदस्य हो जाते हैं। खाने-पीने का प्रति छात्र मासिक व्यय जुदा-जुदा होता है। जैसा भोजन, वैसा ही व्यय, दोनो एक दूसरे पर निर्भर हैं।

छुट्टियों के दिन विद्यार्थियों में स्फूर्ति-सी पैदा हो जाती है। उनकी रग-रग में चुलबुलाहट होने लगती है। लोग टोलियाँ बनाकर नगर के बाहर किसी उद्यान में अथवा सरिता-तट पर जा पहुँचते हैं। दिन-भर खेलते-कूदते हैं, वहीं जलपान करते हैं, और संध्या को हँसते-खेलते, गाते बजाते वापस आते हैं। ऐसा स्वच्छंद और बेफ़िक्री का जीवन गृहस्थी और संसार के माया-जाल में फँसे हुए जीवों के लिये स्वप्न की बात है।

लखनऊ-विश्वविद्यालय के छात्रालयों में जो सुख और स्वतंत्रता है, वह इस प्रांत के किसी भी विश्वविद्यालय के छात्रालयों में प्राप्य नहीं। सुनते हैं, प्रयाग और काशी-विश्वविद्यालयों के छात्रालयों में काठ के तख़्त सोने के लिये मिलते हैं, छोटी-छोटी मेज़ें और लकड़ी की तख़्तेदार कुर्सियाँ दी जाती हैं तथा विद्यार्थियों को दस बजे रात्रि के बाद छात्रालय से बाहर जाने के लिये अध्यक्ष से आज्ञा लेनी होती है। लखनऊ-विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को पूर्ण स्वतंत्रता है। यद्यपि नित्य विद्यार्थियों की हाज़िरी भर ली जाती है, परंतु उनके ऊपर रखवाली नहीं की जाती। पढ़े-लिखे शिक्षित और समझदार नवयुवकों को इतनी स्वतंत्रता होना सर्वथा वांछनीय है। देख-भाल और रखवाली तो अबोध बालकों की होती है।

दो-एक बातें बड़ी खटकनेवाली हैं। सभ्यता के इस युग में शिक्षित समुदाय में ऐसी बातें होते देखकर विस्मय होता है। कुछ छात्रालयों में वर्ष के प्रारंभ में नवागत छात्रों से मिलने के लिये पुराने छात्र 'मिलन-रात्रि' (Introduction Night) मनाते हैं। यह 'मिलन-रात्रि' नारकीय अकांड-तांडव का-सा दृश्य उपस्थित करती है। नवागत विद्यार्थियों का बलात् चुंबन करना और कभी-कभी अश्लीलता की सीमा उल्लंघन कर जाना, यही इस 'मिलन-रात्रि' की

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

छुट्टी के दिन विश्वविद्यालय के कुछ विद्यार्थी 'रेज़ीडेंसी-उद्यान' में

विशेषता है। इस प्रकार की मिलन-रात्रि केवल मेस्टन-होस्टल और मेडिकल कॉलेज के छात्रालयों में मनाई जाती है। ह्विट-होस्टल तथा महमूदाबाद-होस्टल का वातावरण रहन-सहन और मिलने-जुलने के ख़याल से बड़ा ही अच्छा है। यह सब इन छात्रालयों के निरीक्षक डॉक्टर एम्० बी० रहमान, तथा श्री वे० के० नंदन मेनन आदि के सदुद्योग का ही परिणाम है।

दूसरी ओर जातीय भाव-भेद और वैमनस्य की विषैली पवन के भी कभी-कभी झोंके आ जाते हैं। राष्ट्रीय आंदोलन के सिर उठाते ही यह दूषित हवा रुक-सी जाती है, फिर भी कभी-कभी हिंदू, मुसलमान, कायस्थ, क्षत्री का प्रश्न छोटी-मोटी सभाओं और संघों के पदाधिकारियों के चुनाव में उठते हुए दिखाई देता है। भाई-भाई में महाभारत कैसे छिड़ती है, इसकी पूर्ण शिक्षा छात्र-जीवन में ही प्राप्त हो जाती है, और ये ही छात्र भविष्य में, राष्ट्र के नेताओं के रूप में, देश के राजनीतिक क्षेत्र में, इसी कलह-नाट्य का अभिनय करते हैं। राष्ट्र के भावी विधाताओं को अभी से सावधान हो जाना चाहिए। यह पथ घातक है, इसे त्याग देना चाहिए।

ख़ाली समय में नवयुवक इकट्ठे बैठकर आपस में हँसी-दिल्लगी भी करते हैं। उनकी हँसी-दिल्लगी में बहुधा गंभीरता का अभाव होता है। नवयुवकों में ऐसी हँसी-दिल्लगी होना कोई नवीन बात नहीं, सभी देशों के नवयुवक ऐसी हँसी-ठठोली करते हैं।

विश्वविद्यालय के विद्यार्थी ख़ाली समय केवल हास्य-विनोद ही में नहीं व्यतीत कर देते। आज-कल उनकी भी दृष्टि भारत के स्वातंत्र्य-युद्ध की ओर दौड़ रही है। वे भी अपनी मातृ-भूमि की शोचनीय दशा पर आँसू बहाते हैं, वर्तमान शासन-प्रणाली की तीव्र आलोचना करते हैं, भारत के स्वातंत्र्य-युद्ध में हाथ बटाने की सोचते हैं, और माता की पुकार सुनकर बलिदान होने को भी उद्यत हो जाते हैं। भारत में नवयुवक-आंदोलन का प्रादुर्भाव हाल ही में हुआ है। लखनऊ-विश्वविद्यालय के विद्यार्थी बड़ी धूम से इस आंदोलन में भाग ले रहे हैं, नवयुवक ही

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

राष्ट्र के निर्माता होते हैं। राष्ट्र की दीन दशा पर उनका विकल होना, अपनी मातृ-भूमि की अवस्था पर सोच-विचार करना सर्वथा स्वाभाविक है।

सर आशुतोष मुकर्जी ने ३० जनवरी, १६२४ को, उपाधि-वितरण-उत्सव के अवसर पर, अपने व्याख्यान में, शिक्षा का उद्देश्य बताते हुए कहा था—

'The function of this education, all the world over, in all the worlds there are and in all ages, is what may fittingly be called emancipation. Education in the phraseology of archaic Law is monuments and edifices; first it frees the slave, next it builds the man.'

अर्थात् 'शिक्षा का कर्तव्य है स्वतंत्रता प्रदान करना, प्राचीन कहावत के अनुसार शिक्षा का कर्तव्य है सर्व प्रथम मनुष्य को परतंत्रता से मुक्त करना, फिर मनुष्य को आदर्श बना देना।'

सर आशुतोष के इन शब्दों को लखनऊ-विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने बड़े ध्यान से सुना था, और आशा की जाती है, लखनऊ-विश्वविद्यालय के विद्यार्थी निकट-भविष्य में ही सर आशुतोष के शब्दों को सार्थक करेंगे।*

* १ जनवरी, १६३० का भेजा हुआ यह लेख, आज इस अंक में चित्रों के प्राप्त करने और उनका ब्लाक बनवाने में पर्याप्त समय लग जाने के कारण, प्रकाशित हो रहा है। इतने समय में लखनऊ-विश्वविद्यालय की स्थिति में कुछ-न-कुछ अंतर हो जाना स्वाभाविक ही है। संपादकीय टिप्पणी में इस त्रुटि को दूर करने की हमने यथा-शक्ति कोशिश की है। विलंब के लिये हमें दुःख है।—संपादक

लखपती कैसे बन सकते हो ?

मूल्यवान् जिंस पैदा करने से

कपास की खेती उन मूल्यवान् जिंसों में से है, जिसमें बीघा पीछे ३००), ४००) की आय हो सकती है। 'कपास की खेती'-नामक पुस्तक में बताया गया है कि हम साधारण और सरल रीतियों से कपास की दुगुनी-तिगुनी उत्तमोत्तम उपज कैसे कर सकते हैं? विलायतवाले इसकी उपज से कितने बड़े धनवान् हुए हैं, यह सब विषय बड़े विस्तार से बताया गया है। पुस्तक सचित्र व सजिल्द है। मूल्य ३) कृषि-संबंधी पुस्तकों के प्रख्यात लेखक—

बाबू रामप्रसाद

सूबा व डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट

गुना (ग्वालियर) से हिंदी-उर्दू-भाषा में मिल सकती है।

एक नई खबर

एक नई पुस्तक "हारमोनियम, तबला ऐंड बाँसुरी-मास्टर" प्रकाशित हुई है। इसमें बहुत-से नई-नई तर्जों के गायनों को सरगमों व नंबरों द्वारा एक नए क़ायदे से समझाकर राग-रागिनी का वर्णन ख़ूब किया है। इसके ज़रिए विना उस्ताद के हारमोनियम, तबला और बाँसुरी बजाना न आवे, तो मूल्य वापस देने की गारंटी है। पहला संस्करण ख़त्म हो चुका है। पब्लिक ने पुस्तक ख़ूब पसंद की है। मूल्य केवल १), डा० ।-)

पता—गर्ग ऐंड शर्मा कंपनी, हाथरस

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

वर्ण-व्यवस्था

[प्रोफ़ेसर जीवनशंकर याज्ञिक एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, इँगलिश-अध्यापक काशी-विश्वविद्यालय]

(१)

वर्ण-व्यवस्था हिंदू-जाति की एक विशेषता है। अन्य देशों में भी समाज में कई श्रेणियाँ पाई जाती हैं, परंतु उनका आधार सामाजिक व राजनीतिक होता है। हमारे देश में वर्ण-व्यवस्था हिंदू-धर्म के आधार पर स्थित है। बौद्ध लोगों ने इसका विरोध किया, वैष्णवों ने इसकी उपेक्षा की, और सिक्खों ने इसे समूल नष्ट करने का यत्न किया। फिर भी वह आज विद्यमान है, और उसका अखंड प्रभाव हिंदू-जाति पर बना हुआ है। जब से इस देश में पाश्चात्य सभ्यता का रंग जमा, वर्ण-व्यवस्था का विरोध और भी प्रबल हो गया। परंतु यह कहना बड़े साहस का काम है कि इस व्यवस्था का अंत होना अवश्यंभावी है।

इस व्यवस्था के विषय में कई मत होना और उनमें परस्पर घोर विरोध होना एक स्वाभाविक बात है। परंतु दुराग्रह और पक्षपात ने तत्संबंधी विवाद को ऐसा दूषित कर दिया है कि तत्त्व-जिज्ञासु के लिये सत्य खोज निकालना एक गुरुतर कार्य हो गया है। मनुष्य का स्वभाव है कि वह निश्चयात्मक निर्णय चाहता है, और उसके लिये बुद्धि-शक्ति के अनुसार यत्न भी करता है, और जब वह एक पक्ष को सत्य मान लेता है, तो विवेक की उपेक्षा कर अपनी सारी बुद्धि उसी के समर्थन में लगा देता है। फिर सांगोपांग विचार उसके लिये असंभव हो जाता है, और विचार-शक्ति एक संकुचित वृत्त में घिरकर संतोष कर लेती है। वर्ण-व्यवस्था के प्रश्न के संबंध में भी, जो दीर्घ काल से विवाद का विषय बन गया है, लोगों की प्रायः यही धारणा है कि जो मान बैठे हैं, वही सत्य है। वर्ण-व्यवस्था को नितांत निर्मूल और समाज के लिये सर्वथा हानिकर प्रमाणित करना उतना ही कठिन है, जितना कि उसका सर्व प्रकार से समर्थन करना असंभव है।

दो पक्ष तो बड़े तने हुए हैं, और एक दूसरे से खिंचकर हद तक पहुँच गए हैं। एक का विश्वास है कि हिंदुओं की दुर्बलता और अवनति का मूल कारण जाति-विभाग है, और वह एक ओर स्वार्थ और दूसरी ओर अज्ञान पर अवलंबित है। किसी देश में ऐसी अस्वाभाविक और प्रकृति-विरुद्ध व्यवस्था देखने में नहीं आती।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हिंदू-जाति को यदि अपने कल्याण की चिंता है, तो किसी प्रकार जाति-विभाग का शीघ्र अंत होना चाहिए। इस रोग ने समाज को जर्जर बना दिया है। दूसरा पक्ष शास्त्र का आधार लेकर इस व्यवस्था को परमात्मा-कृत मानता और हिंदू-धर्म का उसे प्रधान अंग समझता है। उसका यह भी विश्वास है कि अनेक दुर्घट-नाओं और आक्रमणों के समय समाज की रक्षा इसी ने की थी। हज़ारों वर्ष तक यदि हिंदू-सभ्यता और हिंदू-जाति संसार में जीवित रहे हैं, तो वे केवल वर्ण-व्यवस्था के कारण।

इन दोनो पक्षों में सत्य का अंश खोज निकालना प्रस्तुत लेख का आशय नहीं। दोनो को ही अपनी बात का पूर्ण आग्रह है। एक उसे समूल नष्ट करना चाहता है, तो दूसरा उसमें किसी प्रकार के सुधार की आवश्यकता ही नहीं समझता। काल-प्रभाव इस झगड़े का अंत कर सकेगा, और उभय पक्ष में सत्य के अंश की रक्षा करेगा। इन दोनो के मध्यवर्ती पक्षवालों का यहाँ संक्षेप में विचार किया जाता है। संभव है, परिस्थिति पर कुछ प्रकाश पड़ सके।

जो वर्ण-विभाग को किसी रूप में समाज के लिये आवश्यक समझते हैं, उनमें से कुछ लोगों का कहना है कि गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार किसी व्यक्ति के वर्ण का निश्चय होना चाहिए। एक वर्ण से दूसरे वर्ण में प्रवेश करने का अधि-कार सबको समान रीति से प्राप्त है। जैसे सांसारिक बातों में मनुष्य उन्नति और अवनति करता है, ग़रीब से धनवान्, मूर्ख से विद्वान् तथा इसके विरुद्ध बन जाता है, वैसे ही गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार वह नीच वर्ण से उत्तम वर्ण में पहुँचने का अधिकारी है। स्वभाव, प्रकृति संयम से बदले जा सकते हैं। पापी भी सुकृती बन सकता है, तो वर्ण-परिवर्तन भी हो सकता है, अतएव जाति-बंधन उनकी दृष्टि में शिथिल हो सकता है। और, किसी वर्ण में केवल जन्म लेने-मात्र से ही आजन्म वही वर्ण बना रहे, ऐसा प्रकृति का कोई नियम नहीं। किसी परिवार में जन्म ग्रहण करना विशेष गुणों के उत्कर्ष में सहायक हो सकता है, परंतु यह कोई अनिवार्य नियम नहीं कि माता-पिता के समस्त गुण संतान में पाए जाते हों। प्रगति का आरंभ कहाँ से होगा, जन्म केवल इतना ही निर्णय कर सकता है। ये लोग कर्म को प्रधानता देते हैं, और अपनी बात के समर्थन में प्रत्यक्ष प्रमाण देते हैं कि यह प्रतिदिन का अनुभव है कि ब्राह्मणोचित कर्म और प्रकृति इतर जातियों में भी पाई जाती है, और शूद्रों से भी अधम ब्राह्मण आदि की कोई कमी समाज में नहीं है। अस्तु, ये लोग वर्ण मानते तो हैं, परंतु उसका विभाग जन्म से न मानकर व्यक्तियों के गुण-कर्म पर छोड़ते हैं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यदि इसी सिद्धांत के अनुसार समाज का विभाग और संगठन किया जाय, तो उसमें क्या हानि है? इसमें हानि यही है कि इस प्रकार की व्यवस्था चल नहीं सकती। यदि उसका चलाना संभव भी हो, तो फिर वर्ण-विभाग की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। असंभव तो इस कारण है कि किसी व्यक्ति के किसी समय वर्ण-निश्चय करने का अधिकार किस संस्था को दिया जा सकता है, और उसका निर्णय व्यक्ति और समाज के लिये कैसे मान्य बनाया जा सकता है। कोई संस्था इस कार्य को कर ही नहीं सकती। गुण-कर्म-स्वभाव की परीक्षा और वह भी यथार्थ अचूक परीक्षा के साधन किसी संस्था के पास नहीं हो सकते। यदि बाह्य कर्म से ही किसी व्यक्ति की वर्ण-परीक्षा की जाय, तो उसमें भी त्रुटि होना आसान है, और सही जाँच कठिन है। फिर मनुष्य के मन की गति जानना तो और भी कठिन है। गीता में जिसको मिथ्याचार कहा है, उससे कौन व्यक्ति बचा हुआ है? समाज और लोक-भय से मर्यादा का पालन प्रत्यक्ष तो हम करते हैं, परंतु मन की गति कौन जान सकता है? जेल में पड़े सभी दोषी नहीं, वैसे ही बहुत-से भले समझे जानेवाले भले नहीं। उनको पाप करते यदि किसी ने कभी नहीं देखा, तो इसका तात्पर्य यह नहीं कि उन्होंने पाप किया ही नहीं, या उनका मन भी, जैसा हम समझते हैं, वैसा ही शुद्ध है। फिर यह भी कठिनाई है कि किन गुणों के विशेष होने पर और वह भी कितनी मात्रा या परिमाण में विद्यमान हों, तब वर्ण का निश्चय हो सकेगा। सब जातियों के मनुष्यों में गुण-अवगुण तो वे ही हैं, केवल उनकी मात्रा में घट-बढ़ होती है। इतनी बारीक छान-बीन क्या संभव है, और किस प्रकार हम बिना भूल किए निश्चय रूप से किसी के वर्ण का निश्चय कर दें? निर्णायक संस्था भी तो मनुष्यों की ही होगी। उन निर्णायकों में पक्षपात बिल्कुल न हो, तत्त्व को देखने में बिल्कुल भूल उनसे न हो, ऐसा भी कब संभव है। एक ही व्यक्ति में शूद्रोचित और ब्राह्मणोचित गुणों का समान रूप से विद्यमान होना असंभव नहीं, तो क्या ऐसा व्यक्ति किसी क्षण ब्राह्मण और किसी क्षण शूद्र हो सकता है? यदि ऐसा हो सकता है, तो फिर वर्ण-विभाग की आवश्यकता ही क्या रह जाती है, और जो उसका एक ही वर्ण निश्चित है, तो यह भी भ्रम है, भूल है। गुण-कर्म-स्वभाव की जाँच के लिये और उनकी बारीकियों को समझने के लिये समाज के पास कोई उपाय नहीं। और भी बहुत-सी उलझनें ऐसी व्यवस्था में उत्पन्न हो सकती हैं। उनका उल्लेख करना आवश्यक नहीं। केवल कर्म से जाति माननेवालों को इसी निश्चय पर पहुँचना पड़ेगा कि पहले तो ऐसी व्यवस्था

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

असंभव है, और फिर यदि ऐसा हो भी सकता, तो वर्ण-विभाग बिल्कुल निरर्थक है। कर्म के आधार पर व्यवस्था करनेवालों में और जाति को एकदम उड़ा देनेवालों में फिर वास्तविक कोई अंतर ही नहीं रह जाता। बिना चाहे भी वे वर्ण-व्यवस्था का सर्वथा नाश ही कर देंगे। उनकी धारणा चाहे बुद्धि-ग्राह्य मालूम होती हो, परंतु उनके सफल होने पर जाति-विभाग का सुधार न होकर अंत ही होना संभव है।

प्रायः विश्वामित्रजी का उदाहरण दिया जाता है, और वर्ण-परिवर्तन की बड़ी प्रामाणिक मिसाल दी जाती है कि वे क्षत्रिय थे, और ब्राह्मण बन गए, और अंत में उनके विपक्षियों को भी उन्हें ब्रह्मर्षि मानना पड़ा। इस लेख में शास्त्र के प्रमाण और आशय का आधार नहीं लिया गया है, तो भी विश्वामित्र के संबंध में इतना अवश्य कहा जा सकता है कि उनके अतिरिक्त और एक भी ऐसे व्यक्ति का उल्लेख नहीं मिलता, जिसका वर्ण बदला हो। फिर जहाँ यह लिखा मिलता है कि विश्वामित्र क्षत्रिय थे, और घोर तपस्या से ब्राह्मण बन गए, वहाँ इस बात का इशारा तक नहीं कि किस तपस्या से और किन उपायों से वह सफल-मनोरथ हुए थे। वह विधि क्या थी, इसका पता किसी शास्त्र या पुस्तक से नहीं चल सकता। फिर उसका अनुकरण ही कैसे हो सकता है? यह तो निश्चय है कि वर्ण-परिवर्तन के लिये कोई साधन नहीं बनाया गया, और प्राचीन काल में एक वर्ण से दूसरे वर्ण में जाने की प्रथा नहीं पाई जाती। किसी संस्कार-विशेष का विधान भी कहीं नहीं मिलता। अपने वर्ण से पतित होने का तो उल्लेख बहुत मिलता है, परंतु नीचे वर्ण से ऊपर के वर्ण में जाने की एक ही मिसाल मिलती है, और वह है विश्वामित्र की।

पतित होने के कारण तो शास्त्रों में मिलते हैं, परंतु उच्च वर्ण का मनुष्य पतित होकर द्विजातियों के किसी नीचे वर्ण में प्रवेश कर सके, ऐसी भी प्रथा नहीं थी, और न शास्त्र की आज्ञा है। अर्थात् कोई ब्राह्मण यदि क्षत्रिय अथवा वैश्य बनना चाहे, तो नहीं बन सकता था। पतित हो जाना और अपने से नीचे वर्ण में चले जाना एक ही बात नहीं थी। इसका कारण यह था कि प्राचीन काल में वर्ण जन्म से ही माना जाता था। यदि जन्म से वर्ण न माना जाता, तो कम-से-कम ऊपर के वर्ण से नीचे के वर्ण में जाने के लिये कोई विशेष बाधा न होती। ऊपर के वर्ण में जाने की रोक होती भी, परंतु नीचे के वर्ण में उतरने में कोई अड़चन न डाली जाती। वास्तव में ऐसा नहीं था। इससे यह तो निश्चय कहा जा सकता है कि वर्ण-विभाग जन्म पर निर्भर था।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, केवल गुण, कर्म

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

LIBRARY
Jangamwadi Math, Varanasi
Acc No. 8379

और स्वभाव से वर्ण-विभाग संभव नहीं, उसी प्रकार केवल जन्म पर भी वह अवस्थित नहीं। यदि केवल जन्म पर हो वह निर्भर होता, तो कर्म और गुण की उपेक्षा की जाती। आजकल यही दशा हो रही है। जन्म से वर्ण माननेवाले वर्णोचित कर्म की ओर उचित ध्यान नहीं देते। समाज के भ्रष्ट होने का कारण यही है कि जन्म-सिद्ध अधिकार समझकर हम वर्ण-विशेष के आदर्श को भूल बैठे हैं। समाज में जो आज अनेक जातियाँ और उप-जातियाँ बन गई हैं, वे शास्त्र-सम्मत कदापि नहीं, और न शास्त्र का यही आशय रहा है कि केवल जन्म लेने से ही किसी वर्ण-धर्म के प्रति हमारे कर्तव्य की इतिश्री हो जाती है।

विचार करने पर यह मालूम होता है कि एक ओर जन्म और दूसरी ओर गुण-कर्म-स्वभाव, दोनों के ही सहारे वर्ण-व्यवस्था चल सकती है, अन्यथा नहीं। जाति-विभाग को किसी रूप से न मानना न्याय-संगत हो सकता है। ईमानदारी से बहुत-से लोग इसका विरोध करते हैं, परंतु जो इसकी किसी भी रीति से रक्षा करना चाहते हैं, उनके लिये एक ओर जन्म और दूसरी ओर गुण, कर्म आदि का सहारा लेना पड़ेगा। केवल जन्म के भरोसे रहने में मनुष्य गुण-हीन होकर वर्ण के आदर्श से भ्रष्ट हो जायँगे, जैसा कि आजकल देखा जाता है, और दूसरी ओर केवल गुण-कर्म का आश्रय लेकर व्यवस्था हो ही नहीं सकती, और ऐसा करने से वर्ण-व्यवस्था समूल नष्ट हो जायगी।

अतएव व्यवस्था माननेवालों के लिये एक ही मार्ग रह जाता है कि जन्म से वर्ण मानें, और गुण-कर्म से उसकी रक्षा करें। वर्ण-निर्णय में जन्म माननीय हो, और उसके निबाहने में, अपने उत्कर्ष में, गुण-कर्म की सहायता ली जाय। इसके अतिरिक्त और जो कुछ हो सकता है, वह वर्ण-व्यवस्था का पूर्ण विरोध ही है, दूसरी बात के लिये अवकाश नहीं। वर्ण-विशेष का कर्तव्य होना चाहिए कि उसके अंतर्गत जो मनुष्य हों, उनकी धार्मिक, नैतिक आदि उन्नति के लिये उप-युक्त वातावरण उपस्थित करे, और व्यक्तियों पर लोकमत का ऐसा प्रभाव डाले कि वे अपने वर्ण में रहते हुए सर्व प्रकार अपनी उन्नति कर सकें।

फिर वर्ण-संबंधी और भी कई प्रश्न हैं, जो उपर्युक्त मत को स्वीकार करने पर विचारणीय हैं। वर्तमान स्थिति देखकर हिंदू-समाज की रक्षा और हित के लिये जिन उपायों को काम में लाना अत्यावश्यक है, और जिनसे वर्ण-व्यवस्था को वर्तमान दुरवस्था से बचकर जाति की उन्नति हो सकती है, उन पर स्वतंत्र विचार फिर किया जायगा। जो निष्कर्ष निकाला जायगा, उसका आधार उपर्युक्त निश्चय पर निर्भर है। इसी को मानकर आगे विचार करना है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

LIBRARY
Jangamwadi Math, Varanasi
Acc No. ....

प्रसादजी का एक नाटक

[श्रीयुत कृष्णानंद गुप्त]

श्री जयशंकरप्रसादजी की प्रतिभा बहु-मुखी है। वे कवि हैं, नाटक-कार हैं, कहानी-लेखक हैं, और औपन्यासिक भी हैं। पर मुझे केवल नाटककार प्रसादजी से प्रयोजन है।

प्रसादजी की सर्व-प्रसू लेखनी से अब तक कई नाटक प्रसूत हो चुके हैं। कहानियों की भाँति इन नाटकों को भी किसी ने विश्व-साहित्य की चीज़ें बताया है या नहीं, इसका मुझे पता नहीं। पर उनके एक नाटक स्कंदगुप्त को पढ़कर मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि कहानी-लेखक प्रसादजी की यह रचना सर्वथा उनकी कहानियों के अनुरूप हुई है। उनके समालोचक उनकी प्रत्येक नई रचना के संबंध में लिखा करते हैं—अद्भुत है, अपूर्व है, अद्वितीय है, अतुलनीय है, विश्व-साहित्य की चिरस्थायी सामग्री है, और उसमें कसक है, टीस है, मसोस है, वेदना है, पीड़ा है, दुःख है, शोक है, संक्षेप में हृदय को अभिभूत और चकनाचूर कर देने के लिये जितने तीव्र आवेग और विकार पर्याप्त हो सकते हैं, वे सभी हैं। पर उन्होंने कभी यह बताने की चेष्टा नहीं की कि प्रसादजी की रचनाओं में क्या नहीं है। आज मैं अपने पाठकों को यही बताना चाहता हूँ। मुझे आशा है कि मेरे इस प्रयत्न से, आजकल प्रसादजी की कला-पूर्ण कृतियों को लेकर हिंदी में आलोचनात्मक साहित्य-सृष्टि का जो आयोजन हो रहा है, उसकी आंशिक नहीं, तो शतांश अथवा सहस्रांश पूर्ति अवश्य हो जायगी।

मैं स्कंदगुप्त को ही लूँगा। यह लेखक की एक प्रसिद्ध रचना है। एक समालोचक ने—जिनके हृदय में लेखक की कला के प्रति बड़ी भारी श्रद्धा है—द्विजेंद्र बाबू के मेवाड़-पतन के साथ इसका नामोल्लेख किया है। उनकी सम्मति में मेवाड़-पतन और स्कंद-गुप्त ये दोनो ही भारतीय साहित्य के श्रेष्ठ जातीय नाटक हैं। मेवाड़-पतन हमने बहुत दिन हुए तब पढ़ा था। हमें एक बार उसका अभिनय देखने का भी सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। वह द्विजेंद्र बाबू की सफल रचना है अथवा नहीं, इस पर विचार करना हमें अभिप्रेत नहीं। पर इसमें संदेह नहीं कि वह नाटक है। उसके साथ स्कंदगुप्त का नाम जुड़ा देखकर हम तो आश्चर्य से अवाक् होकर रह गए। हम तो यह समझते थे कि हिंदी के बुरे दिन बीत गए। उस पर अंध विश्वास की जो अँधियारी छाई थी, वह हट गई, और अब हम प्रकाश की नई ज्योति देख रहे हैं, जो हमें ज्ञान और विज्ञान, विवेक और विवेचना, शील और साहस की ओर अग्रसर कर रही है। पर जिस हिंदी में स्कंदगुप्त के लेखक की प्रत्येक रचना विश्व-साहित्य की चीज़ बन जाती है, और जिसके पाठक उस रचना को निस्संकोच भाव से वैसा ही स्वीकार कर लेते हैं, उस हिंदी का ईश्वर ही मालिक है। अन्य देशों के साहित्य-सेवी हमारी इस दयनीय दशा का यही अर्थ लगा सकते हैं कि या तो हमने अभी विश्व-साहित्य की कोई चीज़ ही नहीं पढ़ी, या हमारी साहित्यिक रुचि ऐसी अविकसित और अप्रौढ़ है कि हम सत् और असत्, उत्कृष्ट और निकृष्ट का भेद-भाव ही नहीं समझ सकते, अतएव हम इस योग्य भी नहीं कि विश्व-साहित्य की कोई रचना हमारे हाथ में दी जाय। क्योंकि यहाँ तो सब धान बाईस पसेरी हैं।

वास्तव में स्कंदगुप्त इस योग्य ही नहीं है कि यहाँ उसकी चर्चा की जाय, और न वह ऐसी चीज़ है कि उसकी आलोचना करने जाकर नाट्य-कला के उच्च

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

और भारी-भरकम सिद्धांतों को कट दिया जाय। नाटक के साथ लेखक की इस रचना का वही संबंध है, जो किसी रंगीन क़ालीन का चित्र के साथ। क़ालीन में ऐसे रंग होते हैं, जिनके सदुपयोग से सदैव ही एक दर्शनीय और कला-पूर्ण चित्र अंकित किया जा सकता है। उसी भाँति लेखक के स्कंदगुप्त में भी ऐसी सामग्री मौजूद है, जिसे लेकर सदैव ही एक सुंदर और सुपाठ्य नाटक की रचना की जा सकती है। इस प्रकार की सामग्री को, भानमती के बट्टों की तरह, दर्शकों के सम्मुख बिखेर देना ही यदि उच्च कोटि की नाट्य-कला का चरम निदर्शन है, तो स्कंदगुप्त निस्संदेह एक उत्कृष्ट रचना है, और प्रसादजी एक श्रेष्ठ नाट्यकार हैं, और सदैव रहेंगे।

पर इस प्रकार काम नहीं चलेगा। मैं देखता हूँ कि मुझे ये पन्ने रँगने ही पड़ेंगे। नाट्य-कला के उच्च सिद्धांत में विद्यार्थियों की विवेचना के लिये छोड़ता हूँ। मैं तो केवल ऐसी बातों का उल्लेख करूँगा, जिनके प्रकाश में मैं और मेरे पाठक, दोनो ही इस बात को देख सकें कि स्कंदगुप्त भारतीय साहित्य का एक चमकता हुआ रत्न है या झूठा मोती।

मेरी बड़ी इच्छा थी कि मैं स्कंदगुप्त के प्लाट को संक्षेप में लिखकर उसकी विवेचना करता। पर ऐसा करना मेरी सामर्थ्य के बाहर है। क्योंकि नाटक में वर्णित घटनाएँ ऐसी अविकसित और विशृंखल हैं कि उनको एकता के सूत्र में ग्रथित करना कठिन ही है।

स्कंदगुप्त को आप घटनाओं की काल-कोठरी कह सकते हैं, जिसके भीतर लेखक ने निर्दयता-पूर्वक इतनी घटनाएँ लेकर ठूँस दी हैं कि स्थानाभाव के कारण उनका दम घुट रहा है। कई तो चेतना-हीन होकर निर्जीव हो गई हैं, और कुछ कथानक की बंद कोठरी के भीतर स्थान न पाकर बाहर पड़ी हुई अपना सिर धुन रही हैं। उदाहरण के लिये आप १२३ पेज के दृश्य को किसी तरह भी कथानक के भीतर नहीं ठूँस सकते। पृष्ठ १२७ के दृश्य की भी कोई अधिक उपयोगिता हमारी समझ में नहीं आई। ब्राह्मणों और बौद्धों के शुष्क और निरर्थक वाद-विवाद की अपेक्षा यदि हूणों और भारतीयों का संघर्ष दिखाया जाता, तो कथा-वस्तु की अधिक पुष्टि होती। पहला अंक इतना बढ़ गया है कि उसकी वजह से नाटक की नाक कुछ अधिक लंबी हो गई है। संभव है, कुछ लोगों की दृष्टि में इससे नाटक का सौंदर्य बढ़ गया हो। पर प्रारंभ के नौ पेज किसलिये रँगे गए हैं? केवल स्कंदगुप्त को उसके अधिकारों का भान कराने के लिये? साम्राज्य की स्थिति डावाँडोल है। पुष्यमित्रों (!) से युद्ध हो रहा है। इधर शक अपना सिर उठा रहे हैं। देश में बड़ी-बड़ी घटनाएँ घटित हो रही हैं। परंतु स्कंदगुप्त को किसी का ज्ञान नहीं। वह एक ही साथ अनेक बातें सुनता है। बात यह है कि अनभिज्ञ पाठकों को तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति का ज्ञान कराना आवश्यक था, इसलिये लेखक ने पाठकों की अनभिज्ञता स्कंदगुप्त के मत्थे मढ़ दी। पर प्रसादजी को यह जानना चाहिए कि दर्शक केवल कथोपकथन सुनने के लिये किसी नाटक का अभिनय देखने नहीं जाता। वह कार्य-व्यापार देखना चाहता है। और जिस नाटक के प्रारंभ में ही उसे शीघ्र-से-शीघ्र आगे होनेवाली किसी घटना का पूर्वाभास नहीं मिल जाता, उसका अभिनय देखने के बजाय वह आराम से पैर फैलाकर ऊँघना ज़्यादा पसंद करता है।

लेखक को मानवी भावों के सूक्ष्म विश्लेषण का उतना ही ज्ञान है, जितना दसवें दर्जे के विद्यार्थी को जटिल रासायनिक सम्मिश्रणों के विश्लेषण का। स्कंदगुप्त अधिकार-सुख को मादक और सार-हीन समझता है। उसे साम्राज्य का लोभ नहीं। वह केवल दस्युओं और लुटेरों के हाथ से देश की रक्षा करना चाहता था। निस्संदेह ऐसे व्यक्ति का हृदय विशाल होना चाहिए, और बल, विक्रम, साहस तथा वीरता से भरा हुआ भी। पर लेखक के स्कंदगुप्त

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

में इनमें से किसी भी गुण का विकास नहीं हुआ। उसके स्कंदगुप्त में वीरोचित भावों का भारी अभाव है। वह विपत्ति को सम्मुख देखकर अधीर हो जाता है। यह जानकर कि भटार्क ने विश्वासघात किया है, वह घबरा उठता है। यह घबराहट क्या एक वीर सेना-नायक के योग्य है? एक जगह वह कहता है—"आह! मैं वही स्कंद हूँ, अकेला, निस्सहाय!" निस्संदेह यह उद्गार उसके योग्य नहीं हुआ। तभी तो एक स्त्री उसे उद्बोधित करने की आवश्यकता समझती है! देवसेना को बचाने में भी स्कंद के पौरुष की आवश्यकता नहीं पड़ी। नेपथ्य में 'बचाओ, बचाओ' का शब्द होता है। स्कंद तुरंत खड्ग लेकर जाता है। देवसेना का पीछा करते हुए हूण प्रवेश करता है। देवसेना आत्महत्या का प्रयत्न करती है। पर्णदत्त सहसा न-जाने कहाँ से आकर उसकी रक्षा करता है। यह सब कुछ सूर्य के खुले प्रकाश में हो जाता है। बेचारा स्कंद! बावले की तरह कहता है—"कोई नहीं मिला! कहाँ से पुकार आई थी!" क्या देव-सेनावाली घटना किसी बंद कोठरी के भीतर घटित होती है? अथवा स्कंदगुप्त स्वयं ही उस घटना के साथ आँख-मिचौनी खेलता है?

सबसे बढ़कर मज़े की बात तो यह है कि जो स्कंदगुप्त अधिकार-सुख को मादक और सार-हीन समझता है, वही मालवेश्वर बंधुवर्मा के सिंहासन को विना किसी नकार के चुपचाप स्वीकार कर लेता है। शुरू में वह बंधुवर्मा से कहता है—"मित्र मालवेश! बढ़ो, सिंहासन पर बैठो! हम लोग तुम्हारा अभिनंदन करें।" यह कथन कितना भद्दा है, कहने की आवश्यकता नहीं, पर इससे इतना प्रकट हो जाता है कि अभी सिंहासन पर स्कंदगुप्त के बैठने की बात तय नहीं हुई है। पाठक अथवा दर्शक अब यह देखना चाहते हैं कि बंधुवर्मा के यह कहने पर कि "सम्राट्! सिंहासन आप ही ग्रहण कीजिए।" वीरमना और निस्पृही स्कंदगुप्त के हृदय में कर्तव्य और कामना के बीच कैसा द्वंद्व मचता है। यह एक ऐसा स्थल है, जहाँ स्कंदगुप्त के चरित्र के विकास के लिये बड़ी गुंजाइश है। इस जगह उसके और गोविंदगुप्त के बीच का कथोप-कथन बहुत ही विदग्ध और सुंदर बनाया जा सकता था। पर लेखक ने इसकी ज़रूरत नहीं समझी। वह वीर स्कंद के मुँह से केवल इतना कहलाकर कि "तात! विपत्तियों के बादल घिर रहे हैं, अंतर्विद्रोह की ज्वाला प्रज्वलित है, इस समय मैं केवल एक सैनिक बन सकूँगा, सम्राट् नहीं", उसे हाथ पकड़-कर सिंहासन पर बिठाल देता है। लेखक की इस अनहोनी चेष्टा से स्कंदगुप्त पहले तो मानो कुछ स्तंभित-सा रह जाता है, और फिर सजग होने पर विना कुछ कहे बंधुवर्मा के गुरुभार उत्तरदायित्व को अपने कंधों पर उठा लेता है। धन्य है स्कंदगुप्त का त्याग!

स्कंदगुप्त को मैं यहीं छोड़ता हूँ। मातृगुप्त का चरित्र और भी विशद है। उस कवि-शिरोमणि के सूक्ष्म मनोभावों को व्यक्त करने में लेखक ने क़लम तोड़ दी है। हम यह नहीं कहते कि लेखक में प्रतिभा नहीं है। पर उसका उपयोग कैसा हुआ है, यही देखने की बात है।

लेखक की कल्पना विविध चित्र उद्भावित करती है। परंतु उसका विवेक किसी चित्र की रूप-रेखा तक को नहीं सँभाल पाता। उसमें रंग भरने की तो बात ही क्या, कार्य-कारण-संबंध तक का, जान पड़ता है, उसको बोध नहीं। किस भाव के उदय होने पर कार्य-स्वरूप कौन-सा भाव जन्म लेता है, इस पर शायद उसने कभी विचार ही नहीं किया। और, आनुषंगिकता (Sense of proportion) से तो कदाचित् उसका परिचय ही नहीं।

रघुवंश और शकुंतला के रचयिता, उस कवियों के भी कवि कालिदास के संबंध में हम तो कुछ कह ही नहीं सकते। केवल उसके नाम के सम्मुख श्रद्धा से अपना मस्तक झुका सकते हैं। उसे किसी भी रूप में रंगमंच पर उपस्थित करना बड़े कौशल का

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

काम है, और मैं तो समझता हूँ, दुस्साहस भी है। स्कंदगुप्त के लेखक ने मातृगुप्त के रूप में कालिदास को अवतरित किया है। निस्संदेह उसकी प्रतिमा बड़ी उग्र और निरंकुश है। कला-कुशल न हो, यह दूसरी बात है। वह मातृगुप्त को एक भूखे भठियारे से ऊँचा नहीं उठा सकी। इससे बढ़कर और क्या होगा?

प्रथम अंक के सोलहवें पृष्ठ में मातृगुप्त सड़क पर फेरी-सी देता हुआ स्वगत भाषण करता है—

"कविता करना अनंत पुण्य का फल है। इस दुराशा और कवि-अनंत-उत्कंठा से जीवन व्यतीत करने की इच्छा हुई। संसार के समस्त अभावों को असंतोष कहकर हृदय को धोखा देता रहा। परंतु कैसी विडंबना! लक्ष्मी के लालों का भ्रू-भंग और क्षोभ की ज्वाला के अतिरिक्त मिला क्या? एक काल्पनिक प्रशंसनीय जीवन, जो कि दूसरों की दया से अपना अस्तित्व रखता है। संचित हृदय-कोष के अमूल्य रत्नों की उदारता, और दारिद्र्य का व्यंग्यात्मक कठोर अट्टहास, इस विषम अवस्था की कौन व्यवस्था करेगा? मनोरथ को—भारत के प्रकांड बौद्ध पंडित को—परास्त करनेवाले लोगों में मैं भी सबकी प्रशंसा का भाजन बना। परंतु क्या हुआ?"

कविता करना अनंत पुण्य का फल अवश्य है। पर 'इस दुराशा और कवि-अनंत-उत्कंठा' में किस ज़मीन-आसमान के क़ुलाबे मिला दिए हैं? अनंत पुण्य के फल के बाद भी दुनिया में रोटियों के लाले पड़े रहना एक संभव तथ्य है, और 'अनंत पुण्य के फल' के बाद अनंत उत्कंठा कवि का स्वाभाविक लक्षण होता। परंतु 'दुराशा' ने दिमाग़ में ज़ोर का धक्का दिया; 'अनंत उत्कंठा' पिछड़ गई और दुराशा पहले टपक पड़ी; और फिर दुराशा और अनंत उत्कंठा से जीवन व्यतीत करने की इच्छा! कैसा भीषण दार्शनिक सत्य खोज निकाला! लेखक परवशता और इच्छा में कोई अंतर ही नहीं समझता। फिर संसार के समस्त अभावों को यह बेचारा बुद्धू असंतोष की संज्ञा देता रहा! कहने की आवश्यकता नहीं कि दिमाग़ के भीतर कुश्ती लड़के "अभावों के असंतोष" को पछाड़-पछूड़कर 'दुराशा' पहले भाग निकली, तब लेखक को पता चला कि कवि को जिन ज़रूरी चीज़ों का अभाव दुनिया में रहा, उनके संबंध में उस बेचारे से कहलाओ कि—उँह, यह ज़रूरी नहीं है—उनकी दुष्प्राप्यता या अलभ्यता ही मेरे जी की मसोस का कारण है। पहले जब यह अभाव अखरा होगा, उसको असंतोष का रूप देकर मनसमझौती की होगी, तब समष्टि-रूप में कई मर्तबा के कटु अनुभव के बाद वह भाव दुराशा की संज्ञा प्राप्त कर सका होगा। पर इससे लेखक को क्या? अनंत-पुण्य एक खनकता हुआ पद है, और अनंत-उत्कंठा में ढोल के बजने की ढमकार है। किसी तरह दोनो पद पास-पास आ जायँ, बस इतने ही उद्देश्य की प्रेरणा के वशीभूत होकर यह विपर्यय उपस्थित किया गया। और देखिए, कैसी विडंबना! "लक्ष्मी के लालों का भ्रू-भंग और क्षोभ की ज्वाला" कितना अनंत, अखंड, प्रचंड—और कितनी थापें मृदंग पर दी जावें?—दुःखांत वीभत्स इस वाक्य में है। "लक्ष्मी के लाल!" ओफ़्, जो कवि रुपयों के चलते-फिरते ढेरों को लक्ष्मी का लाल कहे, कितना लोलुप, लालची, उठाईगीरा होना चाहिए वह! और उनका 'भ्रू-भंग'! कोमल-कांत-पदावली और कोमल कांततर कल्पनाएँ जिसके जीवन का आधार हों, वह 'भ्रू-भंग' को किसी कोमल-कांत-स्थली से उखाड़कर चाँदी के घूरे पर फेंक दे! किसकी उपासना करते-करते किसके पैर चूमने झुक गया! ग़नीमत यह है कि लेखक को इस बात का आग्रह नहीं कि यह मातृगुप्त ही कालिदास है! ईश्वर करे, लेखक का यह आग्रह दुराग्रह में परिवर्तित होकर अटल और अचल बना रहे। पर इतिहास-प्रसिद्ध, राजतरंगिणी के मातृगुप्त के साथ जैसा अत्याचार प्रसादजी ने किया है, वैसा किसी के साथ कभी न किया गया

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

होगा। "लक्ष्मी के लालों" का भ्रू-भंग इस भिखारी के मन में क्षोभ की ज्वाला उत्पन्न करता है! अरे भाई, जब झोली डालकर ही निकले, तब एक घर पर एक टुकड़ा न मिला, न सही। दूसरा घर देखो। फिर तीसरा। फिर भी न मिले, तो लीला विसर्जन करते कितनी देर लगती है! लेखक के कुमारामात्य पृथ्वीसेन, महाप्रतिहार और दंडनायक कुछ भी कारण न होते हुए किस सफ़ाई के साथ अपनी छाती में छुरी को स्थान दे देते हैं! पर जहाँ मुद्गल मातृगुप्त से इस तरह की बातें कहता है कि 'भाई, मुझे तुम पर बड़ी दया आती है। चलो तुम्हारा कहीं ठिकाना लगा दूँ। पर एक बात है, राजकृपा का अधिकारी होने के लिये समय और चापलूसी की आवश्यकता है', वहाँ बेचारे मातृगुप्त को लेखक ने यह साधन भी नसीब न होने दिया। मुद्गल की बात सुनकर भूखा और भिखारी मातृगुप्त ख़ुश होकर कहता है—"आपकी बड़ी दया हुई। मैं आपके साथ अवश्य चलूँगा।" फिर चाहे कविता करने की "कवि-अनंत-उत्कंठा" को घूरे पर फेंककर राजाओं के तलवे ही क्यों न चाटना पड़ें! छिः-छिः क्या राजतरंगिणी में वर्णित मातृगुप्त ऐसा ही था? और, मुद्गल के साथ उज्जयिनी जाकर उसे करना क्या पड़ता है? जासूसी, हूणों से युद्ध और सेना का संचालन। तब तक बेचारे की कविता सिर ही धुनती रही!

फिर इस मातृगुप्त के मुँह से 'संसृति के वे सुंदरतम क्षण यों ही भूल नहीं जाना'-वाली कविता तो बहुत ही अद्भुत और अपूर्व बनी है। देखकर एक बार कालिदास भी शरमा जायँ। पर, क्यों भाई, क्या यह कविता उस ज़माने के भावों के अनुकूल है? अजी, लेखक से तो ऐसी बात ही पूछना व्यर्थ है। प्रसादजी का मुद्गल आजकल के पंडितों की भाषा में बात करता है, 'कायाम करके', और 'जो है सो' के तकियाकलाम के साथ! क्या गुप्त-काल के किसी शिला-लेख में इसका भी उल्लेख मिला है? और, इस मुद्गल को लेकर लेखक ने हास्य-रस की सृष्टि करने का जो प्रयास किया है, उसकी विफलता ही हमारे लिये हास्य की प्रचुर सामग्री जुटा देती है। इस दृष्टि से मुद्गल एक सफल पात्र है।

अनंतदेवी बिलकुल ही निर्जीव स्त्री है। उसका कोई रूप ही हमारे सामने खड़ा नहीं होता। वह गुप्त-साम्राज्य के विरुद्ध षड्यंत्र रच रही है। वह मगध के सिंहासन को अपनी मुट्ठी में करना चाहती है। उसे अपनी शक्ति पर इतना विश्वास है कि अपनी नियति का पथ अपने पैरों चलेगी। पर उसकी वह शक्ति क्या है, इसका हमें कहीं पता नहीं चलता। उसमें न तो तेज है, न साहस है, न कूटनीतिज्ञता है, और न रहस्य-भेदिनी तीक्ष्ण बुद्धि। भटार्क के सामने बिना किसी संगत कारण के ही वह अपनी दुर्बलता प्रकट कर देती है, और आँसू बहाने लगती है। और, भटार्क ऐसा बुद्धू है कि इस प्रकार कातर हो उठनेवाली स्त्री को साहसशीला समझता है। वास्तव में यह भटार्क है भी कुछ अजीब आदमी। एक जगह तो वह कहता है कि "मुझे अपने ही बाहु बल से मगध के महाबलाधिकृत का माननीय पद मिला है", फिर उसके बाद ही तुरंत अनंतदेवी की चापलूसी करता हुआ अपने पूर्व कथन को भूलकर कहता है—"और यह भी मुझे स्मरण है कि पृथ्वीसेन के विरोध करने पर भी आपकी कृपा से मुझे महाबलाधिकृत का पद मिला है। मैं कृतघ्न नहीं हूँ, महादेवी!" बेचारे का दिमाग़ ठिकाने नहीं। ऐसा व्यक्ति यदि साधारण-सी बातचीत को विद्रूप और व्यंग्य-बाण की वर्षा समझकर अकारण ही मगध-साम्राज्य को उलट-पुलट कर देने पर उतारू हो जाय, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं।

अनंतदेवी की एक मनोवृत्ति हमारी समझ में नहीं आई। वह सबके समक्ष महाराज से—अपने पति से—नर्तकियों को बुलाकर लाने की बात कहती है। क्या उसका हृदय स्त्री-जन-सुलभ कोमल भावों से ऐसा ही शून्य है? अथवा वह जान-बूझकर पति का सर्वनाश करने के उद्देश्य से उसे भोग-विलास के पथ पर अग्रसर करना चाहती है? तब तो यह बात इस

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रकार खोलकर कहने की नहीं। इसी दृश्य में कुमारगुप्त मगध-साम्राज्य की पट्ट महादेवी को संवाद भेजता है कि "आज तो कुछ पारसीक नर्तकियाँ आनेवाली हैं, आपानक भी है! महादेवी से कह देना, असंतुष्ट न हों, कल चलूँगा। समझा न मुद्गल।" छिः-छिः! आज तक किसी भी लंपट, शराबी और वेश्याचारी नृपति पति ने अपनी पत्नी के लिये—जिसके उच्च पद-गौरव से वह परिचित हो—ऐसा कुत्सित और हृदय को विक्षोभित करनेवाला समाचार न भेजा होगा। कुमारगुप्त की बात सुनकर युवराज भट्टारक की कल्याण-कामना के हेतु, चक्रपाणि भगवान् की पूजा के लिये बैठी हुई महादेवी के हृदय पर क्या बीती होगी, इसे भगवान् ही जाने।

विजया पहले स्कंदगुप्त और फिर भटार्क के प्रति आकृष्ट क्यों हुई, और देवसेना के लिये कृत्या-अभिशाप की ज्वाला क्यों बन गई, पाठकों के संमुख इसका कोई संतोषजनक कारण उपस्थित नहीं किया गया। किया भी गया हो, तो भाषा के घटाटोप के भीतर उसे खोज निकालना बहुत सहज नहीं। नाटककार, अपने पात्रों के मुँह से, जब जो मन में आता है, वही कहलवा देता है। उनको हँसाना, रुलाना और बात करते-करते उनकी लीला विसर्जन कर देना उसके हाथ में है। शर्वनाग की स्त्री रामा कभी तो शिष्ट बन जाती है, कभी तू-तड़ाक करने लगती है, और कभी मधुर 'स्वामी' संबोधन पर आ जाती है। देवसेना युद्ध के समय "भरा नैनों में, मन में रूप।" यह गीत गाकर अपने भैया को अंतःपुर का भार सँभाल लेने का विश्वास दिलाती है। बेचारा बंधुवर्मा बात करते-करते दम तोड़कर संसार की असारता का बढ़िया निदर्शन उपस्थित करके चला जाता है। देवकी भी "आह! गया मेरा स्कंद!! मेरा प्राण।" कहकर अपने प्राण छोड़ देती है। वह जीवित रहती और स्कंद उससे फिर आकर मिलता, तो क्या इससे घटना में कुछ चमत्कार न आ जाता! परंतु पात्रों की जटिलता में से बिना प्रयास के एक टल गया, यह क्या बुरा हुआ।

प्रकृति भी लेखक के वश में जान पड़ती है। पृष्ठ २१ में बादल की गरज सुनकर भटार्क कहता है—"ओह, ठीक समय हो गया।" बादल न हुआ, अलार्म टाइमपीस हुई। चाबी भर दी। ठीक वक्त पर आवाज़ हुई, 'और समय हो गया!'

एक और तमाशा देखिए। हूण बड़े वीर, बड़े नृशंस और बड़े आततायी हैं। पर स्कंदगुप्त अथवा गोविंदगुप्त की तलवार खिंची नहीं कि उनकी नानी मर जाती है। और, हथियार रखकर उनसे भागते ही बनता है।

स्टेज पर कब कौन आता है, क्यों आता है, और कब भाग जाता है, इसका भी कुछ नियम नहीं। पहले दृश्य में ही पर्णदत्त स्टेज पर क्यों आया है? क्या उसे स्कंदगुप्त से कोई विशेष कार्य था? या केवल उसके अधिकारों का ज्ञान कराने ही आया है? और चक्रपालित? जो आकर कहता है—"अरे, युवराज भी यहाँ हैं?" फिर वह खोज किसे रहा था? पिता को? पर पर्णदत्त से उसने कहा क्या? पृष्ठ ८३ में सैनिकों से घिरे हुए भटार्क और शर्वनाग के साथ विजया को प्रवेश करते देखकर जयमाला अथवा देवसेना किसी प्रकार का आश्चर्य प्रकट नहीं करती। पृष्ठ ८० में स्कंदगुप्त देवकी का चरण वंदन करता है। यह देवकी कहाँ से आ गई? या तो प्रवेश-समय इसका उल्लेख होने से रह गया, या किसी अलौकिक क्रिया द्वारा रंगमंच पर सहसा प्रकट हो गई है।

नाटक के पात्रों को बातचीत करना तो आता ही नहीं। उनका कथोपकथन रूढ़ और अस्वाभाविक ही नहीं होता, अपितु वह अपनी नादानी के कारण ऐसी असंभव परिस्थितियाँ उपस्थित कर लेते हैं, जिनकी वजह से उन्हें आगे बात करना मुश्किल पड़ जाता है। पता नहीं, ऐसा क्यों हुआ। प्रसादजी को अपने कर्म-रत जीवन में नित्य ही अनेक प्रकार के मनुष्यों से मिलने, भेंटने और बात करने का मौक़ा मिलता होगा। वार्तालाप करने मे

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वह अवश्य ही पटु होंगे। नाटक में उन्होंने अपनी इस वाक्-पटुता का परिचय क्यों नहीं दिया ? परिचय देने की, जान पड़ता है, चेष्टा भी नहीं की। नाटक में कई स्थल ऐसे हैं, जिनको थोड़े-से प्रयास से ही बहुत ही सुंदर और प्रभावोत्पादक बनाया जा सकता था, पर कथोपकथन की कृत्रिमता के कारण वह बिलकुल ही बेजान हो गए हैं। पृष्ठ ३४ को देखिए, जहाँ कुमारामात्य पृथ्वीसेन, सम्राट् के निधन का समाचार पाकर, अंतःपुर में प्रवेश करना चाहते हैं, और पुरगुप्त तथा भटार्क उन्हें जाने से रोकते हैं। वास्तव में बड़ी अच्छी घटना-परिस्थिति है। यहाँ नाट्यकार यदि चाहे, तो अपने नाट्य-नैपुण्य को जी खोलकर प्रदर्शित कर सकता है। पर लेखक का यह लक्ष्य नहीं। उसे तो अपने पात्रों के मुँह से कुछ कहला देना-भर अभिप्रेत है। पात्रों की बातचीत उनके भावों के साथ और उनके भाव उनके कार्यों के साथ मेल खा रहे हैं या नहीं, इससे मतलब नहीं। पहले दृश्य में विशाल मगध-राज्य का महानायक वृद्ध पर्णदत्त आकर कहता है—"युवराज की जय हो।"

स्कंदगुप्त—आर्य पर्णदत्त को अभिवादन करता हूँ। सेनापति की क्या आज्ञा है ?

वृद्ध पर्णदत्त बेचारा तुरंत सकपका जाता है, और युवराज के सामने अपनी बौखलाहट को सँभाल न पाकर कहता है—"मेरी आज्ञा ! युवराज ! आप सम्राट् के प्रतिनिधि हैं, मैं तो आज्ञाकारी सेवक हूँ ! इस वृद्ध ने गरुड़ध्वज लेकर आर्य चंद्रगुप्त की सेना का संचालन किया है। अब भी गुप्त-साम्राज्य की नासीर-सेना में पवित्र क्षात्र-धर्म का गरुड़ध्वज की छाया में पालन करते हुए, उसके मान के लिये मर मिटें—यही कामना है। गुप्त-कुल-भूषण ! आशीर्वाद दीजिए, वृद्ध पर्णदत्त की माता का स्तन्य लज्जित न हो।"

❀ ❀ ❀

स्कंदगुप्त—क्या अयोध्या का कोई नया समाचार है ?

पर्णदत्त—संभवतः सम्राट् पुष्पपुर चले गए हैं, और कुमारामात्य महाबलाधिकृत वीरसेन को गंगा-लाभ हो गया !

स्कंदगुप्त—क्या कहा ! महाबलाधिकृत अब नहीं हैं ? शोक !

पर्णदत्त—अनेक समरों के विजेता, महामानी, गुप्त-साम्राज्य के महाबलाधिकृत अब इस लोक में नहीं हैं ! इधर प्रौढ़ सम्राट् के विलास की मात्रा बढ़ गई है !

स्कंदगुप्त—चिंता क्या ! आर्य ! अभी तो आप हैं, तब भी हमीं सब विचारों का भार वहन करें, अधिकार का उपयोग करें ! वह भी किसलिये ?

अभी आप भाषा-सौष्ठव पर दृष्टि मत डालिए। पहले इस कथोपकथन की विदग्धता और सजीव स्वाभा-विकता पर विचार कीजिए। मगध-साम्राज्य के जिस महानायक ने चंद्रगुप्त की सेना का संचालन किया था, वह वयोवृद्ध पर्णदत्त स्कंदगुप्त से आशीर्वाद माँगता है ! किसलिये ? कि उसकी माता का स्तन्य लज्जित न हो। क्या गुप्त-कालीन शिष्टाचार ऐसा ही था ? और यह पर्णदत्त है भी कैसा महानायक, जो महाबलाधिकृत की मृत्यु का समाचार आते ही स्कंद-गुप्त को नहीं सुनाता ! यदि स्वयं स्कंदगुप्त अयोध्या का समाचार जानने की इच्छा प्रकट न करता, तो वीरसेन की मृत्यु का दुःखद समाचार शायद ही पर्णदत्त के मुँह से बाहर निकलता। और, फिर भी वह साम्राज्य के एक प्रधान और विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु के सामने सम्राट् के पुष्पपुर चले जाने की बात को प्रधानता देता है, और उस समाचार को सुन-कर स्कंदगुप्त भी केवल "शोक !" शब्द कहकर अपने हृदय का समस्त शोक प्रदर्शित कर देता है ! क्या यह शब्द उसके हृदय की स्थिति का बोधक है ? जान तो ऐसा पड़ता है कि महाबलाधिकृत की मृत्यु से उसका कुछ आता-जाता नहीं। वह तुरंत कहता है—"चिंता क्या ! आर्य ! अभी तो आप हैं !" नाट्यकार ने इस एक वाक्य की सहायता से ही

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्कंदगुप्त के हृदय की चरिणक खिन्नता को कोसों दूर खदेड़ दिया है। और स्कंद फिर स्वयं ही अधिकारों के उपयोग की चर्चा छेड़ देता है। यह किसलिये? एक बार तो इस अधिकार की चर्चा हो चुकी है। वह क्या पर्याप्त नहीं थी? या अभी इसका कचूमर निकालकर ही छोड़ा जायगा? बात यह है कि लेखक स्वयं नहीं जानता कि एक पूर्व कथन के फल-स्वरूप अब आगे कौन-सी नई बात कहकर नाटक के कार्य-व्यापार की गति को तीव्र किया जाय। आगे चलकर युवक स्कंदगुप्त से आशीर्वाद चाहनेवाला वही पर्णदत्त रोब से बातें करने लगता है, और स्कंदगुप्त भी अपने आर्य पर्णदत्त को डाटकर कहता है—"सेनापते! सावधान! प्रकृतिस्थ होइए!" बस, ख़त्म हो गया भाषा का सारा ओज और सौष्ठव! क्या मजाल जो ओजस्विता बेचारी इस 'सावधान' की डिबिया को खोलकर बाहर निकल जाय! जहाँ भाषा को बहुत ज़ोरदार बनाना हुआ, या किसी पात्र के मनोभाव को तीव्रता के साथ प्रकट करना हुआ, वहाँ यह 'सावधान!' लेखक की सहायता करने को झट से पहुँच जाता है!

और भाषा? न्योछावर हैं उसके लालित्य और पद्य-विन्यास पर सौ-सौ कालिदास! एकदम देशी ठर्रे के कुल्हड़-सी नशीली और भोथरी छुरी के समान हृदय को छेदनेवाली और विकल कर देनेवाली। अभागे हैं वे लोग, जो उसे समझ नहीं पाते!

पहले अंक के पहले सफ़े की पहली ही पंक्तियाँ लीजिए—

"स्कंदगुप्त—अधिकार-सुख कितना मादक और सार-हीन है! अपने को नियामक और कर्ता समझने की बलवती स्पृहा उससे बेगार कराती है! उत्सवों में परिचारक और अस्त्रों में ढाल से भी, अधिकार-लोलुप मनुष्य क्या अच्छे हैं?......"

पता ही नहीं, कौन किससे और क्यों बेगार कराता है? और फिर उत्सवों में परिचारक और अस्त्रों में ढाल, ये दोनो क्या बुरे होते हैं, जो अधिकार-लोलुप मनुष्य से इनकी तुलना की गई? इस समानता की समीचीनता क्या है?

एक दूसरा वाक्य देखिए, जिसमें लेखक ने शब्द-निर्वाचन की कला का कैसा सुंदर उदाहरण उपस्थित किया है—

"आर्य! आपकी वीरता की लेखमाला शिप्रा और सिंधु की लोल लहरियों से लिखी जाती है—"

लिखी जाती है या गाई जाती है? आपका यह लोल लहरियों का लिखा हुआ कौन पढ़ेगा?

एक वाक्य है—

"गुप्त सेना की मर्यादा को पर्णदत्त-सदृश महावीर अभी रक्षा के लिये प्रस्तुत हैं—"

ज़रा विश्लेषण कीजिए। कारक क्रिया ग़ोते लगाते फिरें।

पृष्ठ २५ में अनंतदेवी कहती है—"आँधियों से खेलता है, बातें करता है, बिजलियों से आलिंगन! ऊँह भटार्क!"

इसका कोई सिर-पैर भी है?

चुस्त और मुहावरेदार भाषा का और भी मज़ा लेना हो, तो पृष्ठ १२१ से १३२ तक के लंबे-चौड़े भाषण पढ़ जाइए, और लेखक के भाषा-नैपुण्य की भूरि-भूरि प्रशंसा कीजिए।

वाक्-संयम अच्छी भाषा लिखनेवालों का लक्षण समझा जाता है। पर यहाँ व्याकरण-संयम का करिश्मा देखने को मिलता है। उससे जितना कम काम लिया जाय, उतनी ही ख़ूबी! और यदि व्याकरण को बालाएताक़ धर दिया जाय, तो भाषा का चमत्कार कैसा बढ़ जाय! और, कविता की तुक मिलाना बाएँ हाथ का खेल हो जाय—

हृदय धूल में मिला दिया है,
उसे चरण-चिह्न-सा किया है।
खिले फूल सब गिरा दिया है,

प्रसादजी को यह कौन बताए कि 'हाथी आई है', 'घोड़े गया है', इस प्रकार की व्याकरण-संगत भाषा का शिष्ट-समाज में प्रचार नहीं। और, इस पूरी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कविता का मतलब क्या है ? "न तो मघा की फुहार कोकिल ।" यह एक ही रही। "मानहु मघा मेघ झर लागी।" यह कई युग पहले की बात है । इस कलियुग में तो अब सावन सूखा ही चला जाता है ! क्यों न ?

'स्कंदगुप्त' की भाषा को साहित्य कहना विडंबना-मात्र है । उसमें न तो गति है, न छंद है, और न पद-लालित्य ही है। अर्थ-गांभीर्य तो उससे कोसों दूर रहता है। एक बार दाड़िम के धोखे श्रीफल को भेदने जाकर एक तोते को अपनी चंचु-हानि के उपरांत उस फल के भीतर का सरस और सुमधुर द्रव्य खाने को मिल गया था। पर प्रसादजी के शब्द-जाल को भेदकर हम-जैसे साधारण पाठक, लाख प्रयत्न करने पर भी, कोई भाव-माधुर्य नहीं खोज पाते ।

पृष्ठ १६, २० और २१ में कवि मातृगुप्त और कुमारदास के बीच जो बातचीत कराई गई है, वह विक्षिप्तों के प्रलाप-समान अनर्गल और असंबद्ध, अर्थ-हीन शब्द-जाल का एक उत्तम उदाहरण है। कवि मातृगुप्त के मुख से कहलाई गई भाषा जैसी जटिल है, वैसी ही कर्कश भी है। उसे पढ़कर कान और मन दोनो ही पीड़ित होते हैं। कारण, उसमें ध्वनि के साथ ध्वनि संयुक्त नहीं, और न शब्द के साथ शब्द अन्वित हैं। उसमें कोई भाव-सौकर्य भी नहीं। वह केवल खोखले ढोल की तरह ढम-ढम करती है।

"उस हिमालय के ऊपर सबेरे सूर्य की सुनहरी प्रभा से आलोकित बर्फ़ का पीले पुखराज का-सा एक महल था, उसमें नवनीत की पुतली झाँककर देखती थी। वह हिम की शीतलता से सुसंगठित थी। सुनहरी किरणों को जलन हुई। तप्त होकर महल को गला दिया। पुतली ! उसका मंगल हो, हमारे अश्रु की गर्म शीतलता उसे सुरक्षित रक्खे। कल्पना की भाषा के पंख गिर जाते हैं, मौन नीड़ में निवास करने दो। छेड़ो मत, मित्र !"

सूर्य की तप्त किरणों ने बर्फ़ का पीले पुखराज का-सा महल तो गला दिया, पर उसमें नवनीत की जो पुतली झाँककर देख रही थी, उसे आँच तक नहीं आई ! कवि के अश्रु को गर्म शीतलता उसे सुरक्षित रक्खेगी ! यह सब क्या है ? हम तो कुछ भी नहीं समझे। इस प्रकार के असंबद्ध वाक्यों और कुछ खनकते हुए शब्दों को एक स्थान पर एकत्र करके रख देने से ही क्या गद्य की विदग्धता, सुकुमारता और भाव-प्रचुरता बढ़ जाती है ? मातृगुप्त कालिदास के इस भाषण में कौन-सा चमत्कार है ? कौन-सा भाव है ? यदि कुछ हो भी, तो वह शब्द-जाल के भीतर ऐसा फँस गया है कि दम घुट जाने के कारण उसका कुछ अस्तित्व ही नहीं रह जाता। भाव भाषा का जितना कम सहारा लें, वे उतने ही उच्च होते हैं, और जो लेखक अपनी रचना में इस प्रकार के उच्च भावों का जितना अधिक समावेश कर सकता है, वह उतना ही ऊँचा कलाकार है। क्या स्कंदगुप्त के लेखक में यह बात है ?

स्कंदगुप्त ऐतिहासिक नाटक है। अतएव इसके ऐतिहासिक आधार पर विचार किए बिना निबंध अधूरा ही रहेगा। ऐतिहासिक सामग्री के उपयोग द्वारा कथा-साहित्य की सृष्टि करनेवाले लेखक से इस बात की आशा करना कि उसे अपने विषय का पंडित होना चाहिए, मैं समझता हूँ, उसके साथ अत्याचार करना नहीं है। स्कंदगुप्त के लेखक ने ज़रूर ही गुप्त-कालीन इतिहास का गंभीरता-पूर्वक मनन किया होगा। परंतु स्कंदगुप्त को उज्जयिनी-पति विक्रमादित्य मानना, उसे शकारि बताना, विश्ववर्मा और बंधुवर्मा को स्वतंत्र मालव-नरेश बताकर उनकी अधीनता-स्वीकृति द्वारा स्कंदगुप्त की उत्कर्ष-सिद्धि की चेष्टा करना, शक क्षत्रप रुद्रसिंह तृतीय के नाश का श्रेय समुद्रगुप्त को देना और बेचारे प्रसिद्ध विक्रमादित्य के श्रेय पर परदा डाल देना, पुष्यमित्रों के काल्पनिक युद्ध की अवतारणा, मातृगुप्त-जैसे कवि पर कालिदासत्व की थोपथाप, हर्ष विक्रमादित्य का स्कंद विक्रमादित्य में अध्याहार, काव्यकार कालिदास को नाटककार कालिदास से भिन्न मानना, आदि बातें ऐसी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बेसिर-पैर की हैं, जिनसे इस नाटक की प्रकांड ऐतिहासिकता पर भारी संदेह होने लगता है।

क्या प्रसादजी हमें यह बताने की कृपा करेंगे कि स्कंदगुप्त को दंतकथाओं और आख्यायिकाओं का आधार उज्जयिनी-पति विक्रमादित्य मानने के लिये उनके पास क्या प्रमाण है? स्कंदगुप्त राज्य की ओर से उदासीन था, और उसने मगध का सिंहासन अपने सौतेले भाई पुरगुप्त के लिये त्याग दिया था, यह ऐतिहासिक सत्य उन्हें कहाँ से प्राप्त हुआ? क्या राखाल बाबू के करुणा उपन्यास से? नष्टप्राय गुप्त-साम्राज्य का अंतिम सम्राट् स्कंदगुप्त किस आधार पर महापराक्रमी विक्रमादित्य माना जा सकता है? हस्ती, संक्षोभ, उच्छकल्प के जयनाथ, सर्वनाथ और वलभीर, धरसेन आदि सामान्य राजाओं का स्वतंत्र हो जाना स्पष्ट प्रमाणित करता है कि स्कंदगुप्त विक्रमादित्य की उपाधि के योग्य न था। वह शकारि भी न था। उसका स्वयं विक्रमादित्य की उपाधि धारण कर लेना एक वंश-परंपरागत कृत्य मालूम होता है। उसके बाद के कई छोटे-मोटे गुप्त राजाओं को भी विक्रमादित्य बनने की साध हुई थी। उन्होंने भी तो स्कंदगुप्त के समान अपने नाम के आगे विक्रमादित्य की उपाधि जोड़ डाली है। इसके अतिरिक्त इतिहास में और भी बहुतेरे स्वयंभू विक्रमादित्यों का पता चलता है। किंतु वास्तविक विक्रमादित्य शकारि तो तीन ही हैं। एक तो १२० ई० पू० में आई हुई शकों की दो शाखाओं में से मथुरावाली शाखा का नाश करनेवाले आदि विक्रम, जो ५७ ई० पू० में हुए, दूसरे अंतर्वेदी से शकों का बहिष्कार करनेवाले गुप्तवंशी प्रथम चंद्रगुप्त और तीसरे शकों की सौराष्ट्रवाली शाखा का मूलोच्छेद करनेवाले सम्राट् चंद्रगुप्त द्वितीय—यह अंतिम विक्रमादित्य थे। इसके बाद शकारि विक्रम कोई नहीं हुआ, ऐसा विद्वानों का मत है।

शायद प्रसादजी को पता नहीं कि शकों के मूलोच्छेद का श्रेय स्मिथ, फ्लीट, एलन, ओझा और हाल ही में सुधींद्र वर्मा बी० ए० ने अपने-अपने विभिन्न लेखों, युक्तियों और प्रमाणों द्वारा महाविक्रमशाली सम्राट् चंद्रगुप्त द्वितीय के लिये ही प्रमाणित कर दिखाया है। समुद्रगुप्त का शकराज स्वामी रुद्रसिंह तृतीय से कोई भी युद्ध नहीं हुआ। लेखक की विचित्र सूझ ने हरिषेण के शिला-लेख के जिस रुद्रदेव में इस शकराज रुद्रसिंह का अध्यारोप कर डाला है, वह वाकाटक-वंशी रुद्रसेन माना जाता है, स्वामी रुद्रसिंह नहीं। सम्राट् समुद्रगुप्त पश्चिम समुद्र-तट की ओर गया ही न था। वह तो कांची से लौटकर सीधा मध्यप्रदेश में होता हुआ पद्मावती, प्रतिष्ठान और कौशांबी होकर यमुना के किनारे-किनारे पंजाब की ओर चला गया था। मालव, सौराष्ट्र और वलभी आदि का उसने विजय ही नहीं किया। शकों से उसकी मुठभेड़ ही नहीं हुई। उन्होंने स्वयं कर-प्रदान से उसे संभावित किया था। संसार-प्रसिद्ध इतिहासज्ञ डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी द्वारा हाल ही में लिखित 'Men and Thought in Ancient India'-नामक पुस्तक के समुद्रगुप्त निबंध से तथा डॉ० हेमचंद्र राय चौधरी-लिखित 'Political History of Northern India' से यह बात स्पष्ट प्रमाणित हो जाती है।

अतएव पाँचवीं शताब्दि के प्रारंभ में होनेवाले विशाखदत्त के देवी चंद्रगुप्त नाटक के नायक शकारि विक्रमादित्य श्रीसम्राट् चंद्रगुप्त द्वितीय ही हैं, समुद्रगुप्त अथवा स्कंदगुप्त नहीं। स्कंदगुप्त से बहुत पहले ही सम्राट् चंद्रगुप्त ने शकों का मूलोच्छेद कर डाला था। अतएव स्कंदगुप्त शकारि नहीं कहा जा सकता। उसके समय में तो शकों के राज्य का अस्तित्व ही नहीं था। इतिहास में वह विक्रम के नाम से प्रसिद्ध भी नहीं है। उसे शकारि विक्रमादित्य कहना एक विडंबना-मात्र है।

प्रसादजी लिखते हैं कि नरवर्मा और विश्ववर्मा मालव के स्वतंत्र नरेश थे; परंतु नरवर्मा के समय

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के मालव (विक्रम) सं० ४६१ के शिला-लेख में उसको महाराज लिखा है, और प्रसादजी को जानना चाहिए कि उस समय महाराज प्रशस्ति का उपयोग अधीन राजाओं के लिये होता था, जिससे अनुमान होता है कि वह किसी राजा का सामंत था। और, मंदसोर में कुमारगुप्त और बंधुवर्मा का जो लेख मिला है, उससे स्पष्ट है कि संवत् ४९३ (ई० सन् ४३६) में विश्ववर्मा का पुत्र बंधुवर्मा कुमारगुप्त के अधीन था। अतएव विश्ववर्मा और बंधुवर्मा स्वाधीन भूपति नहीं थे। वे गुप्तवंशी सम्राट् चंद्रगुप्त विक्रमादित्य द्वारा विजित मालव के सामंत-मात्र थे। फिर, अपनी नाटकीय सुविधा के लिये लेखक ने इस ऐतिहासिक तथ्य पर किस के सहारे पानी फेर दिया ?

हर्ष विक्रमादित्य-नामक राजतरंगिणी में वर्णित राजा को स्कंद बना देने का असफल प्रयत्न और भी उपहास्य है। क्यों साहब, यदि यह हर्ष विक्रमादित्य स्कंद ही था, तो फिर वह विक्रमादित्य कौन था, जिसके पुत्र प्रतापशील शिलादित्य का राजतरंगिणी में उल्लेख है, और जिसके संबंध में लिखा है कि उसको जब शत्रुओं ने राज्य से मार भगाया, तब प्रवरसेन ने उसकी सहायता की और उसे पितृराज्य दिला दिया ? और, वह विक्रमादित्य कौन था, जिसके पुत्र के संबंध में चीनी यात्री ह्यूनचांग लिख गया है कि उसके मालवा में उपस्थित होने से ६० वर्ष पहले वहाँ शिलादित्य प्रबल प्रताप से राज्य करता था ? कल्हण ने भूल ज़रूर की है। हर्ष विक्रमादित्य और शकारि विक्रमादित्य दोनो को गड्डमड्ड कर दिया है। यह हर्ष कौन था, इसका भी इतिहास में पता नहीं चलता। पर जिस विक्रमादित्य की सभा में उसने मातृगुप्त का जाना लिखा है, वह स्कंदगुप्त कदापि नहीं हो सकता। राजतरंगिणी के विवरण के अनुसार मातृगुप्त, हर्ष विक्रमादित्य और काश्मीर-नरेश प्रवरसेन द्वितीय का समय एक है। प्रवरसेन सन् ई० ५३१ के बाद काश्मीर के सिंहासन पर बैठे थे। स्कंदगुप्त की मृत्यु तो इससे बहुत पहले ही (सन् ४६७ ई० में) हो गई थी। पर लेखक को इससे क्या ?

और यह पुष्यमित्रों का युद्ध कौन-सी बला है ? पाँचवीं शताब्दि में पुष्यमित्र नाम की कौन-सी जाति पैदा हो गई थी, जिसे स्कंदगुप्त ने पराजित किया था ? अजी, फ़्लीट साहब की खोज का वह ज़माना चला गया। फ़्लीट साहब ने मंदसौर के जिस शिला-लेख में "समुदितबलकोषान्पुष्यमित्रांश्च जित्वा"—पढ़ा था, उसका शुद्ध पाठ अब 'समुन्नितबलकोषान्युध्यमित्रांश्च जित्वा' है। इसे हमारे ओझाजी भी मानते हैं, श्रीयुत दिवेकर भी मानते हैं, और अन्य भारतीय विद्वान् भी मानते हैं। प्रसादजी न मानें, तो लाचारी है।

मातृगुप्त के संबंध में हमें कुछ नहीं कहना। मातृगुप्त और कालिदास दो भिन्न व्यक्ति थे। और स्कंदगुप्त-नाटक में आपने जिन मातृगुप्त की सृष्टि की है, वह तो कालिदास कदापि नहीं हो सकते। पर प्रसादजी को इसका आग्रह नहीं है। तब हम क्यों दुराग्रह-पूर्वक आपकी लचर दलीलों का खंडन करने बैठ जायँ। परंतु काव्यकार कालिदास को नाटककार कालिदास से भिन्न मानने की कल्पना बड़ी ही विचित्र है। यह क्या लेखक की निजी ऐतिहासिक खोज है ? या उसने केवल नाटकीय सुविधा के लिये ऐसी निराधार कल्पना की है ?

प्रवरसेन, तुंजीन और तोरमाण नामों की लेखक ने, अपने ऐतिहासिक परिशिष्ट में, जो खिचड़ी तैयार की है, वह बहुत ही मज़ेदार है। प्रवरसेन और तोरमाण नामधारी राजा कई हुए हैं। प्रसादजी कब किसका उल्लेख कर जाते हैं, इसका पता ही नहीं चलता। पर जिस प्रवरसेन के लिये आपके कालिदास ने महाराष्ट्री भाषा का 'सेतुबंध'-काव्य बनाया था, वह काश्मीर का राजा प्रवरसेन नहीं था। अपितु, चंद्रगुप्त द्वितीय का दौहित्र वाकाटक-वंशी कुंतलेश प्रवरसेन द्वितीय था। सेतुबंध काव्य कालिदास का नहीं, बल्कि इसी कुंतलेश प्रवरसेन का लिखा माना जाता है। फिर प्रसादजी ने जिस काश्मीर-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नरेश प्रवरसेन की चर्चा की है, वह मेघवाहन का पुत्र नहीं, बल्कि तोरमाण का पुत्र प्रवरसेन द्वितीय था। काश्मीर-नरेश इस प्रवरसेन द्वितीय के सिंहासनारोहण का समय विद्वानों ने सन् ई० ५३१ के बाद या उसके आसपास कूता है। मातृगुप्त, विक्रमादित्य की मृत्यु का समाचार पाने पर, इसी प्रवरसेन द्वितीय को काश्मीर का राज्य सौंपकर काशी-वास करने चला गया था। इस ऐतिहासिक तथ्य के एक ही आघात से लेखक के कपोल-कल्पित ऐतिहासिक सिद्धांतों की सारी इमारत भरभराकर नीचे गिर पड़ती है।

और तो सब ठीक है, पर जान पड़ता है, लेखक को काल-ज्ञान भी नहीं है। नाटक के पृष्ठ ४ में बंधुवर्मा के पिता विश्ववर्मा के शरीरांत की ख़बर आती है। बंधुवर्मा के समय का मंदसौर का शिला-लेख मालव (विक्रम)-संवत् ४९३ (ई० सन् ४३६) का है। इससे स्पष्ट है कि उसके पिता विश्ववर्मा की मृत्यु अधिक-से-अधिक ४३५ ई० में हुई होगी। इसके उपरांत उसका जीवित रहना संभव नहीं। अतएव नाटक में वर्णित यह घटना ४३५ ई० की है। इससे पूर्व की हो सकती है, बाद की नहीं। फिर उसी नाटक के पृष्ठ ३३ में हमें पता लगता है कि सम्राट् कुमारगुप्त महेंद्रादित्य भी किसी से कुछ कहे-सुने बिना ही इस संसार को छोड़कर स्वर्गलोक चले गए। प्रसादजी के मतानुसार ही यह दुःखद घटना सन् ई० ४५५ के आसपास हुई। ४३५ और ४५५, कैसी हलकी छलाँग है! ये बीस वर्ष कौन-सी घटना के गर्भ में विलीन हो गए? या मुद्गल की अक्षय-मंजूषा के उदर में समा गए? बेचारा स्कंदगुप्त तब तक पुष्यमित्रों से युद्ध ही करता रहा!

पृथ्वीसेन यदि ऐतिहासिक व्यक्ति है, तो क्या यह बात भी ठीक है कि उसने मगध-साम्राज्य की रक्षा का कोई समुचित उपाय न सोच पाकर कायरों की भाँति अपनी छाती में छुरी भोंक ली थी? शिला-लेख में वह पहले कुमारामात्य और फिर महाबलाधिकृत बताया गया है। पर नाट्यकार के हाथ में पड़कर उस बेचारे को कुमारामात्य के पद से ही त्याग-पत्र सौंपकर परलोक की यात्रा करनी पड़ी।

भटार्क सेनापति था या महाबलाधिकृत? क्या इन दो पदों में कुछ अंतर नहीं है? शिला-लेख में उसे सेनापति ही लिखा गया है। उसने गुप्त-साम्राज्य की उतरती अवस्था देखकर वलभीपुर में अपना राज्य स्थापित किया था। क्या लेखक के भटार्क ने ऐसा किया होगा? और, जिस वीरसेन की मृत्यु का समाचार पर्णदत्त लाता है, वह चंद्रगुप्त द्वितीय के समय का वीरसेन उपनाम शाब तो नहीं है? पर शिला-लेख में उसे महा संधिविग्रहिक लिखा है, कुमारामात्य या महाबलाधिकृत नहीं। जो लेखक इस प्रकार के ऐतिहासिक प्रमादों से नहीं बच सकता, उसकी बीसवीं सदी की आँखें पाँचवीं शताब्दि की सामाजिक अवस्था का चित्र क्या खींचें? ऐतिहासिक नाटक अथवा उपन्यास लिखना सहज बात नहीं। वर्तमान अवस्था और समय से जब तक लेखक अपने को बिलकुल अलग करके लेख्य विषय की अवस्था में नहीं डाल देता, तब तक ऐतिहासिक विपर्यय, दोष से नहीं बच सकता।

अनातोल फ्रांस ने 'ताई' (Thais)-नामक प्रसिद्ध उपन्यास लिखा है। अद्भुत चीज़ है। इसकी ख़ूबी वही समझ सकते हैं, जिनका दूसरी शताब्दि की ईसाई दुनिया से थोड़ा बहुत परिचय हो। जिस समय और जिस सामाजिक अवस्था का वर्णन लेखक ने किया है, संपूर्ण चित्र बना दिया है। उस समय की विचार-परंपरा और भाषण की परिपाटी तक को ज्यों-का-त्यों आधुनिक शब्द-चित्रों में फ्रांस ने उतार दिया है। सिनकिवीज़ का 'क्यू वेडिस'-नामक उपन्यास भी ऐसा है। उसमें लेखक ने नीरो के ज़माने का चित्र खींचकर रख दिया है। वही भाव, वही विचार, वही शैली, वही सामाजिक अवस्था, केवल भाषा का रूप आधुनिक है। पर स्कंदगुप्त के रचयिता को इतनी तकलीफ़ उठाने की ज़रूरत क्या?

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गुप्त-काल में व्यवहृत होनेवाले दस-बीस नाम खोज-कर रख लिए, थोड़े-से ऐसे कठिन शब्द ढूँढ़ लिए, जो कोष में भी मुश्किल से मिलें, और बस सब काम हो गया।

मैं एक बात कहना भूल गया। कुछ लोग अभिनेय नाटकों के अलावा पठनीय नाटकों की अलग सत्ता स्वीकार करते हैं। मैं इसे मानता हूँ। कुछ नाटक ऐसे हैं, जो कभी रंगमंच पर खेले ही नहीं गए। यह भी ठीक है। पर क्या इसका यह आशय है कि यदि वे नाटक रंगमंच पर खेले जायँ, तो अभिनेता रंगमंच पर जाकर कठपुतलियों का तमाशा दिखा दें, और दर्शक पैसों के बदले सिर-दर्द मोल लेकर अपने घर जायँ ? इससे तो यही अच्छा है कि इस प्रकार के नाटक-रचयिता नाटक लिखना छोड़कर उपन्यास लिखना आरंभ कर दें। पर ईश्वर बचाए उनके उपन्यासों से ! बीस साल के अनेक प्रयोगों के बाद इब्सन को पता चला था कि उसका एक नाटक 'Lady Inger of Ostraat' पठनीय तो है, पर अभिनय की दृष्टि से सफल नहीं हुआ। अतः उचित परिवर्तन करके उसे अपनी रचना स्टेज के योग्य बनानी पड़ी थी। क्या प्रसादजी भी कभी ऐसा करेंगे ?

लेख बहुत लंबा हो गया है। मैं प्रसादजी की कविता पर विचार ही नहीं कर सका। कविता का नाटक से घनिष्ठ संबंध है। पर उसे मैंने फिर के लिये रख छोड़ा है।

मुझे एक बात और कहनी है। कुछ लोग कहते हैं कि प्रसादजी की रचनाएँ साधारण कोटि के पाठकों के लिये नहीं होतीं। तो शायद उच्च कोटि के पाठकों के लिये होती हैं ! यही सही। पर इन लोगों से मेरा एक अनुरोध है कि यदि समय मिले, और वे पढ़ सकें, तो एक बार भास का 'प्रतिमा' अथवा 'स्वप्नवासवदत्ता', या बर्नर्ड शा का 'The Devil's Disciple' या 'Saint Joan' नाटक पढ़ जायँ, और देखें कि नाटक क्या चीज़ है, कथोपकथन किसे कहते हैं, हृदय के सूक्ष्म और सुकुमार भावों को प्रकट करना कैसा होता है, और यह भी देखें कि विश्व-साहित्य की चीज़ होने के लिये यह कोई ज़रूरी नहीं कि वह साधारण पाठकों की समझ में ही न आवे।

इस निबंध में मैंने आदरणीय प्रसादजी की नहीं, उनके नाटक स्कंदगुप्त की आलोचना की है। यदि भूल से उनके संबंध में कुछ निकल गया हो, तो आशा है, वह क्षमा करेंगे।

करामात तैल

कान बहने, कम सुनने, निपट बहरेपन, परदों की कमज़ोरी, शब्द होने व कान के सर्व रोगों की रामबाण अनुभवी दवा है। मूल्य फ़ी शीशी १।) रु०, तीन शीशी एकसाथ मँगाने पर डाक-व्यय की छूट।

कर्ण-बिंदु—कान के घाव को साफ़ करने की दवा। मूल्य फ़ी शीशी ।।)

वल्लभ ऐंड संस, पीलीभीत (यू० पी०)

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पावस-प्रमोद

[साहित्य-रत्न ठाकुर गुरुभक्तसिंह 'भक्त' बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

विल्व-वृक्ष नव दल से सजकर
जब कलियाँ चिटकाता है,
वायु-विकंपित पुष्प-भार से
वकुल झूम झुक जाता है।
फुलचुंभी चिड़ियों के जोड़े
जब रस लेने आते हैं,
फूल अछूते छूते ही बस
आँसू-से गिर जाते हैं।
ताप-निवारण करने को जब
श्याम मेघ छा जाते हैं,
तब पावस का स्वागत गाकर
हम कितना हर्षाते हैं।
हवा चली, पानी भी आया,
जलामयी सब भूमि हुई;
बाल-मंडली में काग़ज़ की
नावों की बस धूम हुई।
छोड़ समाधि निकल आए हैं
पीत-वर्ण दादुर बाहर;
चिड़ियों की चाँदी हो आई,
चींटों के उग आए पर।
नाला उबल-उबल, मटमैला,
चक्कर खाता, बढ़ा हुआ,
जाकरके मिल गया नदी से,
शोर मचाता, चढ़ा हुआ।
धार-विरुद्ध मीन अड़वारी
पानी काट, मोद में भर,
डूब-डूब, फिर-फिर उतराकर
चढ़ती जाती है जल पर।
धानों की क्यारी भर आई,
मेंड़ बाँधकर रोका जल;
पानी ही में भोग-भीगकर
कृषक चलाता जाता हल।
ललना एक धान-क्यारी में
मैली-सी पहने सारी,
जिसमें कई रंग के पेवँद
की थी की पच्चीकारी,
धानों के कुछ नए पौध को
निज उभरे सीने से दाब
(मानो उसको सींच रही है
देकर निज यौवन का आब),
चलती थी सँभालती तन को;
करने पर भी लाख यतन
कई ठौर से मसकी सारी,
आभा फूट चली छन-छन।
पानी बरस रहा है रिम-झिम,
भीग रही बेचारी है;
बूँद-बाण के भय से उसके
तन में लिपटी सारी है।
अंग-अंग सब झलक रहा है,
लज्जा से सकुचाती है;
धानों के पौधों से ज्यों-त्यों
करके देह छिपाती है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पवन छेड़कर और सताता,
देता केश-राशि लहरा ;
मानो ये घन भी नभ चढ़कर
बरसेंगे घहरा - घहरा।
क्यारी भरी हुई है जल से,
मिट्टी खूब बनाई है ;
पुष्य-नखत में वृष्टि हुई है,
धान रोपने आई है।
एक - एक पौधा लेकरके
झुक - झुक पौध लगाती है,
मानो मलमल की चादर में
बेल काढ़ती जाती है।
हलकी होकर, निज गोदी से
शिशु को क्यारी में बिठला,
मुक्त करों से केशाच्छादित
मुख से कुंचित केश हटा,
बैठ किनारे लगी निरखने
अपने खेतों की माया ;
माथे पर श्रम - बिंदु तथा जल-
बिंदु मोतियों - सा छाया।
जब उसने देखा निज सन्मुख
हरे-हरे धानों का कोष,
मधुर उछलते हुए हृदय को
मिली शांति, आया संतोष।
बोली पौधों से—शिशु प्यारे,
क्यों इतने मुरझाए हो ?
हरे-भरे थे अभी गोद में,
क्यों अब मुँह लटकाए हो ?
धैर्य धरो, पृथ्वी मा देगी
तुमको अपने उर में स्थान ;
लालन-पालन सदा करेगी,
वत्स ! तुम्हारा एक समान।
भाई पवन झुलाएगा नित
आकरके तेरा पलना ;
सूर्य - किरण की लकड़ी दे
सिखलाएगा ऊपर चलना।
गौवें तेरी श्याम घटाएँ
पय से अपना थन भरकर,
दक्षिण के जल-भरे, हरे,
लहराते खेतों से चरकर।
आकरके नित तेरे मुख में
बरसावेंगी जीवन - धार ;
फिर तुम क्यों अनमने हुए हो ?
खेलो, उठो-उठो सुकुमार !
तेरे निकट घास का तिनका
भी जो कहीं उठावे सर ;
वहीं क़लम कर दूँगी गर्दन,
नहीं छोड़ सकती छन - भर।
शीश उठावे कोई राज्य में
तेरे, तेरा बाग़ी हो ;
खटकेगा मेरे सीने में,
नहीं सकूँगी तब तक सो,
नहीं जब तलक विद्रोही के
टुकड़े-टुकड़े लूँगी काट ;
निष्कंटक बस राज्य करो तुम,
हे मेरे छोटे सम्राट !
तेरी लूँ मैं लाख बलैयाँ
बाल शालि, मेरे धन-धान ;
फूलो-फलो, हँसो-खेलो तुम,
हरा-भरा रक्खे भगवान।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शिल्प और जीवन का योगसूत्र

[प्रसिद्ध चित्रकार श्रीअसितकुमार हाल्दार, प्रिंसिपल स्कूल ऑफ़ आर्ट एंड क्राफ़्ट, लखनऊ]

भारत की शिल्प-कला की बातें करते हुए हमारे मन में अनेक बातें उठती हैं। एक साथ, एक ही साँस में, कुल उपयोगी शिल्प (Applied art) और ललित शिल्प (Fine art) की समस्या का समाधान करना हमारा इस वक्त का उद्देश्य नहीं। सिर्फ़ उसका सामंजस्य या जीवन के साथ उसका जितना संयोग है, उसी के संबंध में दो-चार बातें कहने की इच्छा है।

देखा जाता है, आधुनिक युग में कला-देवी के मंदिर में कल-दानव का उपद्रव इतना बढ़ गया है कि काले मेघों की आड़ में चाँद की तरह वह मलिन-प्रभ हो रही है। इन बादलों के कटने-छटने का कोई भी लक्षण नहीं नज़र आता। बल्कि उत्तरोत्तर वे घनीभूत हो रहे हैं। उपयोगी कला (Applied art) ही क्यों, ललित कला (Fine art) भी अब उसी कल-दानव के कर-कवलित हो रही है। किसी एक की तस्वीर खींचने की ज़रूरत हुई, तो तत्काल उसकी काँच को आँखों के सामने रखने ही से काम हो गया। यहाँ तक कि यदि उस तस्वीर को सैकड़ों योजन कहीं दूर भी भेजना हुआ, तो तत्काल उसकी अलौकिक शक्ति से वह तस्वीर वहाँ भी छप गई। हम सब लोगों ने देखकर कहा—"हे कल-दानव, ख़ूब ! तुम्हारा कारख़ाना निहायत आला है, अब हम लोग तुम्हें ही पूजेंगे। नियत साधना द्वारा शरीर को तकलीफ़ देते हुए, उसे नष्ट करते हुए कला-देवी की आराधना से हमें कोई लाभ नहीं। हम कला-देवी के वर-पुत्र नहीं होना चाहते। हम कल-दानव के उपासक बनना चाहते हैं।"

एक ने कहा—"देखा, कैसा सुंदर हूबहू (Landscape) भूमि-दृश्य उस चित्रकार ने चार महीने खटकर खींचा है। जान पड़ता है, जैसे ठीक उसी स्थान-विशेष को चित्रकार ने कैंची से काटकर दीवार पर लटका लिया हो—कैसा सुंदर और स्वाभाविक है !" कल-दानव के उपासक ने हँसकर कहा—"किस जगह का हूबहू चित्र तुम्हें चाहिए ? बतलाओ, एक सेकंड में तुम्हें उतार देते हैं।" इसी समय एक ऐसे अस्थि-चर्मावशिष्ट वृद्ध शिल्पी ने, जिसने माता की साधना में अपनी ज़िंदगी पार कर दी है, नाक से चश्मा उतारकर विनय-भाव से धीरे-धीरे कहा—"अच्छा भाई, जगह की हूबहू तस्वीर

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तो एक सेकंड में तुमने उतार ली, परंतु यह तो बतलाओ, ठीक उस जगह को देखकर मेरे-जैसे बुड्ढे के मन में जैसे पुलक का संचार हुआ था, मुझे उसके भीतर से और भी जितने रूपलोक के अरूप चित्रों का आभास मिला, उसका क्या कोई यथार्थ फ़ोटो इसके साथ तुम उतार सके ?" अब सब लोग बिल्कुल चुप रह गए । शिल्पी प्रकृति के साथ छंद मिलाना चाहता है, परंतु वह उसके साथ बराबर हो जाना नहीं चाहता, यही है शिल्पी के भीतर की बात ।

हमारे देश का चारु शिल्प जैसे अपना आदर्श छोड़कर दूसरी दिशा को चला है, उसी तरह अब उपयोगी शिल्प की दशा भी कुछ-कुछ वैसी ही हो चली है । भारतवर्ष और विदेशों की बनी वस्तुओं में आकाश-पाताल का भेद है । इसका कारण एक है । एक तो खास ढर्रे की और समय द्वारा बनी हुई, और दूसरी विचित्र तरह की और हाथ की बनी हुई है । प्रधान समस्या यह खड़ी हुई है कि विदेश हमारे इस उपयोगी शिल्प को सहज ही क़ब्ज़े में कर लेना चाहता है, अपना शौक़ पूरा करने के लिये; परंतु हम लोग उल्टे दूसरों की चीज़ों से अपना घर भरना चाहते हैं। इसका फल जैसा हुआ है, वह सब लोगों को विदित है । देश के अच्छे-अच्छे ललित तथा उपयोगी शिल्प सस्तेपन की दुर्दशा के रूप में देश-विदेशों को भेज दिए जाते हैं, और हम लोग उन-की नक़ल-की-नक़ल की हुई चीज़ों को ज्यादा-से-ज्यादा दाम लगाकर ख़रीदते, उनसे अपने घरों को भरते तथा सजाते रहते हैं । विदेशी व्यवसायी अपने देश के उपयोगी तथा ललित शिल्प की क़ीमत अच्छी ही तरह समझते हैं, क्योंकि उन लोगों ने आज तक उन्हें कल-दैत्य के हाथों नहीं सौंपा । उपयोगी शिल्प को कल से बनाकर सस्ते दामों में उन्हें बेचकर लाभवान् होने के बजाय उनके स्वरूप की रक्षा करना वे ज्यादा जरूरी समझते हैं । परंतु हमारे उपयोगी शिल्प के लिये उन्हें दर्द बिल्कुल ही नहीं । जिस तरह भी हो, कल के भीतर डालकर, अधिक संख्या में, उसके सस्ते, नक़ली रूप तैयार कर बेचने की ही राह वे लोग देख रहे हैं । और सबसे तअज्जुब की बात यह है कि हम लोग उनकी इस राय में राय मिलाकर गौरव का अनुभव कर रहे हैं, और सोच रहे हैं, हम लोग ख़ूब progressive हैं, हम लोग ख़ूब तरक़्क़ी कर रहे हैं। इस तरह जीवन के साथ वस्तु-संसार का जो यथार्थ योग है, उसे हम लोग खोते जा रहे हैं । हर चरण में, उसके छंद में, यतिभंग हो रहा है । हमारे वस्त्र, आभूषण, गृह, गृह-शय्या में इसके जीते-जागते प्रमाण मिलते हैं । इधर के गत बीस वर्षों के अंदर

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हम लोग जैसी द्रुत गति से इस विपरीत मार्ग की ओर बढ़ रहे हैं, यह क्रम अगर और कुछ दिनों तक रहा, तो हम लोग अपने आप ही को, मुमकिन है, फिर न पहचान सकें।

मूल समस्या यह है कि सौंदर्य और शोभा का आदर्श यदि मनुष्य के भीतर से तिल-तिल करके जाग न उठे, तो कभी भी जीवन के लिये वह कल्याणकर नहीं हो सकता। भिन्न-भिन्न देशों की शोभा के आदर्श में जो विशेषता देख पड़ती है, उसका कारण यह है कि उन सब देशों की पारिपार्श्विक भिन्न-भिन्न अवस्था के साथ सामंजस्य रखकर यह आदर्श जातीय जीवन के भीतर से युगों से क्रमशः गढ़कर तैयार हुआ है। भारतवर्ष में भी ठीक इसी तरह सौंदर्य और स्वातंत्र्य एक ही साथ खुला था, और इसीलिये वह जातीय जीवन के लिये कल्याणकर हो गया था। परंतु इस समय हम लोग जिस शोभनता के आदर्श की आमदनी कर रहे हैं, हमारी पारिपार्श्विक स्थितियों के साथ, हमारे जीवन के साथ, उसका तिल-मात्र भी कोई संयोग नहीं। इसीलिये वह न तो शोभन ही है, और न कल्याणकर ही। वह बिल्कुल ही अंतःसार-शून्य है, और जीवन की प्रगति के प्रतिकूल है।

सोचिए, शस्य-श्यामला वंगदेश के किसी नदी-तट पर एक शांत ग्राम के बीच में एक शिव-मंदिर है, और उसी की बग़ल में जटाजूट-शोभित वट और पीपल छाया दे रहे हैं। ऐसे वक़्त उसके किनारे यदि कोई अभ्रभेदी आधुनिक ढंग का विराट् प्रासाद उठा लें, और उसके साथ उसके आस-पास का कोई संयोग न रहे, इसके अलावा वसन-भूषण, अदब-क़ायदे आदि में विदेशीपन आ जाय, और असबाब और विदेशी सुगंध से मकान भरा रहे, गूँजता रहे, तो उसकी कैसी दशा होती है! वे क्रमशः अपने देश की नाड़ियों के साथ जो स्वाभाविक संयोग है, उसे सहज ही खो बैठते हैं।

योरप में देखा है, महिलाओं की पोशाक का फ़ैशन रोज़ बदलता रहता है। इसके अलावा एक महिला दूसरी महिला की तरह पोशाक नहीं पहनती, कोई कंधे पर फ़्रिल (झालर) रखती है, कोई सात टुकड़े चुनवाकर बहार दिखलाती है। इस तरह की विचित्रता हम लोग कल्पना में भी नहीं ला सकते; परंतु आश्चर्य की बात है कि देश की आधुनिक महिलाओं के भीतर भी कोई-कोई ठीक उसी तरह के फ़ैशन की हवा देश में बहा रही हैं। सनातन साड़ी को टाँगों के ऊपर ही तक रखकर अथवा उसे पैरों से लपेटकर पहनकर न-जाने कितने आकार और कितने प्रकार की बहार दिखलाने की कोशिश करती हैं। यह सब क़लम की नोक से लिख देना असाध्य है। परंतु शिल्पी की निगाह से देखने पर इसकी तरह अशोभन और असंगत कुछ भी नहीं। भारतवर्ष के पुरुषों की पोशाक जैसी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भी हो, महिलाओं की पोशाक, परिच्छद और शोभा के विचार से, निहायत उत्तम है, यह केवल भारत के आर्टिस्ट ही नहीं, विदेशी कला-विद् भी समस्वर से स्वीकार करते हैं। जब हमारे देश में अपनी प्रादेशिकता की रक्षा करते हुए महिलाओं की ऐसी शोभावाली पोशाकें मौजूद हैं, तब सिर्फ़ फ़ैशन की ख़ातिर बह जाने की तरह की और कौन-सी दुर्बलता हो सकती है ? हम लोग अगर अफ़्रीक़ा के हबशी होते, यदि पोशाक के नाम से हमारी जड़ ही नदारद होती, तो और बात थी। ज़रूरत की तरफ़ से, परिवर्तन जब कभी-कभी ज़रूरी हो जाता है, तब उसका अर्थ अवश्य ही समझ में आ जाता है। परंतु शोभा और सौंदर्य के नाम से जो परिवर्तन का व्यभिचार हुआ करता है, वह केवल निरर्थक ही नहीं, अमार्जनीय और बीभत्स है।

इसी तरह तैजस पत्र और गृह-सज्जा की बात भी हमें कहनी है। जब हम लोग घर को सजाने के लिये दीवार पर तस्वीरें टाँगते हैं, तब हमारे अंदर इतनी कल्पना का रहना तो अवश्य ही ज़रूरी है कि हम लोग सिर्फ़ अपने ही आनंद के लिये उन्हें नहीं टाँग रहे, उनसे मकान के छोटे-छोटे शिशुओं की कोमल चित्त-वृत्तियों को भी हम गढ़ते जा रहे हैं, और साथ ही अपने इष्ट-मित्रों को अपनी रुचि का परिचय भी दे रहे हैं। लड़के यदि बालपन से दीवार पर सिगरेट या कैलेंडर की तस्वीरें ही देखते रहे, और कुछ मनुष्यों का ही उन्हें परिचय मिला, तो इससे उनके मन की ख़ूराक कहाँ पूरी हुई ? उन बच्चों के नज़दीक वह फ़ोटो ही सबसे बड़ा आर्ट रहा, और वह कैलेंडर ही चित्र-कला का चरम आदर्श ! उनके पास किसी मुसव्विर का क़लम ले जाने पर वे उसका एक वर्ण भी नहीं समझेंगे, न उससे कोई रस ही उन्हें मिल सकता है। शैशवावस्था से लगातार जो वस्तु हम लोग देखते आते हैं, उसके प्रति हमारा ऐसा मोह पैदा हो जाता है कि वही दूसरी वस्तु के देखने और पहचानने का नाप-दंड हो जाता है। इसी कारण हमारे देश के लिये सबसे ज़रूरी है, हमारे भविष्य के वंशधरों के मन की ख़ूराक पूरी करना। दुःख का विषय है कि लड़कों के लिये जो सब विलायती दूकानों के कल से चलनेवाले खिलौने हम लोग लाते हैं, उनसे उनका बड़ा ही अहित होता है। हम लोग यह नहीं समझते कि हमारे बाज़ार में जो देशी खिलौने, मिट्टी की मूर्तियाँ बिकती हैं, उनसे बालकों के चित्त में जैसा रँग लगता है, वैसा विलायती खिलौनों से नहीं होता। हमारे देश के खिलौने सिर्फ़ खिलौने हैं। उनका कोई छद्मवेश नहीं। वह कहते नहीं कि हम जीते हैं। परंतु विलायती खिलौने लड़कों को धोखे में डाल देते हैं। इसीलिये वे शैशव की कल्पना के लिये,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जानने-पहचानने के लिये, कौतूहल और कल्पना को जगाने के लिये, बिल्कुल उपयोगी नहीं। हमारे देश के बालक शैशव से ही इस तरह कल-दैत्य के चरणों को पूजना सीख रहे हैं। उनके शैशव से ही विदेशी खिलौने, विदेशी असबाब, विदेशी कला से तैयार मकान, विदेशी रीतियाँ और आचार-पद्धतियाँ, विदेशी वाद्य, विदेशी उत्सव आदि दिखा हम उन्हें कृत्रिम कर डालते हैं। भीतर के स्वाभाविक और सहज मनुष्य का विकास देश ही के परिवेष्टन और देश ही की आबोहवा में नहीं हो पाता। वह सुयोग हम बालकों को नहीं देते। उन्हें शरीर और मन से विदेशी भावों का गुलाम बना डालते हैं। देश के मंगल और उन्नति के लिये, जातीय वैशिष्ट्य और प्रसार के लिये वक्तृताएँ तो खूब देते हैं, परंतु दुर्भाग्य की बात है कि कार्यतः हम लोग उस उद्देश्य को पद-पद पर मसल जाते हैं। इसके अलावा आजकल विश्व-जनीनता का जो आदर्श देश में प्रचारित हो रहा है, इससे बहुतों को यह भ्रम हो गया है कि विश्व-जनीनता एक बिल्कुल पृथक् कुछ है, और जातीयता तथा जातीय रूढ़ियों का विसर्जन बिना किए उसे प्राप्त करना असंभव है। परंतु विश्व-जनीनता यदि एक पेड़ हो, तो जातीयता और जातीय रूढ़ियाँ उसके डाल-पल्लव हैं; इन्हें छोड़ देने पर किस तरह एक पूर्ण वृक्ष की प्राप्ति हो सकती है? क्या यह एक कठिन समस्या नहीं? यदि हमें विश्व-जनीनता के आदर्श से देश का संगठन करना हो, तो जातीय विशेषत्व तथा जातीय इतिहास के साथ सामंजस्य रखकर जातीय पूर्णता के भीतर से ही हमें उसकी प्राप्ति हो सकती है।

दी तिब्बेतन मस्कापो

हेड ऑफ़िस ल्हासा (तिब्बत)

शाखाएँ:—ज्ञातंसी, फारीज़ौंग (तिब्बत)
कलकत्ता (इंडिया) कलीमपौंग (दारजिलिंग)
और नैपाल

हम निम्न-लिखित तिब्बत की वस्तुओं की थोक और फुटकर बिक्री करते हैं। तिब्बत की कस्तूरी की नाभि, लोमड़ी, ऊदबिलाव, स्टोन मार्टिन, तेंदुआ, भेड़ और दूसरे पशुओं के चमड़े, चमर, ममीरा, मोती और ज़ाफ़रान इत्यादि। दर के लिये

धर्ममान पूर्णमान एक्सपोर्टर ऐंड इमपोर्टर
१६८, हरिसन रोड, कलकत्ता के पास लिखिए।

बालकृष्ण ऐडवरटाइज़िंग एजेंसी १-२ मछुआ बाज़ार स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"नया स्वदेशी आविष्कार"

(वैद्योपेथिक औषधियाँ, बिलकुल सच्ची और स्वदेशी)

यह औषधियाँ अत्यंत गुणकारी हैं, और तुरंत लाभ पहुँचाती हैं। इसकी २० औषधियों से सब प्रकार के रोग नष्ट होते हैं। मूल्य बीसों औषधियों का विधि-पत्र-सहित केवल २॥)

श्याम कांता

विचित्र रहस्यों की पुस्तक। इससे संसार की धोखेबाज़ी से सचेत हो जाते हैं। एक बार अवश्य पढ़िए। अत्यंत आनंददायक है।

मूल्य—प्रथम भाग १), द्वितीय भाग १)

घर बैठे फ़ोटोग्राफ़ी सीखिए

हमारी इस प्रसिद्ध पुस्तक से बिना किसी की सहायता के फ़ोटोग्राफ़ी स्वयं सीख सकते हैं। आदि से अंत तक कुल विधियाँ चित्रों-सहित इसमें लिखी गई हैं।

मूल्य—प्रथम भाग १।), द्वितीय भाग २।)

२२ रोगों को नष्ट करनेवाली प्रसिद्ध औषधि जीवन-रसधारा—।।।)

बालों और दिमाग़ को सुरक्षित रखनेवाला केश-जीवन-तेल—।।।)

पूर्ण सूचीपत्र मुफ़्त मँगाकर देखिए

जीवन-रसधारा-आफ़िस, नं० ७ बाँसतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता

श्वेतकुष्ठ की अद्भुत जड़ी

प्रिय पाठकगण! औरों की भाँति मैं प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके एक ही रोज़ के तीन बार के लेप से सफ़ेद दाग़ जड़ से न छूटे, तो दूना दाम वापस दूँगा। जो चाहें, प्रतिज्ञापत्र लिखा लें। दाम ३) रु०।

पता—वैद्यराज पं० महावीर पाठक
नं० ३९, दरभंगा (बिहार)

दवाइयों में ख़र्च मत करो

स्वयं वैद्य बन रोग से मुक्त होने के लिये "अनुभूत योगमाला" पाक्षिक पत्रिका का नमूना मुफ़्त मँगाकर देखिए।

पता—मैनेजर अनुभूत योगमाला ऑफ़िस, बरालोकपुर, इटावा

गंगा-पुस्तकमाला की पुस्तकें

हिंदी-साहित्य-एजेंसी से बाँकीपुर (पटना) में ख़रीदिए। माला द्वारा प्रकाशित सब पुस्तकें यहाँ भी मिलेंगी। सूची मँगाकर चुन लीजिए।

मैनेजर गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कोटर और कुटीर

[श्रीसियारामशरण गुप्त]

कोटर

दोपहर का समय था। सूर्य अग्नि-शलाकाओं से पृथ्वी का शरीर दग्ध कर रहा था। वृक्षों के पत्ते निस्पंद थे। मानो और किसी भयंकर कांड की आशंका से साँस-सी साधे खड़े थे। इसी समय अपने छोटे-से कोटर के भीतर बैठे हुए चातक-पुत्र ने कहा—"पिता!"

बाहर की सहज स्निग्ध वनस्थली के वर्तमान रूखेपन की तरह ही वह स्वर अनाकर्षक था। चातक ने अपनी चोंच कुमार की पीठ पर फेरते हुए प्यार से कहा—"क्या है बेटा?"

"है और क्या? प्यास के मारे चोंच तक प्राण आ गए हैं।"

"बेटा, अधीर न हो, समय सदा एक-सा नहीं रहता।"

"तो यही तो मैं भी कहता हूँ, समय सदा एक-सा नहीं रहता। पुरानी बातें पुराने समय के लिये थीं। आप अब भी उन्हें इस तरह छाती से चिपकाए हुए हैं, जिस तरह वानरी मरे बच्चे की खाल चिपकाए रहती है। घनश्याम की बाट आप जोहते रहिए। अब मु फसे यह नहीं सध सकता।"

"घनश्याम के सिवा हम और किसी का जल ग्रहण नहीं करते, यही हमारे कुल का व्रत है। इस व्रत के कारण अपने गो में न तो किसी की मृत्यु हुई, और न कोई दूसरा अनः ।"

"आप कहते हैं, कोई अनर्थ नहीं हुआ। मैं कहता हूँ, प्यास की इस यंत्रणा से बढ़कर और अनर्थ क्या होगा? जहाँ से भी होगा, मैं जल ग्रहण करूँगा ही।"

चातक सिहरकर पंख फड़फड़ाने लगा। मानो उसने उन अश्रव्य वचनों और कानों के बीच में कोलाहल की परिखा-सी खड़ी कर देनी चाही! थोड़ी देर तक चुप रहकर वह बोला—"बेटा, धैर्य रख। अपने इस व्रत के कारण ही पानी बरसता है, और धरती माता की गोद हरी-भरी होती है। यह व्रत इस तरह नष्ट कर देने की चीज़ नहीं है।"

लाड़ले लड़के ने कहा—"व्रत पालन करते हुए इतने दिन तो हो गए, पानी का कहीं चिह्न तक नहीं है। गरमी ऐसी पड़ रही है कि धरती के नदी-नाले सब सूख गए। फिर सूर्य के और निकट रहनेवाले आकाश के मेघों में पानी टिक ही कैसे सकता है?"

"बेटा, पृथ्वी का यह निर्जल उपवास है। इसी पुण्य से उसे जीवन-दान मिलेगा। भोजन का पूरा स्वाद और पूरी तृप्ति पाने के लिये थोड़ी-सी क्षुधा सहन करना अनिवार्य ही नहीं, आवश्यक भी है।"

"पिताजी, मैं थोड़ी-सी क्षुधा से नहीं डरता। परंतु यह भी नहीं चाहता कि क्षुधा-ही-क्षुधा सहन करूँ। मैं ऐसा व्रत व्यर्थ समझता हूँ। देवताओं का अभिशाप लेकर भी मैं इसे तोड़ूँगा। घनश्याम को भी तो सोचना चाहिए था कि उनके बिना किसी के प्राण निकल रहे हैं। आदमी ने मेघों पर अविश्वास करके कृषि की रक्षा के लिये नहर, तालाब और कुओं का बंदोबस्त कर लिया है। कृषि ने आपकी तरह सिर नहीं हिलाया कि मैं तो घनश्याम के सिवा और किसी का जल नहीं छुऊँगी, हमीं क्यों इस तरह

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कष्ट सहें ? आप चाहे मुझे रक्खें या छोड़ें, मैं यह झंझट न मानूँगा।"

चातक ने देखा, मामला बेढब हुआ चाहता है। यह इस तरह न मानेगा। कहा—"यह बताओ, तुम जल कहाँ से ग्रहण करोगे ?"

चातक-पुत्र चुप। उसने अभी तक इस बात पर विचार ही नहीं किया था। वह सोचता था, जिस तरह लाखों जीव-जंतु जल पीते हैं, उसी प्रकार मैं भी पिऊँगा। परंतु वह प्रकार कैसा है, यह उसकी समझ में न था।

लड़के को चुप देखकर पिता ने समझा, कमज़ोरी यहीं है। वह जानता था कि कमज़ोरी के ऊपर से ही आक्रमण करना विजय की पहली सीढ़ी है। बोला—"चुप कैसे रह गए ? बताओ, तुम जल कहाँ से ग्रहण करोगे ?"

हिचकिचाकर—अपनी बात स्वयं ही खंड-खंड करते हुए लड़के ने कहा—"जहाँ से और दूसरे करते हैं, वहीं से मैं भी करूँगा।"

पिता ने कहा—"वह पड़ोस में पोखरी है। अनेक पशु-पक्षी और आदमी भी वहाँ जल पीते हैं। तुम वहाँ जल पी सकोगे ? बोलो है हिम्मत ?"

चातक-पुत्र को उस पोखरी के स्मरण से ही फुरहरी आ गई। आह, उसमें कितनी गंदगी है ! पत्ते, सूखी डंठलें आदि गिरकर उसमें सड़ती रहती हैं। कीड़े बिलबिलाते हुए उसमें साफ़ दिखाई दे सकते हैं। लोग उसमें कपड़े निखारने आते हैं या गंदे करने, कई बार सोचने पर भी वह समझ न सका था। एक बार एक आदमी को अंजुली से पानी पीते देख उसने पिता से कहा था—"देखो पिताजी, ये कैसे घृणित जीव हैं।" अवश्य ही उसने अपने व्रत का ज़िक्र उस समय नहीं किया था, परंतु उसके मन में उसी का गर्व छलक उठा था। अब इस समय वह पिता से कैसे कहे कि मैं उस पोखरी का जल पिऊँगा ?

चातक बोला—"बेटा, अभी तुम नासमझ हो। चाहे जहाँ से पानी ग्रहण करना, इस समय तुम आसान समझ रहे हो। परंतु जब तुम इसके लिये बाहर निकलोगे, तब तुम्हें मालूम पड़ेगा, हमारी प्यास के साथ करोड़ों की प्यास है, और तृप्ति के साथ करोड़ों की तृप्ति। तुमसे अकेले तृप्त होते कैसे बनेगा ?"

चातक-पुत्र इस समय अपने हठ को पुष्ट करनेवाली कोई युक्ति सोच रहा था। पिता की बात बिना सुने वह बोल उठा—"मैं गंगा-जल ग्रहण करूँगा।"

चातक ने कहा—"गंगाजी तो यहाँ से पाँच दिन की उड़ान पर हैं। तू नहीं मानता, तो जा। परंतु यदि तूने और कहीं एक बूँद भी ली, तो हमें मुँह न दिखाना।"

चातक-पुत्र प्रणाम करके फ़र्र से उड़ गया।

कुटीर

बुद्धन का कच्चा खपरैल का घर था। छोटी-छोटी दो कोठरियाँ, फिर उन्हीं के अनुरूप आँगन और उसके आगे पौर। पुराना छप्पर नीचे झुककर घर के भीतर आश्रय लेने की बात सोच रहा था। जीर्ण-शीर्ण दीवारें रोशनदान न होने की साध दरारों के 'दत्तक' से पूरा करना चाहती थीं !

उस घर में और कुछ हो या न हो, आँगन के बीच, चातक-पुत्र के विश्राम करने योग्य, नीम का एक वृक्ष था। तीसरी उड़ान की थकान मिटाने के लिये वह उसी पर उतरा।

नीम की स्निग्धता तथा सघनता ने चातक-पुत्र को उसके निजी सहकार की याद दिला दी। विश्राम पाकर भी उसके जी में एक प्रकार की व्याकुलता उत्पन्न हो गई। पक्की निबौरी की तरह उस वेदना में भी माधुर्य था !

नीचे वृक्ष की छाया में बुद्धन लेटा हुआ था। अवस्था उसकी पचास से ऊपर थी। फिर भी अभी कुछ दिन पहले तक, उसके पैरों में, जीवन-यात्रा की इतनी ही मंज़िल तय कर सकने योग्य शक्ति और मालूम होती थी। एक दिन एकाएक पक्षाघात ने

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उसे अचल कर दिया। जीवन और मृत्यु ने सुलह करके मानो आधे-आधे शरीर का बँटवारा कर लिया! स्त्री पहले ही गत हो चुकी थी। घर में १५-१६ वर्ष का एक-मात्र पुत्र गोकुल ही अवशिष्ट था। उसी की सहायता से उसके दिन पूरे हो रहे थे।

गोकुल एक जगह काम पर जाता था। काम करके प्रतिदिन संध्या-समय तक लौट आता था। आज अभी तक नहीं आया था, इसलिये बुद्धन उसके लिये छटपटा रहा था। ऊपर आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। इधर-उधर चारो तरफ़ सन्नाटा था, और घर में अकेला बुद्धन। यद्यपि उसमें खाट से नीचे उतरने तक की शक्ति नहीं थी, तो भी उसका मन न-जाने कहाँ-कहाँ चौकड़ी भर रहा था। गोकुल सवेरे थोड़े-से चने खाकर काम पर गया था। बुद्धन के लिये भी थोड़े-से चने और पीने का पानी यथास्थान रख गया था। आज खाने के लिये घर में और कुछ था ही नहीं। कह गया था, शाम को मजूरी के पैसों का आटा लाकर रोटी बनाऊँगा। परंतु आज वह अभी तक नहीं आया था। अनेक आशंकाओं से बुद्धन का मन चंचल हो उठा। जो समय आनंद की स्निग्ध शीतल छाया में, शीत-काल के दिन की तरह, मालूम भी नहीं होने पाता और निकल जाता है, वही दुःख की दाहक ज्वाला में निदाघ के दीर्घ दिनों की तरह अकाट्य हो उठता है। रात बहुत नहीं बीती थी, परंतु बुद्धन को मालूम हो रहा था कि बरसों का समय हो गया। बार-बार अपने कान खड़े करके रात के उस सन्नाटे में वह गोकुल के पद-शब्द खोजने का प्रयत्न कर रहा था।

बड़ी देर बाद उसकी प्रतीक्षा सफल हुई। किवाड़ खुलने की आवाज़ सुनकर वह चौंका। वास्तव में यह गोकुल ही था। उसने कहा—"कौन, गोकुल? बेटा, आज बहुत देर लगाई।"

गोकुल धीरे से पिता की खाट के पास जाकर रोने लगा।

बुद्धन ने घबराकर पूछा—"क्या हुआ, बेटा, क्या हुआ?"

"आज मजूरी नहीं मिली। अब कैसे काम चलेगा?"

"एँ मज़दूरी नहीं मिली! फिर इतनी देर क्यों हुई?"

प्रकृतिस्थ होकर गोकुल ने उसे अपना सब हाल सुनाया।

❀ ❀ ❀

सवेरे घर से निकलते ही गोकुल को सामने खाली घड़ा मिला। देखकर उसके पैर ढीले पड़ गए। सोचा, आज भगवान् ही मालिक है। काम पर पहुँचकर उसने देखा, ओवरसियर साहब आज कुछ ज़्यादा ख़फ़ा हैं। इंजीनियर साहब काम देखने आए थे। जान पड़ता है, काम देखने की जगह वह ओवरसियर साहब को ही देख गए थे! अन्याय का यह बोझ उन्होंने दिन-भर मज़दूरों पर अच्छी तरह उतारा। शाम को मज़दूरी देने के समय भी साफ़ इनकार कर दिया, आज दाम नहीं दिए जायँगे। उस अदालत के फ़ैसले की तरह, जिसकी कहीं अपील नहीं हो सकती, ओवरसियर साहब का हुक्म मानकर मज़दूर अपने-अपने घर लौट गए।

गोकुल लौटा चला आ रहा था कि एक जगह उसे रास्ते में कुछ पड़ा हुआ दिखाई दिया। पास पहुँचने पर मालूम हुआ, रुपए-पैसे रखने का बटुआ है। उठाकर देखा तो काफ़ी वज़नदार था। वह सोच में पड़ गया, इसे खोलकर देखना चाहिए या नहीं। न देखने का निश्चय ही उसे दृढ़ करना पड़ा। कौतूहल-निवृत्ति करने के लिये उसने उसे टटोला। टटोलने से जान पड़ा, रुपए हैं, और बहुत कम भी नहीं। थोड़ी देर तक वह वहीं खड़ा-खड़ा सोचता रहा, इसका क्या करूँ? उसके पिता ने उसे अब तक जो कुछ सिखाया था, उसने उसे इस बात के सोचने का अवसर ही नहीं दिया कि बटुआ अपने पास रख ले। वह यही सोच रहा था कि यह बटुआ किसका है?

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जब उसे मालूम होगा कि उसका बटुआ खो गया है, तब उसकी क्या दशा होगी ? रुपए-पैसे का क्या मूल्य है, यह बात वह कुछ दिनों में ही अच्छी तरह जान गया था। उस व्यक्ति की, उस समय की, दशा का विचार करके वह इस प्रकार सिहर उठा, मानो उसी का बटुआ खो गया हो !

उसे ध्यान आया कि कुछ दूर पर उसने एक गाड़ी जाती हुई देखी थी। उस पर कान में मोती-पिरोई सोने की बाली पहने हुए एक महते बैठे थे। संभव है, यह बटुआ उन्हीं का हो। और किसी के पास इतने रुपए होना आसान भी नहीं है। यहाँ कुएँ पर गाड़ी रोककर उन्होंने पानी पिया होगा, और आग जलाकर तमाखू भरी होगी। एक जगह आग जलाई जाने के चिह्न मौजूद थे। उसने इस बात का विचार ही नहीं किया कि गाड़ी तक जाने में कितना समय लगेगा, और वह दौड़ पड़ा।

लगभग आध घंटे के परिश्रम से वह उस गाड़ी के पास पहुँचा। गोकुल ने हाँफते-हाँफते पूछा—"महते, तुम्हारा कुछ खो तो नहीं गया ?"

महते ने चौंककर गाड़ी में इधर-उधर देखा। साथ ही जेब पर हाथ रक्खा, तो पाषाण की तरह निस्पंद हो गया। गोकुल से महते की वह अवस्था देखी न गई। वह बटुआ दिखाकर उसने झट से प्रश्न कर दिया—"यह तुम्हारा है ?"

एक क्षण में ही जीवन और मृत्यु का द्वंद्व-सा हो गया। मानो बिजली के खटके से प्रकाश बुझाकर घर फिर से उद्दीप्त कर दिया गया हो ! महते ने कहा—"भगवान् तुझे सुखी रक्खें, भैया ! इसे कहाँ पाया ?"

"रास्ते में पड़ा था। इसमें कितने रुपए हैं ?"

महते ने हिसाब लगाकर बताया—"बयालीस रुपए, एक अठन्नी, एक घिसी हुई बेकाम दुअन्नी, दस या बारह आने पैसे, एक काग़ज़, एक चाँदी का छल्ला—"

गोकुल ने बटुआ खोलकर रुपए गिने। सब ठीक निकले। बटुआ हाथ में लेकर महते की आँखों में आँसू भर आए। बोले—"इतनी बड़ी रक़म पाकर भी जिसे उसका लोभ न हो भैया, मैंने आज तक ऐसा आदमी नहीं देखा। यदि और किसी को यह बटुआ मिला होता, तो मेरा तो मरण हो जाता। मेरे रोम-रोम से यह बात उठ रही है, भगवान् तुम्हें सदा सुखी रक्खें।" यह कहकर महते ने बटुए से निकालकर गोकुल को दो रुपए देने चाहे। उसने सिर हिलाकर कहा—"मेरे बप्पा ने किसी से भीख लेने के लिये मुझे मना कर दिया है। मुफ़्त के ये रुपए मैं न लूँगा।"

महते के सजल नेत्र विस्मय से खुले ही रह गए। गोकुल थोड़ी ही देर में, उस अंधकार में, उनकी आँखों से ओझल हो गया।

❀ ❀ ❀

सब वृत्तांत सुनाकर गोकुल अपराधी की भाँति खड़ा होकर बोला—"बप्पा, आज खाने के लिये कुछ नहीं है। महते से कुछ उधार माँग लाता, तो सब ठीक हो जाता। मेरी समझ में यह बात उस समय आई ही नहीं।"

बुद्धन की आँखों से झर-झर आँसू झरने लगे। गोकुल को अपनी दोनो भुजाओं में भरकर उसने छाती से लगा लिया। आनंदातिरेक ने उसका कंठावरोध कर दिया। उसे मालूम हुआ कि उसके क्षुधित और निर्जीव शरीर में प्राणों का संचार हो गया है। उसे जिस तृप्ति का अनुभव होने लगा, वह दो-एक दिन की तो बात ही क्या, जीवन-भर की क्षुधा शांत कर सकती है। धन, संपत्ति, मान और बड़ाई सब उसे तुच्छ-से प्रतीत होने लगे। मानो एकाएक उसके सब दुःख-रोग दूर हो गए हैं। अब वह बिना किसी चिंता के मृत्यु का आलिंगन इसी क्षण कर सकता है।

बड़ी देर में अपने को सँभालकर बुद्धन बोला—"अच्छा ही किया बेटा, जो तू महते से रुपए उधार नहीं लाया। वह उधार माँगना भी एक तरह का माँगना ही होता। भगवान् ने तुझे ऐसी बुद्धि दी है, मैं तो यही

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

देखकर निहाल हो गया। दो-एक दिन की भूख हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। जिस तरह चातक अपने प्राण देकर भी मेघ के सिवा किसी दूसरे का जल लेने का व्रत नहीं तोड़ता, उसी तरह तू भी ईमानदारी की टेक न छोड़ना। मुझे मालूम हो गया, यह तू मुझसे भी अच्छी तरह जानता है। फिर भी कहता हूँ, सदा ऐसी ही मति रखना। चाहे जितनी बड़ी विपत्ति पड़े, अपनी नीयत न डुलाना।"

ऊपर चातक-पुत्र सुन रहा था। उसकी आँखों से भी झर-झर आँसू झरने लगे। बड़ी कठिनता से वह रात बिता सका। पौ फटते ही बड़े सवेरे वह फिर उड़ा। परंतु आज वह विपरीत दिशा को चला; उसी दिशा को, जिधर से वह आया था। उसकी उड़ान पहले से तेज़ हो गई थी। फिर भी अपने सहकार तक पहुँचने में उसे चार दिन की जगह सात दिन लग गए। दूसरे दिन से ही मेघों ने उठकर ऐसी झड़ी लगा दी कि बीच-बीच में कई जगह रुककर वह अपने कोटर तक पहुँच सका।

दरभंगा के अत्यंत प्रसिद्ध क़लम आम और लीची

हर प्रकार के आमों और लीचियों के क़लम अत्यंत होनहार और झारदार फ़ी दर्जन पाँचसाला जो इसी साल में फल लेंगे ३०) तीन-साला २५) दोसाला २०) एकसाला १२) महसूल इत्यादि अलग।

नोट—विना पेशगी ग्रहण किए माल कदापि नहीं भेजा जा सकता। विशेष जानने के लिये सूचीपत्र मुफ़्त मंगाइए।

सुपरिंटेंडेंट स्टेट गार्डेन नंबर ३५ दरभंगा [बिहार]

दरभंगा के प्रसिद्ध आम और लीचियों के फल और क़लम!

लँगड़ा सुर्ख़ फ़ी सैकड़ा ६), **गुलाबो फजरी** हरएक दाना आध सेर से डेढ़ सेर तक फ़ी सैकड़ा २०), **भदैया लँगड़ा** फ़ी सैकड़ा ७), महसूल इत्यादि अलग, **पेशगी** अत्यावश्यक। हर प्रकार के आम और लीचियों तथा दूसरे फलों के पौधे या क़लमों के लिये सूचीपत्र मुफ़्त मँगाइए।

सुपरिंटेंडेंट स्टेट गार्डेन नंबर ७ दरभंगा [बिहार]

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मारवाड़-नरेश महाराजा अजितसिंह

[साहित्याचार्य पं० विश्वेश्वरनाथ रेउ]

(२)

वि० सं० १७७७ (ई० सन् १७२०) में सैयदहुसेनअली मारा गया, और इसके क़रीब एक मास बाद ही सैयद अब्दुल्लाख़ाँ* भी क़ैद कर लिया गया†। अतः महाराज ने स्वयं मारवाड़ से बाहर जाना अनुचित समझ भंडारी अनोपसिंह को गुजरात के प्रबंध की देख-भाल के लिये भेज दिया। वहाँ पर उसके और अहमदाबाद के एक बड़े व्यापारी कपूरचंद भंसाली के बीच झगड़ा उठ खड़ा हुआ, और वह व्यापारी अनोपसिंह के कार्य में गड़बड़ करने लगा। इससे क्रुद्ध होकर अनोप ने भंसाली को मरवा डाला‡।

इस प्रकार गुजरात के सूबे का प्रबंध हो जाने के बाद महाराज स्वयं मेड़ते होते हुए अजमेर पहुँचे और वहाँ पर अपना अधिकार कर लिया। इसके बाद यह बादशाह की परवा छोड़ स्वाधीनता-पूर्वक आनासागर के शाही महलों में रहने लगे* और इन्होंने अपने दोनो सूबों में गोवध का होना भी बंद कर दिया †।

इन कामों से निपटकर महाराज ने राजकुमार अभयसिंहजी को और भंडारी रघुनाथ को साँभर की तरफ़ भेजा। उन्होंने भी वहाँ के शाही फ़ौजदार को भगाकर साँभर पर अपना अधिकार कर लिया। इसी प्रकार महाराज की सेनाओं ने डोडवाना, टोडा, झाडोद और अमरसर पर भी कब्ज़ा कर लिया ‡।

महाराज के इस प्रकार बढ़ते हुए प्रताप को देखकर बादशाह ने आगरे के शासक सआदतख़ाँ को अजमेर की सूबेदारी देने के साथ ही इन पर चढ़ाई करने की आज्ञा भी दी। परंतु इस कार्य में एक भी शाही अमीर उसका साथ देने को तैयार न हो सका। इससे उसकी चढ़ाई करने की हिम्मत न ¶ हुई। इसके बाद क्रमशः शम्सामुद्दौला, कमरुद्दीनख़ाँ बहादुर और हैदरक़ुलीख़ाँ

* वि० सं० १७७९ (ई० सन् १७२२) में यह भी मार डाला गया। इसी बीच एक बार महाराज ने बादशाह मोहम्मदशाह से मिलकर अपने मित्र अब्दुल्लाख़ाँ को छुड़वाने की कोशिश करने का इरादा किया था, परंतु उस समय देहली के शाही दरबार में विरोधी पक्ष का प्रभाव देख इन्हें यह विचार छोड़ देना पड़ा।

† लेटर मुग़ल्स, भा० २, पृ० ५९-६० और ६१।

‡ बॉंबे गज़ेटियर, भा० १, खंड १, पृ० ३०१।

* अजितोदय, सर्ग २९, श्लो० ६७-६८ और सर्ग ३०, श्लो० १।

† लेटर मुग़ल्स, भा० २, पृ० १०८।

‡ अजितोदय, सर्ग ३०, श्लो० २-५।

¶ मुंतख़िबुल्लुबाब, भा० २, पृ० ९३६-९३७।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बहादुर को इस कार्य के लिये तैयार किया गया। परंतु इनमें के प्रत्येक व्यक्ति ने चढ़ाई करने का वादा करके भी देहली से आगे बढ़ने का साहस नहीं किया। ख़ासकर शम्सामुद्दौला तो अपना पेशख़ेमा देहली के बाहर खड़ा करवाकर भी इधर-उधर के बहाने करनगर से बाहर न निकला। वह अच्छी तरह जानता था कि एक तो इस समय शाही ख़ज़ाना ख़ाली पड़ा है। अतः सैनिकों के वेतन और रसद आदि का प्रबंध करना ही कठिन होगा। दूसरे यदि इस कार्य में असफलता हुई, तो दूसरों को भी सिर उठाने का साहस हो जायगा। इन हालतों में महाराज अजितसिंह-जैसे प्रबल शत्रु से भिड़ना मूर्खता ही होगी ❀।

कहीं-कहीं ऐसा भी लिखा मिलता है कि बुद्धिमान् और दूरदर्शी शम्सामुद्दौला को यह भी भय था कि यदि ऐसे अवसर पर महाराज ने स्वयं ही देहली पर चढ़ाई कर दी, तो यह घुन लगी हुई शाही इमारत बहुत शीघ्र गिरकर नष्ट हो जायगी। अतः जहाँ तक संभव हो सका, उसने नम्रतापूर्ण पत्र भेज-भेजकर महाराज को संतुष्ट रक्खा †, और इस प्रकार देहली को भावी संकट से बचा लिया।

शम्सामुद्दौला का यह भी विचार था कि यदि बादशाह का ऐसा ही आग्रह हो, तो महाराज से अजमेर का सूबा लेकर गुजरात का सूबा उन्हीं की अधीनता में छोड़ दिया जाय। परंतु हैदरक़ुलीख़ाँ आदि को यह बात पसंद न थी। इसीलिये सआदतख़ाँ को महाराज पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी गई थी। परंतु जब वह पहले लिखे-अनुसार कृतकार्य न हो सका, तब यह काम कमरुद्दीनख़ाँ को सौंपा गया। इस पर उसने बादशाह से प्रार्थना की कि सैयद अब्दुल्लाख़ाँ और उसके रिश्तेदारों के अपराधों को क्षमा कर उन्हें उसके साथ जाने की आज्ञा दी जाय। परंतु बादशाह ने यह बात स्वीकार न की।

इसके बाद वि० सं० १७७८ के कार्त्तिक (ई० सन् १७२१ के ऑक्टोबर) में हैदरक़ुलीख़ाँ को गुजरात की और सैयद मुजफ़्फ़रअलीख़ाँ को अजमेर की सूबेदारी दी गई ❀। इस पर हैदरक़ुली ने तो अपना नायब भेजकर महाराज के प्रतिनिधि अनोपचंद और नाहरख़ाँ से गुजरात का शासन ले लिया; परंतु मुज़फ़्फ़रख़ाँ ने स्वयं जाकर अजमेर पर अधिकार करने का इरादा किया। इसी के अनुसार जिस समय वह मनोहरपुर † पहुँचा, उस समय तक उसके पास क़रीब ७०००० सैनिक जमा हो गए थे। इसकी सूचना पाते ही

❀ लेटर मुग़ल्स, भा० २, पृ० १०८, सैहरुल मुताख़रीन, पृ० ४२४, और मुंतख़िबुल्लुबाब, भा० २, पृ० ९३७।

† सैहरुल मुताख़रीन से भी इस बात की बहुत कुछ पुष्टि होती है। (देखो पृ० ४२४)

❀ लेटर मुग़ल्स, भा० २, पृ० १०८ और सैहरुल मुताख़रीन, पृ० ४५२।

† यह नगर जोधपुर से ३५ मील उत्तर और अजमेर से १३० मील ईशान कोण में है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

महाराज ने भी महाराजकुमार अभयसिंहजी को मुज़फ़्फ़र का मार्ग रोकने के लिये रवाना किया ॐ।

बादशाह को ख़याल था कि शाही सेना की चढ़ाई का समाचार पाते ही महाराज डरकर उसकी अधीनता स्वीकार कर लेंगे। परंतु जब उसे अपनी यह इच्छा पूर्ण होती न दिखाई दी, तब उसने मुज़फ़्फ़र को मनोहरपुर में ही ठहर जाने की आज्ञा लिख भेजी। इसके अनुसार उसे तीन मास तक वहाँ रुकना पड़ा। इसी बीच उसका सारा ख़ज़ाना समाप्त हो गया, और रसद की कमी हो जाने के कारण उसकी सेना के बहुत-से सिपाही भी उसे छोड़कर अपने-अपने घरों को लौट गए। उसकी यह दशा देख आँबेर-नरेश जयसिंहजी ने अपने सेनापति के द्वारा उसे आँबेर बुलवा लिया। परंतु अपनी असमर्थता का विचार कर मुज़फ़्फ़र को इतनी ग्लानि हुई कि वहीं से उसने अजमेर की सूबेदारी का फ़रमान और ख़िलअत तो बादशाह को लौटा दिया और स्वयं फ़क़ीर हो गया †।

ॐ लेटर मुग़ल्स भा० २, पृ० १०८-१०९।

† लेटर मुग़ल्स भा० २, पृ० १०९-११० और सैहरुल मुताख़रीन, पृ० ४५४। पिछले इतिहास में यह भी लिखा है कि महाराज अजितसिंहजी के दो कुमारों ने मुज़फ़्फ़र का पीछा कर ४-५ शाही गाँवों को लूट लिया। परंतु उसमें इस घटना के बाद शाही अमीरों को अजमेर पर चढ़ाई करने की आज्ञा का मिलना और उनका बहाने बनाकर इस कार्य को टालना लिखा है।

अजितोदय सर्ग ३०, श्लो०६-११। उक्त काव्य में अभयसिंहजी की चढ़ाई का समाचार सुनकर मुज़फ़्फ़र का मनोहरपुर से भागना और इसके बाद अभयसिंहजी का साँभर की तरफ़ जाना लिखा है।

इसके बाद सैयद नुसरतयारख़ाँ बारह को अजितसिंहजी पर चढ़ाई करने को आज्ञा दी गई। इसी बीच (भरतपुर-राज्य के संस्थापक) चूड़ामन जाट ने अपने पुत्र मोहकमसिंह को सेना देकर महाराज के पास अजमेर भेज दिया। अनंतर जैसे ही महाराज को नुसरतयारख़ाँ के चढ़ाई करने के विचार की सूचना मिली, वैसे ही इन्होंने महाराजकुमार अभयसिंहजी को उत्तर की तरफ़ आगे बढ़ नारनौल को और देहली तथा आगरे के आस-पास के प्रदेशों को लूटने की आज्ञा दी। इसके अनुसार वह बारह हज़ार शुतर ॐ सवारों के साथ नारनौल जा पहुँचे। यद्यपि पहले तो वहाँ के फ़ौजदार बयाज़िदख़ाँ मेवाती के प्रतिनिधि ने इनका यथा सामर्थ्य सामना किया, तथापि अंत में राठौरों की तीक्ष्ण तलवार के सामने से उसे मेवात की तरफ़ भागना पड़ा। महाराजकुमार भी नारनौल को लूटने के बाद अलवर, तिजारा और शाहजहाँपुर को लूटते हुए देहली से केवल नौ कोस के फ़ासले पर स्थित सराय अलीवर्दीख़ाँ तक जा पहुँचे †।

ॐ इनमें के प्रत्येक ऊँट पर बंदूक़ों या तीर-कमानों से सजे दो-दो सवार चढ़े हुए थे।

† लेटर मुग़ल्स, भा० २, पृ० ११०। अजितोदय में महाराजकुमार अभयसिंहजी का नारनौल को लूटकर साँभर को लौटना और इसके बाद जाकर शाहजहाँपुर को लूटना लिखा है। इसके बाद ये फिर साँभर लौट आए थे। (देखो सर्ग ३०, श्लो० १२-२१)।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इससे देहली के शाही दरबार में फिर गड़बड़ मच * गई। इस पर सबसे पहले शम्सामुद्दौला ने महाराज से भयंकर बदला लेने की क़समें खाकर बादशाह से अजमेर पर चढ़ाई करने की आज्ञा प्राप्त की और इसी के अनुसार वह अपने डेरे (एक बार फिर) देहली के बाहर खड़े करवाकर बड़े ज़ोर-शोर से चढ़ाई की तैयारी करने लगा। परंतु इतना सब कुछ होने पर भी उसकी आगे बढ़ने की हिम्मत न हुई। यह देख बादशाह उससे नाराज़ हो गया। अतः शम्सामुद्दौला को अपना दरबार में जाना ही बंद करना पड़ा। इसके बाद बादशाह ने हैदरक़ुलीख़ाँ को इस कार्य के लिये तैयार किया। यद्यपि पहले तो उसने बादशाह के सामने अनेक प्रबंध-संबंधी प्रार्थनाएँ उपस्थित कर इस कार्य में बड़ी तत्परता दिखाई, तथापि अंत में जब सारा शाही तोपख़ाना ही उसके अधिकार में दे दिया गया, और उसके डेरे भी नगर से बाहर खड़े करवा दिए गए, तब उसने आगे बढ़ने से एकाएक इनकार कर दिया। इसके बाद कमरुद्दीनख़ाँ को भी इसी प्रकार अपनी असमर्थता प्रकट करनी पड़ी। अंत में बहुत कुछ कहा-सुनी के बाद नुसरतयारख़ाँ ने किसी तरह महाराज के विरुद्ध चढ़ाई की। परंतु इसी बीच महाराज स्वयं ही अजमेर से जोधपुर लौट आए *। अतः यह झगड़ा यहीं शांत हो गया।

इस घटना के क़रीब एक मास बाद (ई० सन् १७२२ को २१ मार्च=वि० सं० १७७६ की आषाढ़-वदी २ को) महाराज ने बादशाह के पास अपने प्रतिनिधि भेजकर कहलाया कि तख़्त पर बैठते समय आपने गुजरात और अजमेर के उपद्रव को दबाने के लिये उक्त दोनो सूबे मुझे सौंपे थे। इसके बाद जब सारे उपद्रव शांत हो चुके, तब गुजरात का सूबा हैदरक़ुली को दे दिया गया। फिर भी मैंने इस पर कुछ आपत्ति नहीं की। परंतु अब आप अजमेर का सूबा भी मुझसे लेना चाहते हैं। यह कहाँ तक न्याय्य है। इसे आप स्वयं ही सोच देखें †।

---

* लेटर मुग़ल्स भा० २, पृ० ११०।

अजितोदय में लिखा है कि इसी अवसर पर आँबेर-नरेश जयसिंहजी ने महाराजकुमार के बढ़ते हुए प्रताप को देख अपने प्रधान पुरुषों को महाराज के पास भेजा, और उनके द्वारा बहुत कुछ कह-सुन और क्षमा माँगकर महाराज से मैत्री कर ली। इसी समय महाराज ने आँबेर-नरेश की तरफ़ से आए हुए खंगारोत श्यामसिंह के बड़े पुत्र को नराणा गाँव जागीर में दिया था। (देखो सर्ग ३०, श्लो० २२-२३)

* लेटर मुग़ल्स, भा० २, पृ० ११०-१११। उक्त इतिहास में यह भी लिखा है कि निज़ामुल्मुल्क के दक्षिण से देहली के निकट पहुँचने की सूचना मिलने से ही महाराज अजमेर से जोधपुर लौट गए थे।

† लेटर मुग़ल्स, भा० २, पृ० १११। उक्त इतिहास में यह भी लिखा है कि अजितसिंहजी ने बादशाह को यह भी सूचित किया था कि यदि मुज़फ़्फ़रअली यहाँ आ जाता, तो मैं उसे अजमेर भी सौंप देता। परंतु वह तो यहाँ तक पहुँचा ही नहीं। इसके अलावा नारनौल पर के हमले का कारण केवल मेवातियों के साथ का व्यक्तिगत मनोमालिन्य ही था। शत्रु लोग इससे बादशाह से विरोध करने का तात्पर्य बतलाकर अन्याय करते हैं।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस पर बादशाह ने भी सहज ही झगड़ा मिटता देख उत्तर में महाराज के नाम एक फ़रमान लिख भेजा। उसमें इनके पहले के किए कार्यों की प्रशंसा के बाद दोनो सूबों के ले लेने के विषय में इधर-उधर के बहाने बनाए गए थे। अंत में यह भी लिखा था कि अजमेर का सूबा तो तुम्हारे ही अधीन रक्खा जाता है, कुछ दिनो में अहमदाबाद का सूबा भी तुम्हें लौटा दिया जायगा। इस फ़रमान के साथ ही बादशाह की तरफ़ से महाराज के लिये ख़ासा ख़िलअत, जड़ाऊ सरपेच, एक हाथी और एक घोड़ा भी उपहार में भेजा गया ॐ।

वि० सं० १७७६ के मँगसिर (ई० सन् १७२२ के दिसंबर) में † बादशाह ने नाहरख़ाँ को अजमेर की दीवानी और साँभर की फ़ौजदारी तथा उसके भाई रुहल्लाख़ाँ को गढ़बीटली की क़िलेदारी दी। अतः वे दोनो महाराज के वकील खेमसी भंडारी के साथ देहली से अजमेर चले आए ॐ। इस घटना को अभी एक महीना भी न होने पाया था कि एक रोज़ नाहरख़ाँ ने महाराज के सामने कुछ अनुचित † शब्द कह दिए। इससे क्रुद्ध होकर इन्होंने उसे और उसके भाई को मरवा डाला, और उसका शिविर लूट लिया। उसके साथ के यवनों में से भी कुछ तो हमले में मारे गए और कुछ बचकर निकल भागे ‡।

इसकी सूचना पाते ही बादशाह ने शरफ़ुद्दौला इरादतमंदख़ाँ को ७,००० जात और ६,००० सवारों का मनसब तथा २,००,००० रुपए नक़द देकर महाराज पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी। साथ ही ५०,००० शाही सवार और अनेक अमीर भी उसके साथ कर दिए। इनके अलावा उसने आँबेर-नरेश जयसिंहजी, मुहम्मदख़ाँ बंगश और राजा गिरधर बहादुर आदि अमीरों को भी उसके साथ जाने को लिख दिया। इसके बाद ही वि० सं० १७८० की ज्येष्ठ-सुदी १३ (ई० सन् १७२३ की ५ जून) को नागौर का परगना भी राव इंद्रसिंह को दे दिया

ॐ लेटर मुग़ल्स भा० २, पृ० १११—११२। ग्रांटडफ़ की 'हिस्ट्री ऑफ़् मरहट्टाज़' में लिखा है कि इसी समय ख़ाँ दौराँ के कहने से बादशाह ने आगरे के सूबे का प्रबंध भी महाराज को सौंप दिया था। (देखो भा० १, पृ० ३२१)

† वि० सं० १७७४ की मँगसिर-बदी १ के महाराज के दयालदास के नाम साँभर से लिखे पत्र से प्रकट होता है कि गेसूख़ाँ ने हिंडौन से जयपुर-नरेश जयसिंहजी का थाना उठाकर वहाँ पर अधिकार कर लिया था। इस पर महाराज ने अपनी सेना को आँबेरवालों की फ़ौज के साथ भेजकर कार्तिक-बदी ५ को वहाँ पर फिर जयसिंहजी का अधिकार करवा दिया। गेसूख़ाँ मय फ़ौज के मारा गया।

ॐ लेटर मुग़ल्स, भा० २, पृ० ११२। नाहरख़ाँ और रघुनाथ भंडारी ये दोनो ही महाराज का पत्र लेकर संधि के लिये पहले बादशाह के पास गए थे।

† अजितोदय, सर्ग ३०, श्लो० ३१-३३।

‡ लेटर मुग़ल्स, में नाहरख़ाँ के मुख से अनुचित शब्दों के निकलने का उल्लेख नहीं है। (देखो भा० २, पृ० ११२)

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गया*। परंतु उस समय उसके शाही सेना के साथ दक्षिण में होने के कारण समयानुसार नज़र आदि का कार्य उसके पौत्र मानसिंह ने पूरा किया †।

इसी समय हैदरक़ुलीख़ाँ भी अहमदाबाद से लौटकर रिवाड़ी आ पहुँचा। इसकी सूचना पाते ही बादशाह ने उसे अजमेर की सूबेदारी और साँभर की फ़ौजदारी देकर उधर जाने की आज्ञा दी। अतः वह भी वहीं से लौटकर नारनौल में इरादतख़ाँ के साथ हो लिया ‡।

इस प्रकार शाही दल को आता देख महाराज ने गढ़बीटली (के क़िले) की रक्षा का भार तो ऊदावत-वीर अमरसिंह को सौंप दिया और स्वयं साँभर होते हुए जोधपुर चले आए ¶।

* कुछ दिन बाद जयपुर-नरेश जयसिंहजी ने आकर शाही सेना की सहायता से नागौर पर इंद्रसिंह का अधिकार करवा दिया। इस पर राज्य की तरफ़ से महाराज कुमार आनंदसिंह उसके मुक़ाबले को भेजे गए। परंतु इन्होंने डीडवाने पहुँच स्वयं ही स्वतंत्रता का झंडा खड़ा कर दिया। अंत में बहुत कुछ समझाने-बुझाने पर यह तो शांत हो गए, पर इस गड़बड़ के कारण नागौर इंद्रसिंह के अधिकार में ही रह गया।

† लेटर मुग़ल्स, भा० २, पृ० ११३ और अजितोदय, सर्ग ३०, श्लो० ३३-४० और ४२-४४।

‡ लेटर मुग़ल्स, भा० २, पृ० ११३ और अजितोदय, सर्ग ३०, श्लो० ४१।

¶ लेटर मुग़ल्स, भा० २, पृ० ११३ और पृ० ११४ का फ़ुटनोट *।

अजितोदय में महाराज का शाही सेना से युद्ध करने के लिये त्रिवेणी से आगे पहुँचना, जयसिंहजी का बीच में पड़, इन्हें युद्ध से रोकना और इनका वापस अजमेर लौट आना लिखा है। (देखो सर्ग ३०, श्लो० ४६-५१) पर यह ठीक प्रतीत नहीं होता।

वि० सं० १७८० के आषाढ़* (ई० सन् १७२३ के जून) में शाही सेना के अजमेर पहुँचने पर ऊदावत-वीर अमरसिंह ने क़िले का आश्रय लेकर उसका सामना किया। कुछ दिनों तक तो बराबर युद्ध होता रहा, परंतु इसके बाद आँबेर-नरेश जयसिंहजी ने बीच में पड़ उक्त क़िला तो शाही सेना को दिलवा दिया †, और बादशाह को संधि का विश्वास कराने के लिये महाराजकुमार अभयसिंहजी को देहली भिजवा

* राजरूपक में सावन में फ़ौज का आना और ४ मास तक युद्ध होना लिखा है। (देखो पृ० २३८)

वि० सं० १७७९ (चैत्रादि १७८०) की वैशाख-सुदी १५ के बूँदी के, राव राजा बुधसिंहजी के लिखे महाराज के नाम के पत्र से प्रकट होता है कि उस समय उन्होंने भी कुछ सेना महाराज की सहायता में भेजने का प्रबंध किया था।

† अजितोदय सर्ग ३०, श्लो० ५३-६५। परंतु राजरूपक में जयसिंहजी के बीच में पड़ने का उल्लेख नहीं है। (देखो पृ० २३९)।

कर्नल टाड के राजस्थान के इतिहास से भी इसकी पुष्टि होती है। उसमें लिखा है कि ४ महीने के युद्ध के बाद अजमेर शाही अमीरों के हवाले किया गया। परंतु उसमें क़िले का नाम तारागढ़ लिखा है। (देखो भा० २, पृ० १०२८)

लेटर मुग़ल्स में 'मीराते वारिदात' के आधार पर लिखा है कि यद्यपि इस क़िले में केवल ४०० योद्धा ही थे, तथापि आपस की बातचीत के बाद ही यह क़िला शाही लश्कर को सौंपा गया था, और क़िलेवाले अपने-अपने शस्त्र लिए निशान उड़ाते और नक़्क़ारा बजाते हुए क़िले से बाहर निकले थे। (देखो भा० २, पृ० ११४ का फ़ुटनोट*)

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दिया ❀। बादशाह ने भी महाराजकुमार के देहली पहुँचने पर उनकी बड़ी ख़ातिर की †। इसके बाद महाराज स्वयं भी, जो इन दिनो मेड़ते के मुक़ाम पर थे, जोधपुर लौट आए ‡।

यद्यपि बादशाह ने महाराज से अजमेर ले लिया था, तथापि उसे हर समय इनका भय बना रहता था और वह इनको मारकर निश्चिंत होने का मौक़ा ढूँढ़ता था। इसोलिये उसने महाराजकुमार अभयसिंहजी से घनिष्ठता बढ़ानी प्रारंभ की, और राजा जयसिंहजी के द्वारा भंडारी रघुनाथ को भी अपनी तरफ़ मिला लिया। इसके बाद इन्हीं दोनो के द्वारा वह अभयसिंहजी को उनके पिता के विरुद्ध भड़काने का षड्यंत्र रचने लगा। परंतु इस पर भी जब महाराजकुमार ने उसके भय और प्रलोभनों पर ध्यान नहीं दिया, तब एक रोज़ उसने राजा जयसिंहजी और भंडारी रघुनाथ के द्वारा एक जाली पत्र लिखवाकर किसी तरह उस पर उन (महाराजकुमार) के दस्तख़त करवा लिए। इसके बाद वही पत्र गुप्त रूप से अभयसिंहजी के छोटे भ्राता बख़तसिंहजी के पास भेज दिया गया। इसमें राज्य की रक्षा के लिये वृद्ध महाराज को मार डालने का आग्रह किया गया था। जैसे ही यह पत्र उनको मिला, वैसे ही एक बार तो वे चकित और किंकर्तव्य-विमूढ़-से हो गए। परंतु अंत में देश और भ्राता पर आनेवाले भावी संकट का विचारकर उन्होंने भवितव्यता के आगे सिर झुकाना ही स्थिर किया। इसी के अनुसार वि० सं० १७८१ की आषाढ़-सुदी १३ (ई० सन् १७२४ को २३ जून) को रात्रि के पिछले पहर निद्रित अवस्था में ही महाराजा अजित इस लोक से विदा हो गए ❀।

महाराज के प्रताप से मुसलमान लोग जितना भय खाते थे, हिंदू उतना ही निर्भय रहते थे। इन्होंने बालकपन से ही संसार के अनेक परिवर्तन देखे थे। एक समय वह था कि जब यह अपनी माता के गर्भ में ही थे कि इनके पिता का स्वर्ग-वास हो गया। इसके बाद इनके जन्म लेते ही

❀ राजरूपक में मँगसिर-सुदी ७ को इनका देहली को रवाना होना लिखा है। (देखो पृ० २४५)

† अजितोदय, सर्ग ३०, श्लो० ४६-८४। उसमें यह भी लिखा है कि जिस समय यवन-सेना रीयाँ में थी, उस समय महाराज ने जयसिंहजी के आग्रह से संधि-कर महाराजकुमार को बादशाह के पास जाने की आज्ञा दी थी।

‡ अजितोदय, सर्ग ३१, श्लो० १।

❀ मआसिरुल उमरा भा० ३ पृ० ७५८। (इसी पृष्ठ की टिप्पणी में 'तारीख़े मुज़फ़्फ़री' का हवाला देकर लिखा है कि कुछ लोगों का कहना है कि महाराजा अजित-सिंह बादशाह की कुछ भी परवा नहीं करते थे। इसी से बादशाह ने और उसके वज़ीर ऐतमादुद्दौला—क़मरुद्दीनख़ाँ ने उसके बेटे बख़तसिंह को बाप का उत्तराधिकारी बना देने का प्रलोभन देकर उसको मारने के लिये तैयार कर लिया) इंडियन ऐंटिक्वेरी भा० ५८, पृ० ४७-५१।

महाराज के साथ कुल मिलाकर ६२ या ६६ प्राणियों ने अपनी ख़ुशी से चिता में प्रवेशकर हृदय-ज्वाला को शांत किया था। इनमें ६ रानियाँ थीं। (देखो अजितोदय सर्ग ३१, श्लो० ३२-३३ और राजरूपक पृ० २४७-२५४)

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

औरंगज़ेब जैसा प्रबल बादशाह इनका शत्रु बन बैठा, और उसी की शत्रुता के कारण इनकी वीर माता को भी प्राणों से हाथ धोना पड़ा। इसके बाद ८ वर्ष की आयु तक तो ये अज्ञातवास में रहे, और इनके पैतृक राज्य पर यवनों का अधिकार रहा। परंतु इनके स्वामि-भक्त सरदार उस समय भी प्राणों का मोह छोड़कर विना नायक के ही शत्रुओं से लोहा लेते रहे। इसके बाद २० वर्षों तक इनके सरदारों और इन्होंने समय-समय पर यवनों के दाँत खट्टे कर अंत में अपने गए हुए राज्य को पुनः प्राप्त कर लिया। परंतु आश्चर्य तो उस समय होता है, जब एक मातृ-पितृ-हीन नवजात बालक कालांतर में ऐसा प्रतापी निकलता है कि जिसकी सहायता से फ़रुख़सियर-सा बादशाह देहली के शाही तख़्त से हटाया जाता है और उसके रिक्त स्थान पर क्रमशः तीन नए बादशाह बिठाए जाते हैं।

यहाँ पर एक बार फिर यह प्रकट करना कुछ अनुचित न होगा कि उस संकट के समय मारवाड़ के अधिकतर सरदारों ने अपने स्वामि-धर्म का स्मरण कर बड़ी निर्भीकता से महाराज का साथ दिया था। यह उन्हीं की वीरता का फल था कि औरंगज़ेब-जैसा प्रबल बादशाह भी मारवाड़ राज्य को नहीं पचा सका, और उसके उत्तराधिकारी को उसे उगलना ही पड़ा।

महाराज के १२ पुत्र* थे। इनमें से बड़े पुत्र अभयसिंहजी तो राज्य के स्वामी हुए, द्वितीय पुत्र बख़्तसिंहजी को नागौर का प्रांत मिला और तृतीय पुत्र आनंदसिंहजी * ने फिर से ईडर का राज्य प्राप्त किया।

---

* १ अभयसिंहजी, २ बख़्तसिंहजी, ३ अखैसिंहजी, ४ बुधसिंह, ५ प्रतापसिंह, ६ रत्नसिंह, ७ सोनग (सोभागसिंह), ८ रूपसिंह, ९ सुलतानसिंह, १० आनंदसिंह [इनका जन्म वि० सं० १७६५ की आषाढ़-सुदी ५ (ई० सन् १७०८ की ११ जून) को हुआ था] (देखो अजितोदय सर्ग १७, श्लो० २०२१), ११ किशोरसिंह [इनका जन्म वि० सं० १७६६ की आश्विन-वदी ११ (ई० सन् १७०९ की १८ दिसंबर) को हुआ था], और १२ रायसिंह [इनका जन्म वि० सं० १७६७ की श्रावण-वदी ३० (ई० सन् १७१० की १५ जुलाई) को हुआ था]। (देखो अजितोदय सर्ग १६, श्लो०, ६३-६४)

* ख्यातों से ज्ञात होता है कि स्वर्गवासी महाराजा अजितसिंहजी की दाहक्रिया हो जाने पर उनके पुत्र आनंदसिंहजी अपने छोटे भ्राता किशोरसिंह और रायसिंह को लेकर रायपुर की तरफ़ चले गए थे। परंतु अजितोदय में इनका वाघेराव की तरफ़ जाना लिखा है। उसमें यह भी लिखा है कि जोधा मोहकमसिंह इनका अभिभावक होकर इनके साथ गया था। (देखो सर्ग ३२, श्लो० २-३)। इसके बाद वि० सं० १७८५ (ई० सन् १७२८) में आनंदसिंहजी और रायसिंहजी ने जाकर ईडर पर अधिकार कर लिया। संभवतः उस समय उक्त प्रांत इनके बड़े भ्राता अभयसिंहजी के मनसब की जागीर में रहा होगा।

किशोरसिंह अपने ननिहाल जयसलमेर चला गया था। अजितोदय में लिखा है कि जयपुर-नरेश जयसिंहजी ने इन्हें देहली बुलवाकर बादशाह से तोड़े का अधिकार दिलवा दिया था। (देखो सर्ग ३२, श्लो० ५)

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

महाराज ने ३५ गाँव* दान दिए थे और कई नवीन स्थान † आदि ‡ भी बनवाए थे।

कर्नल टाड ने अपने राजस्थान के इतिहास* में लिखा है कि अजितसिंहजी ने अपने सिक्के अलग ढलवाए थे, और इसी तरह अपना नाप (गज़), अपना तोल, अपनी अदालतें और अपने ओहदे (पद) भी अलग क़ायम किए थे।

परंतु अब तक उस समय का एक भी सिक्का देखने में नहीं आया है।

इस लेख को समाप्त करने के पूर्व यहाँ पर महाराज अजितसिंहजी के इतिहास से संबंध रखनेवाले दो संस्कृत काव्यों और एक भाषा काव्य का संक्षिप्त वर्णन कर देना भी अनुचित न होगा।

पहला काव्य अजित-चरित्र है। यह महाराज की आज्ञा से औदीच्य जाति के बालकृष्ण शर्मा दीक्षित ने बनाया था। इसमें १० सर्ग हैं। ग्रंथारंभ में कवि ने लिखा है—

एवं विचार्य क्षुभिता नितांतं,
स्थितासि किं मत्कविते मनोज्ञे।

---

* १ पाल्डी ब्यासों की (नागौर प्रांत की) श्रीमाली ब्राह्मण को; १ हीरावास (सोजत प्रांत का), २ हाडेचा (साँचोर परगने का), ३ बेडावड़ी (मेड़ता प्रांत की), ४ पुरियों का खेड़ा (जसवंतपुरा प्रांत का) स्वामियों को; १ गोइँदलाव (सोजत प्रांत का), २ ढाढरवा (फलौधी प्रांत का), ३ नाँखड़ाँ और ४ समद डाउ-इरंडिया (फलौधी प्रांत के), ५ मेलावास, ६ शुवाँणा, ७ काछेड़ा, ८ पावरड़ी और ९ पनोरिया (साँचोर प्रांत के), १० मंडली (जोधपुर का), ११ कोड़िया और १२ गोरेरी (डीडवाने के), १३ टीबाणिया (पचपदरा प्रांत का), १४ घोड़ारन, १५ नौसरिया और १६ सूरपुरा-इंटावा (नागौर प्रांत के), १७ गूँदीसर बड़ा और १८ अमरपुरा (परबतसर प्रांत का), १९ बासणी (जैतारण प्रांत की) चारणों को १ माँमावास (सोजत प्रांत का) २ सिवाने का बास और ३ बाग़ावासिया (सिवाना प्रांत के) मेवाड़ के एकलिंग (इकलंजी) महादेव के मंदिर के लिये; १ बाग़ावास सूनाखेड़ा (सिवाना प्रांत का) २ डोली ३ मेसेर ख़ुर्द, ४ मोडी और ५ मोड़ी दूसरी (जोधपुर की) पुरोहितों को, १ गरडाली (साँचोर प्रांत की), २ अंबाली (नागौर की) साँइयों को तथा १ धाँगडा भाट (दसूँदी) को दिया था।

† महाराज अजितसिंहजी के बनवाए हुए स्थान—

जोधपुर के क़िले में—फ़तैपौल और गोपाल पौल के बीच का कोट, नई फ़तैपौल (वि० सं० १७७४ में), दौलतख़ाना फ़तैहमहल, भोजनसाल, बीच का महल, ख़्वाबग़ाह के महल, रँगसाल और २४ छोटे ज़नाने महल। (इन्होंने चामुंडा के मंदिर की मरम्मत भी करवाई थी।) नगर में बनश्यामजी का मंदिर (पंच मंदिरोंवाला), मूल नायकजी का मंदिर, मंडोर में—एक थंभे के आकार का महल, वहाँ के ज़नाने मकानात (वि० सं० १७७५ में), जसवंतसिंहजी का देवल, गणेशजी की मूर्ति सहित भैरवोंवाला दालान और पहाड़ में काटकर बनाई हुई वीरों की मूर्तियोंवाला दालान। (यह दालान वि० सं० १७१७ में बनवाया था)।

‡ क़िले में की चाँदी की पूरे क़द की मुरलीमनोहर, शिवपार्वती, चतुर्भुज विष्णु और हिंगलाज की मूर्तियाँ भी इन्होंने ही वि० सं० १७७६ में बनवाई थीं।

* ऐनाल्स एंड एंटिक्विटीज़ ऑफ़् राजस्थान (क्रुक संपादित) भा० २, पृ० १०२६

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अजीतसिंहो धरणी जलेऽस्मिन्,
जातस्तदर्थं कुरु काव्यबंधम्।
(सर्ग १, श्लो० ६)
आज्ञाकृता तेन नराधिपेन,
राठोडवंशाभरणोत्तमेन ।
औदीच्यजं दीक्षितबालकृष्ण,
शर्माणमेनं विबुधैकभक्तम् ।
(सर्ग १, श्लो० ८)

इसके बाद कवि ने सूर्यवंशी इक्ष्वाकु के कुल में मरुनामक नरेश का होना और उसका मारवाड़ को अपनी राजधानी बनाना लिखा है। उसका वंशज शल्य था। उसके विषय में कवि लिखता है—

श्रीभारते सर्वपुराणवर्ये,
सत्कारपूर्वं खलु वर्णितो यः।
शल्यो रिपूणामितिनामसार्थं,
चकार राजा कुरुराजयुद्धे ।
(सर्ग ३, श्लो० २)

इसके बाद इस वंश में रावजोधा, रावसूजा और बाघा का होना लिखकर अंतिम नरेश का पुत्र-कामना से गंगाराधन करना लिखा है। उस स्थल का एक श्लोक यहाँ उद्धृत किया जाता है—

मातर्मदीयं शृणु दुःखमेकं,
वदंति लोकाः कुलमस्यनष्टम् ।
मद्दत्तमम्भः पितरः पिबंति,
निःस्वस्य निःस्वस्य कथंचिदेव ।
(सर्ग ४,श्लो० १२)

अनंतर कवि ने रावगंगाजी, मालदेवजी*, उदयसिंहजी, शूरसिंह जी, गजसिंहजी और जसवंतसिंहजी के उल्लेख के बाद अजितसिंहजी के जन्म का वर्णन कर औरंगजेब द्वारा बुलाए जाने पर राठौरों का देहली पहुँचना लिखा है, कवि लिखता है—

तथा प्रस्थितं सैन्यमेतत्सुराज्ञो
यथा मेघमाला घना भाद्रमासे ।
मरोश्चंडवातेरितारेणुसंघाः
प्रवृद्धस्य सिंधोर्यथोच्चास्तरंगाः ॥
(सर्ग ७, श्लो० २६)

इसके बाद कवि ने राठौर वीरों के, अपने बालक महाराज की रक्षार्थ, युद्ध के लिये तैयार होने का वर्णन किया है—

शालिग्रामशिलाञ्च केऽपि हृदये मूर्तिं भवान्याः परे ,
पीत्वा गांगजलं दधुश्च तुलसीपत्रं वरांगे परे ॥
सन्नद्धाश्च बभूवुरस्त्रनिवहान् बध्वा रणायोत्सुकाः ।
पत्न्योन्तः पुरगास्तथैव रचनां चक्रुस्तथा सज्जिताः ॥
(सर्ग ८, श्लो० १७)

इसके बाद कवि ने बादशाह के अजमेर आने, महाराना के यहाँ महाराज के विवाह होने, महाराज के जोधपुर पर अधिकार करने, औरंगजेब की मृत्यु पर बहादुरशाह के गद्दी बैठने, उसके अजितसिंहजी से संधि करने, महाराज के नर्मदा तक उसके साथ जाने, वहाँ से जयसिंहजी के साथ मेवाड़ होते हुए लौटने, दोनो नरेशों के साँभर विजय करने और फिर अपने-अपने देशों को जाने का संक्षिप्त उल्लेख कर महाराज के अजमेर, नागोर और साँभर आदि पर चढ़ाई करने, बादशाह के अजमेर के निकट आकर आँबेर और मारवाड़ के नरेशों से संधि करने, दोनो नरेशों के पुष्कर तक साथ लौटकर अपने-अपने देशों को जाने और महाराज

* इसमें चंद्रसेनजी का उल्लेख नहीं है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के राज्याभिषेक के होने का वर्णन किया है। ग्रंथांत में कवि लिखता है—

भूपालोऽजीतसिंहः क्षितितलमधुना वर्ततेऽर्थिप्रदाता ।
तावत्त्वं रोहिणाद्रे कुरु सुखमतुलं भीक्षुकास्ते समीपम् ॥
नायास्यन्त्यादितेयद्रुमशमतुभवत्त्वं मणे तिष्ठ गेहे ।
त्वं श्रीमत्कामधेनो कलय निजसुतं कामना नास्ति भूमौ ॥
(सर्ग १०, श्लो० ४५)

इसके बाद निम्न-लिखित आशीर्वादात्मक श्लोक लिखकर काव्य समाप्त कर दिया गया है—

यावच्चन्द्रदिवाकरौ गतिपरौ यावद्ध्रुवो निश्चलो ।
यावत्सागरसप्तकं शिखरिणो यावत्सुमेर्वादयः ॥
गंगाद्याः सरितो वहन्ति परितो यावद्धरामंडलम् ।
श्रीमद्राजशिरोमणे तव यशस्तावत्सदा वर्द्धताम् ॥
(सर्ग १०, श्लो० ४६)

और अंत में लिखा है—

इति श्रीदीक्षितबालकृष्णकृतौ महाराजअजितचरित्रे महाकाव्ये अजदुर्ग, नागपुरजय, दिल्लीपति-संधि, राज्याभिषेक, कविसूक्तिरचनं, नाम दशमः सर्गः ॥

यह ग्रंथ न तो महाकाव्य की श्रेणी में ही आ सकता है, न इससे इतिहास में ही विशेष सहायता मिल सकती है । इसकी कविता का नमूना पाठकों के सामने रख दिया गया है । यदि यह अधिक चमत्कारपूर्ण नहीं है, तो बुरी भी नहीं है।

दूसरा अजितोदय-नामक ३२ सर्गों का काव्य है। इसके कर्ता का नाम भट्ट जगजीवन था । कवि ने नियमित मंगलाचरण के बाद लिखा है—

राज्ञोऽनेक गुणार्णवस्य सकलक्षोणीश चूडामणे ।
राठोडान्वयजाम्बुजव्रजवनप्रोल्लासकाहर्म्मणेः ॥
वक्ष्ये चित्रमयाजितस्य नृपतेः प्रीत्या चरित्रं शुभम् ।
यद्यस्मि प्रतिबद्ध वागपि मुदा वाग्देविसं प्रेरितः ॥
(सर्ग १, श्लो० ४)

इसके बाद कवि ने जोधपुर का और महाराजा जसवंतसिंहजी का वर्णन कर लिखा है कि औरंगज़ेब के राज्य में मीरजुमला के पुत्र महम्मद अमीन को, जो काबुल का सूबेदार था, वहाँवालों ने लूट लिया। इस पर उसने महाराज से सहायता की प्रार्थना की। अतः महाराज ने वहाँ पहुँच पठानों को दबा दिया, और महम्मद अमीन की स्त्री और बाल-बच्चे जो लूट लिये गए थे, उसे वापस दिलवा दिए।

इसके बाद कवि ने अजितसिंहजी के गर्भ-प्रवेश का वर्णन इस प्रकार किया है—

जाने तु पुष्ये समयेऽथ चतुर्दशेऽह्नि,
श्रीयादवेंद्रतनया नृपतेर्मनस्तः ।
गर्भं दधौ स्वमितधामचयावभासं
प्राचीव षोडशकलं तु शरच्छशांकम् ॥
(सर्ग ४, श्लो० १)

अनंतर पेशावर में महाराज जसवंत के स्वर्ग-वास का उल्लेख कर अजितसिंहजी के जन्म से लेकर उनकी मृत्यु-पर्यंत का इतिहास दिया गया है। इसका विशद वर्णन पहले लिखे गए इतिहास को टिप्पणियों में यथास्थान हो चुका है। यहाँ तक इस काव्य के ३१ सर्ग समाप्त होते हैं।

३२ वें सर्ग में अजितसिंहजी के उत्तराधिकारी महाराजा अभयसिंहजी का देहली में राज्याभिषेक होना, और इसके बाद उनका मथुरा में जाकर जयसिंहजी की कन्या से विवाह करना, तथा वहाँ से देहली लौट जाना लिखा है—

घाटेष्वन्येषु गत्वा मरुधरपतिरास्नायदानं विधाय ।
संवीक्ष्यादौ वनान्यै द्विजजननिकरान्साधुवर्य्यान्प्रपूज्य ॥

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तत्रोषित्वा त्रिरात्रं तदनु स-धिगम्यैव राधाख्यकुंडे ।
स्नात्वा गोवर्द्धनाद्रिं विधिवदपि तथा पश्य दिल्लीमगात्सः॥
(सर्ग ३२, श्लो० ४०)

यहीं पर यह काव्य समाप्त हुआ है ।

इस काव्य में ग्रंथकर्ता ने कहीं भी अपना परिचय नहीं दिया है । केवल सर्गांत में लिखी पंक्तियों में उसका उल्लेख मिलता है । ३२ वें सर्ग के अंत की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

इति श्रीमदजितोदयमहाकाव्ये भट्टजगजीवनकृतेऽभयनृपोद्वाहो नाम द्वात्रिंशतितमः सर्गः ॥ ३२ ॥

यद्यपि इस काव्य की कविता विशेष चमत्कार-पूर्ण नहीं कही जा सकती, तथापि इसके ऐतिहासिक काव्य होने में तो कोई संदेह नहीं है ।

अजित-ग्रंथ—यह ग्रंथ किस कवि का बनाया हुआ है, इसका राजकीय इतिहास-कार्यालय की कापी में कहीं उल्लेख नहीं है । इसके अंत में लिखा है कि यह पुस्तक पौकरण-ठाकुर के संग्रह में थी । एक वार जब भायल कुशालसिंह पौकरण गए, तब कुछ दिन वाद उन्होंने पौकरण-ठाकुर से कहा कि मेरा जी यहाँ बिल्कुल नहीं लगता है । इसलिये या तो आप मुझे घर जाने की इजाजत दें या कुछ मन-बहलाव का काम बतलावें । इस पर उन्होंने अपने संग्रह में-से कुछ पुस्तकें निकलवाकर कुशालसिंह को पढ़ने के लिये दीं । उन्हीं में यह पुस्तक भी थी । अनंतर जब कुशालसिंह जोधपुर आए, तब इस पुस्तक को भी अपने साथ ले आए, और लेखक को उसकी नक़ल कर देने के लिये कहा । इस पर लेखक ने उसकी दो नक़लें तैयार कर एक तो उनको दी और दूसरी अपने पास रख ली ।

यह नक़ल वि० सं० १९०७ की प्रथम वैशाख-बदी २ से प्रारंभ की जाकर ज्येष्ठ-बदी १३ को समाप्त की गई थी ।

वास्तव में इस ग्रंथ का क्या नाम था, इसका भी इस कापी में कहीं उल्लेख नहीं है । केवल सुभीते के लिये किसी ने इसपर 'अजित-ग्रंथ' लिख दिया है ।

यह काव्य साहित्य की दृष्टि से अधिक महत्त्व का न होने पर भी ऐतिहासिक दृष्टि से पूर्ण महत्त्व का है ।

इस कापी में राजा गजसिंहजी के गद्दी पर बैठने के समय से वि० सं० १७५४ के आषाढ़ तक का इतिहास है । इसका अंतिम कवित्त यह है—

जीव सुद्ध अगजीत संप दुरगासूं साहै ,
वलेज आवै वांण मुंक इण मसलत मांहै ।
कुलचँपे करनोत कॉम कीयासू कहसी ,
धरमाधरम अधंम राह दोय वताँ रहसी ।
सॉमताँ तणी वाताँ सुपह घरविध सुण धीजै घणो ।
आसाढ़ लगे सहि अक्खियौ तत तिपन* संवत तणौ ।

इसके आगे एक पृष्ठ पर गद्य में ही अगला औरंगजेब के मरने की सूचना मिलने तक का बहुत ही संक्षिप्त हाल लिखा गया है । इसके बाद का अंतिम दोहा यह है—

आई खबर आचेंतरी, मिट गइ तनरी दाह;
कासीदाँ इम भाखियो, मर गयो औरंगसाह ।

---

* यहाँ पर मारवाड़ में प्रचलित श्रावणादि संवत् का उल्लेख होने से इसे वि० सं० १७५४ का आषाढ़ ही समझना चाहिए ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आगे इस काव्य की कविता के कुछ और भी अवतरण दिए जाते हैं—

उज्जैन-युद्ध का वर्णन—कवित्त

दुय शाहिजादा उठी अठी एक धँणी मंडोवर ;
ऊगौ उगौं रै अरक उमैदल मंडी अरवर ।
गोलां नालां गाज सिंधुवौ राग सुणायो ;
बाणाँ सोक वजाग धुंध मचि गयण ढकायो ।
ताट-तड सोक तीराँ तणी धारसेल वागा धकै ;
राँम मुख राँम हिंदू रटै म्लेच्छ रटै मुँह हामकै ?

महाराज जसवंतसिंह के स्वर्गवास के बाद मारवाड़ की रक्षा के लिये सरदारों का विचार—

दोहा

सोचो मत को सामताँ, कमध कहै सहकोय ;
असपति जो चढ़ आवसी, लड़साँ साँमा होय ।

महाराज अजित की बाल्यावस्था में उनके सामंतों की शत्रु पर की चढ़ाई का वर्णन—

छंद मोतीदाम

सझे भथ बाँण कबाँण सकज्ज ;
वले खग बाँधे अंग विरज्ज ।
जड़े कर त्यार जमंधर जोर ;
फबे हथसेल झिलामल फोर ।
ढले गल माँहि अली बँध ढाल ;
वणे अति जोध महा विकराल ।
फरूकत सीस-धजा फरुकार ;
चढ़ी मुँह साँवत वाँन चकार ।

छंद भूलणा

इतरै जोध अजीतरा, दल हूआ भेला ;
कमधज ऊदा खींवकन, मिल संघ समेला ।
खंडप मारे खाक, स्याह की जलम जेला ;
पछै उठाथा हालिया, हुय द्रब्ब सचेला ।

फुटकर (चौपाई)

मुनसब ले जागीर मँगाई, खोटे थके घणा दिन खाई ;
गतने अवगत दुहूँ गमाई, दीठा भव दोनूँ दरगाई ।
करतो पहला बुरी कमाई, पाप धर्मरी परखा पाई ;
इणथा कुवद जीव में आई, खाँणो खायो अखत खुदाई ।

उक्त काव्य में घटनाओं के शीर्षक की तौर पर लिखे गए गद्य का नमूना—

वार्ता—श्रीमहाराजा प्रगटिया इनायतखांन जोधपुर था, कूच कर पाछे थांणोराख अजमेर गयो धरती में चौथरो सरसतो कीयो दौडा धावो मेट श्रीजी सिवाणेदिस पधार बैठा सु समै कह्यो । हिमे दुरगदासजी दखणथा अकबरजीनूं विलायत दिसीनूं मेलनैं आप धरतीनूं आया दौडिया श्रीजीनूं अरज लिखी सु समै ।

(समाप्त)

दुखदाई बवासीर

ख़ूनी या बादी, नई या पुरानी, ख़राब-से-ख़राब चाहे जैसी बवासीर हो, सिर्फ़ एक बार के सेवन से जादू के मानिंद असर कर अद्भुत फ़ायदा ; तीन रोज़ में जड़ से नाश । परहेज़ की ज़रूरत नहीं । अधिक तारीफ़ व्यर्थ, फ़ायदा न हो तो चौगुने दाम वापस । क़ीमत २)

पता—शक्ति-सुधा-कार्यालय, चौथा कुम्हार वाड़ा, बंबई नं० ४

छप गई ! छप गई !!

नीहार

यह नीहार हिंदी-संसार की सुप्रसिद्ध लेखिका श्रीमती महादेवी वर्मा की सरस कविताओं का संग्रह है । मूल्य १)

पता—साहित्य-भवन लिमिटेड, इलाहाबाद

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गीत

[श्रीयुत "निराला"]

कौन तुम शुभ्र-किरण-वसना ?—
सीखा केवल हँसना—केवल हँसना—
शुभ्र-किरण-वसना।
मलय मंद भर अंग-गंध मृदु,
बादल अलकावलि कुंचित-ऋजु,
तारक हार, चंद्र मुख, मधु ऋतु,—
सुकृत-पुंज-अशना।

नहीं लाज, भय, अनृत, अनय, दुख,
लहराता उर मधुर प्रणय-सुख,
अनायास ही ज्योतिर्मय-मुख
प्रणय-पाश कसना।
चंचल कैसे रूप-गर्व-बल
तरल सदा बहतीं छल-छल-छल,
रूप-राशि में टलमल-टलमल,
कुंद-धवल-दशना।

अग्निसंजीवन
स्वादिष्ट

मंदाग्नि, अजीर्ण, क़ब्ज़, अफरा, दाह इत्यादि पेट-संबंधी सब रोगों को उत्पत्ति, कारण तथा रोगों से बचने के उपाय और स्वास्थ्य-संबंधी अनेक नियमों को जानने के लिये हिंदी और अँगरेज़ी में लिखी

"स्वास्थ्य-संदेश"-नाम की पुस्तक मुफ़्त मँगाइए

पता—अग्निसंजीवन-कार्यालय, बंबई नं० २

एजेंट—

लखनऊ	बनारस	इलाहाबाद	कानपुर
हिमालियन स्टोर अमीनाबाद-पार्क	जगन्नाथदास-बलभद्रदास चौक	दुबे-ब्रदर्स चौक	रामगुलाम-शिवगुलाम नयागंज

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

लहरी निबाह

[पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध"]

चौपदे

रंग रह सका रंग बदले।
बन गई बात, बात बिगड़े।
रहा पानी पानी खोकर।
मिटे सारे झगड़े, झगड़े।१।

बच गया गला, गला उतरे।
खुलीं आँखें, आँखें मूँदे।
हाथ के विना, हाथ मारा।
विना पाँवों के ही कूदे।२।

बने अंधा सब कुछ देखा।
बने बहरा सब सुन पाया।
राख मिट्टी हो जाने पर।
मिली सोने की-सी काया।३।

चेत आया अचेत होकर।
चित्त खो चेतनता आई।
राह मिल गई राह भूले।
सब गँवा सारी सिध पाई।४।

सिर कटे हरे हुए, पनपे।
फले-फूले मिट्टी में मिल।
जल गए मिली जोत न्यारी।
हिले, दिल गया फूल-सा खिल।५।

घर गँवा करके घर पाया।
बने सबके बंधन टूटे।
किसी की लहर बहर में पड़।
मोह की लहरों से छूटे।६।

चाँदनी बिना चाँद निकली।
बिना सूरज किरणें फूटीं।
हवा में हवा बाँध अपनी।
निराली फुलझड़ियाँ छूटीं।७।

अँधेरे में सूरज निकला।
घरों में चाँद उतर आया।
जगमगाईं काली रातें।
हुई उजली मैली छाया।८।

नहीं जो दिखलाई देता।
उसे हमने देखा-भाला।
फेंक करके सारी कुंजी।
खोल पाया सच्चा ताला।९।

जी उठे मर जाने पर हम।
उठा नीचे गिरकर पारा।
बूँद में दरिया दिखलाया।
समाया तिल में जग सारा।१०।

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

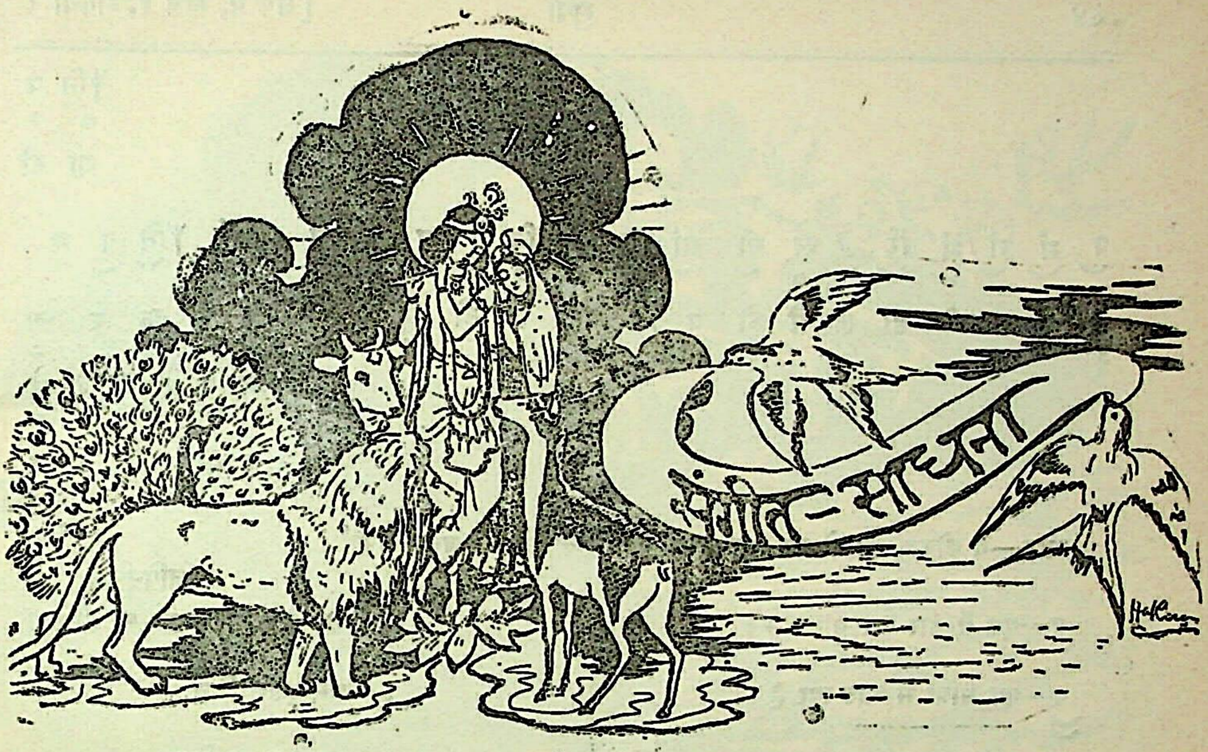

शब्दकार—अज्ञात] [स्वरकार—कुमारी गोपालदेवी 'हिंदी-प्रभाकर'

राग संकीर्ण मल्लार—तीन ताल।

मात्रा ८

छम छम छम छम बदरिया बरसन लागी रे लागी रे।
बदरिया बरसन लागी रे लागी रे लागी रे।
सरर सरर रर बरसत वारी, रिमझिम रिमझिम डोले फुलवारी।
अँबुवा की डाली पै कोयली बैठे, कूक कूक कर लागी रे।

स्थायी

प सं सं ॥नि ध प म ॥नि ध प म ग रि स म म प म ॥नि ध ॥नि प
छम् छ म छम् छ म ब द रि या ब र स न ला गी रे ला ऽ गी ऽ रे
३ २ १ २

म म म म प प नी नी ना गं रें गं सं ॥नि सं ॥नि ध प म ॥नि ध ॥नि प
ब द रि या ब र स न ला ऽ गी ऽ रे ला ऽ गी ऽ रे ला ऽ गी ऽ रे
३ २ १ २

अंतरा

म म म म प प नी नी सं सं सं सं सं सं सं मं गं मं रि सं निं सं रिं सं
स र र स र र र र ब र स त वा री रि म झि म रिम् झिम् डो ले फु ल
३ २ १ २

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ॄनि प
० ०
वा री

प मं गं मं रिं रें सं नी सां रिं स ॄनि प प सं सं सं सं ॄनि प म
० ० ० ०
अँ बु वा की डा ली पै को य लि या बै ठी कू ऽ क कू क क र ला
३ २ १ २

ॄनि प म ग रि स
०
ऽ गी ऽ रे ऽ ऽ

नोट—ग कोकल, नि दो एक शुद्ध दूसरी कोमल लगती है। जाति संपूर्ण।

लिपि-चिह्न

प—एक में चार स्वर बोलो ¼।

प—एक मात्रा में आठ स्वर ⅛।

प—एक मात्रा पूरी।

प—आधी मात्रा ½।

सं—यह चिह्न तार-सप्तक का होगा।

१—सम-दर्शक चिह्न।

२—ताली-दर्शक चिह्न।

३—ख़ाली-दर्शक चिह्न।

गाल बजाने से स्वराज्य न मिलेगा!

स्वराज्य के लिये जीवन-दान करना, कष्ट झेलना और बलिदान देना तो बहुत दूर की बात है, लोग जिस बात को आसानी के साथ कर सकते हैं, उस पर भी ध्यान नहीं देते।

स्वदेशी ही स्वराज्य की सीढ़ी है!!

स्वदेशी वस्त्र पहननेवालों को जेल, फाँसी या कालेपानी का डर नहीं। अपने देश का पैसा अपने ही भाइयों के पास रहे, इतना सोचने की शक्ति हरएक आदमी के पास है।

जो लोग देश के लिये कुछ नहीं कर सकते,

उनको कम-से-कम इतना तो अवश्य ही करना चाहिए कि देशी मिलों का बना हुआ वस्त्र पहनें!

देश-भर में मशहूर है कि

जुग्गीलाल-कमलापति काटन-मिल्स

बिलकुल देशी पूँजी से क़ायम की गई मिल है, और इसका प्रबंध पूर्णतः हिंदोस्तानी डाइरेक्टरों के हाथ में है। इसकी आमदनी का एक-एक पैसा भारतीय मज़दूरों, कर्मचारियों और हिस्सेदारों के पास ही जाता है। इसका माल, धोती जोड़े, मारकीन, मलमल, ट्वील गारंटी-शुदा स्वदेशी होते हैं। व्यापारियों के साथ पूरी सुविधा बरती जाती है।

निवेदक—

मैनेजिंग डाइरेक्टर, जुग्गीलाल-कमलापति काटन स्पिनिंग ऐंड वीविंग मिल्स, कानपुर

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

१. कवि और संसार

(१)

कवि के अथाह हृदय में भावों की मंदाकिनी अठखेलियाँ करती हुई बह रही थी। ज्ञान-सूर्य की किरणें नीचे उतर-उतरकर उसकी ललित लोल लहरियों को चूम रही थीं। किनारे पर खड़े-खड़े संसार इस छबीली छटा को देखकर मचल रहा था। पर कवि को स्वयं इसका कुछ अनुभव नहीं था। वह उदास बैठा था।

(२)

समय तेज़ी के साथ बीतता जाता था। कवि की अभी तक अपनी प्रियतमा से भेंट नहीं हुई। वह प्रतीक्षा में मौन बैठा था। प्रेमावेश के कारण एकाएक उसके होंठ हिल उठे, और उनसे कुछ दुःख-पूर्ण अस्फुट किशोर स्वर निकल पड़े, जिनके प्रत्येक कोमल टुकड़े अपने सुनहले डैने फैलाए हुए शून्य वायु-मंडल के बीच उड़-उड़कर प्रियतमा की खोज में विचरने लगे। मूर्ख संसार ने उसे गीत समझा, और ख़ुशी के मारे चिल्ला उठा—"शाबाश!" पर वाहवाही की वह तुमुल ध्वनि यों ही हवा चीरती हुई निकल गई। उससे कवि को तनिक भी उत्साह नहीं हुआ। उलटे उसके दुःख की मात्रा और भी बढ़ गई।

(३)

कवि को चैन नहीं था। विरही के लिये पल-पल पहाड़ होते हैं। अभागा वियोगी सिसक-सिसककर रो पड़ा। उसकी आँखों से गर्म-गर्म आँसुओं का सोता फूट निकला। पर अंधे और अबोध मानव-संसार ने उन अश्रु-बूँदों को मोती समझा,—और कवि की करुण सिसकन को सितार की झनकार समझ वह मस्ती में झूम उठा।

(४)

जीवन की घड़ियाँ बीतती जाती थीं। संध्या अंधकार की चादर ओढ़े आगे बढ़ती आ रही थी। कवि हृदयेश्वरी के लिये व्याकुल हो उठा था। शक्तियाँ

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

क्षीण होती जा रही थीं। आँखें मुँदी जाती थीं। कवि अधीर था। पर दुनिया इसे एक सुंदर तमाशा समझकर हँस रही थी!

(५)

अब असह्य हो उठा। एकटक प्रियतमा की राह देखते-देखते कवि की आँखें चौंधिया गईं। उसने आँखें मूँद लीं। आँखों को बंद करते ही कवि ने एक नया ही नूर देखा। उसने सहसा एक तेज-पूर्ण आलोक के बीच प्रियतमा को मुस्किराते हुए पाया।

आनंद-मग्न संसार नेत्र खोलकर भी कुछ नहीं देख सका। पर कवि ने आँखें मूँदकर दुर्लभ प्रियतमा की मोहिनी मंजुल मूर्ति देख ली।

(६)

कल्पना के करों से खींचकर कवि ने प्रियतमा को गले लगाया, और उसे अपने हृदय की साम्राज्ञी बनाया।

(७)

प्रियतमा की छाती में छाती चिपकाए कवि मौन-मुग्ध था। मस्त था। वही प्रियतम था। वही प्रियतमा थी। बड़ी देर के बाद जब उसने आँखें खोलीं, तो संसार का रंग फीका पड़ गया था। वह बिलकुल नीरस हो रहा था।

(८)

दुनिया मन-मारे चुपचाप उदास बैठी थी। उसकी सारी हँसी कवि के होठों पर जा अड़ी थी। कवि हँस रहा था। पर संसार की उदासी उससे देखी नहीं गई। उसने अपनी वीणा उठाई। उसके तार-तार के मधुर झंकार शून्य वायु-मंडल में ठुमक-ठुमककर नाचने लगे।

(९)

संसार तलमला उठा। पर अब की उसके मुख पर उस विचार-शून्य ओछी हँसी की रेखा नहीं थी। विमुग्ध होकर गंभीरता में वह अमृत की घूँट पी रहा था।

(१०)

कवि हँस रहा था। संसार भी हँस रहा था। इस बार शायद वह कवि के मर्म को कुछ-कुछ समझ सका था। बदले में सहृदय कवि ने जीवन-मकरंद टपकाया, जिसकी एक-एक बूँद, कोमल कुसुम-दल के ऊपर ओस-कण की तरह, संसार के हृदय पर बिखर गई, और फिर अपार सागर की तरह लहराने लगी। उनकी लहरियों पर संसार का हृदय, अनंत की ओर जाती हुई नौका की तरह, थिरकने लगा।

(प्रो०) विश्वनाथप्रसाद (एम्० ए०, साहित्य-रत्न)

× × ×

२. एक मुसलमान वीरांगना का चरित्र

फ़ारिस के यज़्द (Yezd)-प्रांत से उच्चवंश के एक मनुष्य सत्रहवीं शताब्दि के आरंभ में भारत-वर्ष में आकर बस गए। उन्होंने मुग़ल बादशाहों के दरबार में उच्च-पद प्राप्त किया। इनमें से एक प्रसिद्ध व्यक्ति, जिसका नाम ख़लीलुल्लाख़ाँ था, एक सूबे का शासक हो गया था, और उसका विवाह साम्राज्ञी मुमताज़ महल की भतीजी से हुआ था। उनके पुत्र ने, जिसका नाम अमीरख़ाँ था, अफ़ग़ानिस्तान में २२ वर्ष तक, सम्राट् औरंगज़ेब के शासन-काल में, प्रांतिक शासक का कार्य बड़ी योग्यता और सफलता से संपादन किया था। वह राजनीति में इतना कुशल था कि उसने अफ़ग़ानिस्तान की उद्दंड जातियों पर पूर्णतया अपना आतंक जमा रक्खा था, और उसके शासन-काल में किसी प्रकार का उपद्रव (अशांति) न हुआ। उसके कठोर शासन से वहाँ लूट-मार बंद हो गई। वह जिस कार्य को आरंभ करता था, उसी में उसे सफलता प्राप्त होती थी; उसके सब मनोरथ सिद्ध होते थे।

एक बार अफ़ग़ान जातियों ने ऐमलख़ाँ (Aimal Khan) के नेतृत्व में एक महान् विद्रोह कर दिया था, परंतु उसने एक बढ़िया युक्ति काम में ली। उसने प्रत्येक जाति के सरदार को इस आशय का पत्र लिखवाया कि तुम अपने सरदार से यह पूछो कि वह जीती हुई भूमि को अपने सब सैनिकों और संबंधियों को बिना पक्ष-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पात के बराबर बाँट देगा या नहीं। इससे तुम्हें यह ज्ञात हो जायगा कि वह कहाँ तक पक्षपात-रहित और न्यायी है। उसके सिपाहियों ने ऐसा ही किया। ऐमलख़ाँ ने पहले तो यह कहा कि इतनी थोड़ी भूमि इतने बहुसंख्यक मनुष्यों में नहीं बाँटी जा सकती। इससे सैनिक बिगड़ गए, जिसका फल यह हुआ कि उसे भूमि का विभाग करना पड़ा। परंतु उसमें भी उसने यह भूल की कि अपने संबंधियों को अधिक भूमि का भाग दिया और सैनिकों को कम। इससे लोगों का विश्वास जाता रहा, और उनमें से अधिकांश उसका साथ छोड़-कर चले गए। इस उपाय से शासक ने उस महान् विद्रोह को बिना युद्ध ही शांत कर दिया। वह प्रत्येक राज-कार्य में अपनी पत्नी (बेगम) की, जिसका नाम साहिबाजी था, सलाह लेता था। वह अलीमर्दानख़ाँ की पुत्री थी, जो शाहजहाँ के दरबार में उच्चकोटि का कर्मचारी था। वह राज-कार्य में बड़ी कुशल थी। यथार्थ में वही काबुल की शासन करनेवाली थी। उपर्युक्त विद्रोह भी उसकी ही चातुरी से शांत किया गया। एक दिन औरंगज़ेब ने यह समाचार काबुल से सुना कि अमीरख़ाँ की मृत्यु हो गई है। उसने शीघ्र अरशदख़ाँ (Arshad Khan) को, जो पहले काबुल का दीवान रह चुका था, बुलाकर कहा कि "एक आपत्ति प्रकट हुई है। अमीरख़ाँ की मृत्यु हो गई है। उसके उत्तराधि-कारी की नियुक्ति के पूर्व ही वहाँ उपद्रव होने की आशंका है।"

भूतपूर्व दीवान ने शीघ्र उत्तर दिया कि आप कुछ चिंता न करें। जब तक साहिबाजी जीवित हैं, तब तक आप किसी प्रकार की अशांति का भय न करें। वही वास्तव में अफ़ग़ानिस्तान में शासन करती थीं, अमीरख़ाँ तो नाम-मात्र का शासक था। सम्राट् ने शीघ्र बेगम साहिबाजी के नाम यह आज्ञा-पत्र भेज दिया कि जब तक ख़ाँसाहब का उत्तराधिकारी न आवे, तब तक तुम्हीं उस प्रांत का शासन करो। यह अधिकारी उक्त घटना के दो वर्ष उपरांत भेजा जा सका।

अमीरख़ाँ की मृत्यु एक घाटी में हुई थी। उसकी चतुर भार्या ने किसी को यह समाचार प्रकट नहीं होने दिया, जब तक कि वह पहाड़ियों से निकलकर अपनी राजधानी के निकट सुरक्षित स्थान में न पहुँच गई। एक मनुष्य को अमीरख़ाँ के भेष में पालकी में बैठा दिया, और आप प्रतिदिन सेना का निरीक्षण करती और सलामी लेती। इस प्रकार निर्विघ्न अपने स्थान राजधानी में आकर फिर अपने पति की मृत्यु का समाचार उसने प्रकट किया।

विभिन्न सरदारों ने उसके शोक में सहानुभूति प्रकट करने को अपने दूत भेजे। उन्हें उस चतुर स्त्री ने यह कहलाया कि तुम अपना उचित वेतन लेते रहो, लूट-मार मत करो और पूर्ववत् आज्ञा-पालन करते रहो, नहीं तो तुमको इसका उचित दंड दिया जायगा। सब सरदारों ने उसकी न्याय-प्रियता से संतुष्ट होकर उसके प्रति अपने राज्य-भक्ति के भाव प्रकट किए, और किसी प्रकार का उपद्रव नहीं किया।

युवावस्था में भी वह इतनी ही चतुर और साहस-युक्त थी। एक समय की घटना है कि वह एक पालकी में सवार जा रही थी कि उधर से बादशाह का हाथी, जो मस्त था, मार्ग में सामने आया। ज्यों ही वह हाथी पालकी की तरफ़ उसको सूँड़ से उलट देने के अभिप्राय से आगे बढ़ा, त्यों ही वह पालकी से उतर पड़ी, और मार्ग के निकट एक व्यापारी की दूकान में चली गई, और किवाड़ बंद कर लिए। इस प्रकार का व्यवहार उस समय की पर्दे की प्रथा के प्रतिकूल था। इस धृष्टता पर उसका पति उससे रुष्ट हुआ, परंतु जब बादशाह शाहजहाँ को इसकी सूचना हुई, तब उसने ख़ाँसाहब को बुलाकर समझाया कि तुम्हारी गृह-पत्नी ने यह साहस का कार्य करके तुम्हारी आबरू बचाई, क्योंकि यदि हाथी उसे पालकी पर से गिराता और उसका वस्त्र दूर होकर उसे नग्ना-वस्था में लोगों के सम्मुख कर देता, तो कितनी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मान-हानि होती। ख़ाँसाहब ने यह बात मान ली, और अपनी अप्रसन्नता दूर कर दी। काबुल के उच्च पद से जब उसने अवसर ग्रहण किया, तब यात्रा के निमित्त मक्का और मदीना गई। वहाँ दरिद्रों और फ़क़ीरों को प्रचुर द्रव्य दान किया, और बड़ा यश प्राप्त किया।

ब्रह्मदत्त मिश्र एम्० ए०

× × ×

३. डाली

मत छूना इनको माली!

(१)

कलियों से पूछा जाकर,
भ्रमरों ने आँख मिलाकर,
चाहती हो यौवन कितना?
"कह देंगी सब, मुरझाकर।"
तब, छलक पड़ेगी लाली;
यह बोली डाली-डाली।

(२)

मत्त अनिल फैलाए कर,
थोड़ी-सी पत्ती लेकर।
गूँथे, नन्हीं मालाएँ—
बदले में सर्वस देकर।
"मत समझो भोली-भाली"
कह उट्ठी डाली-डाली।

(३)

मधुकर की गुंजारों में,
वीणा-सी झंकारों में,
रह-रहकर फिर बज उठतीं—
नव यौवन के तारों में—
"हा! उजड़ रही हरियाली!"
कँपती है डाली-डाली।

(४)

(पंखड़ियाँ हिला-हिलाकर,
गरदन को करके ऊपर,
सौरभ से पलकें नीची—
कर, अपनी तानों से भर।
फूलीं, मतवाली-ख़ाली;
चुपके-से डाली-डाली।)

(५)

"उजियाली-बीच अँधेरा,
संध्या में मुग्ध सबेरा,
मत छेड़ो, लेगा कोई—
इसमें भी आन बसेरा।"
श्यामल-से पत्तोंवाली;
फिर बोली डाली-डाली।

श्रीयुत "अधीर"

× × ×

४. कालिदास और शूद्रक

साहित्य-सुधा की ग्यारहवीं संख्या में "कालिदास और शूद्रक" शीर्षक एक संपादकीय सम्मति प्रकाशित हुई है। उसमें शूद्रक कवि को कालिदास तथा भवभूति से प्राचीन सिद्ध करने के लिये "वसुमती" के आधार पर शूद्रक कविकृत मृच्छकटिक नाटक में वसंतसेना का चारुदत्त के साथ और मदनिका का शर्विलक के साथ विवाह कराके शूद्रक के समय में वेश्या-विवाह का रिवाज होना प्रकट किया गया है, और यही शूद्रक की बहुप्राचीनता का प्रकृष्ट प्रमाण माना है।

इस लेख में लिखा है कि यह निर्विवाद है कि उस समय वेश्या-विवाह प्रचलित था। मृच्छकटिक में ब्राह्मण-पुत्र शर्विलक वेश्या मदनिका के साथ और ब्राह्मण चारुदत्त वेश्या वसंतसेना के साथ विवाह करता है। शर्विलक मदनिका से कहता है—

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वस्ति भवत्यै, मदनिके,

सुदृष्टः क्रियतामेष शिरसा वंद्यतां जनः

यत्र ते दुर्लभं प्राप्तं वधूशब्दावगुंठनम् ॥

हे मदनिके, तुम्हारा कल्याण हो, इस जन पर सुदृष्टि डालो, और इसकी शिर से बंदना करो, जिससे तुम्हें दुर्लभ वधू-शब्द का अवगुंठन प्राप्त हुआ है ।

यह सब देखकर अनुमान होता है कि शूद्रक कवि के समय वेश्या-विवाह का चलन था, किंतु कालिदास आदि के ग्रंथों में गणिका-विवाह का प्रसंग तक नहीं है । इससे यह सिद्ध होता है कि शूद्रक के समय पहले वेश्या-विवाह का चलन समाज में था, पीछे उठ गया इत्यादि ।

शूद्रक की रचना से तत्कालीन समाज में वेश्या-विवाह का प्रचलित होना अनुमान किया गया है । इससे साहित्य तथा समाज दोनो का संबंध है । इस कारण प्रत्येक समाज-साहित्य-सेवक के लिये यह विषय विचारणीय है, और इसी नाते हम भी इस विषय में यथामति अपना मत विद्यानुरागियों के विचारार्थ प्रकट करने का साहस करते हैं ।

शूद्रक के इस नाटक में युवा चारुदत्त और गुणानुरक्ता गणिका का सुरतोत्सव वर्णन किया गया है । इनके दांपत्य-प्रेम की कथा इसमें किंचिन्मात्र भी नहीं दीख पड़ती ।

प्रथम अंक के इन दो श्लोकों से स्पष्टतया प्रमाणित हो जाता है कि प्रेमी और प्रेमिका में परस्पर अनुराग था, किंतु दांपत्य-व्यवहार नहीं था । श्लोक ये हैं—

अवंतिपुर्यां द्विजसार्थवाहो युवा दरिद्रः किल चारुदत्तः

गुणानुरक्ता गणिका च यस्य वसंतशोभेव वसंतसेना ॥६॥

तयोरिदं तत्सुरतोत्सवाश्रयं नयप्रचारं व्यवहारदुष्टताम् ।

खलस्वभावं भवितव्यतां तथा चकार सर्वं किल शूद्रको नृपः ॥ ७ ॥

चारुदत्त विलासी ब्राह्मण था । उसमें ब्राह्मणोचित पूज्यत्व का अभाव था । वसंतसेना ब्राह्मणों को पूज्य समझती थी, ब्राह्मणों से ऐसा अनुराग करना पाप समझती थी । विलासी, गुणवान् और श्रोत्रियत्व-शून्य होने के कारण ही इसमें प्रेमांकुर प्ररोहित हुआ था । वसंतसेना उसको द्यूतकर शब्द से संबोधित करती थी, और अपने आपको उसकी गुणक्रीता दासी मानती और कहती थी ।

इसके सिवा चारुदत्त की विवाहिता पत्नी धूता और औरस पुत्र रोहसेन भी मौजूद थे । नायक-नायिका की संपत्ति, स्थान और परिवार भी पृथक्-पृथक् थे ।

इन सब बातों पर दृष्टिपात करने से यह सिद्ध नहीं होता कि वसंतसेना चारुदत्त की विवाहिता भार्या थी ।

नाटक के दशम अंक के ४३वें श्लोक में विवाह शब्द आता है । संभव है, उसी के आश्रय से विवाह-संबंध का अनुमान किया जाता हो, अतः उस श्लोक के शब्द, अर्थ और भाव पर भी विचार कर लेना चाहिए ।

जिस समय चारुदत्त फाँसी पर खड़ा है, मृत्यु-समय के सूचक लाल वस्त्र और फूल-माला गले में पहने हुए है, सूली की घोषणा करनेवाले अमंगल-सूचक बाजे बज रहे हैं, जीवन अवशेष एक-एक क्षण गिन रहा है, उसी समय एक भिक्षुक के साथ वसंतसेना वहाँ पर लाई जाती है, जिसको देख, पहचान एकाएक अत्यंत प्रसन्न और प्रफुल्लित होता हुआ चारुदत्त वसंतसेना से कहता है, और उसके जीवित होने के कारण जो इसके भी प्राण बच गए, उसकी प्रसन्नता प्रकट करता है । प्रिये, पश्य ।

रक्तं तदेव वरवस्त्रमियं च माला,

कांतागमेन हि वरस्य यथा विभाति ।

एते च वध्यपटहध्वनयस्तथैव,

जाता विवाहपटहध्वनिभिः समानाः ॥४३॥

हे प्रिये, देखो । वर के धारण करने योग्य वस्त्र और माला जिस प्रकार विवाह के समय शोभा देती है, उसी प्रकार यह वस्त्र और माला इस समय तुम्हारे आने से शोभा दे रही है । यह वध्यपटह की ध्वनियाँ भी इस समय विवाह-पटहध्वनियों के समान हो गई हैं ।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस श्लोक में "यथा", "तथैव", "समानाः" पदों से स्पष्ट रूप से विदित होता है कि रक्त वस्त्र, माला और बाजे प्राण-दंड के लिये थे, किंतु विवाह के लिये न माला पहनाई गई, न बाजा बजाया गया। विवाह-संबंध होने की इसमें कोई चर्चा नहीं है। बल्कि विवाह का निषेध है।

इस श्लोक में तो रूपकालंकार के द्वारा वध्य स्थान को विवाह-स्थान का रूपक देकर एक अमंगल-सूचक सामग्री को मंगलमय बनाते हुए बड़ी कुशलता के साथ दुःखांत रूप में समाप्त होते हुए नाटक को सुखांत बनाकर कवि ने अपनी काव्य-चातुरी प्रदर्शित किया है।

चारुदत्त के विवाह के संबंध में विचार करने के पश्चात् अब शर्विलक के विवाह-संबंधी प्रमाणों पर विचार करना चाहिए।

शर्विलक ब्राह्मण-पुत्र, विलासी और मदनिका में अनुरक्त था। वसंतसेना की सेविका वेश्या मदनिका भी इसको प्यार करती और चाहती थी। मदनिका के बदले में वसंतसेना को निष्क्रय रूप द्रव्य देकर प्रसन्न करने के निमित्त उसने चारुदत्त के घर चोरी की। उसमें वसंतसेना का धरोहर-रूप में रक्खा हुआ आभूषण उसके हाथ पड़ा। आभूषण लेकर वह प्रसन्नता के साथ मदनिका के पास आया, और प्रेमालाप के साथ उसको दिखलाकर कहा कि अब तो तेरी स्वामिनी इस द्रव्य को लेकर तुझे मेरे साथ जाने और स्वच्छंदता से रहने की आज्ञा दे देगी? इस पर मदनिका आभूषणों को देखकर व्याकुल हो उठी; अलंकार पहचानकर घबराई। चारुदत्त के घर चोरी करना भी उसे अच्छा नहीं लगा। यह देख शर्विलक अप्रसन्न होकर वहाँ से जाने लगा। तब मदनिका ने रोककर सब वृत्तांत सुनाया, और इस चोरी के दोष से बचाने के लिये यह उपाय बतलाया कि शर्विलक चारुदत्त का आदमी बनकर वसंतसेना को उसका आभूषण लौटाने के लिये चारुदत्त की ओर से आना प्रकट करे। शर्विलक ने इसे स्वीकार किया। मदनिका ने वसंतसेना के कमरे में जाकर कहा, आर्ये! आर्य चारुदत्त के यहाँ से यह ब्राह्मण आया है। वसंतसेना ने पूछा—तूने कैसे जाना कि वहीं से आया है? उत्तर मिला कि आत्म-संबंधियों को भी क्या मैं नहीं जानती? वसंतसेना शर्विलक और मदनिका की प्रणय-लीला जान चुकी थी, गुप्त बातें सुन चुकी थी, और उनके मनोभावों को समझ चुकी थी, इस कारण उसने मदनिका की मनोरथ-सिद्धि और चारुदत्त की अनुरक्ति से प्रसन्न होते हुए शर्विलक को अंदर बुला लिया। वह अंदर गया और विलक्षणता से स्वस्ति भवत्यै कहकर आभूषण देते हुए बोला—सार्थवाह (चारुदत्त) ने तुमसे निवेदन कराया है कि मकान के जर्जर होने के कारण इसकी रक्षा नहीं हो सकती, इसलिये अपनी धरोहर वापस सँभाल लीजिए। इतना कहकर मदनिका के हाथ में आभूषण देकर चल दिया। वसंतसेना ने उसे फिर बुलाया और कहा, चारुदत्त के पास मेरा भी प्रति-संदेश ले जाओ। वह बोला, क्या प्रति-संदेश है? वसंतसेना ने कहा, तुम मदनिका को ले जाओ, और कहना कि मुझे मदनिका मिल गई। शर्विलक बोला, मेरी समझ में यह बात नहीं आई। उसने कहा, मैं समझती हूँ। देखो, आर्य चारुदत्त ने मुझसे कहा था कि जो इन आभूषणों को लेकर आवे, उसे तुमको मदनिका देनी चाहिए, अतः वही तुमको इसे दे रहा है, ऐसा समझिए। शर्विलक ने मन में सोचा, अरे! इसने मेरी सब चालाकी जान ली, यह तो मेरे गुप्त रहस्य को समझ गई। प्रकट में बोला, धन्य चारुदत्त धन्य। गुणवान् ऐसे ही होते हैं। उसी समय वसंतसेना ने रथवान को बुलाकर रथ तैयार कराया, और मदनिका से कहा, हंजे मदनिके! सुदृष्टां मां कुरु। दत्तासि। आरोहप्रवहणम्। स्मरसि माम्। हे मदनिके, मुझे अच्छी तरह देख। तू दे दी गई है। अब रथ पर चढ़। मुझे याद करती रहना। मदनिका यह वाक्य सुनकर रोने लगी, और उसके पाँवों पड़ती है। कहती

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY,
Jangamwadi Math, VARANASI,
Acc. No. ....

है, मुझे तुमने त्याग दिया! इस पर वसंतसेना ने कहा कि इस समय तो तू ही वंदनीया है। जा, रथ पर चढ़। मुझे स्मरण करती रहना।" तब शर्विलक वसंतसेना से कहता है—स्वस्ति भवत्यै (तुम्हारा कल्याण हो) और हे मदनिके, "सुदृष्टः क्रियतामेष शिरसा वंद्यतां जनः; यत्र ते दुर्लभं प्राप्तं वधूशब्दा-वगुंठनम्।" इस जन (वसंतसेना) को अच्छी तरह देख लो, और इनको शिर से वंदना करो, जिससे तुम्हें दुर्लभ वधू शब्द का अवगुंठन प्राप्त हुआ है।

इतनी बातचीत होने के पश्चात् मदनिका और शर्विलक वसंतसेना से बिदा होकर रथ में चढ़कर प्रस्थानित हुए।

इस अवतरण से पाठक स्पष्ट समझ गए होंगे कि नायक-नायिका के मनोभावों को पहचानकर उदाराशया वसंतसेना ने तस्कर को भी अभि-लषित पुरस्कार-रूप मदनिका को दिया है, नकि उसका विवाह विधि से करके कन्यादान किया है।

एक बात और। वह यह कि इस श्लोक में 'दुर्लभ' शब्द आया है। सर्व-साधारण स्त्रियों को वधू-शब्द दुर्लभ क्योंकर हो सकता है। उनको तो विवाह-संबंध अवश्यंभावी है, और वेश्या-स्त्रियों को 'वधू' शब्द की प्राप्ति सुलभ नहीं है, क्योंकि उनके विवाह की प्रथा नहीं, न कोई एक पतिवाली वेश्या ही हो सकती है। इसी आशय को लेकर यह 'दुर्लभ' शब्द आया है, जब कवि 'वधू' के साथ दुर्लभता का प्रयोग एक वेश्या के लिये कर रहा है, तो कैसे कहा जा सकता है कि उस समय में वेश्या-विवाह का रिवाज था, बल्कि यही कहा जायगा कि ऐसा रिवाज नहीं था। अन्यथा उस समय की स्थिति बतलाने के लिये दुर्लभ शब्द लाने की क्या आवश्यकता थी। हम तो यही समझते हैं कि इस घटना से कोई वेश्या-विवाह के भ्रम में न पड़ जाय, इसी के निराकरणार्थ पहले ही कवि ने "यत्र ते दुर्लभं प्राप्तं वधूशब्दावगुंठनम्" लिखा है।

इसमें संदेह नहीं कि शूद्रक कवि एक प्राचीन कवि है। उसके समय का पता लगाने के लिये उसी के नाटक में बहुत कुछ सामग्री भरी हुई है, जिससे कवि-काल का निर्णय करने में सहायता मिल सकती है। उसकी प्राचीनता के प्रमाण में जो उसी की रचना से तत्कालीन समाज में वेश्या-विवाह प्रचलित होना कहा जाता है, यह विचारणीय है। कवि के शब्दों से स्पष्टतया यह प्रथा सिद्ध नहीं होती। आशा है, विद्यानुरागी और साहित्य-सेवी विद्वज्जन इस विषय पर विशेष प्रकाश डालेंगे।

बलभद्र शर्मा द्विवेदी

× × ×

५. हृदयोद्गार

कौन हाय! खिरकी में थिरकी फिरैगी अब,
कौन नित्त सैनन सों चित्त बहरावेगी;
कौन कंज-लोचन कुरंग-मद-भंजन वे,
रंजन रसीले मीन खंजन नचावेगी?
कौन प्रेम-पाती हिय सुधा बरसाती अब,
'कुसुमाकर' प्रेमी के कारन पठावेगी;
बाम अलबेली मेरी प्रमुदा नबेली हाय!
कौन दिन फेर अब अंक तू लगावेगी?

देवीप्रसाद गुप्त (कुसुमाकर)
बी० ए०, एल्-एल्० बी०

× × ×

६. स्वर्गीय सुठालियाधीश

ईश्वर के विलक्षण नियम किसी की समझ में नहीं आते। जिस घर में चित्र के पुत्र की भी परम अभिलाषा हो, उसमें 'पुत्रः स्वप्नं न दृश्यति' को पक्का कर दिया जाता है। और जहाँ खाने को नाज नहीं, वहाँ पुत्रों की कमी नहीं रहती।

इसी प्रकार संसार-हित से सदैव विमुख मनुष्य

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बहुत दिनों तक जीता रहता है, और जाति, देश और नाम को निरंतर समुन्नत और विख्यात करनेवाला मनुष्य बहुधा छोटी अवस्था में ही काल के गाल में चला जाता है।

स्वर्गीय महाराज शंभूसिंहबहादुर सुठालियाधीश दूसरी श्रेणी के पुरुषों से संबंध रखते थे। कुटिल काल ने उनको भी अधिक दिनों तक देश-हित में रत नहीं रहने दिया।

आप मध्यप्रदेश के सुठालिया-नामक एक राज्य के अधीश्वर थे। आपके पिता का नाम माधवसिंह और पितामह का शिवदानसिंह था।

महाराज शंभूसिंह संवत् १६३५ के फाल्गुन-शुक्क १२ बुधवार, ता० ५ मार्च, सन् १८७६ को उत्पन्न हुए थे।

आपका विद्यारंभ पाँचवें वर्ष में हुआ था। आठवें वर्ष में आपके पिता का स्वर्गवास हो गया।

सोलह वर्ष की आयु तक आप विद्याभ्यास करते रहे। इतने समय में आपने हिंदी, अँगरेज़ी और संस्कृत का व्यवहार योग्य अभ्यास कर लिया था। सत्रहवें वर्ष की अवस्था में आपका प्रथम विवाह हुआ, और उसी समय में आपके ऊपर राज्य-भार आ पड़ा। उन्नीसवें वर्ष में आपकी माता का देहांत हो गया।

पूर्ण युवा होने पर आपका दूसरा विवाह हुआ, और उस स्त्री से एक पुत्र भी उत्पन्न हुआ, किंतु वह अधिक दिनों तक जीवित न रह सका।

स्वर्गीय सुठालियाधीश देश-सेवा और विद्या-प्रसार में सदैव निरत रहे थे। राज्याधिकार प्राप्त होने के बाद से आपने अपने राज्य में अनेक सुधार किए। और इसके फल-स्वरूप राज्य की आय भी बहुत कुछ बढ़ गई थी। प्रजा-हित के लिये स्कूल, पाठशाला, औषधालय तथा संरक्षण के लिये धनागार, शस्त्रागार और सेना-समूह की भी आपने योजना की थी।

विद्या में आपकी बड़ी अभिरुचि थी। आपने ज्ञान-प्रदीप, ज्योतिष-कल्पद्रुम और जिनेंद्रलीला आदि ग्रंथों की रचना करके यह परिचय दे दिया था कि एक से अधिक विषयों में आपकी पैठ है।

आपको संगीत-कला से भी प्रेम था। आपका स्वभाव बड़ा मिलनसार था। आपको रत्नों की भी अच्छी परख थी। एक बार जयपुर से आपने पन्ने मँगवाए थे। जौहरी ने उनमें एक पन्ना अशुभ श्रेणी का भेज दिया। आपने उसे तुरंत वापस लौटाया, उससे होनेवाले अनिष्टकारी कारण लिख दिए, और दूसरा पन्ना मँगवाया। जौहरी ने आपकी परख की बड़ी प्रशंसा की।

हनूमान शर्मा

× × ×

७. दो सहेलियाँ

"बहन, मैं क्या-क्या अपना दुखड़ा तुम्हारे सामने रोऊँ? न मैं जीने में और न मरने में! इस जीने से—इज़्ज़त खोकर जीने से—मरना ही भला है। कभी-कभी इच्छा होती है कि चुपचाप अफ़ीम खाकर सो रहूँ, फिर न रहेगा बाँस और न बजेगी बाँसुरी! यदि मरने के बाद किसी ने मेरी ज़िंदगी में थूका भी, तो मुझे क्या? आप मरे जगत् प्रलय है।"

"नहीं बहन, ऐसा पाप स्वप्न में भी न करना। हाथी के पीछे यों ही कुत्ते भूँका करते हैं। पीठ-पीछे तो बड़ों-बड़ों की भी निंदा होती है। तुम्हारे बाबूजी के सामने—परमेश्वर उन्हें हज़ार वर्ष तक ज़िंदा रक्खे—किसकी मजाल है, जो तुम्हारी बुराई में एक शब्द भी अपनी ज़बान से बाहर निकाल सके।"

"अरे! बाबूजी की भली चलाई। वह भी बेचारे मेरे कारण बहुत दुखी हैं। मेरे ही सबब से—मेरे ही कारण—मेरी बदनामी सुन-सुनकर बेचारी अम्मा ने प्राण दे दिए। उस समय अवश्य ही मुझे बड़ा कष्ट हुआ था। मैं फेंट बाँधकर उनका सामना करने को तैयार हुई थी। मैंने स्पष्ट ही कह दिया था कि मैं ऐसी-ऐसी मिथ्या बदनामी से डरकर कॉलेज का अध्ययन न छोड़ूँगी।"

"परंतु क्या तुम पढ़ने के लिये कॉलेज जाती थीं? तुम्हारे सब गुण मेरे पेट में हैं।"

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"और क्या तुम्हारे गुण मेरे पेट में नहीं ?"

"अस्तु, जाने दो इन बातों को ! बाबूजी बेचारे नहीं जानते थे कि मैंने वह इलाज कर लिया है, जिसकी बदौलत ख़ूब गुलछर्रे उड़ाने और आजीवन अविवाहिता रहने पर भी कभी गर्भ नहीं रहने का ! उन्होंने मेरी एक न सुनी। उनके ख़र्च बंद करने पर मैंने छात्रवृत्ति और ट्यूशन से गुज़र कर लेने की धमकी दी, सो उन्होंने न-मालूम प्रिंसिपल से क्या कहकर मुझे कॉलेज से उठा लिया। तब से यह घर भला और मैं भली।"

"तब अब गई-गवाई बातों के लिये क्यों मरने बैठी हो ?"

"अरे गई-गवाई ! बहन, तुम इसे गई-गवाई बताती हो। जिनके यहाँ मेरा संबंध होने जा रहा था, उन्हें मालूम हो गया कि मेरे आजीवन संतान न होगी। अब भला तुम्हीं बतलाओ, मुझसे शादी कौन करेगा ? कॉलेज में जो प्रेमी बनने का दावा करनेवाले थे, वे सब अँगूठा दिखलाकर मुकर गए। एक ऐसा भी है, जो अपने घरवालों की—माता-पिता की—कुछ परवा न कर मुझसे शादी करने को तैयार हो सकता है। हो क्या सकता है, उसे भूख मारकर तैयार होना पड़ेगा; किंतु ऐसे जुआरी, शराबी और क्षय के रोगी से ब्याह करके मैं कितने दिन सुख से जी सकती हूँ, फिर वह चमार का बेटा मुसलमान है। पहले ही कड़वी करेली और फिर नीम चढ़ी। पिताजी कट्टर समाजी होने पर भी इस संबंध से कदापि रज़ामंद नहीं हो सकेंगे। इसलिये उसका प्रतिज्ञा-पत्र—उसका इक़रारनामा—जो समय पर काम-पीड़ा से अंधी होकर लिखाया था, दियासलाई लगा, बतला देने योग्य है।"

"अच्छा तो फिर कुछ दिन धैर्य धारण करके चुपचाप ऐसे ही मार्ग की प्रतीक्षा करो। भगवान् कोई-न-कोई रास्ता निकालेगा।"

"हाँ ! यह ठीक है, किंतु वह हज़रत चुप होनेवाले नहीं। लोगों में बदनामी करते हैं, और नालिश करने की धमकी देते हैं।"

"क्यों ? नालिश करने का मतलब ?"

"मतलब यही कि शारदा-क़ानून पास होने से पूर्व उनके यहाँ मेरा संबंध पक्का होकर छः हज़ार रुपया ठहरौनी का क़रार पाया था। उस समय मेरी उमर ११ साल ६ महीने और २० दिन की थी। लड़का पढ़ा-लिखा है। बी० ए० में पढ़ता है। तंदुरुस्त है। होनहार है, और मेरे पिता के केवल एक मैं ही इकलौती पुत्री हूँ। क़ानून पास हो जाने पर उनका आग्रह था कि उसकी अवहेलना करके शादी कर दी जाय। वे लोग स्वयं जेल जाने को तैयार थे। शादी करानेवाले पंडितजी को उन्होंने तैयार कर लिया था। केवल मेरे पिताजी की रज़ामंदी की आवश्यकता थी। पिताजी, जिन्हें मैं बाबूजी कहा करती हूँ, उनके कहने-सुनने से तैयार हो गए थे। अच्छा होता, यदि मैं उसी समय उनके गले मढ़ दी जाती। और तो मैं कुछ नहीं जानती। मैं इन बातों को तब समझती भी ऐसा नहीं थी, किंतु न-मालूम क्यों मुझे उनको देखते रहना—छिप-छिपकर देखना—पसंद था।"

"हाँ ! बहन, वह समय ऐसा ही होता है। परंतु फिर ?"

"फिर यह हुआ कि पिताजी को उनके समाजी मित्रों ने बहकाया। देशोन्नति के लंबे-लंबे लेक्चर सुनाए। बस, इसी का परिणाम यह हुआ कि शारदा-ऐक्ट के इंतज़ार में ज्यों-ज्यों समय निकलता गया, मैं कॉलेज के मित्रों की प्यारी बन गई, और मेरे एक प्रेमी की सलाह से मुझे संतान-निग्रह की औषध सेवन कर प्रेमांधता अथवा कामांधता में आजीवन नष्ट हो जाना पड़ा। मैं किस मुँह से उन्हें अपनी ससुरालवाले कहूँ, अपने इस कालिख लगे मुख से मुझे यह कहने का साहस नहीं होता कि मेरे भावी पति और उनके पिता अवश्य ही शारदा-क़ानून की मार्ग-प्रतीक्षा करने के लिये सिर के बल तैयार थे, किंतु चौदह साल—मेरी उमर के चौदह वर्ष समाप्त होने से पूर्व ही मेरे खुल खेलने का भंडाफोड़ हो गया। सुनती हूँ, मेरे चरित्र से दुःखित होकर उन्होंने आजीवन कुँवारे रहने का व्रत कर लिया है।"

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"अच्छी बात है। तब तुम उन्हें पत्र लिखकर क्षमा माँगो। संभव है, शायद वह तुम्हारे रूप-लावण्य पर—तुम्हारी विद्या-बुद्धि पर—लट्टू होकर तुम्हें स्वीकार कर लें।"

"सो मैं सब कर हारी। इन तिलों में तेल निकलने की अब आशा नहीं।"

"बहन, तुमने कॉलेज के डिबेटिंग-क्लब में युवती-विवाह और उनके ब्रह्मचर्य-व्रत-पालन करने पर एक बढ़िया निबंध पढ़कर पदक और पारितोषिक पाया था न?"

"हाँ! ऐसी-ऐसी बातों ने ही तो मेरे बाबूजी पर मेरे चरित्र की पवित्रता के लिये मेरा विश्वास जमाया। वह बेचारे क्या जानें कि इस ढोल के अंदर इतनी पोल है। मैं इधर जब घर पर रहती थी, तब से चरित्र-भ्रष्टा युवतियों का नाम आते ही थूकती थी। मैं अपने माता-पिता के समक्ष बिल्कुल पाक-साफ़ दूध की धोई बनती थी, और अपने युवा और युवती मित्रों में पहुँचते ही सबकी प्यारी बन जाती थी। वहाँ पर भी मेरा अंतरंग और बहिरंग चरित्र भिन्न-भिन्न था। परंतु पाप सच्चा वही, जो सिर पर चढ़कर बोले।"

"हाँ! मैं जानती हूँ। मैं क्या तुमसे अलग थी। तुम्हारे प्रेम के लिये न होती प्यारेलाल और प्रियतमलाल में बहस, और न होता भंडाफोड़। मैं चाहती थी कि प्यारेलाल मेरे होकर रहें और प्रियतमलाल तुम्हारे। तुम प्यारेलाल को चाहनेवाली थीं। बस, इस बात से कुढ़कर—निराश होकर प्रियतमलाल ने तुम्हारा और मेरा कच्चा चिट्ठा लिखकर तुम्हारे बाबूजी को दे दिया।"

"बेशक उसी हत्यारे ने मेरा सर्वनाश किया। जब पिताजी ने उसका भरोसा न किया, तब उसने मेरे भावी पति को लिखा, और उसके ध्यान न देने पर उसके पिताजी को जा सुनाया, और संतान-निग्रह की दवा सेवन करने का पूरा प्रमाण भी दे डाला। बहन, बस इस तरह उस सत्यानासी ने मेरा सत्यानास किया। तुम अवश्य ही भाग्यशालिनी हो—तुमसे वह प्रतिकूल नहीं है, और मेरे अनुभव से तुमने सँभलकर मीठी-मीठी बातें बनाते हुए प्यारेलाल से किनारा कर लिया है, नहीं तो सच मानिए, तुम्हारी मुझसे भी अधिक फ़ज़ीहती करके प्रियतमलाल तुम्हारी इज़्ज़त दो कौड़ी की कर डालता। और अब भी सँभलकर चलना। यह एक भयंकर राक्षस है। सोने का कटोरा हलाहल से भरा है।"

"हाँ! तुम सत्य कहती हो। परंतु बेचारे प्यारेलाल की भी बड़ी दुर्दशा है। उसके ऐसे चरित्र से दुःखित होकर उसके माता-पिता ने उसे निकाल दिया। ख़र्च देना बंद कर दिया। उसका गोदनामा मंसूख़ कराया। पैसे के अभाव से उसका पढ़ना बंद और जहाँ नौकरी के लिये जाता है, वहाँ बस no vacancy।"

"हाँ! मेरी भी शायद यही दुर्दशा होनेवाली है। पिताजी मुझे मेरे अधिकार से ख़ारिज कर अपना धन-दौलत, स्थिर और चल सारा सामान बस कृष्णार्पण करनेवाले हैं।"

"परंतु तुम्हारी ससुरालवाले नालिश करने की धमकी किस सिद्धांत पर देते हैं?"

"पिताजी ने मेरे चौदह साल पूरे होने पर छः हज़ार रुपए दहेज़ के देने और मेरी शादी करने का इक़रारनामा लिख दिया था। ससुरालवालों ने चरित्र का दोष लगाकर संतान-निग्रह की दवा सेवन करने के कारण इस कंट्रैक्ट को तोड़ दिया, और अब अपने हर्जाने का दावा करने पर उतारू हुए हैं।"

लज्जाराम (बूँदी)

एकदम मुफ़्त

स्तंभनराज की नमूने की गोलियाँ उन लोगों को मुफ़्त भेजी जायँगी, जो अपने यहाँ के पाँच आदमियों के पते लिखकर भेजेंगे। यह गोलियाँ काम-शक्ति को बढ़ाकर वीर्य पुष्ट करती हैं, और स्तंभन-शक्ति को बढ़ाती हैं। एक शीशी का दाम १।)

पता—आयुर्वेदप्रचारक कंपनी, हरद्वार (यू॰ पी॰)

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कला | लीला | **तूलिका** | स्वर्ण | भोज

तूलिका

एक-से-एक बढ़िया कहानियों का सुंदर संग्रह

लेखक—

हिंदी के उदीयमान कहानी-ले० श्रीविनोदशंकर व्यास

अठारह कहानियों के इस संग्रह में कुछ ऐसी जान डालनेवाली शक्ति है कि पढ़नेवालों के दिल और दिमाग़ दोनों पर असर हो जाता है। सच तो यह है कि व्यासजी दिल फड़का देनेवाली कहानियाँ लिखते हैं। तूलिका आप ही की प्रतिभा-पूर्ण कहानियों का संग्रह है। एक ख़ास बात इन कहानियों में यह है कि लेखक सीपी में समुद्र भर देता है।

दीपदान | शय्या पर | प्रेमदूत | नशेवाला | रसिया

उत्कंठा | पगली | मोह | गायक | समाधि

नौ सुंदर चित्रों से समलंकृत

मूल्य १)
सुंदर जिल्द १।।)

चित्रकार | अकिंचन | विलंब | प्रतीक्षा

गंगा पुस्तकमाला कार्यालय लखनऊ

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

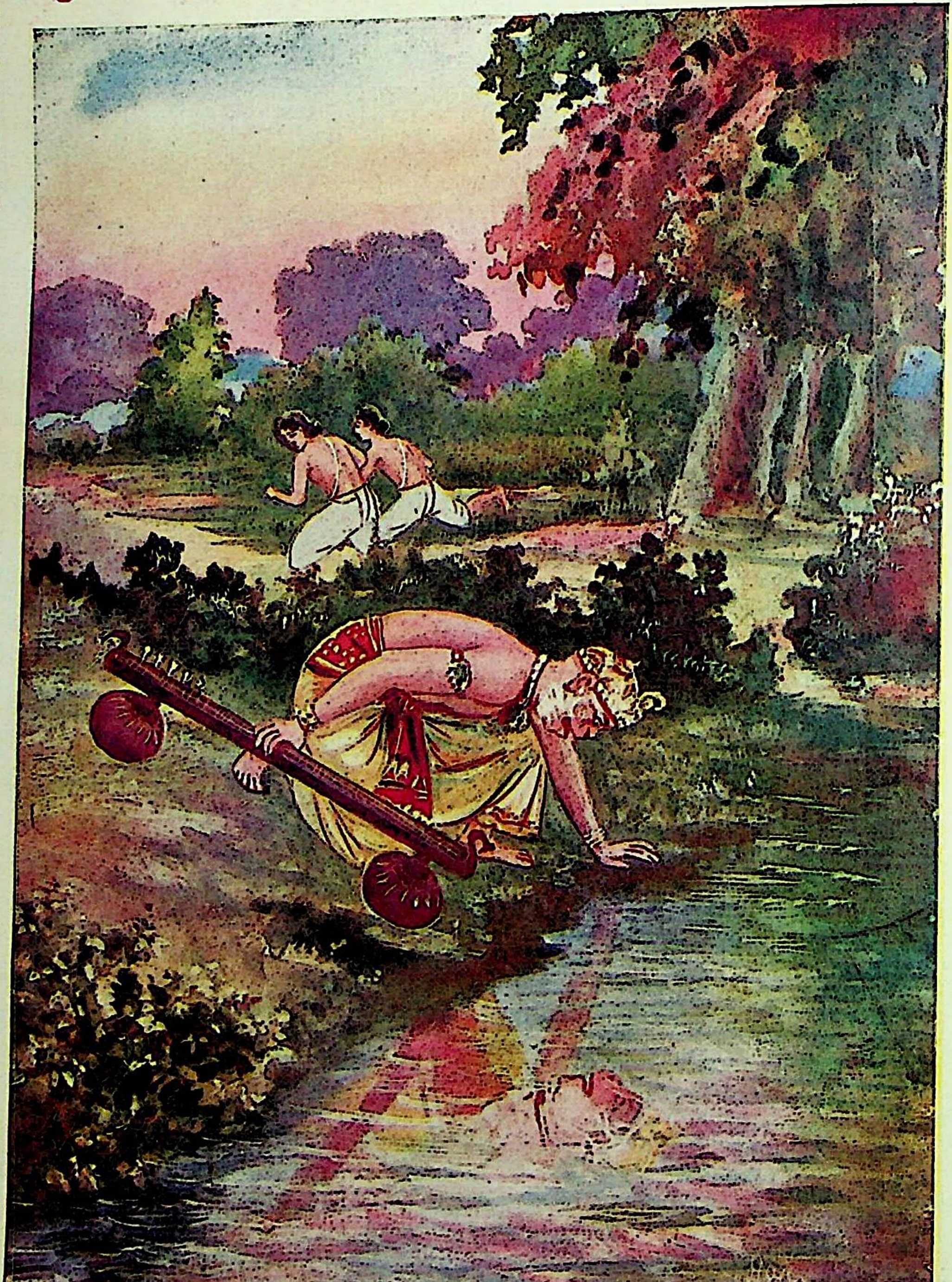

नारद-मोह

तब हर-गन बोले मुसुकाई, निज मुख मुकुर बिलोकहु जाई।
अस कहि दोउ भागे भय-भारी; बदन दीख मुनि बारि निहारी।

Ganga Fine Art Press, Lucknow.

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

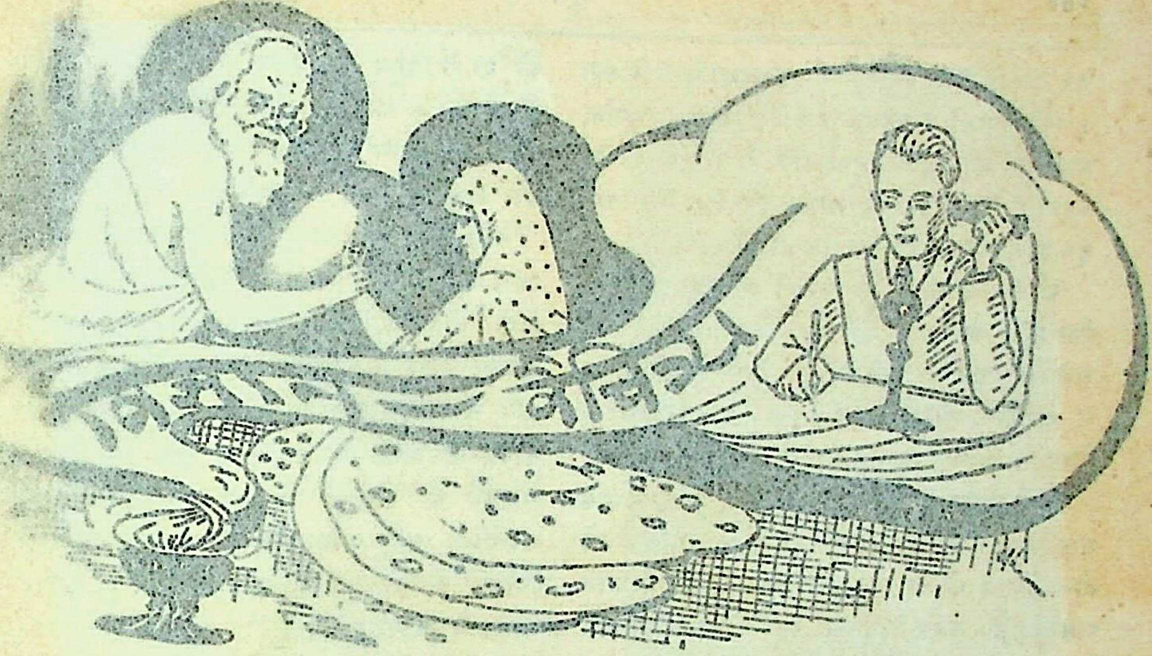

विज्ञान-साम्राज्य में जर्मनी का स्थान

योरपीय महासमर के समय एक छोटे-से देश जर्मनी ने जो साहस और वैज्ञानिक कौतूहल कर दिखाया था, उसने ही संसार के हृदय पर जर्मनी के वैज्ञानिक वैभव की छाप लगा दी थी। वहाँ की विज्ञानशाला का इसके अतिरिक्त और क्या परिणाम हो सकता है? नोबल-पुरस्कार-विजेताओं की नामावली देखने से भी हम एक बड़े ही आश्चर्य-जनक निर्णय पर पहुँचते हैं।

आप जानते ही होंगे कि जिस व्यक्ति ने मनुष्यों के टुकड़े-टुकड़े उड़ा देनेवाले भयंकर पदार्थ बारूद का आविष्कार किया था, उसी ने संसार की सभ्यता के विकास के लिये एक अत्यंत सुंदर चीज़ को स्थापित कर दिखाया था। उसी ने नोबल-पुरस्कार की स्थापना की थी। प्रतिवर्ष दिसंबर मास में इन पाँच पुरस्कारों का वितरण होता है। एक पुरस्कार 'शांति' के लिये, एक साहित्य के लिये और तीन विज्ञान के लिये दिए जाते हैं। विज्ञान के अंदर तीन भाग किए गए हैं—एक भौतिक विज्ञान, दूसरा रसायन-शास्त्र और तीसरा शरीर-विज्ञान तथा वैद्यक-शास्त्र। प्रत्येक पुरस्कार लगभग ९००० पौंड का होता है।

इस पुरस्कार को प्राप्त करनेवाले भाग्यशाली को नवंबर मास में तार के द्वारा ख़बर दी जाती है, और वह बड़े दिनों के १० या १५ दिवस पूर्व स्टाक होम (स्वीडन की राजधानी) में पहुँच जाता है। वहाँ पर उसका ख़ूब स्वागत होता है, और आनंद के दिवस कटते हैं।

अभी हाल में इन पुरस्कार-विजेताओं की नामावली प्रकाशित हुई है। हमारा संबंध यहाँ केवल विज्ञान-विजेताओं से ही है। गत ३० वर्षों के पुरस्कारों पर ध्यान देने से हम जर्मनी को भाग्यशाली कहे बिना नहीं रह सकते।

पुरस्कार देनेवाली कमेटी के विषय में संसार में बहुत कम मतभेद है, तथा राजनीतिक परिस्थिति आदि के प्रभावों से वह बची रहती है।

रसायन-शास्त्र में जर्मनी का सबसे प्रथम नंबर है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सुफा

[illegible] त्रिलोकहु जाई ।
[illegible] भूमि वारि निहारी ।

Ganga Fine Art Press, Lucknow.

CC0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

१. विज्ञान-साम्राज्य में जर्मनी का स्थान

योरपीय महासमर के समय एक छोटे-से देश जर्मनी ने जो साहस और वैज्ञानिक कौतूहल कर दिखाया था, उसने ही संसार के हृदय पर जर्मनी के वैज्ञानिक वैभव की छाप लगा दी थी। वहाँ की शिक्षा-प्रणाली का इसके अतिरिक्त और क्या परिणाम हो सकता है? नोवल-पुरस्कार-विजेताओं की नामावली देखने से भी हम एक बड़े ही आश्चर्य-जनक निर्णय पर पहुँचते हैं।

पाठक जानते ही होंगे कि जिस व्यक्ति ने मनुष्यों के टुकड़े-टुकड़े उड़ा देनेवाले भयंकर पदार्थ बारूद का आविष्कार किया था, उसी ने संसार की सभ्यता के विकास के लिये एक अत्यंत सुंदर चीज़ को स्थापित कर दिखाया था। उसी ने नोवल-पुरस्कार की स्थापना की थी। प्रतिवर्ष दिसंबर माह में इन पाँच पुरस्कारों का वितरण होता है। एक पुरस्कार 'शांति' के लिये, एक साहित्य के लिये और तीन विज्ञान के लिये दिए जाते हैं। विज्ञान के अंदर तीन भाग किए गए हैं—एक भौतिक विज्ञान, दूसरा रसायन-शास्त्र और तीसरा शरीर-विज्ञान तथा वैद्यक-शास्त्र। प्रत्येक पुरस्कार लग-भग ८००० पौंड का होता है।

इस पुरस्कार को प्राप्त करनेवाले भाग्यशाली को नवंबर माह में तार के द्वारा ख़बर दी जाती है, और वह बड़े दिनों के १० या १५ दिवस पूर्व स्टाक हो-लम (स्वीडन की राजधानी) में पहुँच जाता है। वहाँ पर उसका ख़ूब स्वागत होता है, और आनंद के दिवस कटते हैं।

अभी हाल में इन पुरस्कार-विजेताओं की नामावली प्रकाशित हुई है। हमारा संबंध यहाँ केवल विज्ञान-विजेताओं से ही है। गत ३० वर्षों के पुरस्कारों पर ध्यान देने से हम जर्मनी को भाग्यशाली कहे बिना नहीं रह सकते।

पुरस्कार देनेवाली कमेटी के विषय में संसार में बहुत कम मतभेद है, तथा राजनीतिक परिस्थिति आदि के प्रभावों से वह बची रहती है।

रसायन-शास्त्र में जर्मनी का सबसे प्रथम नंबर है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

१२ जर्मनों ने, ५ अँगरेज़ों ने, ४ फ्रांसीसियों ने तथा ३ स्वीडनवालों ने यह पुरस्कार प्राप्त किया है। जर्मन, ग्रेटब्रिटेन, फ्रांस इनका नंबर ठीक है, परंतु लोगों का कहना है कि स्वीडन को ज़्यादा पुरस्कार मिले तथा यूनाइटेड स्टेट्स को केवल एक ही मिला।

भौतिक शास्त्र में भी जर्मनी का नंबर प्रथम है, फिर फ्रांस का आता है और फिर ग्रेटब्रिटेन तथा अमेरिका पदार्पण करते हैं। इन देशों को क्रमशः ६, ८, ७ और ३ पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। इन पुरस्कारों के विषय में बिल्कुल मतभेद नहीं है।

वैद्यक-शास्त्र और शरीर-शास्त्र में भी जर्मनी ने हाथ मार लिया। उसे ५ पुरस्कार मिले, फ्रांसीसियों को तीन, डेंस लोगों को तीन तथा ग्रेटब्रिटेन को भी तीन प्राप्त हुए हैं। अन्य देशों को यह सौभाग्य ही प्राप्त नहीं हुआ।

इस नामावली में एक देवी का भी नाम आता है। श्रीमती क्यूरी (Curie) ने पहले तो सन् १९०३ में अपने पति के साथ रेडियम का आविष्कार करने में पुरस्कार पाया था, और बाद में, सन् १९११ में, रसायन-शास्त्र में एक पुरस्कार पाया। छोटे-से देश इटली को भी मारकोनी और फरडीनेंड की बदौलत एक पुरस्कार (बे-तार के संबंध में) मिल गया था, परंतु अभागे भारतवर्ष को विज्ञान में अभी तक आधा पुरस्कार भी नहीं मिल पाया। उक्त बातों को देखकर कोई भी व्यक्ति यह कहे बिना नहीं रह सकता कि विज्ञान-जगत् में जर्मनी का स्थान सर्व-श्रेष्ठ है।

× × ×

२. सूर्य पर अधिकार जमानेवाला

संसार के समस्त कार्यों का संचालन करने के लिये सूर्य की शक्ति ही किसी-न-किसी रूप में काम आती है। जब से वैज्ञानिकों को इस बात का पता लगा है, तभी से वे सूर्य की गर्मी पर अधिकार जमाने के प्रयत्न में हैं।

निस्संदेह हमारा आँगन जितनी गर्मी को सूर्य की किरणों के द्वारा दिन-भर में प्राप्त करता है, यदि वह किसी प्रकार एकत्रित की जा सके, तो रात्रि को घर में विद्युत् का प्रकाश किया जा सकता है तथा और भी अन्य कार्य हो सकते हैं। सहारा की मरुभूमि की गर्मी के द्वारा सारे संसार के कल और कारख़ाने चलाए जा सकते हैं।

वाशिंगटन के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉक्टर चार्ल्स एबाट का कहना है कि सूर्य से प्रतिदिन में जो शक्ति प्राप्त होती है, वह २०७,०००,०००,००० टन कोयला जलाने से प्राप्त होगी, तथा संसार के समस्त कार्य तथा कल-कारख़ाने केवल २०००,००० टन कोयले की शक्ति से चलाए जा सकते हैं। कितने आश्चर्य की बात है कि जब हमें सूर्य से ही अपरिमित शक्ति प्राप्त होती है, तो फिर व्यर्थ ही क्यों हमें कोयला, तेल आदि प्राप्त करने की मेहनत और व्यय उठाना पड़ता है।

क्लार्क-विश्वविद्यालय के प्रधान प्रोफ़ेसर गाडर्ड ने एक ऐसे यंत्र का आविष्कार किया है, जिसके द्वारा लगभग २० प्रतिशत सूर्य की किरणों की गर्मी का उपयोग किया जा सकता है।

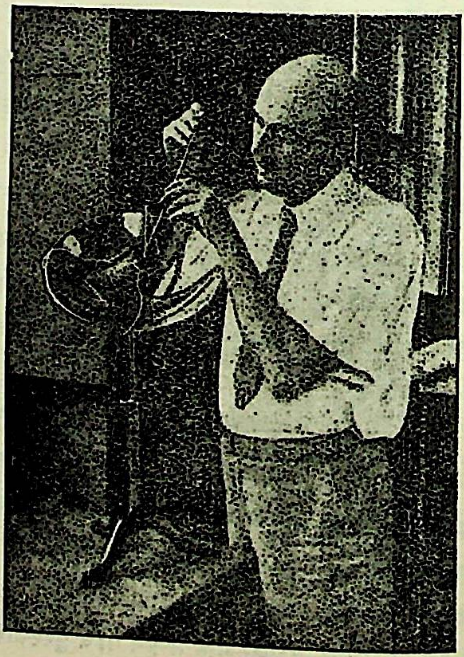

सूर्य-मोटर

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस नए सूर्य-यंत्र के द्वारा विद्युत्-शक्ति, प्रकाश तथा गर्मी प्राप्त हो सकती है। कुछ वर्षों में यह यंत्र एक व्यापारिक सामग्री हो जायगा, तथा छोटे आकार के यंत्र से दस बजे से तीन बजे के भीतर इतनी शक्ति प्राप्त हो सकेगी कि घर का कार्य आसानी से चल जायगा।

इस यंत्र में एक प्रकार का अर्द्धगोल दर्पण लगा रहता है, जिस पर सूर्य की किरणें आकर केंद्रित होती हैं, तथा इस दर्पण के व्यास पर सूर्य की गर्मी की प्राप्ति निर्भर रहती है। जितना ही अधिक दर्पण का व्यास होगा, उतनी ही अधिक किरणों को वह ग्रहण कर सकेगा।

यह यंत्र वज़न में भी बहुत ही हलका बनाया जा सकता है, यहाँ तक कि उसे वायुयान पर लगा सकते हैं। यदि इस यंत्र का विकास हुआ, तो संसार की अनेकों कठिनाइयाँ दूर हो जायँगी, और घर-घर में विद्युत् का प्रकाश कम ख़र्च में हो सकेगा।

× × ×

३. अंधा बनानेवाली बंदूक़

प्रायः यह देखा जाता है कि कभी-कभी डाकू पुलिसवालों के साथ युद्ध करते हैं। दोनो ओर से गोलियाँ चलाई जाती हैं। कभी गोली के आघात से कोई अपराधी मर जाता है, और उसके मर जाने से कई बातों के भेद पाने में कठिनाई होती है। इसलिये शिकागो के जासूस-विभाग ने एक नवीन प्रकार की बंदूक़ बनाई है। इस बंदूक़ का आकार तो साधारण बंदूक़ के समान ही है, परंतु गोली के स्थान में यह एक ऐसी गोली फेंकती है, जिसमें एक प्रकार की गैस भरी रहती है। इस गैस के आक्रमण से मनुष्य की आँखों की शक्ति कुछ काल के लिये मारी जाती है। बंदूक़ १५० गज़ की दूरी तक सफल निशाना मार सकती है।

× × ×

४. खोलने और बंद करने से चलेगी

बहुत घड़ियाँ देखी होंगी। ज़रा इसे भी देखिए।

नई बंदूक़

यह एक विचित्र वस्तु है। चाबी देने की मुसीबत से बचाती है। यदि दिन में आठ बार इसे खोलकर समय देखा गया, तो बस चाबी अपने आप भर जाती है। यदि आठ बार से अधिक बार देखने की ज़रूरत पड़ गई, तो कोई चिंता नहीं; अधिक चाबी नहीं भरती। घड़ी केवल अपने मतलब का मसाला ले लेती है। शेष से उसे क्या? छोटी तो यह इतनी है कि कोट की जेब में आसानी से प्रवेश कर सकती है, और दोनो ओर के ढक्कन दबाने से अपने घर में बंद हो जाती है। यदि टेबिल पर रखना हो, तो भी कोई अड़चन नहीं। एक लकड़ी के फ्रेम में जमा दीजिए।

× × ×

५. सौंदर्य की खोज में

मनुष्य के चेहरे के सौंदर्य को बढ़ाने के लिये लाल-लाल गुलाबी ओठों की बड़ी आवश्यकता समझी जाती है। इसीलिये विदेशों में कुछ स्त्रियाँ अपने ओठों को कई पदार्थों के द्वारा रँगा करती हैं। हमारे

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

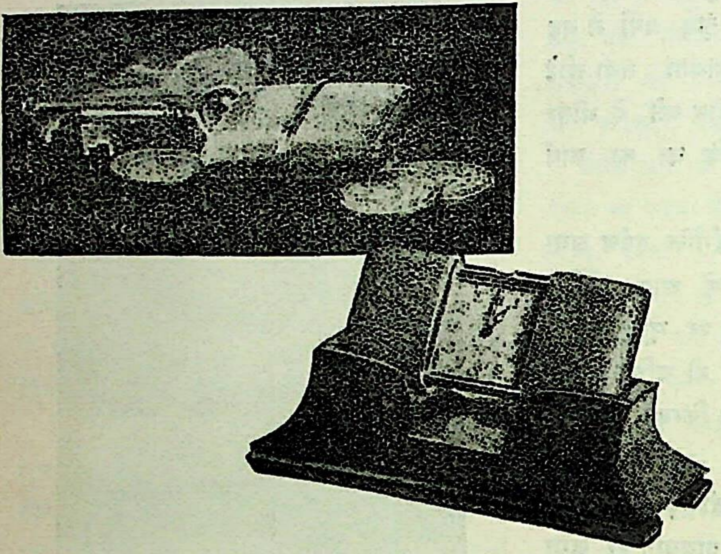

विचित्र घड़ी

सौंदर्य की कुंजी

यहाँ भी कुछ देवियाँ पान के द्वारा अपना मुँह लाल किया करती हैं, और कई तो 'मिस्सी' लगाकर स्वाभाविक गुलाबी रंग के लाने का प्रयत्न करती हैं। विदेशी पदार्थों के द्वारा ओठों को रंगीन करना विशेष स्वास्थ्य-प्रद नहीं। अतएव वहाँ अब लकड़ी के सुंदर ओठों का आविष्कार हुआ है। वे कई आकार के रहते हैं और ओठों के ऊपर ठीक रीति से जम भी जाते हैं। इस तरह सौंदर्य-प्रेमी रमणी की इच्छा की भी पूर्ति हो जाती है, और काम हो जाने पर वे निकालकर भी अलग रक्खे जा सकते हैं।

× × ×

६. मानव-मशीन पर विज्ञान के कारनामे (अ)

विज्ञान का क्षेत्र कितना विस्तीर्ण है, इस बात को विज्ञान के विद्यार्थी के सिवा अन्य व्यक्ति आसानी से नहीं समझ सकता। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश और शक्ति, इनसे संबंध रखनेवाले समस्त पदार्थों पर विज्ञान अपने यंत्रों को लेकर जुटा ही रहता है। शताब्दियों से मानव-शरीर भी उसकी परीक्षा का केंद्र रहा है। इस क्षेत्र में उसने आशातीत उन्नति कर ली है, और यदि उसकी समस्त अभिलाषाओं की पूर्ति हो सकी, तो पृथ्वी पर हमारा जीवन एक परिवर्तित जीवन हुए बिना नहीं रहेगा। यहाँ हमारा अभिप्राय पाठकों के सामने संसार के वैज्ञानिकों की मानव-शरीर से संबंध रखनेवाली घटनाओं पर संक्षेप में प्रकाश डालना है।

मानव-शरीर का सबसे भयंकर शत्रु मृत्यु है, परंतु विज्ञान इस शत्रु को नष्ट करने का प्रयत्न कर रहा है। मनुष्य-हृदय को ३० घंटे तक शरीर के मर जाने पर जीवित रखने की परीक्षा सफल हुई है। शरीर से जुदा किए गए सिर में भी तीन घंटे तक जीवन-शक्ति का संचालन हो सका है। इसी तरह अन्य परीक्षाओं द्वारा

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यह सिद्ध हो गया है कि शरीर की मृत्यु हो जाने पर भी वैज्ञानिक विधियों द्वारा रक्त-संचालन जारी रक्खा जा सकता है। पेरिस के प्रसिद्ध डॉक्टर इसैवियो (Euseleio A. Hernandez) का कथन है कि इन परीक्षाओं से यह स्पष्ट विदित होता है कि मृत्यु, जिसे संसार एक अमिट घटना समझता है, रोकी जा सकती है या सर्वथा नष्ट की जा सकती है। इस तरह मनुष्य की आत्मा नहीं, बल्कि शरीर भी अमर हो सकता है। आपने फ़िलहाल एक ऐसी विज्ञान-शाला बनाने का प्रस्ताव उपस्थित किया है, जहाँ संसार के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध वैज्ञानिक केवल मृत्यु के संबंध में ही परीक्षा कर सकें।

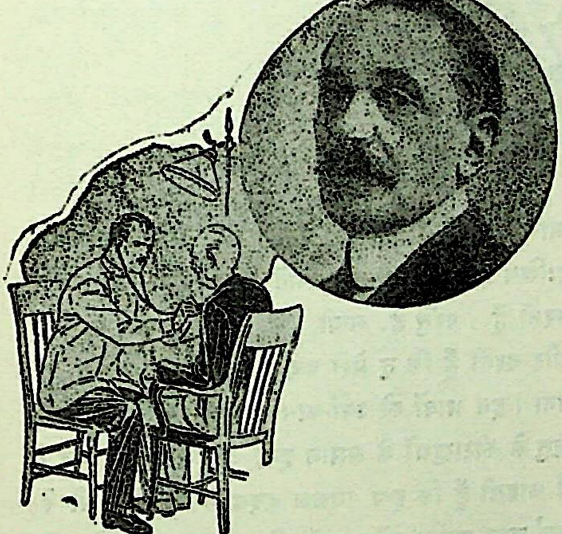

बुड्ढों को जवान बनानेवाला डॉ० वेरोनाफ़

मान लीजिए कि मनुष्य ने मृत्यु से छुटकारा पा लिया, तब उस अवस्था में वह जवान कैसे रह सकता है ? क्या उसे बुढ़ापा न आ घेरेगा ? इस बीमारी को दूर करने के लिये पेरिस के एक दूसरे संसार-प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉक्टर वेरोनाफ़ (Dr Serge Vernoff) ने बंदर की ग्लेंड (gland) की उपयोगिता सिद्ध करके दिखा दी है। लगभग दस वर्षों से वह जानवरों की 'ग्लेंडों' को दूसरे प्रकार के जानवरों तथा मनुष्यों के शरीर में लगाकर चिर यौवन का संचार करने का प्रयत्न करते रहे हैं। सफल भी वह ख़ूब ही हुए। इन 'ग्लेंडों' के लगाने से वृद्ध मनुष्य के शरीर की शक्ति की वृद्धि हो जाती है, भूख बढ़ जाती है, तथा दिमाग़ी ताक़त भी नवीनता को प्राप्त होती है। इस क्रिया का प्रभाव तीन वर्षों तक रहता है। इसके बाद वह घटने लगता है, और पाँच वर्षों के बाद तो बिल्कुल ही नष्ट हो जाता है। यौवन प्राप्त करने की क्रिया का यह तो श्रीगणेश ही है। देखें, आगे क्या होता है।

इस यौवन की खोज में पेरिस के एक दूसरे डॉक्टर कासिमिर फ़ंक (Dr Casimir Funk) ने ग्लेंडों से एक 'सत' के समान पदार्थ निकाला है। उसे अँगरेज़ी में 'हारमिन' 'Hermine' कहते हैं। इस पदार्थ की वे गोलियाँ बनाना चाहते हैं, जिनके द्वारा बुढ़ापा दुम दबाकर भागे बिना न रहेगा।

नाथूराम शुक्ल

बाँझ का खिलौना

स्त्रियों की योनि से सफ़ेद, लाल, काला, पीला व किसी रंग का पानी आता हो, इस दवा से शर्तिया बंद हो जावेगा। साथ ही और सारी तकलीफ़ें दूर होकर गर्भाशय में गर्भ-धारण शक्ति उत्पन्न हो जावेगी तथा बाँझ स्त्रियों के दैव की कृपा से प्रसव (बच्चा) उत्पन्न होगा आगे अपनी-अपनी तक़दीर।

नोट—यह दवा खिलाने के बाद स्वजन हमारे यहाँ से गर्भ-धारण वटी ज़रूर मुफ़्त मँगा लें। मूल्य ४)

पता—लालताप्रसाद वैद्य-अक़ब मस्जिद काँच जिला शाहजहाँपुर—(यू. पी.)

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

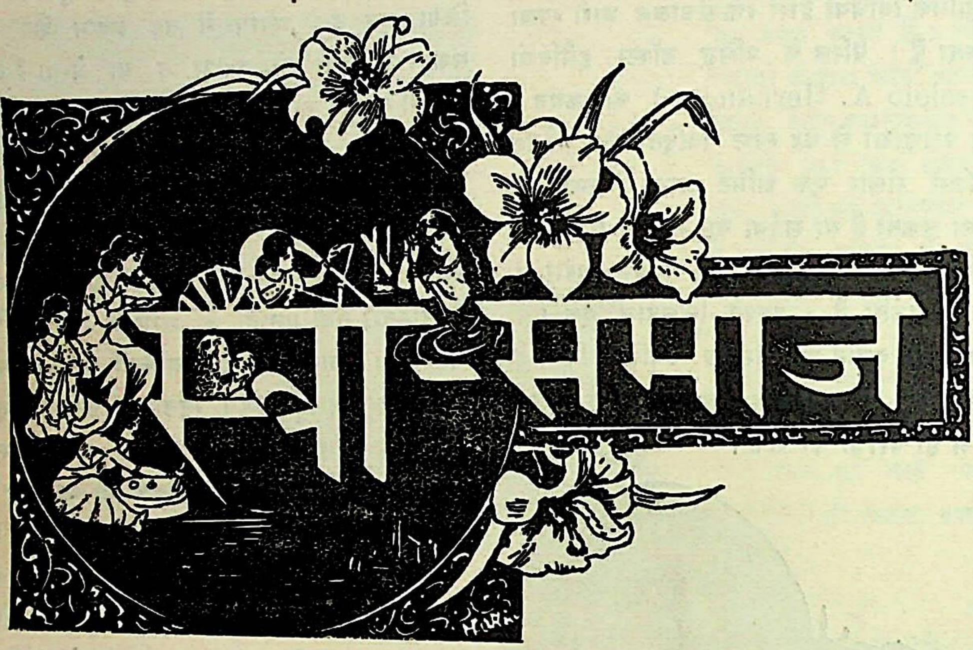

भाग्यहीन स्त्री-समाज

पुत्रीति जाता महतीव चिंता
कस्मै प्रदेयेति महान् वितर्कः ;
दत्वा सुखं प्राप्स्यति वा न वेत्ति
कन्या पितृत्वं खलु नाम कष्टम् ।

प्यारी प्रकृति देवि !

संसार के शांतिमय हृदयों में हलचल मचानेवाला प्रेम-पत्र प्राप्त हुआ। उत्तर देते लेखनी काँपती है, परंतु कर्तव्य पूरा करना ही है। मैं नहीं जानती कि किस प्रकार इस तुच्छ और शोक-पूर्ण हृदय की प्रज्वलित आहों को तुम-सरीखी सहृदया और कोमल-हृदया सखी के सम्मुख प्रकट करूँ। मैं यह बात उचित नहीं समझती कि मैं अपनी पाप-पूर्ण और करुणामय कथा से तुम्हारे हृदय को कलुषित करके तुम्हारा अमूल्य समय नष्ट करूँ। परंतु तुम्हारे वारंवार प्रेरणा करने से अब मेरा हृदय अपनी शोक-पूर्ण कथा कहने को विवश हो गया! क्योंकि कहते हैं, अपने मित्र के सम्मुख दुःख रुदन करने से कम हो जाता है। सो आज मैं तुझे ही अपना प्रेम-भाजन समझकर अपने दुःखित हृदय की दो-चार आहें निकालने का प्रयत्न करती हूँ। परंतु हे सखी, मैं तुझसे एक प्रार्थना और करती हूँ कि तू मेरी करुण कथा को नवीन न बना। इन भावों को ज्यों-का-त्यों बना रहने दे। वर्षा-ऋतु के कीटाणुओं के समान इन्हें प्रादुर्भाव न कर। मैं चाहती हूँ कि इस विकल हृदय की आहें किसी के कर्ण-कुहर तक न पहुँच सकें, जिससे यह अकेला ही हृदय शांति-पूर्वक सब कुछ सहन करता हुआ अंतिम समय तक भी इसी भाँति मृत्यु की गोद का आश्रय ले। अच्छा! यदि तू नहीं मानती, तो तू इसके कठिन कलाप को ध्यान-पूर्वक सुन। यह सहृदयों के लिये व्यथित हृदय की दारुण कथा है, और हृदय-हीन के लिये पागल का प्रलाप है।

क्या किसी से यह बात छिपी हुई है कि आजकल हिंदू-स्त्री-समाज की क्या दशा है? बेचारे माता-पिता अपनी लड़कियों के लिये सदा ही शोकातुर हैं। न उन्हें ब्याह करने पर चैन है, और न न करने

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

में। उनके लिये पूर्वोक्त किंवदंती पूर्णतया सत्य है। कन्या के उत्पन्न होते ही माता-पिता के लिये चिंता का बीज बोया जाता है। ज्यों-ज्यों वह बड़ी होती जाती है, मानो शोक-वृक्ष की वृद्धि होती जाती है, शोक का वृक्ष लहराता है। ब्याह के लिये सदा चिंता लगी रहती है, विवाह करने पर भी इसी विचार-सागर में डुबकियाँ लगाते रहते हैं कि न-जाने वहाँ जाकर भी सुख पावेगी या नहीं ? पति-पत्नी का कैसा व्यवहार होगा, इत्यादि बातों की चिंता सदा भूत की भाँति सवार रहती है। सत्य है, कन्या तो नाम-मात्र से ही माता-पिता के लिये कष्ट-प्रदायिनी है। इन सब बातों के उदाहरण ढूँढ़ने के लिये हमें दूर नहीं जाना पड़ेगा, बल्कि प्रत्येक हिंदू-घर में एक-न-एक उदाहरण अवश्य ही मिल जायगा। आप किसी भी उच्च घराने को लें, अमीर-से-अमीर परिवार को देखें, स्त्रियों की जो दुर्दशा है, उसे देख आँसू बहाते ही बन पड़ता है। पुरुष अपने भोग-विलास में पड़े हुए आनंद उड़ाते फिरते नहीं अघाते। वर्षा-ऋतु में हरिणों की भाँति एक स्थान से दूसरे स्थान पर नवीन-से-नवीन स्थान की खोज करते फिरते हैं। अपने यौवन के मद से मस्त हुए, भले-बुरे का विचार तज, एक को छोड़ दूसरी के पीछे भागते हैं। परंतु बेचारी अबलाओं की कुछ न पूछिए, उन पर तो वर्षा-ऋतु के बादलों की भाँति सदा ही शोक छाया रहता है। अपने भाग्य को रोते-रोते दिन काटती हैं। उनके दुःखित हृदय पर कोई भी हाथ रखकर नहीं देखता कि शोक ने किस निर्दयता से उनके कोमल हृदय को जर्जरित कर दिया है! मरने पर एक बार ही चिता की अग्नि में जलाई जाती हैं, परंतु चिंता-चिता तो सदा ही घुन की भाँति भीतर-ही-भीतर रुधिर जलाती रहती है। उनकी करुणामय गाथा को कोई नहीं सुनता। उस पर भी भारी कठिनता यह कि न तो वे मन खोलकर रो ही सकती हैं, और न हँस ही सकती हैं। यदि रोती है, तो घरवाले सास-ससुर इत्यादि कहते हैं कि यह भाग्य-हीन सदा अपशकुन मनाती रहती है, और यदि दुर्भाग्य-वश सामने आ जाय, तो समझते हैं कि साक्षात् काल ही आ गया। यदि कहीं हँस पड़े, तो कहते हैं कि कैसी निर्लज्ज है, इसे कहाँ की ख़ुशियाँ सूझ रही हैं। हा भाग्यहीन स्त्री-समाज, तेरे लिये विधाता भी वाम है। पुरुष एक स्त्री के रहते हुए चार-चार विवाह करते नहीं अघाते और स्त्रियाँ बेचारी अयोग्य पति के होने पर तथा विधवा हो जाने पर भी दूसरे विवाह की अधिकारिणी नहीं। यदि संसार में भाग्यहीन स्त्री-समाज पैदा ही न होता, तो संभव है कि आकाश को भी नीलिमा का चक्कर न लगता। वे सदा ही आँख की किरकिरी के समान सबकी आँखों में खटकती रहती हैं। जूते में पड़ी हुई कंकड़ी के समान पद-पद पर कष्ट-दायिनी हैं।

सैकड़ों स्त्रियों के जीवन ऐसे देखने में आएँगे, जो केवल दहेज़ के लिये ही तिरस्कृत की गई हैं, तथा सैकड़ों ऐसे उदाहरण हैं, जब कि पुरुष वेश्याओं को रखकर अपनी धर्मपत्नी को तज देते हैं। कहने का तात्पर्य यह कि कोई-न-कोई बात पुरुष ऐसी बना लेते हैं, जिसके द्वारा स्त्रियों का तिरस्कार होता है। जो स्त्री कुछ सीधी-सादी होती है, उसे तो पागल ही कहकर छोड़ देते हैं। इत्यादि बातें सदा देखते-देखते नेत्र भी भ्रमित हो गए। स्त्रियों को अबला कहना आरंभ कर दिया, क्योंकि जब चारो ओर से अत्याचार होने लगे, तो बेचारी स्वयं अबला हुई। सब प्रकार से पराधीन हो गई। न उनमें शक्ति रही, न बल रहा। उनका जीवन-सौंदर्य रेगिस्तान में जौहरी के हाथ से खोए हुए अमूल्य रत्न के समान बिलकुल निस्सार हो रहा है।

इतने ही लिखने को बहुत समझना। संक्षेप से तो सभी बातों का वर्णन आ गया, फिर कभी विस्तार से लिखने का प्रयत्न करूँगी।

(कुमारी) शकुंतला गुप्ता ("हिंदी-प्रभाकर")

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

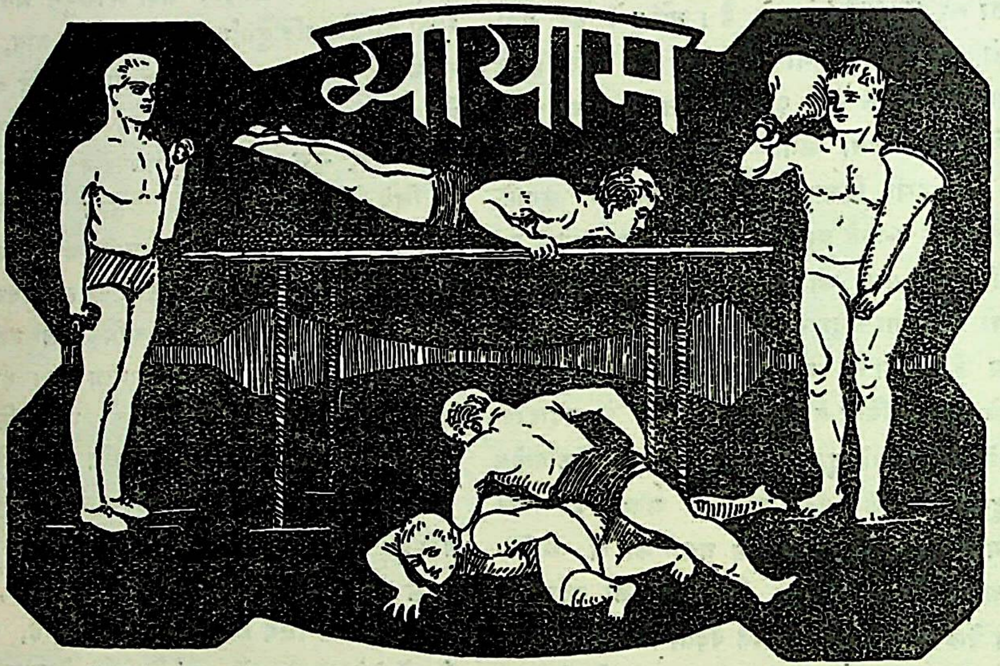

स्त्रियों के व्यायाम

(४)

व्यायाम

कुछ लोगों की आदत-सी पड़ जाती है कि वे नए परिवर्तनों को बुरा समझते हैं। उन्हें हमेशा उनमें दोष-ही-दोष दिखाई पड़ते हैं। इतना ही नहीं, वे अपनी मानी हुई बातों को घटा-बढ़ाकर दूसरे लोगों को सुनाते हैं, और उन्हें उन बातों को मानने के लिये विवश भी करते हैं। यही हालत स्त्रियों के व्यायाम के संबंध में भी है। व्यायाम का विषय तो एक ऐसी बात है, जिस पर नाक-भौं चढ़ाना कोई बड़ी बात नहीं, परंतु स्त्रियों को पढ़ाना-लिखाना भी आज कई मनुष्यों को अच्छा नहीं लगता। जिस तरह पढ़ने-लिखने के विषय में उनका कहना है कि 'स्त्रियों को पढ़ा-लिखाकर क्या उन्हें बाबू बनाना है? या उनसे नौकरी करानी है? पढ़ने-लिखने से स्त्रियाँ बिगड़ जाती हैं।' इत्यादि, उसी तरह वे व्यायाम के लिये भी कहते हैं कि 'क्या व्यायाम कराके स्त्रियों को कुश्ती मारनी है? या फ़ौज में भर्ती होकर युद्ध में जाना है? अथवा उन्हें मर्द बनाना है? व्यायाम से उनमें मर्दानापन आ जाता है।' इत्यादि। इस प्रकार की बातें नासमझ मनुष्यों की कही जा सकती हैं। जो लोग अपना अच्छी-बुरी हालत का विचार नहीं कर सकते, ऐसे ही मनुष्य स्त्रियों के सुधार के विरुद्ध अंट-शंट बातें बका करते हैं। परंतु ऐसे लकीर के फ़क़ीरों की बातों पर आज लोग अधिक विश्वास नहीं करते।

'व्यायाम के द्वारा स्त्रियों का रूप-लावण्य नष्ट हो जाता है', इस बात को भी कोई समझदार व्यक्ति नहीं मानेगा। व्यायाम के द्वारा तो शरीर सुडौल एवं ख़ूबसूरत बनता है। व्यायाम के आचार्यों का दावा है कि

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

'व्यायाम से सौंदर्य बढ़ता है, मुख कांतिमय बन जाता है, रंग निखरता है।' फिर कैसे मान लिया जाय कि व्यायाम के द्वारा स्त्रियों का लावण्य नष्ट हो जाता है? व्यायाम न करनेवाली स्त्रियाँ सभी लावण्यमयी होती हैं, इसे भी कोई नहीं मान सकता। हाँ, यह अवश्य कहा जा सकता है कि श्रमशील स्त्रियाँ आलसी स्त्रियों की अपेक्षा कहीं अधिक लावण्यमयी होती हैं। 'व्यायाम से स्त्रियों में मर्दानगी आ जाती है।' इत्यादि बातें बे-सिर-पैर की हैं। व्यायाम यदि हद से ज़्यादा किया जायगा, तो स्त्री हो या पुरुष, सभी के लिये हानिकारी है। स्त्रियों को चाहिए कि मर्दों के व्यायाम, जिनसे उनके मर्दाना हो जाने का डर हमारे मर्द कहलानेवाले भारतवासियों को है, न करें। कुछ व्यायाम ऐसे हैं, जो मर्दों को लाभ पहुँचाते हैं, तो स्त्रियों को हानिप्रद होते हैं। इसीलिये हमने इस पुस्तक में ऐसे ही व्यायाम बतलाए हैं, जो स्त्रियों के लिये लाभकारी हैं।

स्त्रियाँ पुरुषों के-से व्यायाम भी कर सकती हैं, परंतु ऐसे व्यायाम उन्हीं स्त्रियों को करना चाहिए, जो जीवन-भर ब्रह्मचर्य-व्रत पालन करने की इच्छुक हों। हमारे देश में जीता-जागता उदाहरण श्रीमती मिस ताराबाई हैं। जिन लोगों ने सरकस में उन्हें काम करते देखा है, वे समझ सकते हैं कि स्त्रियाँ ऐसे काम भी कर सकती हैं, जिन्हें मर्द भी नहीं कर सकते। अपनी छाती पर से भरी हुई गाड़ी निकलवाना, भाले की नोक अपने माथे में लगाकर उससे भरी हुई गाड़ी को ढकेलना। अपने बालों में सैकड़ों पौंड के वज़न का पत्थर बाँधकर उठाना, क्या कुछ कम बात है? माना कि व्यायाम से स्त्रियाँ मर्दानी हो जाती हैं, परंतु यहाँ प्रश्न यह होता है कि इससे हानि क्या है? देश को इस वक़्त इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि स्त्रियाँ अपनी रक्षा अपने आप कर सकें। हाँ, स्त्रियों के व्यायाम से पुरुषों को चिढ़ने का एक कारण अवश्य हो सकता है। वह यह कि कहीं ऐसा न हो कि औरतें व्यायाम करके हम माँग-पट्टी निकालकर, मुँह पर तेल और कपाल पर लाल बिंदी लगाकर, पतले, महीन, मुलायम और नज़ाकतदार कपड़े तथा ढीली धोती पहनकर गलियों में घूमनेवाले जर्जर-शरीर पुरुषों से बलवान् बन जायँ। संभवतः इसी विचार से वे स्त्री-समाज को अपने से भी निर्बल बनाए रखना चाहते हैं। परंतु यह उनकी भूल है। इससे बड़ी भारी हानि पहुँच रही है। इसलिये क्या स्त्री और क्या पुरुष, प्रत्येक भारतवासी को अपने शरीर की तथा अपनी आनेवाली संतान की उन्नति के लिये व्यायाम अपना एक दैनिक नित्य-कर्म समझना चाहिए।*

यदि स्त्रियाँ मर्दानी हो भी जायँ, तो उससे समाज को कुछ भी हानि नहीं पहुँच सकती। दो-चार स्त्रियाँ यदि मर्दानी हो जायँ, तो क्या हानि है? जब कि लाखों स्त्रियाँ क्षय, प्रसूतिरोग और निर्बलता के कारण 'मुर्दा'-शक्ल बनी हुई हैं, और बेमौत मर रही हैं। जिस प्रकार आज भारतवर्ष में स्त्रियों के शारीरिक सुधार की ओर किसी का ध्यान नहीं है, उसी प्रकार "प्राचीन समय में, इटाली के लोग भी स्त्रियों की शारीरिक शिक्षा पर ध्यान नहीं देते थे। स्पार्टन लोग मानते थे कि लड़कों की तरह लड़कियों को भी शारीरिक संगठन की आवश्यकता है।" पाश्चात्य देशों में जब तक स्त्री-सुधार की ओर लोगों ने ध्यान नहीं दिया, तब तक वे उन्नत नहीं बन सके। इससे स्पष्ट होता है कि अपने राष्ट्र की उन्नति के लिये स्त्रियों के शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक सुधार की अत्यंत आवश्यकता है। स्त्रियों की नैतिक शिक्षा के साथ-ही-साथ उनकी शारीरिक शिक्षा भी होनी चाहिए। माता-पिता का यह परम कर्तव्य है कि अपनी संतान को बलवान् बनावें, चाहे वह पुत्र हो या पुत्री। मनुजी की आज्ञा है कि—

"यैथवात्मा तथा पुत्रः पुत्रेण दुहिता समा।"

जैसे पुत्र आत्मा के तुल्य है, वैसे ही कन्या भी पुत्र के समान है। इसलिये माता-पिता का कर्तव्य है कि

* मेरी लिखी हुई 'शरीर और व्यायाम'-नामक पुस्तक गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ से मँगाकर अवश्य पढ़ लीजिए।—लेखक

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वह लड़कों की भाँति लड़कियों को भी व्यायाम की शिक्षा देकर उन्हें सुदृढ़ एवं पुष्ट बनावें। उन कन्या-पाठशालाओं में, जिनमें व्यायाम का कुछ भी प्रबंध नहीं है, देश के हितैषी लोगों को चाहिए कि व्यायाम की पद्धति प्रारंभ कराने का प्रयत्न करें।

घर-धंधे के अतिरिक्त अब हम ऐसे व्यायाम का वर्णन विधि-सहित करेंगे, जिन्हें स्त्रियाँ सहज ही में करके अपनी शारीरिक उन्नति कर सकें।

व्यायाम नं० १

पृथ्वी पर चित सो जाओ। अपनी टाँगें ज़मीन से सटा दो, और अपने दोनो हाथ सिर के पीछे सीधे लंबे फैला दो। अब उठने का प्रयत्न करो। उठते वक़्त जल्दी नहीं करनी चाहिए, और न झटके के साथ ही उठना चाहिए, बल्कि पेट के स्नायु के बल पर बहुत ही आहिस्ता-आहिस्ता उठने का प्रयत्न करना चाहिए। उठते वक़्त पैर पृथ्वी से न उठ जायँ, और हाथ सीधे पैरों की ओर बढ़ते चले जायँ। यहाँ तक कि दोनो हाथों से पैरों के दोनो अँगूठे को पकड़ लो, जैसा कि चित्र नं० १ में है। इतना करने के बाद अपने सिर को

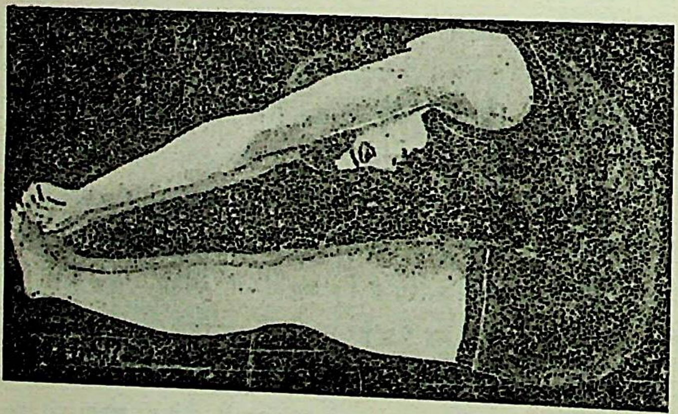

चित्र नं० १

दोनो घुटनों के बीच में रखने का प्रयत्न करो, जैसा कि चित्र नं० १ में दिखाया गया है।

सिर को घुटनों में रखते वक़्त पैर ज़मीन से नहीं उठने चाहिए। इस वक़्त पीठ, गर्दन और पैरों में काफ़ी तनाव होता है। एक दिन में, एक ही बार में, ऐसा नहीं किया जा सकता। पहले तो धीरे-धीरे उठने में ही बड़ी कठिनाई पड़ेगी; क्योंकि पृथ्वी से पाँव उठाए बिना अथवा झटका लिए बिना उठ जाना सहज बात नहीं है। इसके बाद पैरों को सीधा रखकर हाथों से पैरों के अँगूठे पकड़ लेने में कमर में कष्ट-सा होने लगेगा। फिर घुटनों में माथा टिकाते वक़्त तो और भी कठिन मालूम होगा। एक-दो दिन इस व्यायाम में संभवतः कुछ कष्ट हो, परंतु कुछ दिन के अभ्यास से यह सहज ही में होने लगेगा। न आने पर हताश होकर इसे छोड़ देना ठीक नहीं, बल्कि प्रयत्न द्वारा इसमें सफलता प्राप्त करनी चाहिए। इसे करने से सारे शरीर को तो व्यायाम मिलता ही है, किंतु पृष्ठ-वंश, सिर, गर्दन, पीठ और घुटनों के नीचे के हिस्से की अच्छी तरह शुद्धि होकर वे बलवान् बन जाते हैं। इसको करते समय जब तक थकान न आ जाय, तब तक इसे करना चाहिए। १५-२० मिनट तक घुटनों में सिर टेककर रहने का अभ्यास अवश्य ही करना चाहिए। इस व्यायाम को यौगिक भाषा में "पश्चिमोत्तान आसन" कहते हैं।

व्यायाम नं० २

चित लेट जाना चाहिए। दोनो पैरों को पृथ्वी पर चिपके रखना चाहिए। बाएँ हाथ से दाहने हाथ की भुजा और दाहने से बाएँ हाथ की भुजा पकड़ लो, और अब धीरे-धीरे बैठी होने का प्रयत्न करो। देखना, पैर पृथ्वी से न उठ जायँ, और उठने में झटके से न उठो। बैठने पर फिर उसी तरह धीरे-धीरे लेट जाओ, और फिर पहले की तरह उठो। इस तरह जहाँ तक थकान न मालूम हो, उठो-बैठो। यह व्यायाम नं० १ से कुछ कठिन है।

जिस तरह व्यायाम नं० १ में पैरों के अँगूठों को

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पकड़कर सिर घुटनों में रक्खा जाता है, उसी तरह इसमें भी बिना अँगूठे पकड़े अर्थात् एक हाथ से दूसरे हाथ का भुजदंड पकड़े हुए ही सिर को पैरों से लगाने का प्रयत्न करना चाहिए। इससे जठराग्नि प्रदीप्त होती है, पेट और पीठ के स्नायु शुद्ध हो जाते हैं।

व्यायाम नं० ३

चित लेट जाओ, और दोनो हाथों की अँगुलियों द्वारा कैंची फाँसकर गर्दन के नीचे मज़बूती से लगाओ। अब धीरे-धीरे उठना चाहिए, और आगे की ओर सिर को इतना झुकाना चाहिए कि सिर घुटनों से जा लगे। इसमें भी पैरों के ज़मीन से न उठने का तथा हाथों की कुहनियाँ सीधी रखने का ध्यान रखना पड़ेगा।

पहलेपहल इस व्यायाम को करते वक़्त हाथों की कुहनियाँ मुँह की तरफ़ आती हैं, इससे उठने में सहायता मिलती है। किंतु ऐसा नहीं होने देना चाहिए। यथासंभव कुहनियों को बिलकुल सम-सूत्र में गर्दन के पीछे रखने का अभ्यास करना चाहिए। यदि आरंभ में न हो सके, तो कोई हानि नहीं, किंतु बाद में इस भूल को सुधार लेना चाहिए। इस व्यायाम को थकान न आने तक करना चाहिए।

व्यायाम नं० ४

पहले कही हुई रीति से चित लेट जाओ। अब अपने दाहने हाथ की अँगुलियों से पीठ पीछे के बाएँ कंधे की जड़ में छुओ, और वहीं जमा दो। इसी तरह बाएँ हाथ की अँगुलियों से दाहने कंधे की जड़ में स्पर्श करो। फिर दोनो हाथों को इसी तरह रखकर और कुहनियों को न झुकाकर धीरे-धीरे उठो, और सिर को पैरों से लगा देने का प्रयत्न करो। फिर इसी तरह धीरे-धीरे लेट जाओ। कई बार इस व्यायाम को करो। यह व्यायाम पिछले व्यायामों से कुछ कठिन अवश्य है, किंतु अभ्यास द्वारा वही सरल बन जाता है।

ये सब हमने सोकर उठने के व्यायाम बताए हैं, किंतु समझदार बहनें इनमें हेर-फेर करके इन्हें कई प्रकार से कर सकती हैं। इनमें सिर्फ़ इस बात का ध्यान रखने की आवश्यकता है कि व्यायाम करते वक़्त जल्दी न की जाय। झटके के साथ न उठा जाय, पैरों को पृथ्वी से न उठने दिया जाय, और जो पोज़ीशन व्यायाम के लिये बताया गया, उसे न बिगड़ने दिया जाय। स्वास्थ्य-रक्षा के लिये ये व्यायाम बड़े ही उपयोगी सिद्ध हुए हैं। इन व्यायामों को यदि गर्भवती बहनें भी करें, तो कोई हानि नहीं हो सकती। परंतु यह न भूलना चाहिए कि "उठते वक़्त झटका न दिया जाय।" इन व्यायामों को धीरे-धीरे करने ही से लाभ होता है, जल्दी करने में हानि होती है। इन व्यायामों के करनेवाली बहनों को प्रसव-काल में बिलकुल कष्ट नहीं होता।

व्यायाम नं० ५

चित लेट जाओ और लेटे-लेटे ही पद्मासन लगाओ। अर्थात् अपने दाहने पैर के टख़ने को बाईं जंघा पर और बाएँ पैर के टख़ने को दाहने पैर की जंघा पर रक्खो। इसके बाद अपने सिर के नीचे दाहने हाथ से बाएँ भुजदंड को और बाएँ हाथ से दाहने भुजदंड को पकड़कर उस पर अपना सिर जमा दो। अपनी कमर जितनी हो सके उतनी, पृथ्वी से ऊँची उठाओ। ध्यान रक्खो, इस वक़्त दोनो घुटने पृथ्वी से लगे रहें। ऊपर न उठने पावें। जब तक थकान न आ जाय, तब तक इसी स्थिति में पड़े रहना चाहिए (देखो चित्र नं० २)। योग के आसनों में इसका नाम "मीनासन" है। कहते हैं, इस आसन से जल के ऊपर रहनेवाला व्यक्ति कभी डूब नहीं सकता। इस व्यायाम से सारे शरीर की शुद्धि होती है। ख़ास करके पेट और पीठ के स्नायु बलवान् और नीरोग हो जाते हैं। इसके अभ्यासी को कभी क़ब्ज़ की शिकायत नहीं होती। इसे थोड़ा जल-पान करके करने से विशेष लाभ होता है।

व्यायाम नं० ६

इस आसन में भी कई प्रकार के व्यायाम किए जा सकते हैं। सिर के नीचे हाथ लगाए हुए ही, जैसा कि चित्र में दिखाया गया है, धीरे-धीरे उठने का प्रयत्न करना चाहिए, और उठ-बैठकर फिर धीरे-धीरे पीछे की

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

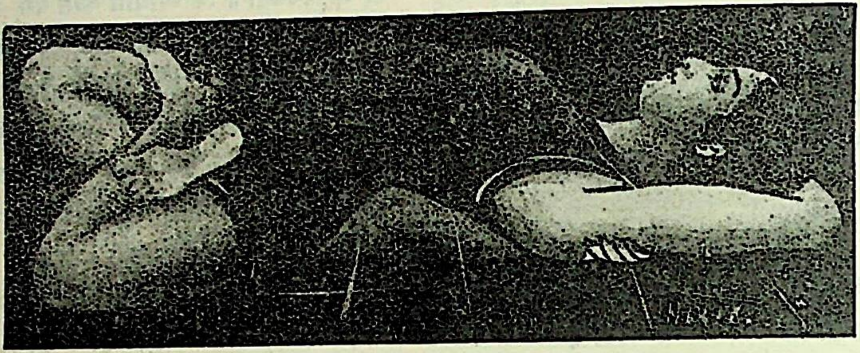

चित्र नं० २

तरफ़ जाकर लेट जाना चाहिए। जब तक थकान न आ जाय, इसे करना चाहिए। इसमें उठकर बैठी हो चुकने के बाद पैरों पर सिर टिका देने का अभ्यास भी किया जा सकता है।

फिर इसी प्रकार पैरों की पालथी को धीरे-धीरे ज़मीन से उठाकर सिर के ऊपर ले जाना चाहिए। उसके बाद आहिस्ता-आहिस्ता लाकर पृथ्वी पर जमा देना चाहिए। इस व्यायाम को कई बार करना चाहिए।

व्यायाम नं० ७

अभी तक हमने लेटकर करने के कुछ व्यायामों की विधि बताई है, अब हम बैठकर करने के व्यायामों का वर्णन करेंगे। आलथी-पालथी लगाकर अर्थात् पद्मासन से बैठ जाओ। दाहने पैर का पंजा बाईं जंघा पर और बाएँ पैर का पंजा दाहने पैर की जंघा पर रखने से पद्मासन बन जाता है। इसमें सिर्फ़ इसी बात का ध्यान रखना पड़ता है कि पैरों के घुटने पृथ्वी से लगे हुए रहें, उठने न पावें। इस आसन पर बहुत समय तक बैठने से भी स्वास्थ्य को बहुत लाभ होता है। इसके करने में सिर, पीठ, कमर, गला सभी सम-रेखा में रखने चाहिए। पाँवों के रखने का ढंग चित्र नं० ३ के अनुसार होना चाहिए, और हाथ चित्र नं० ३ के अनुसार न रखकर सीधे घुटनों पर रख देना चाहिए। इस व्यायाम के द्वारा पैरों की नस-नाड़ियाँ शुद्ध होती हैं। इस प्रकार बैठकर ठोढ़ी को कंठ की जड़ में कुछ देर जमाए रखने से मस्तिष्क का मज्जा-प्रवाह ठीक हो जाता है, विचार-शक्ति बढ़ती है, और स्मरण-शक्ति स्थिर हो जाती है।

इस व्यायाम में हाथों को इधर-उधर फैलाकर भी व्यायाम हो सकता है। दोनो हाथों की हथेलियाँ ठीक सिर पर मिलाने अर्थात् ठीक अपने सिर पर आकाश की ओर हाथ जोड़े रखने से भी अच्छा व्यायाम होता है। इस वक्त केवल इसी बात का ध्यान रखना चाहिए कि हाथों में ढीलापन न आवे। वे ऊपर की ओर तने हुए ही रहें। इस प्रकार दस-पंद्रह मिनट बैठना चाहिए। यह व्यायाम गर्भवती स्त्रियों के लिये अत्यंत उपयोगी है। गर्भ में इससे किसी प्रकार की बाधा पहुँचने की आशंका नहीं।

व्यायाम नं० ८

पद्मासन से बैठने की विधि हम व्यायाम नं० ७ में बता चुके हैं। उसी विधि के अनुसार बैठ जाइए। अब अपना दाहना हाथ बाएँ घुटने पर रखिए, और अपना धड़ बाईं ओर घुमाइए। अपनी छाती, जितनी पीठ की ओर जा सकती हो, ले जाइए। ऐसा करते वक़्त यदि आवश्यक हो, तो बायाँ हाथ ज़मीन पर रखकर सहारा लिया जा सकता है। जब आपकी छाती पीठ की ओर अच्छी तरह पहुँच जाय, तब वहाँ ही उसी दशा में ठहरी रहिए। इस व्यायाम में इस बात का ध्यान रखना बड़ा आवश्यक है कि पद्मासन जमा रहे

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

घुटने इधर-उधर न सरकने पावें। बाईं ओर अच्छी तरह घुमाने के बाद अब बाएँ हाथ को दाहने घुटने पर रखकर अपना धड़ दाहनी ओर उसी तरह घुमाइए। कुछ लोग घुमाने में जल्दी करते हैं, यह अनुचित है। इस व्यायाम से पेट की शुद्धि होती है। यह व्यायाम अत्यंत सरल, किंतु बड़ा ही अच्छा है।

व्यायाम नं० ६

दाहना पैर बाईं जाँघ पर और बायाँ पैर दाहनी जाँघ पर इस तरह रक्खो कि पैरों की एड़ियाँ पेट से अड़ जायँ। इसके बाद पीछे की ओर दाहना हाथ ले जाकर दाहने पैर का अँगूठा पकड़ो, और बाएँ हाथ को पीठ पीछे से ले जाकर बाएँ पैर का अँगूठा पकड़ो। दोनो हाथों से दोनो पैरों के अँगूठे पकड़ने के बाद अपनी ठोड़ी को कंठ के मूल में जमाकर बैठ जाओ (देखो चित्र नं० ३)। इससे सारे शरीर की शुद्धि होती है। इसके करने-वाले को कोई व्याधि नहीं होने पाती। परंतु सिर्फ़ एक-दो मिनट कर लेने से इस व्यायाम से कोई लाभ नहीं हो सकता। कम-से-कम १५-२० मिनट करने से लाभ हो सकेगा। इससे अधिक बैठने से अधिक लाभ होता है। स्थिरता-पूर्वक ४-६ महीने करने से पूर्ण आरोग्य लाभ किया जा सकता है।

इस व्यायाम से कमर के स्नायु तथा पैरों की नस-नाड़ियाँ अच्छी तरह शुद्ध हो जाती हैं। पीठ के मेरुदंड में जो टेढ़ापन आ जाता है, वह पीठ के दबाव से सीधा हो जाता है। इस व्यायाम से पीठ का मज्जा-प्रवाह उचित रीति से होने लगता है। इसके द्वारा मज्जा-तंतु के समस्त रोग फ़ौरन् नष्ट हो जाते हैं। पृष्ठ-वंश का सीधा होना मनुष्य के लिये एक उत्तम आरोग्य-दायक बात है, क्योंकि इसके टेढ़े हो जाने से मनुष्य में भाँति-भाँति की असंख्य बीमारियाँ हो जाती हैं।

इस व्यायाम के करने में पहलेपहल पीठ पीछे से हाथ अँगूठों तक पहुँचते ही नहीं। इसका कारण यह नहीं है कि हाथ-पैर छोटे हैं। नहीं, शरीर में विजातीय द्रव्यों की अधिकता से ऐसा होता है। ज्यों-ज्यों शुद्धि होती जाती है, त्यों-त्यों इस व्यायाम में सफलता मिलती जाती है। पहलेपहल यदि बहुत ही कष्ट हो, तो एक हाथ और एक पैर से ही करना चाहिए। एक से कर चुकने पर फिर उतने ही समय तक दूसरे से भी करना चाहिए। दोनो से न करने में किसी दोष के उत्पन्न हो जाने की संभावना है। जब शारीरिक दोष हट जायँ, तब दोनो हाथों से चित्र नं० ३ के अनुसार करना चाहिए। इस व्यायाम से पेट की बढ़ी हुई तिल्ली भी नष्ट हो जाती है।

गणेशदत्त शर्मा गौड़ "इंद्र"

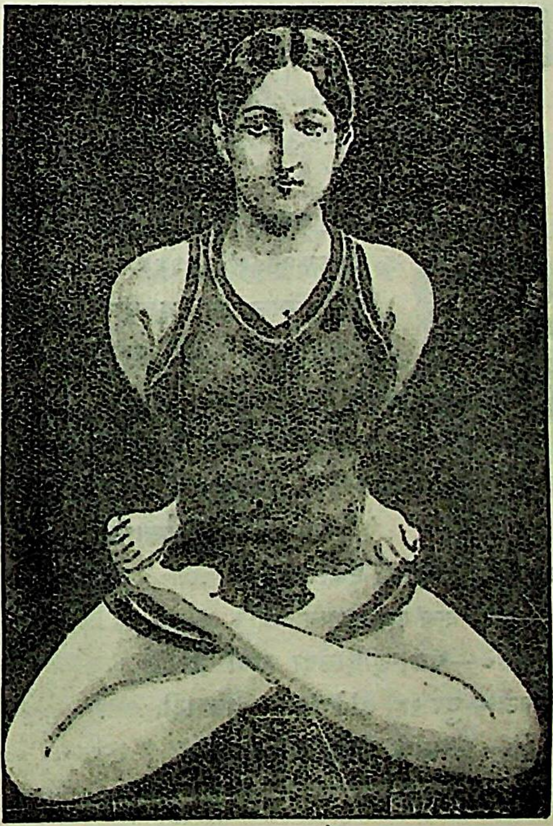

चित्र नं० ३

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्र + हस् + अनट्

(१)

(सदियों का पड़ा हुआ पर्दा उठता है। विक्रम-पूर्व सं० ३६४२ यानी वैदिक काल का सूत्रधार और बीसवीं सदी की नटी नाचते हुए गाते हैं)

दोनो—हिंदी का हो जय-जयकार।

सूत्रधार—स्वामी हलानंदजी से
अब होगा हिंदी का उद्धार।

नटी—धन्य हमारे छायावादी।

सूत्र०—चल, छीछालेदर करवा दी।

नटी—चुप रह, old fool, बकवादी,
समझे भी तू रेशम-खादी।
बढ़वा दी इज़्ज़त जिन लोगों ने
उनसे तू खाता ख़ार।
हिंदी का हो जय-जयकार।

सूत्र०—अरी, ज़रा सुन ध्यान लगाकर
आए हैं ये भाव भगाकर।

नटी—On, I won't care that beggar,
Swami Halanand professor.

सूत्र०—और लोग भी तो कहते हैं,
होगा कहाँ तलक इनकार।
हिंदी का हो जय-जयकार।

नटी—वे सब लोग डंकवाले हैं,
मेरे poet पंखवाले हैं,
तू भी ज़रा चुराकर लिख तो,
देखूँ, है कितना जाँदार।
जय-जयकार।

(पर्दा उठता है)

(२)

नाटकारंभ गीत—

जब से एल० ए० फ़ेल हुआ,
हमारा कॉलेज का बचुआ।
नाक दबाकर संपुट साधे,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

महादेवजी को आराधै,
भंग छानकर रोज़ रात को
खाता मालपुआ ।
वाल्मीकि को बाबा मानै,
नाना व्यासदेव को जानै,
चाचा महिषासुर को, दुर्गा
जी को सगी बुआ ।
हिंदी का लिक्खाड़ बड़ा वह,
जब देखो तब अड़ा पड़ा वह,
छायावाद - रहस्यवाद के
भावों का बटुआ ।
धीरे-धीरे रगड़-रगड़कर,
श्रीगणेश से झगड़-झगड़कर
नत्थाराम बन गया है अब
पहले का नथुआ ।
हमारा कॉलेज का बचुआ ।
(पट-क्षेप)

(३)

(भगवान् विश्वनाथजी की काशीपुरी । स्वामी हलानंद किराए के मकान में आराम-कुर्सी पर तपस्या कर रहे हैं । सामने एक शिष्य खड़ा है । जब स्वामीजी नई खोज में अपनी जुगनुओं-सी चमकती छोटी-छोटी आँखें मूँद लेते हैं, तब संसार का प्रलय हो जाता है । जब छायावादियों को भस्म कर देने के विचार से वे लाल-लाल आँखें खोल देते हैं, शिष्य अदब से बकुली बन जाता है ।)

स्वामी हलानंदजी—(ध्यान से जगकर, अधकटी मूँछों पर आराम के हाथ फेरते हुए, शिष्य से) श्रीमती स्टानली ने अपनी पुस्तक "एसेंस ऑफ़् दी वेस्ट" में लिखा है, सांसारिक सृष्टि को ईश्वर मानने-वाले बेवक़ूफ़ हैं ।

शिष्य—(कौवे की निगाह से देखता हुआ झुक-कर) आपकी क्या राय है ?

स्वामी हलानंद—(फूले हुए गाल गंभीरता के भाप से फुलके बन जाते हैं) बहुत ठीक लिखा है।

शिष्य—(अविश्वास से हँसता हुआ) सांसारिक सृष्टि से आपका क्या अभिप्राय है ?

स्वामी हला०—(बेदर्द मुस्किराहट से) सांसारिक मनुष्य, वस्तु आदि । आजकल के जो छायावादी छोकड़े हैं, इन्हीं में ईश्वर देखते हैं ! इनको ज़रा मज़ा चखा देना है । मैंने एक पुस्तक लिखी है । ये जितने हैं, किसी का भी विशेष अध्ययन नहीं । सब बँगला और अँगरेज़ी का भ्रष्ट अनुवाद करके रख देते हैं । अक़्ल के पूरे बैल हैं । तभी तो इनको fool बनाया है ।

शिष्य—आप आज्ञा दें, तो मैं आपको एक सलाह दूँ ।

हला०—हाँ, कहो । (उत्सुकता से आँखें फाड़कर)

शिष्य—इन लोगों की रचनाओं ने नवयुवकों को हिला दिया है । इन्हें हिलाने की कोशिश में आप ख़ुद कहीं औंध गए, तो बड़ी भद्द होगी ।

(हलानंद शिष्य को बड़प्पन दिखाने के विचार से गंभीर होकर फूलते हैं । नास्तिक शिष्य खड़ा हँसता है ।)

हला०—(भोंपों-मात स्वर से) हिंदी में कौन ऐसा है, जो इन गहन विषयों के उल्लेख समझ सकता हो ?

शिष्य—लेकिन समझ लीजिएगा, मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि आप ख़ुद अपनी पोल खोल रहे हैं । कहीं आप ही के दिमाग़ का दिवाला निकाल दिया गया, तो हम लोग आपके सब सुयोग्य शिष्य यह कैसे सहन करेंगे ?

हला०—सहन करना होगा । मेरी बुराई नहीं सहन करोगे, तो और किसकी करोगे ? (हलानंद उत्तजना में चढ़ी आँखों से शिष्य को देखते हैं)

शिष्य—आप क्या कहते हैं ? इसी तरह आप कभी-कभी अनर्गल लिख जाते हैं । मेरे पास पत्र आया है कि स्वामीजी पहले तुलसीदास को fool साबित करें, और किया ही, जब कि वे संसार में आप हुए राम को ब्रह्म बतलाते हैं, सूरदास दूसरे

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

fool हैं, इस तरह क़रीब-क़रीब सब हिंदू fool, क्योंकि सांसारिक पत्थर की मूर्तियों में ईश्वर की भावना रखते और पूजते हैं। प्रह्लाद की कहानी किसी fool ने लिखी होगी, क्योंकि खंभे से नर-सिंहदेव निकलते हैं। यह सब कौन वाद या प्रवाद है, अथवा प्रमाद या शुद्ध रहस्यवाद है? गुरुदेव, गुरुदेव, बतलाइए, यह सब हम कैसे सहन कर जायँ? हमारे जीते हुए आपकी ऐसी छीछालेदर हो? और, हम अपनी आँख से देखें। य' मर जाने की बातें हैं। शपथ करके कहता हूँ, ऐसा कभी नहीं होगा, नहीं हो सकता, नहीं हुआ। इस पत्र के उत्तर में, मैं लिखूँगा, तुम मूर्ख हो, हमारे गुरुदेव की बातों को तुम क्या समझो, लंठ? तुमने कितना अध्ययन किया है? हमारे गुरुदेव हैं, स्वामी हलानंद-विशालचों, एल्० ए०-फ़ेल सात बार।

(स्वामी हलानंद पस्त हो गए। कलेजा काँप रहा था। डर रहे थे कि अब बड़ी भद्द होगी। शिष्य उनकी मुद्राएँ देख रहा था। जब वह ताकते थे, तब मारे जोश के उन्हीं पर टूट पड़ता था, और बदले के लिये बदल रहा था। भीतर से चाहता था, गुरुदेव हमेशा के लिये इस तरह की हरकत से बाज़ आवें। स्वामी हलानंद ने शिष्य पर आशीर्वादी प्रभाव रखने के मतलब से कहा।)

स्वामी हला०—ख़ामोश रहो, वत्स, जब तुम्हारा अध्ययन पूरा हो जायगा, तब तुम इस पुस्तक की महत्ता आप समझोगे। जो लोग कहते हैं, उनमें ज्ञान कितना है? अर्थात् नहीं है। उन्हें लिखने दो। तुम मेरी निंदा भी नहीं हज़म कर सकोगे, तो दूसरे की कैसे सहोगे?

शिष्य—(मुस्किराता हुआ एकाएक जोश में आकर, लेकिन गोस्वामीजी ने लिखा है—

गुरुवर-निंदा सुनै जो काना;
होय पाप गो-घात समाना।

यह पाप मैं अपने ऊपर कैसे चढ़ा लूँ?

स्वामी हला०—मेरी आज्ञा से, वत्स, मैं तुम्हारा गुरु हूँ, तुम मुझे यही दक्षिणा दो।

शिष्य—तो आप मुझे भी आशीर्वाद दीजिए।

हला०—(गद्गद होकर) जो कहो, जिन शब्दों में कहो, मैं तुम्हें आशीर्वाद देने के लिये तैयार हूँ; पर इस प्रसंग को अब आगे मत बढ़ने देना।

शिष्य—आप मुझे आशीर्वाद दीजिए कि ऐसे महान् सत्यों का उद्घाटन अब आप कभी नहीं करेंगे, और छायावाद-रहस्यवाद पर हमेशा के लिये लिखना बंद कर देंगे, तो मैं भी ख़ामोश हो जाऊँ। लेकिन ओ हो हो! गुरुवर-निंदा! न, दुष्ट को अभी जवाब दूँगा!

हला०—नहीं, हरगिज़ नहीं, वत्स, मैं अब इस विषय पर कभी नहीं लिखूँगा। तुम जवाब मत देना।

शिष्य—ठीक कहा आपने, मैं जवाब नहीं दूँगा, जवाब देना छोटों का काम है, और मौन धारण करना बड़ों का। आप भी अब सदा के लिये मौन धारण कीजिए।

(पट-क्षेप)

महामहोपाध्याय श्रीमान् जटाटवी पन्त

सुज़ाक की शर्तिया दवा

फ़ायदा न हो **जीवन-सुधा** तो दाम वापस

४८ घंटे में सुज़ाक को जड़ से आराम करती है। मूल्य फ़ी शीशी २॥)

मैनेजर भारत-जीवन-कंपनी, पो० नं० ११, अलीगढ़

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

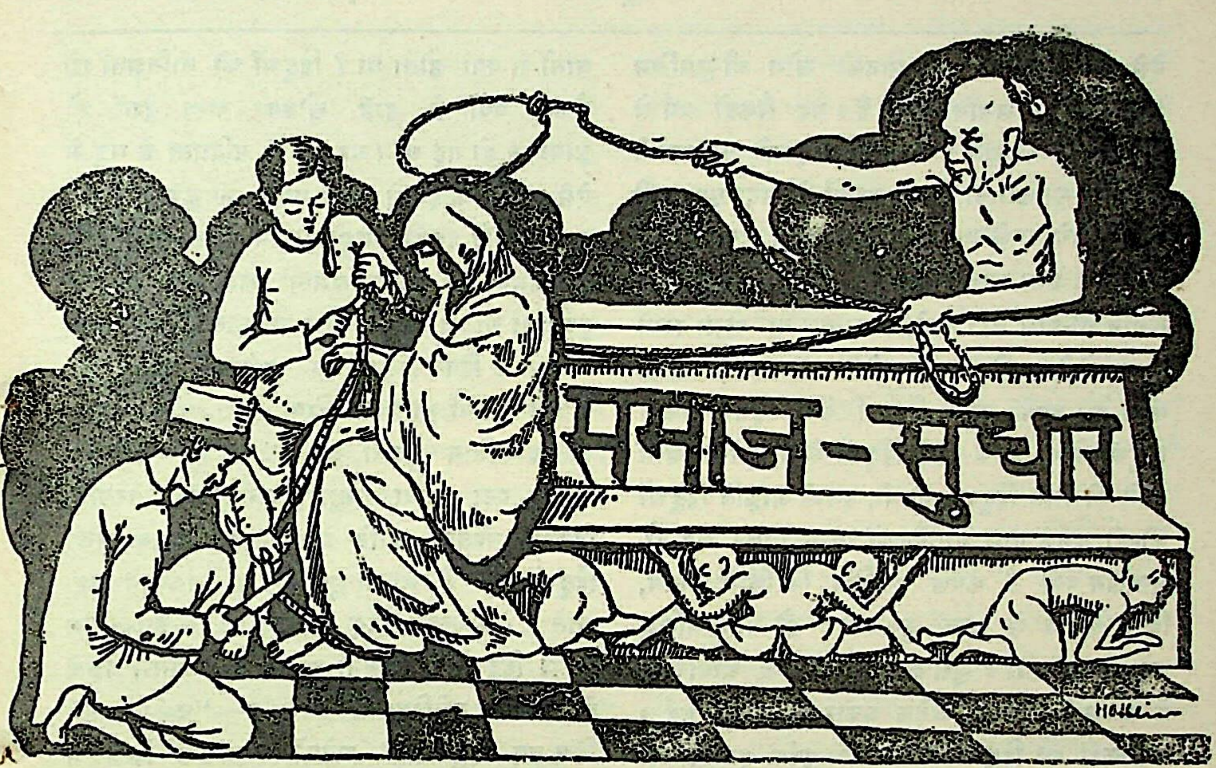

शुद्धि

(गतांक से आगे)

हिंदू लोगों में सबसे बड़ा अवगुण यह है कि वे दूसरों को तो अपने में मिलाते नहीं, और अपने में से निकाल जल्दी देते हैं। हिंदुओं की इस कमज़ोरी को सभी जान गए हैं, और सदा इससे लाभ उठाते हैं। दक्षिण में ईसाइयों के प्रचार का यह साधन था कि ईसाई पादरी रात में कुओं में रोटियाँ डाल देते थे, और जब गाँव के लोग सबेरे उठकर पानी पी लेते, तो पादरी लोग प्रसिद्ध कर देते कि इन्होंने ईसाइयों की रोटी का पानी पी लिया, और ये ईसाई हो गए। इस प्रकार गाँव के लोगों को बिना अपनी इच्छा के ईसाई होना पड़ता था। उनके ही भाई उनको घर से निकाल देते थे। मुसलमानी राज्य के समय और आजकल भी सैकड़ों हिंदू बिना इच्छा के मुसलमान हो जाते हैं। किसी ने भूल से किसी मुसलमान का छुआ पानी पी लिया, और झट उसे मुसलमान बनना पड़ा। उन्होंने हिंदुओं की ख़ुशामदें कीं, हाथ जोड़े, अपने सिरों को उनके पैरों पर रक्खा, और प्रार्थना की कि "भगवन्, दया करो, क्षमा करो, हमने भूल से जल पी लिया, या हमको धोखे से जल पिला दिया गया, या हमको झूठमूठ उड़ा दिया गया है। हमको हमारे प्यारे धर्म से अलग न करो, हम प्रायश्चित्त कर सकते हैं। हम व्रत रख सकते और उपवास कर सकते हैं। हम दंड देने को तैयार हैं। परंतु जिस धर्म में हमारे पूर्वज आदि सृष्टि से चले आते हैं, उससे आप हमको न निकालिए।" परंतु कौन सुनता था? यहाँ तो केवल एक ही उत्तर था— "चलो, हटो, तुम पतित हो गए। हमारा तुमसे क्या संबंध?" ऐसा उत्तर पाकर भी बहुत-सी हिंदू उपजातियाँ मुसलमान नहीं हुईं। आज भारतवर्ष में ऐसे लोगों की संख्या कम नहीं है। प्रत्येक प्रांत में

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ऐसे लोग विद्यमान हैं, जिनको लोग नौ-मुसलिम अर्थात् नए मुसलमान कहते हैं। यह सैकड़ों वर्ष से नौ-मुसलिम कहलाते चले आते हैं। इनको मुसलमानी मत और मुसलमानों के आचरणों से सदा घृणा रही है, इसलिये उनके नाम के साथ नौ (नया) शब्द अभी तक लगा चला आता है। वह मुसलमानों के समान गो-मांस नहीं खाते, न नमाज़ या रोज़ा रखते हैं, न चोटी कटाते और न चचेरी बहन का विवाह ही करते हैं। इनके बर्तन हिंदुओं के-से, इनके मकान हिंदुओं के-से, इनके कपड़े हिंदुओं के-से, इनके प्रणाम करने की रीति हिंदुओं की-सी, इनकी आकृति हिंदुओं की-सी, इनके नाम भी हिंदुओं के-से। फिर यह नौ-मुसलिम क्यों ? केवल इसलिये कि किसी समय, किसी कारण से इनका मुसलमान हो जाना प्रसिद्ध कर दिया गया। मुसलमानी राज्य के अत्याचारों के कारण ये घटनाएँ अनेक प्रकार से उत्पन्न हुईं। कहीं-कहीं तो हिंदुओं ने सफलता-पूर्वक इन अत्याचारों का सामना किया, और प्राण देना अच्छा समझा, परंतु धर्म देना अच्छा न समझा। कहीं-कहीं मुसलमानों ने हिंदुओं की निर्बलता से लाभ उठाकर लोगों को इस योग्य बना दिया कि वे हिंदुओं में न रह सकें, और बस, इतना ही करके छोड़ दिया। किसी को पानी पिला दिया, किसी को खाना खिला दिया इत्यादि। किसी-किसी ने बादशाहों के अत्याचारों से डरकर या उनको प्रसन्न करने के हेतु अपने को मुसलमान या नौ-मुसलिम प्रसिद्ध कर दिया। मुसलमान लोग समझते रहे कि हिंदू एक बार निकलकर फिर मिल ही नहीं सकता, इसलिये ये लोग एक-न-एक दिन अवश्य मुसलमान हो जायँगे। इधर नौ-मुसलिमों ने समझा कि हम मुसलमान तो हुए ही नहीं, केवल नाम प्रसिद्ध कर देने से न हमारा धर्म नष्ट होगा, और न बादशाह अत्याचार करेगा। इस प्रकार की नीति से अपना काम चलाते रहे, और अपने हिंदू भाइयों से प्रार्थना भी करते रहे कि हमको मिला लो, मुसलमानी मत हमको रुचिकर नहीं। परंतु इन बातों से क्या होता था ? हिंदुओं की नीतिज्ञता तो सैकड़ों वर्षों से इन्हें छोड़कर अन्य देशों को प्रयाण हो गई थी। यह अपनी पवित्रता के मद में ऐसे चूर थे कि इनको अपने-पराए की कुछ भी सुध न थी। यदि इनको थोड़ी-सी भी बुद्धि होती, तो उस समय, जब कि मुसलमानी राज्य का बल कम हुआ था या जब कभी ऐसा बादशाह हो जाता था, जो धर्म के विषय में अधिक आक्षेप न करता था, वे ऐसे भाइयों को मिला लिया करते, और हिंदुओं को वह क्षति न पहुँचती, जो आजकल पहुँच रही है। आगरा, एटा इटावा, मथुरा, फ़र्रुख़ाबाद, गिरगाँव, दिल्ली, भरतपुर आदि प्रांतों में इस समय लाखों हिंदू राजपूत हैं, जो नौ-मुसलिम या मलकाने कहलाते हैं। ये वस्तुतः हिंदू हैं, हिंदुओं से इनको प्रेम है, वे हिंदुओं में मिलना चाहते हैं। आगरा ज़िले के सरकारी गज़ेटियर में लिखा है—"धर्म-परिवर्तन किए हुए हिंदुओं के अनेकों वंशज इस ज़िले में सर्वत्र पाए जाते हैं, पर करोली ताल्लुक़े के छः गाँवों में इनकी विशेष बस्ती है। इसके बाद मथुरा, एटा और मैनपुरी ज़िलों में भी इनकी ख़ासी बस्ती है। ये मलकाना कहे जाते हैं। वे धर्म-परिवर्तन किए हुए राजपूतों की श्रेणी में रक्खे जाते हैं। भिन्न-भिन्न स्थानों में वे अपनी भिन्न-भिन्न उत्पत्ति बताते हैं, पर इसमें संदेह नहीं कि उनके पूर्व-पुरुष उच्च वंश-संभूत राजपूत ज़मींदार थे। यद्यपि दुःख के साथ वे अपने को मुसलमान कहते हैं, पर पूछने पर अपनी पहली जाति ही बतलाते हैं, और मलकाना-नाम से पुकारा जाना नहीं चाहते। उनके नाम हिंदुओं के-से होते हैं, और वे हिंदू-मंदिरों में पूजा करते हैं, और उनके आपस के शिष्टाचार का शब्द राम-राम है। वे शिखा रखते हैं, अपनी ही जाति में ब्याह करते हैं, और मियाँ ठाकुर कहलाना चाहते हैं।"

ऐसी जाति को अपने से इतने दिनों अलग रखकर हिंदू-जाति ने वस्तुतः बड़ा पाप किया, और इस पाप का दुःख-रूपी विपाक उनको भोगना पड़ा।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ईश्वर वैयक्तिक अपराधों का इतना कड़ा दंड नहीं देता, जितना सामाजिक अपराधों का देता है; क्योंकि व्यक्तिगत दोष एक व्यक्ति से संबंध रखते हैं, परंतु सामाजिक दोष समाज को कई पीढ़ियों तक पेलते हैं। वस्तुतः हिंदू-जाति को किसी अपराध ने इतना नहीं सताया, जितना इस अपराध ने हिंदू-जाति की सबसे बड़ी महत्ता उसका अहिंसक और दानी होना थी। एक हिंदू चींटी को मारना भी पाप समझता है। इसका आदर्श बताता है कि वह अपनी प्यारी-से-प्यारी चीज़ को दान कर दे, बहुधा हमने धनाढ्य हिंदुओं को स्त्री-दान करते देखा है। हम इस प्रथा को अच्छा नहीं समझते। परंतु इससे केवल एक बात स्पष्ट है। वह यह कि उनको यह सिखलाया गया है कि अपनी प्यारी-से-प्यारी वस्तु को दान कर दो। शुद्धि के विषय में हिंदुओं ने इन दोनो महत्ताओं को विस्मृत कर दिया। जहाँ चींटी के सताने से परहेज़ किया, वहाँ मनुष्यों को सताते रहे। भला मलकाने राजपूतों को सताने का इससे अधिक क्या प्रमाण हो सकता था कि उनका धर्म उनसे छीना, उनको बिरादरी से बाहर किया, और उनके ख़ुशामद करने पर भी उनको सामाजिक समता प्रदान करने पर राज़ी न हुए। डाकू जान लेकर छोड़ता है, चोर माल चुराता है, क्रूर राजा बिना अपराध जुर्माना करता है। परंतु इनसे भी भीषण दंड यह है कि धर्म और समाज से न केवल किन्हीं विशेष व्यक्तियों को ही, किंतु उनकी पीढ़ी-दर-पीढ़ी संतान को भी वंचित रक्खा जाय। हे हिंदू-जाति के वीर पुरुषो! कलेजे पर हाथ रखकर सोचो कि तुमने क्या किया। हम सरकारी गज़ेटियर की बुनियाद पर प्रमाणित कर चुके हैं कि मलकाने राजपूत हिंदू और हिंदू-धर्म को प्रिय समझते थे। ये अन्य हिंदुओं से सामाजिक अधिकार चाहते थे। कई बार इन्होंने उद्योग किया। सामाजिक समता चाहना पाप नहीं। वस्तुतः विना सामाजिक समता के मनुष्य धर्म का ठीक पालन भी नहीं कर सकता। परंतु इनके राजपूत भाइयों ने इन्हें ऐसा करने से रोका। यह भी इन मलकानों की प्रशंसा की ही बात थी कि उन्होंने इतनी विपत्तियों में भी अपनी प्राचीन सभ्यता तथा धर्म के रहे-सहे चिह्नों को मिटने न दिया। परंतु समय में परिवर्तन हुआ। आर्य-समाज के शुद्धि के कार्य ने समस्त हिंदू-जाति को जगा दिया, लोगों का दृष्टि-कोण बदलने लगा। मलकानों ने भी बल दिया। उनको आशा हुई कि जब आर्य-समाज में जन्म के मुसलमान तक शुद्ध हो जाते हैं, तो हिंदू-जाति उनको क्यों नहीं अपनाएगी। यह मामला बहुत दिन तक क्षत्रियों के सम्मुख उपस्थित रहा। परंतु ३० अगस्त, १९२२ ई० की क्षत्रिय-उपकारिणी महासभा की प्रतिनिधि सभा की बैठक बनारस में हुई। अध्यक्ष का आसन माननीय राजा सर रामपालसिंह साहब के० सी० आई०, मेंबर स्टेट-कौंसिल, प्रेसीडेंट, ताल्लुक़ेदारान-सभा, अवध ने ग्रहण किया। उसमें यह प्रस्ताव पास हुआ कि जो राजपूत शाही समय में बलात् मुसलमान बनाए गए थे, परंतु उनके वंशज अब फिर अपने धर्म और बिरादरी में वापस आना चाहते हैं, उन्हें शुद्ध करके बिरादरी में मिला लिया जाय। फिर २९ दिसंबर, १९२२ को क्षत्रिय-प्रतिनिधि सभा की बैठक आगरा में लेफ़्टिनेंट राजा दुर्गानारायणसिंहजी तिरवा (फ़र्रुख़ाबाद)-नरेश के सभापतित्व में हुई, और उस समय क्षत्रिय-जनता की सम्मति जानकर मलकाने राजपूतों को बिरादरी में मिला लेने का प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकृत किया गया। इसके बाद क्षत्रिय-महासभा का २६वाँ वार्षिकोत्सव ३१ दिसंबर को आगरे में श्रीमान् राजाधिराज सर नाहरसिंहजी के० सी० आई० ई० शाहपुराधीश की अध्यक्षता में हुआ। उसमें उपर्युक्त प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकृत हुआ।

इस स्वीकृति ही की देर थी। स्वीकृति पाते ही मलकाना राजपूतों को शुद्ध करना प्रारंभ हो गया। इच्छा तो दोनो ओर थी ही। केवल संस्कार की कसर थी। सो शुद्धि-सभा ने पूरी कर दी। श्रीस्वामी श्रद्धा-

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नंदजी दिल्ली से, श्रीमहात्मा हंसराजजी लाहौर से, सनातन-धर्मोपदेशक श्री पं० गिरिधर शर्मा, सनातन धर्म-उपदेशक श्रीपं० दीनदयालुजी व्याख्यान-वाचस्पति, सनातनधर्म के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्रीस्वामी दयानंद, ये सब शुद्धि के कार्य में लग गए। हवन किए गए, जनेऊ दिए गए, और मलकाना राजपूतों को फिर अपनी बिरादरी में मिला लिया गया। समस्त हिंदू-जाति में इस शुद्धि से कितनी जागृति हुई है, उसके समाचार पत्रों में छपते ही रहते हैं। हम यहाँ केवल अभ्युदय के कुछ शब्द उद्धृत करते हैं—

"अब आशा प्रबल होती है कि हिंदू-जाति फिर एक बार शक्तिशाली होगी। हिंदू-भाइयों ने हिंदू-धर्म और हिंदू-जाति की लाज रख ली। जो साढ़े चार लाख राजपूत किसी समय में दबाव से या अपनी कमज़ोरी से मुसलमान हो गए थे, उनको शुद्ध कर गर्भ में ले लेने का हिंदू-जाति ज़ोरों से प्रयत्न कर रही है। वास्तव में जीती-जागती जाति का एक यह ज्वलंत प्रमाण है कि वह ग़ैरों को अपना ले और अपना-सा बना ले।...... हिंदू-जाति का इतिहास यदि देखा जाय, तो यह छिपा नहीं कि कितने अवसरों पर इसने दूसरों को अपने गर्भ में ले लिया था। इसके विपरीत इतिहास की यह भी घोषणा है कि जिस दिन से हिंदू-जाति ने अपनी संख्या में इस तरह की वृद्धि का ख़याल छोड़ा, उसी दिन से उन्नति के मार्ग की ओर उसकी पीठ हो गई। आज हिंदू-जाति को फिर अभिमान करने का अवसर प्राप्त है, क्योंकि हमारा दृढ़ विश्वास है कि इन साढ़े चार लाख बिछुड़े हुए भाइयों के मिलने से, साथ ही ऐसे ही अन्य भाइयों को भी मिलाने से हमारा सौभाग्य-सूर्य शीघ्र ही गगन-मंडल में चमकता हुआ दिखाई देगा। हम हिंदू-जाति को इस अवसर पर बधाई देते हैं।"

गंगाप्रसाद उपाध्याय (एम्० ए०)

इधर देखिए ! निकलनेवाला है !! इधर देखिए !!!

सैकड़ों क्या, हज़ारों-लाखों रुपए पैदा कराने के

बहुमूल्य हुनर सिखानेवाला एक-मात्र

अपूर्व हिंदी त्रैमासिक पत्र

"पैसा" के शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥) मनीऑर्डर से भेजिए। विज्ञापनदाताओ ! इस पत्र में विज्ञापन छपाने से बहुत लाभ होगा। रेट पत्र द्वारा मालूम करें।

मैनेजर—चौहान "पैसा"-कार्यालय, (S.L.) बनखेड़ी

G.I.P.Ry.

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पिस्ते का मुरब्बा

पिस्ते के दो-दो टुकड़े करके चाशनी में डाल दो या हरे और कच्चे पिस्ते के हरे छिलके पानी में उबालकर नर्म कर लो। फिर बराबर की चीनी और दुगना पानी मिलाकर आग पर इस क़दर पकाओ कि चाशनी में तार बँध जावे। उसके बाद उतारकर ठंडा कर लो।

हड़ का मुरब्बा

इसको हरीले एक डेग में पानी डाल ग्यारह दिन तक भिगोवे, और तीसरे दिन पानी बदलता रहे। बारहवें दिन निकालकर शहद की चाशनी में डाल दे।

छुहारे का मुरब्बा

छुहारों को रात-भर पानी में भिगोवे। सबेरे निकालकर शक्कर या शहद की चाशनी में डाल दे। मुरब्बा बन जावेगा।

गाजर का मुरब्बा

गाजर को थोड़ा जोश देकर उसके छिलके और बीच की कड़ी नस निकालकर साफ़ कर लो, फिर पोछकर और सुखाकर सफ़ेद खाँड की तीन तार की चाशनी में डाल दो, तीन रोज़ के बाद देख लो, अगर चाशनी पतली पड़ गई हो, तो फिर पकाकर उसे गाढ़ा कर लो। कुछ लोग गाजर दूध में पकाकर पोछकर घी में भूनकर फिर चाशनी में डालते हैं।

पेठे का मुरब्बा

पका हुआ पेठा लेकर छील डाले। फिर छोटे-छोटे टुकड़े करके चूने के पानी से धोकर रख दे। फिर थोड़ी देर बाद साफ़ पानी से धोकर कुछ सुखा डाले, जिसमें पानी सूख जाय। फिर मुरब्बा गोदनेवाले पंजे से, जो लोहे या पीतल का होता है, गोद डाले, और थोड़ा घी कड़ाई में डालकर भून ले। इसके बाद चीनी की चाशनी बनाकर उसमें डुबो दे, और अमृतबान में भरकर रख देवे।

कृष्णवतीदेवी श्रीवास्तव

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

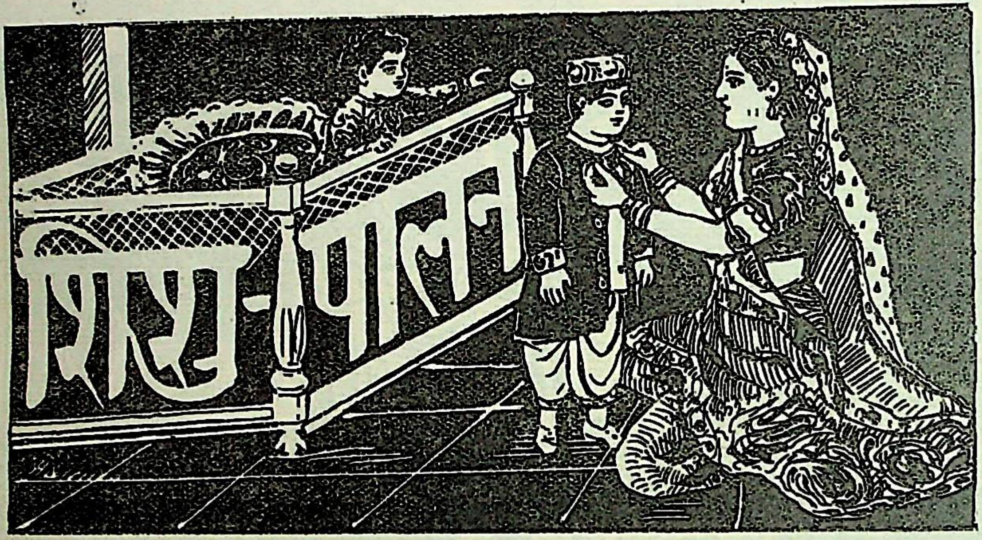

शिशु की परिचर्या

धात्री या माता के लिये यह आवश्यक है कि शिशु की प्राथमिक परिचर्या को भले प्रकार जाने। अन्यथा इस समय की अज्ञानता कई बार शिशु की मृत्यु का कारण सुगमता से बन सकती है।

उत्पन्न प्रजात शिशु चूँकि ऐसे स्थान से आ रहा होता है, जहाँ बाह्य वायुमंडल की वायु और भगवान् सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँच सकता, अतः आवश्यक है कि कुछ समय तक उसे प्रकाश और वायु से बचाया जाय, जिससे सहसा वायु-परिवर्तन के विकार उस पर आक्रमण न कर सकें।

इसके लिये उसे गरम फलालेन में लपेटकर ऐसे स्थान पर रख देना चाहिए, जहाँ वायु का झोंका न आ सके। परंतु इसके साथ यह भी आवश्यक है कि घर की वायु स्वच्छ रहे। अन्यथा शिशु का श्वास अशुद्ध वायु से भरा होगा।

परीक्षा—इसके पश्चात् उसके जीवित होने की परीक्षा करनी आवश्यक है। परंतु कई बार यह उत्पत्ति के समय ही कर ली जाती है। यह परीक्षा हृदय या नाभि-नाल में स्थित धमनी के स्पंदन से हो सकती है। शिशु का रोदन भी उत्तम चिह्न है। यह रोदन स्वाभाविक एवं प्राकृतिक होने के कारण आवश्यक है। इसका न होना शिशु की अस्वस्थता का संदेह करा देता है। कारण, गूँगे बच्चे प्रायः रुदन नहीं करते। इस रोने में वह श्वास की मात्रा में वायु ग्रहण करता है, जिससे फुफ्फुस फैलकर श्वास-क्रिया आरंभ कर देते हैं। यदि ऐसा न हो, तो उसे रुदन करने के लिये बाधित करना चाहिए।

नाभि-छेदन—तदनंतर नाभि-छेदन की समस्या आती है। नाभि-नाल काटी जाय, इससे पूर्व उसमें स्पंदन बंद हो जाना आवश्यक है। जब तक नाल में स्पंदन प्रतीत हो, नाल का छेदन नहीं करना चाहिए। अन्यथा रक्तस्राव होकर शिशु की मृत्यु का भय है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नाल-छेदन के समय के उपकरण एवं हाथ, ड्रेसिंग आदि सबको स्टेरेलाइज़ एवं ऐंटीसेप्टिक कर लेना आवश्यक है। अन्यथा पाक होने का भय है, जिससे विष व्याप्त होकर अकाल में ही मृत्यु का कारण हो जाता है।

जब स्पंदन बंद हो जाय, तब (जो कि उत्पत्ति के कुछ मिनटों में हो जाती है) नाभि से दो इंच की दूरी पर एक शल्यकर्म की गाँठ (Surgical nobe) * बाँध देनी चाहिए, और दूसरा बंधन इससे तीन इंच की दूरी पर बाँध देना चाहिए, जिससे यदि कोई रक्तस्राव हो रहा हो, तो वह इसके कारण रुक जायगा। इसके पश्चात् नाल को नाभि के बंधन से ½ इंच की ऊँचाई पर तेज़ ऐंटीसेप्टिक चाकू या क़ैंची से काटकर उस पर प्रतिसारण चूर्ण (Dusting Powder) छिड़क देना चाहिए। काटते समय नाल को उँगली पर उठा लेना चाहिए। यदि रक्तस्राव होता प्रतीत हो, तो दूसरा बंधन बाँध देना चाहिए।

श्वास—चूँकि नाभि-नाल के काटने से शिशु का जीवन माता से सर्वथा पृथक् हो जाता है, अतः नाभि-नाल के काटने से पूर्व श्वास-प्रश्वास-क्रिया को सुचारु रूप से जाग्रत कर देना आवश्यक है। इसके लिये श्वास-मार्ग को पूर्ण स्वच्छ करना चाहिए। मुख एवं प्रणालियाँ श्लेष्मा से आवृत होती हैं, जो कि गर्भावस्था में होनी आवश्यक हैं। अन्यथा शिशु अन्य अनावश्यक पदार्थों का पान कर सकता है। अतः भगवान् ने उसके अवरोध के लिये मुख, नाक और गले में श्लेष्मा संचित कर दी है।

श्लेष्मा को निकालने के लिये उँगली पर रुई लपेटकर श्लेष्मा को मुख, गले से निकाल देना चाहिए। अथवा नाड़ी-यंत्र (cathter) के द्वारा चूस लेना चाहिए। यदि इससे भी श्वास-क्रिया आरंभ न हो, तो अन्य उपायों का अवलंबन करना चाहिए अथवा शिशु के ऊपर ठंढा पानी डालना चाहिए, एवं नितंब तथा पीठ पर हलके-हलके थप्पड़ लगाने चाहिए, जिससे शिशु में रुदन आरंभ हो जायगा और श्वास-प्रश्वास चलने लगेगा। *

स्वच्छता—शिशु की उत्पत्ति के समय उसके संपूर्ण शरीर पर एक चिकना पदार्थ लगा रहता है, जिसको "वर्नीक्स के जी ओज़ा" कहते हैं। यह शरीर की अंतिम मासों में गर्भाशय-जल में पड़े मल-मूत्रादि से रक्षा करता है। यह पदार्थ किसी में अधिक मात्रा में होता है, और किसी में कम। इसे दूर कर देना आवश्यक है।

शिशु के शरीर पर जैतून का तेल, वैसलीन या स्नानरज चूर्ण मलकर उसे धात्री इस प्रकार उठावे, जिसमें बायाँ हाथ सिर और पीठ पर रहे, एवं दाहना हाथ घुटनों के नीचे। स्नान के लिये टब में बिठा देने से पूर्व सिर, माथा और चेहरा पानी से (कवोस्ता जिसका ताप-परिमाण ९९ हो। यह तापोष्णिमा अभ्यास के द्वारा भी जानी जा सकती है) धो देना चाहिए। टब में पानी ओछा रखना चाहिए, जिससे नाल भीगे नहीं। टब में पीठ और सिर बाएँ हाथ पर रखना चाहिए, अथवा टब के सहारे बैठा देना चाहिए। फिर दाहना हाथ निकालकर कोमल मलमल के साथ (जिसमें साबुन लगा हो) इस प्रकार मालिश करे, जिससे त्वचा को हानि न पहुँचने पावे। शिशु को पानी में ग़ोता नहीं देना चाहिए। उत्तम हो कि दो पानी में स्नान दिया जाय। कारण, प्रथम पानी चिकनाई के कारण

---

* Surgical Node—यह १½ गाँठ कही जाती है। उत्तम है कि नाल का छेदन सुई के द्वारा करके गाँठ बाँधनी चाहिए। यदि यह संभव न हो, तो ऊपर से ही बाँध सकते हैं।

* खल्वेमानि कर्माणि क्रियमाणे जातमात्रस्यैव कुमारस्य कार्याणेतानि कर्माणि भवंति। तद्यथा अश्मनोः संघट्टनं, कर्णयोर्मूले शीतोदकेनोष्णोदकेन वा मुखपरिषेकः। तथा संक्लेशविहितान् प्राणान् पुनर्लभेत।

ततः प्रत्यागतप्राणं प्रकृतिभूतमभिसमीक्ष्य, स्नानोदकगुणाभ्यामुपपादयेत्। अथास्य ताल्वोष्ठजिह्वा कंठप्रमार्जनमारभेत। अंगुल्या सुपरिलिखित नखया।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ख़राब हो जाता है, अतः दूसरे पानी में स्नान देना चाहिए। स्नान के पश्चात् शिशु की त्वचा का ध्यान रखकर उसे तौलिए के द्वारा पूर्ण ख़ुश्क कर देना चाहिए। विशेषतः जाँघ, घुटने, बग़ल, गर्दन के नीचे।

स्नान के पीछे आँखों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इस समय की त्रुटि के कारण बहुत-से अक्षि-रोग शिशु में हो जाते हैं। इस समय की स्वच्छता आँखों को कई भावी रोगों से बचा देती है। विशेषतः औपसर्गिक जन्य संक्रमणों (Gonoinfection) से।

आँख की स्वच्छता के लिये विलायती रुई को टंकणघोल (१ औंस में १० ग्रेन बोरिक-एसिड) में भिगोकर नाक से बाहर की ओर आँख को साफ़ करें। पिचु को एक बार ही प्रयोग करना चाहिए। दूसरी बार के लिये दूसरा पिचु व्यवहार करे। फिर कास्टिक लोशन 1% का आँख में एक-एक बूँद डाल देना चाहिए। इस विधि (Cread's method) से आँख कुछ दिनों को लाल तो अवश्य हो जायगी, किंतु शिशु बहुत-से अक्षि-रोगों से बच जायगा। यह लालिमा कुछ समय के बाद स्वयं चली जायगी। शिशु की आँख पर घी या मक्खन नहीं लगाना चाहिए। इससे मक्खियाँ बैठकर अंडे दे देती हैं, जिससे अक्षिशोथ हो जाता है।

निरीक्षण—आवश्यक कर्मों को समाप्त करके शिशु का निरीक्षण आवश्यक है। कारण, यदि इस समय कोई उत्पत्तिकालीन विकार हो, तो वह सुगमता से (चिकित्सक की सहायता से) हटाया जा सकता है। यथा अपूर्ण गुदा का होना। अथवा कठिन प्रसव में कहीं अस्थिभंग आदि हो गया है, तो वह भी ठीक किया जा सकता है। *

* सुपरिक्षालितेपधानकार्पासपिचुमत्या प्रथमं प्रमार्जितस्यास्य च शिरस्तालूकार्पासपिचुना, स्नेहगर्भेन प्रतिच्छादयेत। ततो ह्यस्या अनन्तरं कार्यं सैन्धवोपहितेन सर्पिषा प्रच्छर्दनम्।

विश्राम—इन सब कार्यों से जहाँ धात्री को आराम की आवश्यकता प्रतीत होगी, वहाँ शिशु भी इस परिश्रम से थक जायगा। अतः उसे नींद आना स्वाभाविक है। इसलिये उसे आराम देने के लिये एक साधारण बिस्तर पर (जो न तो बहुत गर्म हो, और न बहुत ठंडा, फलालेन उत्तम है) लेटा देना चाहिए। नींद सम्यक् प्रकार आवे, इसके लिये शिशु को लपेटकर (उत्तम हो कि उसे इस प्रकार लपेटें कि टाँगें संकुचित रहें, परंतु जंघाएँ कोष्ठ पर न आवें, इसके लिये हलका बंध दे सकते हैं। अथवा एक वस्त्र में, जोकि दो थंभों में झूल रहा हो, लिटा दें। भार के द्वारा वस्त्र नीचे झुका रहेगा। यह प्रथा गुजरात प्रांत में विशेष रूप से है।) सुला देना चाहिए। जिस फलालेन में लपेटना हो, उसे शीतदेश या शीतऋतु में थोड़ा-सा गरम कर लेना चाहिए। विश्राम देने के लिये धात्री शिशु को अपने हाथों पर भी आराम से रख सकती है। इसमें धात्री का बायाँ हाथ सिर के नीचे, घुटने पीठ और टाँगों को सहारा देते रहेंगे। घुटनों के अभाव में वाम हाथ पर सिर, उँगलियों पर पीठ एवं दक्षिण हाथ घुटनों के नीचे रहना चाहिए। वाम हाथ दक्षिण हाथ से ऊँचा रखने से शिशु का सिर थोड़ा उठा रह सकता है।

अत्रिदेव गुप्त

नाड्यास्तस्याः कल्पनविधिमुपदेश्यामः—नाभिबन्धात् प्रभृति हित्वाष्टाङ्गुलमभिज्ञानं कृत्वा, छेदनावकाशस्य, द्वयोरन्तरयोः शनैर्गृहीत्वा तीक्ष्णेन रौक्मराजतायसानां छेदनानामन्यतमेनार्द्धधारेन (कुशपत्रेण वा लेखक) छेदयेत्। तामग्रे सूत्रेणोपबध्य कंठे च स्य शिथिलमवसृजेत्।

असम्यक् कल्पने हि नाड्या आयामव्यायामोत्तुण्डिका, पिण्डलिका, विनामिका, वितम्भिका, व्याधिभ्यो भयम्। सर्वगन्धेन स्नानं दद्यात्।

आत्रेय

देखिए सुश्रुत, १० म० शा०

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जन्म
अगस्त, १९०९

श्रीमती ऊर्मिलादेवी शास्त्री
(मेरठ के महिला-सत्याग्रह-दल की कप्तान)

जेल-यात्रा
१८ जुलाई, १९३०

[आपको पिकेटिंग-आर्डिनेंस में ६ मास की सज़ा मिली है। आपका अंतर्जातीय विवाह अभी कुछ ही महीने हुए पं० धर्मेंद्रनाथजी, शास्त्री, एम्० ए०, तर्कशिरोमणि से हुआ।]

"मेरे पिताजी मुझे काश्मीर बुला रहे हैं, पर मेरा काश्मीर तो जेल में है, जिसके अंदर पार्थिव जगत् की सबसे सुंदर विभूति—गांधी—बंद है।"—ऊर्मिला

Ganga Fine Art Press, Lucknow.

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रीमती इंदुमती गोयनका

[आयु १९ वर्ष । कलकत्ते के सुप्रसिद्ध बाबू केशवदेवजी गोयनका की धर्म-पत्नी । बंगाल की सर्व-प्रथम तथा मारवाड़ी जाति की एक-मात्र राजबंदिनी । पुलिस को भड़काने के अपराध में ६ मास की आपको सज़ा हुई है ।]

कुमारी रामेश्वरीदेवी गोयल बी० ए०

[आपने अभी बी० ए० की परीक्षा योग्यता-पूर्वक पास की है ! आप अच्छी वक्ता हैं, और सुधा की अपनी कवि भी ।]

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

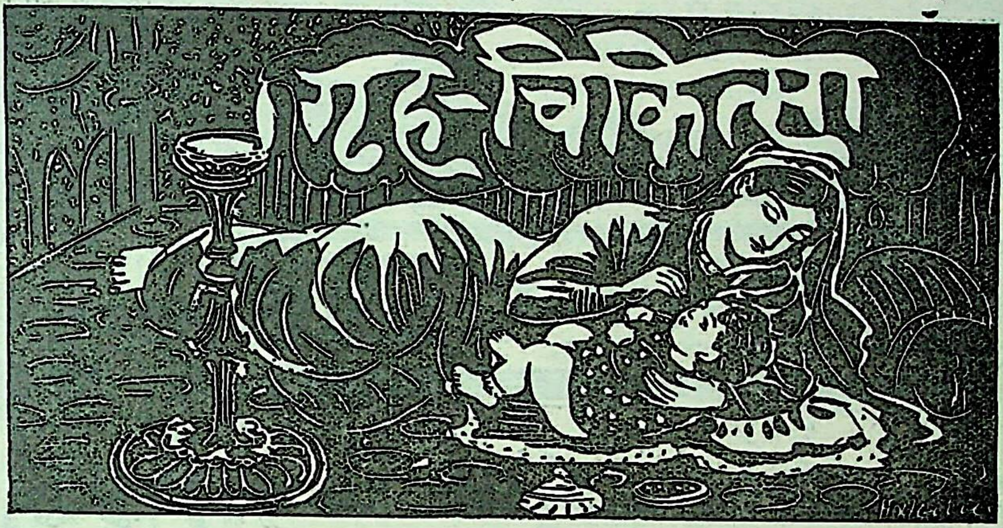

गुल्म-नाशक योग

एलुवा दो भाग, भुना सुहागा दो भाग, काली मिर्च एक भाग, घी में सिकी हींग एक भाग, काला नमक डेढ़ भाग। उपर्युक्त सब वस्तुएँ यथावत् लेकर घीकुमारी (गुवारपाठा) के रस में २४ घंटे खरल कर छोटे बेर बराबर गोली बना ले। प्रातः-सायं एक-एक गोली पान के साथ सेवन करने से सब तरह के वायुगोला को एवं मासिकधर्म बंद होने से उत्पन्न गुल्म (पेट की गाँठ) को नाश करता है।

वायुगोला

लाल मिर्च के बीज एक छटाक तवे पर ख़ूब भून ले। उसके बाद दो माशे से छः माशे तक गरम जल के साथ एक-एक घंटे बाद दे, जब तक दर्द बंद न हो।

मासिकधर्मावरोध

आग पर फुलाया हुआ सुहागा एक तोला, घी में सिकी हींग एक तोला, हीरा कसीस एक तोला, एलुवा एक तोला।

उपर्युक्त औषधियों को कुमारीरस (गुवारपाठे का रस) में दो दिन ख़ूब खरल करके चने प्रमाण गोलियाँ बनावे। प्रातः-सायं गौ के दूध के साथ खावे। यदि गर्मी ज़्यादा मालूम हो, तो खाने में गौ का घी-दूध ज़्यादा काम में लावे। यदि स्त्री कमज़ोर हो, तो पौष्टिक पदार्थ खिलावे, और यदि बलवती (मोटी) हो, तो दही-बड़े खिलाना, और मांसाहारी हो, तो मछली खिलावे। दो सप्ताह दवा देकर एक सप्ताह तक बंद कर दे, फिर दो सप्ताह देकर बंद कर दे, तो एक मास में ऋतुमती हो जायगी।

रक्त-पित्त (नकसीर)

कोथमीर का रस तथा देशी कपूर घोटकर दिन में तीन-चार दफ़ा दो-दो, तीन-तीन बूँद नाक में टपकावे, तो ख़ून बंद हो।

भिषक् महावीरप्रसाद चतुर्वेदी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

१. साहित्य

स्वप्नों के चित्र—साहित्य-संबंधी कहानियाँ और प्रहसन। लेखक, श्रीरामनरेश त्रिपाठी। प्रकाशक, हिंदी-मंदिर, प्रयाग। मूल्य ॥)

'स्वप्नों के चित्र' लेखक के दिमाग़ की सुंदर सूझों के शाब्दिक चित्र हैं। शृंगाररस और शृंगारी कवियों के कार्टून यदि बनाए जायँ, तो त्रिपाठीजी के इन शब्द-कार्टूनों से बढ़कर नहीं हो सकते। आपके ही शब्दों में पुस्तक की उपयोगिता इस प्रकार है—"सैकड़ों वर्षों से शृंगारी कविता ने हिंदुओं में आलस्य, बेकारी, कायरता, कुरुचि और चरित्र-हीनता का विष फैला रक्खा है। मैं उसको अब अधिक फैलने देने का विरोधी हूँ। पुराने शृंगारी कवियों ने जो कुछ कहा है, वह कला की दृष्टि से चाहे जैसा उत्कृष्ट हो, पर उपयोगिता की दृष्टि से वह समय के अनुकूल नहीं है। उनके द्वारा हिंदी में शृंगाररस आवश्यकता से कहीं अधिक आ चुका है। अब जितना है, उतना ही हज़म नहीं हो सकता; अधिक के लिये गुंजाइश कहाँ है? इसी बात की ओर हिंदी के कवियों और रसिकों का ध्यान आकर्षित करने के लिये मैंने ये कहानियाँ और प्रहसन लिखे हैं।"

शृंगारी कविता के विषय में हम त्रिपाठीजी से पूर्णतया सहमत हैं। किंतु उन्होंने जिस ढंग से उसका मज़ाक़ बनाया है, वह हमें पसंद नहीं। वह कुछ अजीब बेढंगा-सा तरीक़ा मालूम होता है। अच्छा होता, यदि त्रिपाठीजी बायरन के-से व्यंग्य का आश्रय लेते, तब उनका यह आक्रमण अधिक साहित्यिक और तीव्र होता।

अस्तु। समष्टि रूप से पुस्तक मनोरंजक है। छपाई-सफ़ाई भी अनिर्वचनीय है। प्रकाशक से प्राप्य।

× × ×

पद्य-प्रवेशिका—लेखक, श्रीसुवर्णसिंह वर्मा 'आनंद'। प्रकाशक, मुकुंदमंदिर, बेलनगंज, आगरा। मूल्य ॥)

यह पद्य-रचना-संबंधी पुस्तक एक नाटक-लेखक द्वारा लिखी गई है। लेखक महोदय ने 'विनीत विनती' में एक अजीब ऊट-पटांग कहानी-सी लिखकर इस पुस्तक के लिखने की आवश्यकता समझाई है, और अंत में अपने लिखे नाटकों

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

की पूरी तालिका देकर इस पुस्तक की त्रुटियों के लिये क्षमा माँगी है । मालूम नहीं, इस सबका क्या मतलब है ।

वैसे पुस्तक कुछ अंश में बहुत उपयोगी है, और इस विषय के विद्यार्थियों के पढ़ने लायक़ है । बिलकुल नए ढंग की और सामयिक कवियों की कविता के उदाहरणों से विभूषित यह पुस्तक हमारी समझ में प्रत्येक कविता-प्रेमी के संग्रह-योग्य है ।

× × ×

२. गल्प-कहानी

अस्फुट कलियाँ—लेखक, श्रीबैजनाथ केडिया । प्रकाशक, हिंदी-पुस्तक-एजेंसी, २०३, हरीसन रोड, कलकत्ता । मूल्य १)

केडियाजी वणिक प्रेस और हिंदी-पुस्तक-एजेंसी के मालिक और 'सेवक' के संपादक हैं । हिंदी-संसार में लेखक के रूप में आप अभी हाल में ही आए हैं । आपकी लिखी ये दस सामाजिक कहानियाँ सजिल्द होकर जनता के सामने आई हैं । ये कहानियाँ अभी काफ़ी अस्फुट हैं । किंतु उनमें सुवास का एकदम अभाव नहीं । उनका संग्रह फलप्रद होगा, इसमें संशय नहीं । छपाई साधारण, जिल्द जल्दी ही टूटनेवाली ।

सुधींद्र वर्मा (एम्० ए०)

× × ×

सुधांशु—लेखक, श्रीयुत राय कृष्णदास । प्रकाशक, भारती-भंडार, रामघाट, बनारस सिटी । पृष्ठ-संख्या ६७ । मूल्य ॥)

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक महाशय की बारह कहानियों का संग्रह है । कहानियाँ उस मेल की हैं, जिससे 'तूलिका' के पाठक परिचित होंगे । आजकल कुछ साहित्यसेवी काव्य और गल्प में छायावाद की उपासना कर रहे हैं । प्रस्तुत गल्प इसी उपासना के प्रतिफल हैं ।

इन कहानियों में विशेषता यह होती है कि इनके भाव-चित्र स्पष्ट नहीं होते, उनमें रंग नहीं भरा जाता । चरित्रों का विशेष विकास नहीं होने दिया जाता । भाव की झलक देकर ही कलावंत अंतर्धान हो जाता है । कहानी के पाठक पर जादू काम कर जाता है । वह अपने भावों की स्वयं विवेचना नहीं कर सकता, थोड़ी देर के लिये वह चिरस्थित अहंमन्यता को भूल जाता है । यही कला का आनंद है । यही इन कहानियों का भी आनंद है ।

राय कृष्णदासजी की कहानियाँ आपकी भावी प्रतिभा की सूचना दे रही हैं । अभी भाषा और शैली कुछ अपरिपक्व है । अभी 'सुधांशु' का ही दर्शन मिला है । आशा है, सुधा-वृष्टि भी होगी ।

× × ×

३. उपन्यास

कंकाल—लेखक, श्रीजयशंकर 'प्रसाद' । प्रकाशक, भारती-भंडार, रामघाट, बनारस सिटी । पृष्ठ-संख्या ३६६ । मूल्य ३)

श्रीयुत 'प्रसाद'जी की गिनती हिंदी के प्रतिभाशाली लेखकों में है । अभी तक आपने काव्य और नाटक के अतिरिक्त छोटी-छोटी कहानियाँ ही लिखी थीं । प्रस्तुत पुस्तक में आपने पहली बार एक सामाजिक उपन्यास लिखने का प्रयत्न किया है ।

किसी प्रतिभाशाली लेखक की आलोचना करना सरल नहीं । इसलिये हमने पुस्तक को आद्योपांत पढ़ा और फिर पढ़ा, क्योंकि पहले अध्ययन में हमें उसमें किसी प्रतिभा के दर्शन न मिले । इसके अतिरिक्त हमें उसमें कुरुचि की भी कुछ गंध मालूम हुई । इसलिये हमने उसे फिर पढ़ा । परंतु हमारे विचार पुस्तक के प्रति और भी पुष्ट हो गए । यदि 'प्रसाद'जी का साहित्य-संसार में इतना मान न होता, तो शायद हम आलोचना भी न करते ।

यदि 'प्रसाद'जी का उपन्यास सन् २०३० में किसी सामाजिक इतिहासवेत्ता के हाथ पड़े, तो उसका निर्णय यही होगा कि सन् १९३० का हिंदू-समाज व्यभिचार की कर्मनाशा में डूबा हुआ था। ध्यान तो दीजिए, 'कंकाल' के सामाजिक चित्र-पट पर

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

किसी भी ऐसे चरित्र के दर्शन नहीं मिलते, जो कलुषित न रहा हो। श्रीचंद्र और निरंजन से लेकर बाथम तक और तारा से लेकर किशोरी और घंटी तक, सभी स्त्री-पुरुष का शिकार करते दिखाई देते हैं। क्या हिंदू-समाज का यह वास्तविक चित्र है? यदि है, तो मिस मेयो बहुत ठीक कहती हैं। स्वराज्य की माँग में भी कोई दम नहीं है; क्योंकि ऐसा कलुषित समाज न स्वराज्य ले सकता है, और न उसका उपयोग ही कर सकता है।

'प्रसाद'जी क्षमा करें। यदि वास्तव में आपको हिंदू-समाज की दुर्दशा का चित्र खींचना था, तो उसे बड़े कौशल से खींचते। आख़िर प्रेमचंदजी ने 'सेवा-सदन' और 'प्रेमाश्रम' में तथा रवींद्रजी ने 'आँख की किरकिरी' में हिंदू-समाज की बुराइयों का चित्र खींचा है। परंतु ये चित्र विकारमय नहीं होने पाए हैं। उन्होंने सामाजिक आदर्शों की हत्या नहीं की है।

किसी जगह निवेदन किया जा चुका है कि शैतान का कला-पूर्ण चित्र खींचना बहुत कठिन है। चित्र की तारीफ़ यह होनी चाहिए कि पापियों की ओर से आपके हृदय में सहानुभूति के भाव पैदा हों, परंतु पाप से आप बच जायँ। यह काम कला-कोविदों का है, साधारण लेखकों का नहीं। 'प्रसाद'जी अच्छे लेखक हैं। परंतु आप अभी तक काव्य और नाटक ही पर अधिकार कर चुके हैं। अभी आपका औपन्यासिक कला पर प्रभुत्व नहीं जम पाया है। इसीलिये आप देखते हैं कि कहानी के भीतर कहानी देकर उपन्यास का कलेवर बढ़ाने का यत्न किया गया है। विषय भी बहुत कठिन लिया। फलतः कहना पड़ता है कि 'कंकाल' 'प्रसाद'जी के योग्य कदापि नहीं।

लेखक महाशय से विनम्र अनुरोध है कि यदि आप औपन्यासिक क्षेत्र ही में आना चाहते हैं, तो पहले कुछ ऐतिहासिक उपन्यास लिखिए। आपने ऐतिहासिक नाटकों में बहुत सफलता प्राप्त की है। इसलिये ऐतिहासिक उपन्यास-लेखन में आपको अधिक सफलता होगी। अभी सामाजिक उपन्यास लिखने का प्रयत्न न कीजिए। हिंदू-समाज की सफ़ाई का काम किसी 'उग्र' के हवाले ही रखिए।

कालिदास कपूर (एम्० ए०)

× × ×

४. नाटक

पृथ्वीराज चौहान—लेखक, श्रीगोविंदराम गुप्त वसंत। प्रकाशक, बेलवेडियर-प्रेस, प्रयाग। मूल्य ॥)

उपर्युक्त नाटक हिंदी-साहित्य की नाट्यकला-संबंधी त्रुटि को पूरा करने के लिये लिखा गया है। इसमें सम्राट् पृथ्वीराज का जीवन-चित्र चित्रित करने का प्रयत्न किया गया है। पात्रों की भरमार, भाषा के शैथिल्य और कथानक की अस्त-व्यस्तता के कारण नाटक अभिनेय नहीं। यह 'प्रसाद'जी के स्कंदगुप्त के समान बेमुहावरा भाषा, उद्देश्य-हीन पात्र-चित्रण और ऐतिहासिक भूलों से भरा होने के कारण सफल पाठ्य नाटक भी नहीं कहा जा सकता। हाँ, 'प्रसाद'जी के स्कंदगुप्त के-से बेसिर-पैर के व्याख्यान इसमें नहीं हैं, यही विशेषता है। इस कमी के कारण यह नाटक ऐसा दुरूह नहीं हुआ है, जैसा कि 'स्कंदगुप्त'। मूल्य अधिक है।

× × ×

भारतवर्ष—लेखक, श्रीहरिहरशरण मिश्र। प्रकाशक, सूर्यकमल-ग्रंथमाला-कार्यालय गणेशगंज, लखनऊ। मूल्य सादी ।)

भूत, वर्तमान, भविष्यत् भारतवर्ष को लेकर यह तीन अंकों का नाटक लिखा गया है। मालूम नहीं, इतना लंबा-चौड़ा उद्देश्य लेकर क्यों यह प्रयत्न किया गया। केवल वर्तमान ही हमारा ऐसा विचित्र है कि उसी से एक क्या दस नाटक लिखे जा सकते हैं। अस्तु, नाटक की भाषा प्रारंभ में जैसी प्रौढ़ और प्रांजल है, अंत में वैसी नहीं। पात्रों का चरित्र-चित्रण साधारणतः अच्छा है। असामयिक गीतों को छोड़कर अन्य गीत भी अच्छे हैं। छोटा होने के कारण नाटक

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अभिनेय भी है। किंतु लेखक का प्रथम प्रयास होने के कारण अभी नाट्य-कला-संबंधी त्रुटियाँ उसमें पर्याप्त हैं।

हाल में जैसे रद्दियल नाटक निकले हैं, उन्हें देखते हुए यह नाटक सफल नाटक कहा जा सकता है। अच्छे नाटकों के प्रेमियों के लिये यह नाटक संग्राह्य है। मूल्य अधिक है।

× × ×

५. विज्ञान

प्रारंभिक रसायन—लेखक, श्रीअमीचंद्र विद्यालंकार । प्रकाशक, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग मूल्य १)

विज्ञान-जैसे रोचक विषय पर हिंदी में एक भी उत्तम और रोचक पुस्तक नहीं । केवल गुरुकुल काँगड़ी के पाठ्य-क्रम में मनोनीत और वहाँ के अध्यापकों द्वारा लिखित पुस्तकें ही अब तक इस विषय की अन्यतम पुस्तकें थीं।

हिंदी में उच्च कोटि का विज्ञान पढ़ाने का श्रेय भी गुरुकुल काँगड़ी को ही प्राप्त है। अतः हर्ष का विषय है कि उसके एक स्नातक ने ही पहलेपहल हिंदी में इस प्रकार की रोचक रसायन, 'केमिस्ट्री' लिखने की चेष्टा की है। सम्मेलन की परीक्षाओं तथा अन्य पाठशालाओं के विद्यार्थियों के लिये यह पुस्तक पर्याप्त सहायता पहुँचावेगी।

अमीचंद्रजी अपने विषय में खूब सफल हुए हैं, इसमें संदेह नहीं। सरल और सुपाठ्य भाषा में इस विषय पर अब तक इससे सुंदर पुस्तक नहीं प्रकाशित हुई। एफ़० ए० स्टैंडर्ड तक जितनी केमिस्ट्री पढ़ाई जाती है, उसका बहुत कुछ आवश्यक अंश इस पुस्तक में समाविष्ट हो सका है। अतः यह उच्च कक्षाओं के लिये पाठ्य पुस्तक बड़ी आसानी से बनाई जा सकती है। प्रत्येक विज्ञान-प्रेमी को इसका संग्रह करना चाहिए।

सुधींद्र वर्मा (एम्० ए०)

× × ×

६. दर्शन

मोक्ष-प्रदीप—मूल-लेखक, स्वामी ब्रह्मानंद 'शिव योगी'; अनुवादक, स्वामी निष्कलानंद (देहरादून); सहायक, डॉ० अंबिकाप्रसाद वाजपेयी एम्० बी० बी० एस्० देहरादून, जिन्होंने कुल व्यय देकर पुस्तक प्रकाशित करवा दी है। पृष्ठ-संख्या ३८८+३२+१०=४३०। मूल्य २॥) ; अनुवादक से ही पुस्तक प्राप्त हो सकती है।

विषय नाम से ही विदित हो जाता है। मूल पुस्तक मलयालम-भाषा में लिखी गई है। लेखक ने कर्मकांड से लोगों की प्रवृत्ति हटाकर योगाभ्यास की ओर लगाने का प्रयत्न किया है, और उसमें पूर्णतया सफल हुए हैं। यद्यपि यह ग्रंथ योगाभ्यासी साधुओं के लिये गुरु-शिष्य-संवाद-रूप में लिखा गया है, फिर भी इसमें गार्हस्थ्य जीवन के लिये उपयोगी सामग्री, पर्याप्त मात्रा में, प्रस्तुत है, तथा सर्वसाधारण के लिये हितकर बातों का अच्छा समावेश है। यह ग्रंथ ३८ प्रकरणों में विभक्त है, जिनमें योग के अंगों पर ही अधिकतर विचार किया गया है।

इसमें प्रसंगानुसार जाति-पाँति का युक्ति-पूर्वक खंडन किया गया है। भीख माँगने की बुराइयाँ भी भले प्रकार प्रदर्शित की गई हैं। आहार-व्यवहार के नियमों पर भी अच्छा प्रकाश डाला है। यज्ञादि कर्मकांड को भी लेखक सामयिक दृष्टि से अनुपयुक्त समझता है, और शक्ति की उपासना का बड़ी योग्यता से समर्थन किया गया है, जो वर्तमान भारत का ध्येय है।

सदाचार के नियम बतलाते हुए राजयोग आदि विषयों का बहुत ही विवेचनात्मक और मार्मिक वर्णन किया गया है। इसके अध्ययन से ज्ञान की उत्कर्षता और भावों में प्रौढ़ता का सन्निवेश होता है। यह ग्रंथ एक उच्च-कोटि के महात्मा के स्वानुभव-जनित विचारों का फल है, अतः मानव-समाज के लिये अत्यंत लाभकारी है, तथा पथ-प्रदर्शक का काम दे सकता है। सामाजिक और आध्यात्मिक दोनो

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दृष्टियों से बहुत ही लाभप्रद है। इसके लिये अनुवादक स्वामी निष्कलानंद और सहायक डॉक्टर अंबिकाप्रसाद वाजपेयी, दोनो सज्जन ही बधाई के पात्र हैं।

अनुवाद के संबंध में मलयालय और हिंदी दोनो भाषाओं का अच्छा ज्ञाता ही सम्मति दे सकता है।

हम प्रत्येक हिंदी-प्रेमी से यह ग्रंथ पढ़ने का अनुरोध करते हैं। आशा है, हिंदी-जगत् इसका समुचित आदर कर अनुवादक और सहायक सज्जनों का उत्साह वर्द्धित करने का उद्योग करेगा।

भगीरथप्रसाद दीक्षित

❀ ऐसा कौन है, जिसे फ़ायदा नहीं हुआ ❀

तत्काल गुण दिखानेवाली ४० वर्ष की परीक्षित दवाइयाँ सब दुकानदारों के पास मिलती हैं

सुधासिंधु

कफ़, खाँसी, हैज़ा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेटदर्द, क़ै, दस्त, जाड़े का बुख़ार, (इनफ़्ल्यूएँज़ा), बालकों के हरे-पीले दस्त और ऐसे ही पाकाशय की गड़बड़ी से उत्पन्न होनेवाले रोगों की एकमात्र दवा, इसके सेवन में किसी अनुपान की ज़रूरत न होने से मुसाफ़िरी में लोग इसे ही साथ रखते हैं। क़ीमत ॥) आना।

डाक-ख़र्च १ से ३ शीशी का ।=) अलग।

दद्रुगजकेशरी

यदि संसार में विना जलन और तकलीफ़ के दाद को जड़ से खोनेवाली कोई दवा है, तो यह है। दाद चाहे पुराना हो या नया, मामूली हो या पकनेवाला, इसके लगाने से अच्छा होता है। क़ीमत ।) आना

डाक-ख़र्च १ से ३ शीशी का ।=) अलग

बालसुधा

बच्चों को बलवान्, सुंदर और सुखी बनाने के लिये सुखसंचारक कंपनी मथुरा का मीठा "बाल-सुधा" पिलाइए। क़ीमत ॥) आना प्रति शीशी, डाक-ख़र्च ।)

द्राक्षासव

शरीर में तत्काल बल बढ़ानेवाली, क़ब्ज़, बदहज़मी, कमज़ोरी, खाँसी और नींद न आना दूर करता है। बुढ़ापे के कारण होनेवाले सभी कष्टों से बचाता है। पीने में मीठा स्वादिष्ट है। क़ीमत तीन पाव की बोतल २), छोटी १) रु०, डाकःख़र्च बड़ी बोतल का १।); छोटी बोतल ॥=)

मिलने का पता—सुख संचारक कंपनी, मथुरा।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस कॉलम में हम हिंदी-प्रेमियों की जानकारी और सुबीते के लिये प्रति मास नई-नई पुस्तकों के नाम देते हैं। पिछले महीने में नीचे-लिखी पुस्तकें प्रकाशित हुईं—

(१) 'अंकुर'—लेखक, कृष्णानंद गुप्त; मूल्य ।।=)

(२) 'दूर्वादल'—लेखक, श्रीसियारामशरण गुप्त; मूल्य ।।=)

(३) 'झंकार'—लेखक, मैथिलीशरण गुप्त; मूल्य ।।=)

(४) 'स्वास्थ्य-संलाप'—लेखक, कृष्णानंद गुप्त; मूल्य ।।=)

(५) 'दुःखी दुनिया अर्थात् प्रलय-प्रतीक्षा'—लेखक, चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य; मूल्य ।)

(६) 'जीवन-विकास'—अनुवादक, श्रीमुकुट-विहारी वर्मा; मूल्य १)

(७) 'नरमेध'—लेखक, चंद्रभाल जौहरी; मूल्य १।)

(८) 'प्रबंध-मंजरी'—संपादक, पं० पद्मसिंह शर्मा; मूल्य १।)

(९) 'पद्मपराग'—लेखक, पं० पद्मसिंह शर्मा; मूल्य २।।)

(१०) 'स्वावलंबी का बल'—लेखक, जयविजय-नारायणसिंह; मूल्य २)

(११) 'स्त्री कविसंग्रह'—संपादक'—ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल'; मूल्य ।।)

(१२) 'सूरसंग्रह' संग्रहकर्ता—लाला भगवानदीन; मूल्य १)

(१३) 'झाँकी'—लेखक, श्रीआनंदिप्रसाद श्रीवास्तव; मूल्य १)

(१४) 'साहित्य-सीकर'—लेखक, महावीरप्रसाद द्विवेदी; मूल्य १)

(१५) 'जीवन का मूल्य'—लेखक, प्रभातकुमार मुखोपाध्याय; मूल्य १।)

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

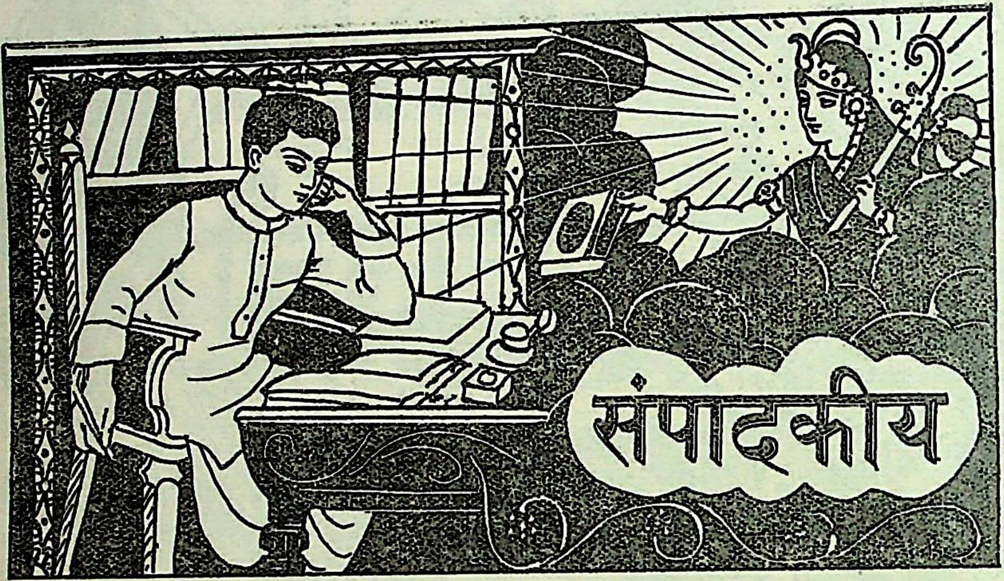

१. तुलसी-कृत रामायण की व्यापकता

इस श्रावण की शुक्ला-सप्तमी से महाकवि भक्तराज तुलसीदास गोस्वामी के तिरोधान के ३०७ वर्ष बीत चुके। कवि और काव्य की दृष्टि से गोस्वामीजी और उनकी अमर रचना रामायण का कितना ऊँचा स्थान है, इस पर एक उक्ति यथेष्ट है—महात्मा गांधी रामायण को संसार का सर्वश्रेष्ठ काव्य कहते हैं। जिन देश-वासियों की भाषा में यह अमर ग्रंथ लिखा गया है, उनकी दृष्टि में तो इसके मुक़ाबले कोई दूसरा ग्रंथ जँच ही नहीं सकता। पर भिन्न-भाषा-भाषियों ने भी, जिन्हें कभी रामायण के पाठ का अवसर तथा सुयोग प्राप्त हुआ है, मुक्त-कंठ से इसकी उपयोगिता की प्रशंसा की है। भाषा और भावों के भीतर से यथार्थ हिंदुत्व के जितने अच्छे चित्र, उदार, सुंदर और मनोहर, रामायण में मिलते हैं, उतने और कहीं भी नहीं मिलते। जैसे दीर्घकालीन तपस्या के प्रभाव से गोस्वामीजी हिंदुओं की संस्कृति में मिल गए हों, और इसके बाद इसकी रचना की हो। इतने दिनों की लिखी हुई होने पर भी, सहस्रों बार पढ़ी जाने पर भी, हिंदी-भाषी पाठकों के निकट रामायण नित्य नवीन और नित्य मधुर है, उससे कभी उनका जी नहीं ऊबता, उसकी कथाओं में आज भी वे अपने पारिवारिक जीवन का दैनिक सत्य प्रत्यक्ष करते हैं। आज वेदों का ज्ञान हिंदी-भाषियों में नहीं रहा, पर रामायण का ज्ञान है। वे वैदिक भूमि से किसी कम दृढ़ भूमि पर नहीं ठहरे। यहाँ भी उन्हें सब शिक्षाएँ, मनुष्य को मनुष्य, देवता और ईश्वर कर देनेवाली कुल बातें, ललित चित्रण के भीतर से, मिलती हैं। जिस किसी तरफ़ से विचार कीजिए, जैसे राम की सदा प्रसन्नता, सीता की पवित्रता, भरत की गुरुता, लक्ष्मण का ओज, शत्रुघ्न की शूरता, महावीर का महावीर्य, और और साधुओं, महात्माओं की तपस्या, लोकपावनता आदि सहस्रों निर्मल धाराओं की परिसमाप्ति-समुद्र की तरह, रामायण में परिणाम प्राप्त कर, उसे अधिक महत्त्वमयी कर रही हैं।

भारतवर्ष में आज तक जितने भी धार्मिक वादों का प्रवर्तन हुआ है, उन सबका सहृदय उल्लेख

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रामायण में है ; रामायण की कथा जैसे उन्हीं के सत्यों को साबित कर रही हो, निर्विरोध, उच्च-नीच-भेद-ज्ञान-रहित, केवल क्रम-परिणति, पर लक्ष्य रखती हुई। यहाँ हम लीला के भीतर से ब्रह्म तक निर्विवाद चले जा सकते हैं, और ब्रह्म से लीला में उतर सकते हैं। अद्वैत और द्वैत के बीच विशिष्टाद्वैत का आनंद भी हमें मिलता है। पृथ्वी दुराचारों के भार से व्याकुल है। देवता संत्रस्त हैं। सब ब्रह्मा के पास जाते हैं। शिव भी वहीं साथ हैं। श्रीभगवान् की खोज होती है। शिव कहते हैं—

"हरि व्यापक सर्वत्र समाना ;
प्रेम ते प्रकट होहिं मैं जाना।
देश-काल दिसि बिदिसिहु माहीं ;
कहौ सो कहाँ, जहाँ प्रभु नाहीं ?"

यह रामायण के नायक भगवान् श्रीरामचंद्रजी का आदि रूप है, और यही हिंदू-दर्शनों का सर्व-श्रेष्ठ निष्कर्ष, सच्चिदानंद रूप। रामायण की बुनियाद में भी इसी तरह—राम की बुनियाद की तरह—अखंड ब्रह्म है—

"रघुपति-महिमा अगुण अबाधा ;
बरनब सोइ बर बारि अगाधा।"

जो जलमय है, वही वीचिमय। इस आधार पर लीला का श्रीगणेश होता है। लीला में प्रकृत चित्रण का समावेश है। भावों को विभु तक उठाए रहने के अभिप्राय से गोस्वामीजी बार-बार श्रीरामचंद्रजी को प्रभु और श्रीजानकीजी को आदि शक्ति कहकर संबोधित करते जाते हैं। साधारण जनों को तत्त्व में आनंद नहीं आता, वे लीला देखना चाहते हैं। लीला के भीतर यदि उन्हें तत्त्व दिया जाय, तो निस्संदेह यह सर्वोत्तम उपाय होगा। गोस्वामीजी ने ऐसा ही किया है। लीला में दिव्य शक्ति का प्रभाव है, जिससे पतन का भय नहीं, और उसके साथ-साथ तत्त्व-ज्ञान।

हिंदुओं के तमाम कृत्य इसी दिव्य शक्ति के परिवर्धन के निमित्त हैं, जिससे मेधा पुष्ट होती है, और मनुष्य को तत्त्व की प्राप्ति होती है। दिव्य गुण-समूहों से अलंकृत होने के कारण रामायण हिंदुओं का सर्वोत्तम धर्म-ग्रंथ बन गया, और हर मनुष्य को, जिसके जैसे विचार हैं, जो जैसे फल की आकांक्षा रखता है, वैसी-ही-वैसी ख़ूराक मिलती जाती है।

जिस रहस्यवाद और छायावाद के पीछे आजकल के नवीन और प्राचीन दल प्रचंड तांडव कर रहे हैं, रामायण उसी की पोषक । यदि पूछा जाय, जब नारद को मोह हुआ, वह स्वयंवर में विष्णु से रूप माँगकर गए, विष्णु के साथ उस राजकुमारी का विवाह हो गया, नारद को अपने रूप का पता लगा, और उन्होंने विष्णु को कठोर शाप दे दिया—

"तब हरि माया दूरि निवारी ;
नहिं तहँ रमा, न राजकुमारी।"

यह क्या हुआ ?—यह है क्या ?—कहाँ गई वह राजकुमारी ?—वह छाया तथा उसका रहस्य ?—छायावाद तथा रहस्यवाद ?—तो शायद ही कोई पंडितजी इसका समीचीन उत्तर दे सकें। यों वह तुलसीदासजी को साहित्य-सम्राट् मानने के लिये तैयार हैं, बल्कि कहिए, अपने कुटुंब का साबित कर दें, पर कहिए, वह छायावादी थे, रहस्यवादी थे, बिगड़ जायँगे। पूर्वोक्त प्रकार के प्रश्नों के उत्तर माँगिए, सारी विद्वत्ता का भूत उतर जायगा। पूछिए, बालि और सुग्रीव की माता पुरुष से औरत कैसे बन गई, उनके पास कोई उत्तर नहीं। अस्तु, ऐसे अक़्ल के दुश्मनों को क्या कहा जाय, रामायण ओत-प्रोत रहस्यवाद और छायावाद है। एक-एक कथा में रहस्य का समुद्र उमड़ रहा है, एक-एक छाया-रूप में महान् सत्य अशरीर, ज्योतिर्मय। हिंदी में जितनी ही रामायण की आलोचना हो, जनता को कल्याण की प्राप्ति होगी।

× × ×

२. कौंसिलों का बायकाट

बंबई में, सरदार श्रीवल्लभभाई पटेल के सभापतित्व में, कांग्रेस की कार्य-कारिणी समिति की जो बैठक हुई थी और जिसमें महामना मालवीय, मि० शेरवानी,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लाला दुनीचंद आदि प्रसिद्ध नेता उपस्थित थे, उसमें कई घंटे की बहस के बाद सर्व-सम्मति से बड़ी और छोटी व्यवस्थापक सभाओं के बहिष्कार का निश्चय किया गया। कहा गया, चूँकि लाहौर-कांग्रेस ने सब कौंसिलों के बहिष्कार का प्रस्ताव पास कर दिया है, और मौजूदा आंदोलन को केंद्रीभूत हो अधिक ज़ोर पहुँचाना है, इसलिये भारतवासियों से समिति की अपील है कि वे लोग कौंसिल के लिये उम्मेदवार होने, वोट देने या दूसरे तरीक़े से उसकी मदद करने से इनकार करें; सब जगहों की कांग्रेस-कमेटियों को चाहिए कि शांति के साथ, न्याय के मार्ग पर रहकर, वे जहाँ कहीं भी ज़रूरत देखें, धरना दिलावें, और उम्मेदवारों और वोटरों को मना करें।

इधर जैसे समाचार हमें मिले हैं, हम जानते हैं, कई प्रांतों से उम्मेदवार खड़े हुए और निर्विवाद मेंबर भी बन गए।

× × ×

३. वस्त्र-बहिष्कार का प्रभाव

समस्त देश-व्यापी वस्त्र-बहिष्कार का मैंचेस्टर पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। लाखों की संख्या में वहाँ के लोग बेकार हो रहे हैं। वहीं के एक मिल-मालिक का कहना है कि शीघ्र ही मैंचेस्टर का दिवाला निकलनेवाला है। हर सप्ताह कौड़ियों के मोल मिलें नीलाम हो रही हैं। एक मिल, जिसकी क़ीमत २ लाख ३७ हज़ार पौंड थी, जिसमें ३०,००० तकुए तथा ११०० करघे थे, अन्यान्य आवश्यक सामान तथा मकान के साथ २२ हज़ार पौंड में बेच डाली गई। इसी मिल से पाँच वर्ष पहले १० प्रति सैकड़े फ़ायदा था। इस तरह के सैकड़ों उदाहरण हैं। जो पहले करोड़पति थे, वे सब फ़क़ीर हैं। ख़ुद-कुशियाँ बढ़ रही हैं।

× × ×

४. कला में मुक्ति

जब कलाकार के दिल में इस तरह की बात रहती है कि मैं अपनी कृति में विशेषता का प्रदर्शन करूँगा, तब उसे सफलता नहीं होती। कारण, वह विशेषता उसकी प्रचेष्टा की वजह से नहीं निकलती, वह कृति के भीतर से आप-ही-आप पके आम के रंग की तरह फूट पड़ती है। जिस तरह हरएक मनुष्य का शारीरिक संगठन आप-ही-आप बन जाता है, उस पर किसी की कोशिश कारगर नहीं हो सकती, उसी तरह कला का प्रकाशन भी है। जब किसी विशेषता की तरफ़ रुख़ रखकर कोई कलाकार कोई सृष्टि करता है, उस समय उसका रुख़ जिधर वह रहता है, जो जड़ है, इसलिये सत्य और शिव-रूपी यथार्थ विशेषत्व, जो पुष्प की सुगंध की तरह है, दब जाता है। इसलिये कला की भावना-जन्य मुक्त रचना ही प्राणों को प्रसन्न करने की शक्ति रखती है। अन्यथा कला पर बलात्कार के ही चिह्न देख पड़ते हैं, मृदुल कल्पना तथा रचना-सौकर्य नहीं मिलता।

अन्यान्य पारमार्थिक विद्या की तरह कला का विशेषत्व भी पारमार्थिक ही है। दीप के प्रकाश में जुआ खेलने की तरह पारमार्थिक कला का भी आर्थिक दुरुपयोग किया जा सकता है; पर इससे धीरे-धीरे कलाकार के साथ कला भी महत्त्व से गिरती रहती है, और एक दिन दोनो की वही दशा होती है, जो कभी स्वर्ग-च्युत त्रिशंकु की हुई थी।

गणित का उद्देश्य है, गिनकर समाप्त, सम्यक् प्राप्त करना; पर जब वह सम्यक् प्राप्ति के पहले ही अपनी सीमा में, सैकड़ा, हज़ार, लाख, करोड़ आदि के कोठों में रहकर दुनियादारी या समझौते पर तुल जाता है, अर्थात् अनेक आवर्तों से हासिल की हुई सीमा को ही बार-बार प्राप्त करता रहता है, तब उसका उद्देश्य सम्यक् प्राप्ति नहीं रहता, वह अपने आदर्श से गिर जाता है, इसी तरह कला भी। उसका उद्देश्य जीवन की सहज, जटिल, सरस, नीरस स्थितियों को ज्यों-का-त्यों व्यक्त करते हुए जीवन की पूर्णता तक पहुँचना है। इस तरह उसकी उन्नति क्रम-परिणाम प्राप्त करती हुई पुष्ट होती रहती है। पर यदि वह किसी एक ही चित्रण में मुग्ध होकर बँधे पुरुषों की तरह उससे

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बँधकर रह जाय, तो उससे प्रगति रुक जाती है, और कला के भविष्य-रहस्य अज्ञात ही रह जाते हैं।

इस तरह कला के सौंदर्य में पहले भी मुक्ति आवश्यक है, मध्य में भी और अंत तक। लकड़ी के छूट हाथों की तरह कला के लिये भी खुली आँखें चाहिए। और इसी तरह वे आदि, मध्य से होकर अंत तक, जीवन के तमाम रहस्यों को चित्रित करती जायगी। यदि कहीं मुग्ध हो किसी रूप से फँस गई, तो उनकी प्रगति वहीं रुक भी गई। इस तरह इतना बड़ा त्याग कलाकार के अंदर रहना आवश्यक है। सहस्रों उत्कृष्ट रूपों तथा भावनाओं की सृष्टि करके भी उसे उनसे पृथक् स्वच्छंद तथा निर्लिप्त रहना पड़ता है, और तभी उसकी खुली आँखें तमाम रूपों को प्रत्यक्ष करती हैं, उसका निर्लिप्त हृदय तमाम भावनाओं को आलिंगित करता है, जैसे मुक्त महात्मा के पास नवयुवतियों ने अपने-अपने मुखों का पर्दा खोल दिया हो। युवतियाँ भी जानती हैं कि यह दृष्टि निर्विकार है। पर जब महात्मा या कलाकार किसी एक रूप पर मुग्ध हो उससे प्रेम करने लगता है, तब अपर सुंदरियाँ उसे देखकर मुख ढक लेती हैं, वे जान लेती हैं कि यह दृष्टि किसी को प्यार करती है, सविकार है, इसका स्पर्श हमें कलुषित कर देगा।

× × ×

५. कवियों को दान

इस समय प्रतिभाशाली प्रायः सभी कवियों को विरोध के कँटीले मार्ग से गुज़रना पड़ता है। तमाम लांछन, अपमान आदि सहकर यदि कोई अधिकाधिक रचनाएँ साहित्य में छोड़ने का दुस्साहस करता गया, तो चिरकाल पश्चात् उसका आदर होता है। अधिकांश कवि तो अर्थ-कष्ट के कारण काव्य-रचना छोड़ ही देते हैं। पहले ऐसा न था। पहले कवियों का यथेष्ट सम्मान था। विद्या सदैव उच्च स्थान प्राप्त करती थी। बहुत प्राचीन काल की बातें नहीं, मुसलमान-काल में भी कवियों का यथेष्ट आदर था।

एक बार केशव अपने मालिक ओरछा-नरेश के किसी कार्य से राजा बीरबल से मिले, और उनकी तारीफ़ में एक षट्पदी कविता लिख ले गए। इस कविता पर राजा बीरबल ने छः लाख रुपए पुरस्कार दिया था।

अबुलफ़ज़ल ने बादशाह अकबर की राजसभा के हिंदू-विद्वानों की जो तालिका दी है, उसमें साधु, संन्यासी तथा धर्म-शिक्षकों के अलावा इक्कीस प्रधान विद्वानों के नाम दिए हैं, जो राजकोष से वृत्ति पाते थे। अकबर की सभा में साधारण हिंदू-कवि कम-से-कम आध सेर सोना पुरस्कार पाता था। (उस समय ४२ तोले २ माशे २ रत्ती का सेर था।)

तानसेन अकबर के दरबारी गवैए थे। अंतिम जीवन में इन्होंने इस्लाम-धर्म स्वीकार कर लिया था, और मियाँ तानसेन के नाम से प्रसिद्ध थे। यह स्वयं भी संगीत की रचना करते थे। एक बार १५८३ ई० में चूड़ागढ़ के राजा आगरे आए थे। एक रात कवि तानसेन का संगीत सुनकर उन्होंने इन्हें एक करोड़ रुपए का पुरस्कार दिया था। उस समय के रुपए की क़ीमत अब से बहुत ज़्यादा थी।

बादशाह अकबर के दाहने हाथ, राज्योद्धारक और शिक्षक बैरामख़ाँ ख़ानख़ाना ने रामदास नाम के कवि और गवैए के पारमार्थिक संगीत सुनकर एक लाख से अधिक रुपए का दान किया था। बैरामख़ाँ के लड़के अब्दुलरहीम ख़ानख़ाना हिंदी के प्रसिद्ध कवि हैं। वह प्रकांड पंडित थे। फ़ारसी, अरबी और संस्कृत में उनकी रचनाएँ हैं। कितने ही कवियों को एक-एक बार एक लाख से अधिक रुपए का उन्होंने दान किया। एक बार वह युद्ध में हारकर, लुटे हुए दक्षिण से लौट रहे थे। रास्ते में एक हिंदू-कवि ने उन्हें कविता समर्पित की। रहीम उस समय रिक्त थे। उन्होंने रीवाँ-नरेश से एक लाख रुपया क़र्ज़ लेकर कवि को बिदा किया। गंग ने षट्पदी-कविता द्वारा रहीम की तारीफ़ की। इस कविता के लिये रहीम ने कवि को ३६ लाख रुपए का पुरस्कार दिया।

कविवर भूषण को छत्रपति शिवाजी ने प्रभूत अर्थ,

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हाथी और ग्राम दिए थे। शिवाजी को राजधानी से एक बार, कवि अपनी जन्मभूमि त्रिविक्रमपुर (तिकवाँ-पुर, कानपुर से ३०-३२ मील, बाँदा-लाइन पर) लौट रहे थे। रास्ते में बुंदेलखंड-नरेश महाराज छत्रसाल से मिले। महाराज छत्रसाल ने देखा कि शिवाजी की तरह अर्थ देकर वह कवि की सम्मान-रक्षा नहीं कर सकते, उन्होंने कवि की पालकी में कंधा लगा उनकी इज़्ज़त की। बुंदेलखंडाधिप ने यहाँ नेता भूषण, ब्राह्मण भूषण तथा कवि भूषण के गुणों तथा सरस्वती का समादर किया था। महावीर महाराज छत्रसाल को भूषण कभी नहीं भूले। आदर्श की दृष्टि से उन्हें छत्रसाल शिवाजी से किसी अंश में भी छोटे नहीं जँचते थे। तभी उन्होंने कहा है—"शिवा को सराहौं कि सराहौं छत्रसाल को।" एक बार कवि हरद्वार तीर्थ करने गए। वहाँ एक राजा आए हुए थे। उनका हाल सुना, तो उनसे मिले और उन्हें कुछ कविताएँ सुनाईं। राजा प्रसन्न हो एक हाथी और एक लाख रुपए देने लगे। कवि ने कहा—"तीर्थ में आ मैं दान नहीं लूँगा। हाथी और रुपए मुझे इतने मिले हैं कि अब अनायास ही इसके लोभ का संवरण कर सकता हूँ।"

इस तरह हिंदी के प्रायः सभी बड़े कवि प्रभूत अर्थ से समादृत हुए हैं। कविवर पद्माकर तो जगतसिंह के दान से राजा ही हो गए थे।

× × ×

६. कविवर रवींद्रनाथ और वर्तमान आंदोलन

रवींद्रनाथ के संबंध में इस समय एक ग़लतफ़हमी फैली हुई है। मुमकिन है, वह कुछ अंशों में सच भी हो। इधर पत्रों में छपा था कि सर तेजबहादुर सप्रू को उनके किसी मित्र ने विलायत से तार दिया है कि श्रीरवींद्रनाथ ठाकुर, श्रीयुत श्रीनिवास शास्त्री, मि० ऐंड्रूज़ आदि भारतीयों को कान्फ़्रेंस में सम्मिलित होने के लिये कहते हैं। इधर बाबू रामानंद चटर्जी महाशय लिखते हैं, हमारे पास ऐंड्रूज़ का तार आया है, उन्होंने लिखा है, मैं बराबर पूर्ण स्वाधीनता का समर्थन करता रहा हूँ, डोमीनियन स्टेटस का नहीं। इससे उनके समर्थन पर कुछ संदेह किया जाता है। दूसरे यह भी कहा जाता है कि जब इस आंदोलन से कविवर रवींद्रनाथ का कोई तअल्लुक़ नहीं, तब वह इस तरह की राय कैसे दे सकते हैं, और देंगे भी, तो आंदोलन करने-वाले इस राय को मान क्यों लेंगे। रवींद्रनाथ-जैसे उत्तरदायी मनुष्य इस तरह की अदूरदर्शिता करेंगे, यह मानने लायक़ बात नहीं। फिर यह भी कहा जाता है कि उन्होंने इधर विलायती पत्रों में जो दो लेख छपवाए हैं, उनमें लॉर्ड इरविन और अँगरेज़-जाति की काफ़ी प्रशंसा की है, वहाँ अँगरेज़ों की दमन-नीति की समालोचना कमज़ोर पड़ गई है। एक दूसरी बात जो उन्होंने कही है, वह यह है, यदि भारत किसी अपर साम्राज्य-शासक के अधीन होता, तो इससे भी अधिक अत्याचार होते। यह लिखकर रवींद्रनाथ लिखते हैं, हमने सच्ची बात लिखी है। इस पर रामानंद बाबू लिखते हैं, उन्होंने सब साम्राज्य-वादी जातियों को पढ़ा है या नहीं, हमें नहीं मालूम; परंतु उनका यह अनुमान कि यह होता, तो यह होता उनके-जैसे प्रभाववाले मनुष्य का अनुमान होने पर कौड़ी-क़ीमत का है।

× × ×

७. हिंदी-साहित्य में उपन्यास

हिंदी में, भाषा और भावों के बाग़ में, अभी पत-झड़ का ही समय है। जिन डालियों में नए पल्लव, नवीन युग के वसंत की सूचना के रूप से, निकले भी हैं, उन्हें सत्समालोचन के अभाव के कुहरे ने अंध-कार में डाल रक्खा है, और यह निस्संदेह अवश्य है कि अभी साहित्य की पृथ्वी पर ऊषा की अस्पष्ट छाया ही पड़ी है, प्रभात का स्नेह-प्रकाश नहीं फैला, अर्थात् यह अभी हिंदी के उपन्यास-साहित्य का बाल्य-काल है, जहाँ असंयत प्रलाप ही श्रृंखलित परिचय तथा आलाप की जगह सुन पड़ता है, बाल-हाथों की अधूरी रचनाएँ रचयिता की मानसिक स्थिति का बयान करती हैं; अभी प्रकृति के विशाल बाग़ के खुले हुए विविध रंगों के पुष्पों की तरह जीवन, समाज

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तथा परिस्थितियों के अम्लान-कांति कला की पराकाष्ठा तक पहुँचे हुए अपने समय तथा ऋतु के गौरव के रूप से दिगंत को सुरभित करनेवाले पुष्प नहीं खुले। उन चित्रों में वाल्य की अस्पष्टता ही अधिक है, सफलता का प्रकाश कम।

सृष्टि का सबसे बड़ा कारण परिस्थितियों का रूपांतर है, अथवा युग का प्रवर्तन। हिंदी में युग-प्रवर्तन को अपनी तमाम शक्तियों से इष्ट मंत्र की तरह जपकर बुलानेवाले, उसकी प्रतिष्ठा करनेवाले उपन्यासकार हैं ही नहीं। यह भी एक मुख्य कारण है कि उपन्यास की पृथ्वी पर पतझड़ के बाद जो वसंत की हवा बहती है, उसका स्पर्श भी नहीं मिल रहा, फिर नए रंग, नए चित्र, नई भरी-पूरी पुष्प-पल्लवमयी शोभा तो बड़ी दूर की बात है। समाज जिस धारा में पहले से बहता आ रहा था, उपन्यासकार अपने को उसी धारा में बहाकर समाज की अवस्था का चित्रण करते हैं। फल यह होता है कि चित्रकारों से चित्रों की ही शक्ति महान् हो जाती है। अतः वे डरे हुए चित्रकार प्रायः असफल ही होते हैं। कारण, पूर्व-आदर्श की महत्ता तक स्वयं उसके चित्रित करनेवाले उपन्यासकार ही नहीं पहुँचे हुए होते। अतः डरे हुए हाथों खिंचे चित्र कहीं-कहीं बहुत बुरी तरह बिगड़ जाते हैं। जब किसी बहती हुई धारा के प्रतिकूल किसी सत्य की बुनियाद पर ठहरकर कोई उपन्यासकार कोई नवीन रचना-प्रयत्न करता है, तब वहाँ उसकी प्रकृति में ही उसकी रचना विशिष्ट शक्ति को लेकर प्रकट होती है, इसलिये वहाँ कलाकार का महत्त्व कला से अधिक रहता है, और इसलिये कला भी प्रौढ़ हाथों से विकसित होने की आख्या तथा प्रसिद्धि प्राप्त करती है। हिंदी में एक तो नवीन परिवर्तन कोई ऐसा हुआ नहीं, दूसरे शिक्षा के अभाव के कारण खेत भी ऊसर ही पड़ा रहा, यद्यपि प्रकृति उस पर नियमानुसार ही वर्षा करती रही; अधिकांश जंगली वृक्षों तथा बबूलों की ही उपज उस पर हुई, कुछ प्रसून भी खुले, जिन्हें जंगली काँटों ने रूँध रक्खा।

हिंदी के जो सबसे बड़े औपन्यासिक हैं, उन्होंने भी पूर्व-कथन के अनुसार युग-प्रवर्तन करनेवाली रचनाएँ नहीं दीं, युग के अनुकूल रचनाएँ की हैं—प्रायः आदर्श का पल्ला नहीं छोड़ा। यद्यपि उनके पात्र कभी-कभी प्राकृतिक सत्य की पुष्टि अपने उल्लंघनों तथा उच्छृंखलताओं के वशीभूत होकर कर जाते हैं, फिर भी रचना में उनके आदर्शवाद की ही विजय रहती है; उनके सितार में वही बोल ज़्यादा स्पष्ट सुन पड़ता है। हिंदी के और-और उपन्यासकारों की हम कोई भी चर्चा नहीं करेंगे। कारण, उनकी रचना में ख़ूबियों की जगह कमज़ोरियों के ही बीमार चित्र अधिक मिलते हैं। कहीं भाषा रो रही है; कहीं अंधे भाव को रास्ता नहीं सूझता; कहीं अकारण ही सफ़े-के-सफ़े रंग डाले हैं; कहीं चित्र ही की नाक काट ली है। किसी-किसी महालेखक की भाषा तो स्थूलांगी, कुरूपा स्त्री की तरह, देख पड़ती है, जो अपनी जगह से ज़रा भी नहीं हिलना चाहती, और उसी को देखकर भक्त लोग मुग्ध हो रहे हैं। इस रुचि से हिंदी की रुचि का भी पता चल जाता है। समाज की पूर्वोक्त रुचि के भीतर पलने के कारण अच्छे उपन्यास को भी एक ही जगह सफलता मिली है—ग्राम्य चित्रों के अंकण में, ग्रामीणों के साधारण चित्रों को असाधारण स्वाभाविकता के साथ खोलने में और मनुष्य-मन की छान-बीन में। इतनी ही विभूति हिंदी के उपन्यास-साहित्य का ऐश्वर्य है। समाज की अनुकूल धारा में रहकर जो कुछ रत्न हिंदी के उपन्यास-साहित्य में आए, वे यही हैं। इनमें लेखनी की तूलिका से, हिंदी-संसार की स्थिति और भारतीय मनों के विभिन्न परिचय, साहित्य के पृष्ठों में, सफल चित्रों के रूप से, अंकित हुए हैं।

पर यह समाज के ऊँचे अंग का चित्रण नहीं। जब तक चित्रकार स्वयं उसकी उच्चता के शिखर पर पहुँचकर उसकी श्री तथा शोभा में स्वयं आत्म-विस्मृत नहीं हो जाता, अपने वायुमंडल को तदनुकूल नहीं बना लेता, उसी में अपने जीवन को नहीं घेर लेता, उसी

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

की आत्मा में अपने को नहीं डुबा देता, केवल दर्शक की तरह दूर रहकर, एक दूसरे वायु-मंडल में साँस लेकर, तटस्थ रहकर, उसके चित्रों को सफलता से खींचना चाहता है, तब तक प्रायः सफलता नहीं होती। भीतर एक दूसरी ही सभ्यता रहेगी, और साहित्य में एक दूसरी सभ्यता की परा काष्ठा तक पहुँचकर, प्राणों तक पहुँचकर उत्कर्ष प्राप्त करना आकाश पर दीवार उठाना हैं। इसीलिये हिंदी के उपन्यासों में और प्रायः सब जगह, अधिकांश चित्र, नवीन सभ्यता, नवीन प्रकाश के प्रदर्शन में असफल ही रहे हैं। अँगरेज़ी के अनेक भारतीय लेखक, जिन्हें विलायत में ही शिक्षा मिली है, अँगरेज़ी कविता तथा उपन्यासों के लिखने में प्रायः असफल ही रहे हैं; इसका कारण यही है। उनके हृदय के स्वर से अँगरेज़ी सभ्यता का स्वर नहीं मिला। कृत्रिमता जाति के प्राणों को नहीं हिला सकती।

जिस बृहत्तर भारत को आवाज़ उठाई जाती है, ख़ासकर बंगाल के ब्राह्मसमाज में, उसका नक़्शा उनके दिलों में इसी आधार पर खिंचा हुआ है। जो लोग कुछ दूर तक पहुँचकर चित्रों को तोल सकते हैं, वे जानते हैं कि इस आवाज़ के अनुकूल चलना अभी भारत के अधिकांश जन-समूह के लिये असंभव है। पर यह है एक बड़ी सुंदर धारणा अवश्य, और सत्य का आश्रय लेकर प्रतिष्ठित हुई जान पड़ती है। भारत के लिये यह नई बात नहीं। शकुंतला जंगल में रहती है। पर कालिदास की लेखनी से जिस शकुंतला का चित्र अंकित होता है, वह सभ्य-से-सभ्य मनुष्य के हृदय पर अधिकार कर सकती है। वजह वही, कालिदास सभ्यता के अंतिम सोपान तक पहुँचकर वहाँ अपनी सत्ता को मिलाना जानते थे। आज हिंदोस्थान के वे गौरव के दिन नहीं रहे, इसलिये सर उठाते वक़्त सर पर रक्खा हुआ सदियों की दासता का बोझ नीचे दबा देता है, और दुर्बल मनुष्य, शक्ति के अभाव के कारण, शक्तिवालों की बराबरी नहीं कर पाता—सर झुका लेता है—वे कमज़ोरियाँ फिर उस समुदाय पर सवार हो जाती हैं। इसीलिये उन औपन्यासिकों की रचनाएँ भी उन्हीं की तरह सर के दुर्वह भार की ही सूचना देती रहती हैं। आँख उठाकर देखने के अभाव से उनके कल्पित चित्र भी नेत्र-हीन होते हैं, लक्ष्य-भ्रष्ट और पतित।

राजनीति के मैदान में, जिस तरह बड़ी-बड़ी लड़ाइयों के लिये सर उठाना आवश्यक है, उसी तरह साहित्य के मैदान में भी है, और चूँकि अभी इस लड़ाई का हमारे साहित्य में कहीं भी नज़्ज़ारा नहीं देख पड़ता, इसलिये साहित्य के मुख्य-चित्रण-अंग उपन्यासों की भी दुर्दशा है। "वह रोटी पकाती थी, बर्तन मलती थी, धुएँ में परेशान हो रही थी।" आदि चित्र समाज के ऊँचे अंग के चित्र नहीं और इन देवियों में अपार भारतीयता का प्रदर्शन कर आदर्श की परा काष्ठा पर काष्ठ की तरह निश्चल बैठे हुए हिंदू-समाज को हिला देना भी हमारा उद्देश्य नहीं। कारण, हम किसी का घोंसला नहीं छीनते। हाँ, कहेंगे, घोंसलेवाले हमें घोंसलेवाले ही दीखते हैं, और उनके चित्र वर्तमान उन्नत समाज के मुक़ाबले वैसे ही अधम।

× × ×

८. प्रो० लाला भगवानदीनजी 'दीन' का स्वर्गवास

अपनी अविनश्वर कृति से हिंदी-संसार को उन्नति के मार्ग पर कुछ क़दम आगे बढ़ाकर हिंदी-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् कविवर लाला भगवानदीनजी 'दीन' गत २८ जुलाई को रात दस बजे के लगभग २२ रोज़ तक बीमार रहकर त्रिदोष के स्पर्श से नश्वर शरीर को छोड़ स्वर्ग सिधार गए। आपकी मृत्यु से हिंदी-साहित्य की जो क्षति हुई, उसकी पूर्ति नहीं हो सकती। ईश्वर आपके परिवार के लोगों तथा प्रिय जनों को धैर्य और आपकी आत्मा को स्वर्ग में शांति दे।

लालाजी की प्रतिभा के विकास का केंद्र छतरपुर है। वहीं से अध्यापन-कार्य करते हुए आपने हिंदी-साहित्य का अध्ययन किया, और हिंदी के प्राचीन

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

साहित्य के पारंगत विद्वान् हो गए। छतरपुर से आप काशी गए और वहाँ से आपकी साहित्य-सेवा क्रमोन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने लगी। आप एक ही आधार में कवि, समालोचक, टीकाकार, लेखक तथा प्रसिद्ध अध्यापक थे। आपकी विद्वत्ता से आकृष्ट हो महामना मालवीयजी ने आपको हिंदू-विश्वविद्यालय का अध्यापक नियुक्त कर लिया था। कई साल से आप वहाँ हिंदी के अन्यान्य अध्यापकों की तरह विद्यार्थियों को पढ़ा रहे थे।

ब्रजभाषा-साहित्य में लालाजी ने बड़ा परिश्रम किया। उसके अनेक ग्रंथों की टीकाएँ कीं। "अलंकार-मंजूषा" से आपके अलंकार-ज्ञान का परिचय मिल जाता है। पहले कई साल तक आपने "लक्ष्मी" का संपादन किया था। आपने केशव की कविताओं पर टीका लिखी, "तुलसी-ग्रंथावली" का संपादन किया। "नवीन बीन", "वीर-पंचरत्न", "बिहारी और देव" आदि अनेक गद्य-पद्य की पुस्तकें लिखीं।

आप अच्छे समालोचक थे। स्वभाव में विरोधियों के प्रति लिखते समय कुछ कटुता आ जाती थी। "भारत-भारती" की आपने बड़ी तीव्र आलोचना की थी। इसी तरह "मतवाला" में बिहारी की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिये देव के पक्षपातियों के ख़िलाफ़ लिखा। आलोचना करते समय आप जामे से बाहर हो जाते थे। इसलिये लोग प्रायः आपको चिढ़ा दिया करते थे। इतने पर भी स्वभाव के आप बड़े प्रसन्न तथा मिलनसार थे। आप वर्तमान छायावाद के ख़िलाफ़ थे। यह आपसे बहस करने का आपके विद्यार्थियों के लिये एक कारण बन गया था।

आपकी तीन शादियाँ हुई। आपकी पत्नी स्वर्गीया बुंदेला बाला हिंदी की अच्छी कवयित्री थीं। इस समय आपकी एक छोटी कन्या ही आपके वंश की प्रदीप है।

× × ×

६. साइमन-रिपोर्ट

सर जॉन साइमन की रिपोर्ट के पहले खंड की आलोचना हम कर चुके हैं। भारत-सचिव ने "Historical State Document" कहकर उसका स्वागत किया है, वहीं दूसरे लोगों ने उसे कोरी नक़ल कहकर दिल्लगी भी उड़ाई है। रिपोर्ट का दूसरा खंड भी २४ जून को प्रकाशित हो गया। तथ्य की बातें इसी में हैं।

कहते हैं, सर जॉन साइमन विलायत के सबसे बड़े बैरिस्टर हैं। सुनते हैं, उनकी आमदनी सालाना ६ लाख रुपए थी। इतने बड़े बैरिस्टर और एक-चौथाई पृथ्वी पर शासन करनेवाले इँगलैंड के बैरिस्टर सर जॉन साइमन ने भारत की समस्याओं पर विचार करते हुए दिमाग़ का दिवाला निकाल दिया। पहले खंड में जितने प्रकरण आए हैं, वे सब जान-बूझकर रक्खे गए हैं, सिद्धांत की पुष्टि के विचार से, जैसे सेना की रक्षा के लिये कहीं क़िलेबंदी की गई हो, कहीं खाई खोद डाली गई हो, कहीं पहाड़ खड़ा कर दिया गया हो। सुविधानुसार जहाँ जैसी ज़रूरत मालूम हुई, घटनाओं का घुमाव, गुप्त-लुप्त-रीतियाँ अख़्तियार की गई हैं, फिर भी पहले खंड में समझाने के लिये भरसक प्रचार किया गया है कि किसी पक्षपात का सहारा नहीं लिया गया। उदाहरणार्थ, गत दस वर्षों के राजनीतिक इतिहास की आलोचना पेश करते हैं। इससे साइमन-रिपोर्ट के अंदर छिपे हुए उनके मनोभाव अच्छी तरह ज़ाहिर हो रहे हैं। रौलट-ऐक्ट के पास होने के बाद जनता की उत्तेजना का बैरिस्टरी ढंग से ही उल्लेख किया गया है। पर जिन कारणों से यह उत्तेजना प्रकाशित की गई थी, इनकी कोई भी कथा नहीं। जलियानवाला बाग़ और डायर-ओडायर के कृत्यों पर केवल यह लिखकर छोड़ दिया गया कि यह १९१९ ई० के मार्च में एक विशाल जन-दौरात्म्य (Mob Violence) हुआ था, ख़ास तौर से पंजाब और गुजरात में और इससे अमृतसर के जलियानवाला बाग़ की दुर्घटना हुई। ऐसी-ऐसी नाज़ुक-ख़याली इस रिपोर्ट में भरी हुई है। उस आंदोलन को (Mob Violence) के रूप में खड़ा किया गया

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

है। हम समझते हैं, सर जॉन साइमन अगर कविता लिखते होते, तो बड़ा नाम पैदा करते—आपकी कल्पना-शक्ति-प्रचंड है।

इस रिपोर्ट की एक बड़ी तारीफ़ यह हुई है कि सात के सातो इससे सहमत हैं। लोग कहते हैं, तभी तो चुन-चुनकर भेजे गए थे, और तबेले की लतिश्रौफ़ बुरी भी है, फिर उस समय जब कि "पहले डंके में जिन बंदी" का मौक़ा हो। लोग कहते हैं, सातो के सहमत होने की आवाज़ उठानी न थी, इससे "guilty concience" (बुरा मतलब) पकड़ में आ जाता है। अकालियों के आंदोलन को सांप्रदायिक स्वार्थ से प्रेरित होकर किया गया लिखा है। एक जगह कहा गया है कि मिस्टर गांधी के विरोध करने पर भी स्वराज्य-दल के लोग जातीय दल की सहायता से व्यवस्था-परिषद् में आते हैं। परंतु सत्य यह है कि जब स्वराज्य-दल के लोग व्यवस्था-परिषद् गए थे, तब महात्माजी यरवदा-जेल में थे, और वोटरों से उन लोगों ने यह कहा था कि परिषद् में जाकर महात्माजी की मुक्ति के लिये प्रयत्न करेंगे। इस तरह की बातों से सिर्फ़ पंद्रह सफ़े में दस साल का इतिहास ख़त्म है।

दूसरा खंड ३१६ सफ़े का है। इसके बारह प्रकरण हैं। इस रिपोर्ट ने अपने ३१६ पृष्ठों में ज़ाहिर कर दिया कि भारत के स्वाधिकार-शासन के लिये १९१९ ई० के इंडिया-ऐक्ट में जो आश्वासन था, वह आश्वासन-मात्र है। अब इन ग्यारह वर्षों के बाद ब्रिटिश गवर्नमेंट ने सूचित कर दिया कि इँगलैंड भारत के अधिकारों की बात पर किसी तरह भी रहमदिली नहीं दिखला सकता।

इस रिपोर्ट के जिस हिस्से में शासनाधिकारों पर विवेचन किया गया है, वहाँ बड़े लाट साहब को इसी तरह क़ायम-मुक़ाम रक्खा है, बल्कि उनके अधिकारों को सुदृढ़ तथा और भी व्यापक करने की कोशिश की गई है। प्रादेशिक शासकों को उनके संकेत के अनुसार चलना होगा। बड़े लाट भारत-सचिव या व्यवस्थापक सभा के निकट उत्तरदायी न होंगे। ऐसे शासन का नाम गणतंत्र अथवा स्वाधिकार-शासन होगा। ख़ुफ़िया-पुलिस पर बड़े लाट साहब का प्रत्यक्ष-संबंध तथा अधिकार रहेंगे। प्रादेशिक शासक अथवा मंत्रियों का निर्वाचन उन्हीं की मंज़ूरी से होगा। मांटफ़ोर्ड-स्कीम में आर्थिक जो कुछ भी स्वतंत्रता प्रादेशिक शासकों को दी गई थी, वह "Provincial Fund" (प्रादेशिक कोष) की रचना द्वारा छीन ली गई। अर्थात् मांटफ़ोर्ड-स्कीम के अनुसार प्रादेशिक शासक ऋण-संग्रह कर सकते हैं; पर साइमन-स्कीम के अनुसार नहीं कर सकते; ऋण लेना और ब्याज का निश्चय करना बड़े लाट साहब पर निर्भर है। बड़े लाट साहब की कार्य-कारिणी समिति के सदस्य अब तक सम्राट् द्वारा चुने जाते थे, परंतु साइमन-रिपोर्ट के अनुसार बड़े लाट स्वयं अपने इच्छानुसार सदस्यों की नियुक्ति करेंगे। इस तरह की अनेकानेक बातें हैं, जिनके उल्लेख से व्यर्थ ही समय का व्यय है। उनकी सारवत्ता इसी से स्पष्ट हो जाती है कि शिमले में गधे पर दोनो खंड रिपोर्ट लादकर जनता ने जुलूस निकाला, और फिर उनका अग्नि-संस्कार किया, लाहौर में पचास हज़ार लोगों ने साइमनों की सात मूर्तियाँ तैयार कर जुलूस निकाला, और लाला लाजपतराय की मूर्ति के सामने रिपोर्टों के साथ उन्हें जला दिया।

× × ×

१०. आचार्य सर प्रफुल्लचंद्र राय का भाषण

प्रतिभा के कारण कविवर रवींद्रनाथ तथा सर जगदीशचंद्र वसु की जैसी प्रसिद्धि देश तथा विदेशों में है, वैसी ही, उतनी ही सीमा तक पहुँची हुई आचार्य राय की भी है। पर जिस जगह चारित्रिक दक्ष' का प्रसंग छिड़ता, देश-प्रेम की चर्चा होती है, वहाँ आचार्य राय अनतिक्रम्य, देश को प्रकाशित करनेवाले एक ही कौस्तुभ-मणि हैं। आपकी महत्ता तथा प्रतिभा की व्याख्या नहीं हो सकती। आप

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

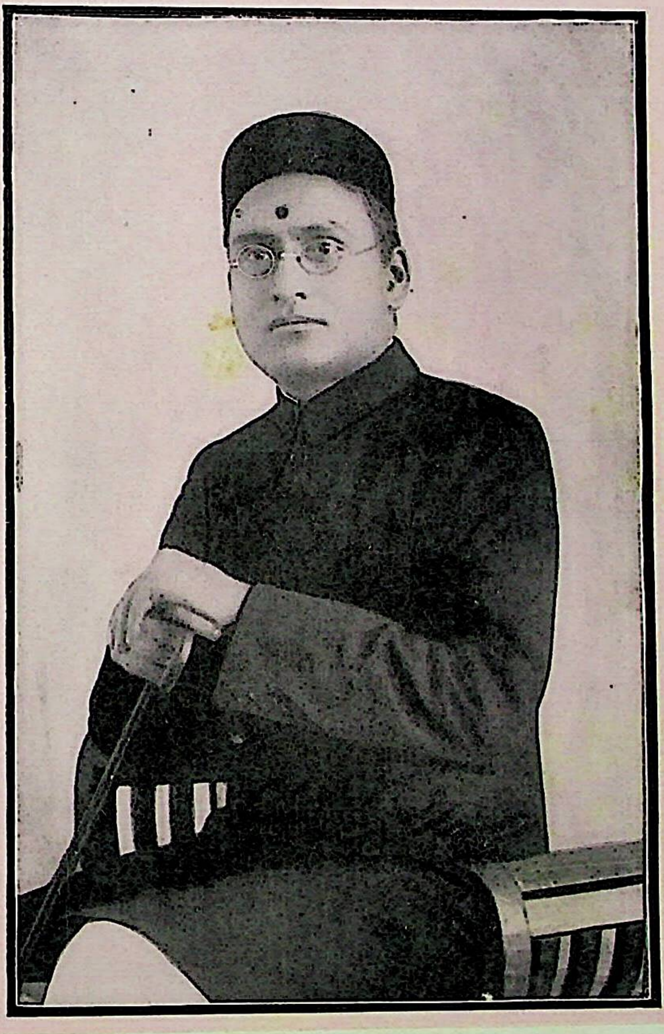

पं० बदरीनाथ भट्ट बी० ए०

[हिंदी-अध्यापक लखनऊ-विश्वविद्यालय। आप हिंदी के प्रसिद्ध हास्य-रस-लेखक, नाटककार और सुकवि हैं।]

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

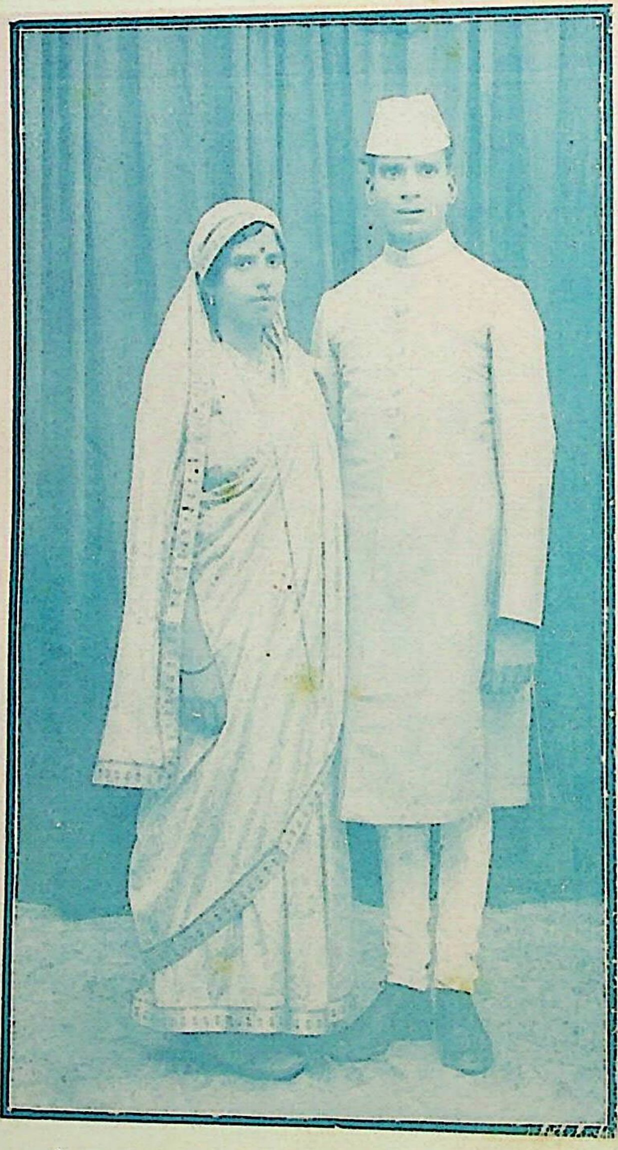

ट्रिब्यून के उप-संपादक श्रीयुत जंगबहादुरसिंह बी० ए० और उनकी विदुषी धर्म-पत्नी श्रीमती ज्ञानदेवी स्नातिका, विशारदा

[इस आदर्श दंपति का अभी गत वर्ष ही अंतर्जातीय विवाह हुआ है ।]

Ganga Fine Art Press, Lucknow.

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विद्यार्थियों के साथ, देश की वेदी पर सर्वस्व चढ़ा देनेवाले महापुरुष हैं। आपके उज्ज्वल चरित्र का अंदाज़ा इससे लगाइए कि बंगाल की पर्दानशीन महिलाएँ भी आपके निर्मल देश-प्रेम तथा समाज-संस्कार के उपदेश सुनने के लिये आपको अपने घरों पर बुलाती और असंकुचित हो आपसे वार्तालाप करती हैं। आपसे बढ़कर बंगाल में और कोई भी व्यक्ति नहीं, जिस पर सर्व-साधारण अकुंठित चित्त से श्रद्धा करता हो। आप सिर्फ़ एक कमीज़ और सलीपर पहने हुए मिलेंगे, जो बंगाल की प्रचलित और सादी पोशाक है। जो लोग केवल आपके नाम से परिचित हैं, और आपको देखा नहीं, वे कॉलेज-स्क्वायर में टहलते हुए आपको देखकर कभी-कभी धक्के मारकर भी चले जाते हैं। आप दुबले-पतले, हँसकर रह जाते हैं। "बंगाल-कैमिकल" के आप ही अधिष्ठाता तथा संरक्षक हैं।

अभी बंबई में आपका एक महत्त्व-पूर्ण भाषण हुआ। उसमें आपने कहा, देश के जो लोग देश ही की बनी हुई चीज़ों का उपयोग नहीं करते, वे देश के साथ विश्वासघात करते हैं। आंदोलन के संबंध में आपने एक बात बड़े मार्के की कही। विदेशी बहिष्कार के द्वारा विशेष फल नहीं मिल सकता, यदि स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार तथा निर्माण न हो। आपने कहा, मेरे जीवन का सबसे प्रिय विषय स्वदेश की वस्तुओं तथा वस्त्रों का प्रचार है। बंगाल-कैमिकल की स्थापना का यही कारण है। यदि केवल विदेशी द्रव्यों का बहिष्कार जारी रहा, और देश ने उस अभाव की पूर्ति न की, तो एक दिन देश को इसके लिये विशेष रूप से नीचा देखना होगा। आपने व्यापार-संबंधी और-और बातें समझाई। आपका ध्यान उस दिन की तरफ़ लगा हुआ है, जब भारत की बनी हुई चीज़ें, वस्त्र तथा अन्यान्य द्रव्य पहले की तरह फिर विदेशों को जाया करें। औद्योगिक प्रचार तथा प्रसार के लिये आपने बड़ा ज़ोर दिया।

× × ×

११. पटेल-रिपोर्ट ज़ब्त

पेशावर की जाँच करके उसकी रिपोर्ट श्रीयुत पटेल ने ला-जर्नल-प्रेस में छपने के लिये दी थी। कुछ दिन पहले अख़बारों में पढ़ा था कि उसकी कुछ प्रतियाँ बंबई भेजी जा रही थीं, पर रास्ते में रोक ली गईं। अब मालूम हुआ कि रिपोर्ट सरकार द्वारा ज़ब्त कर ली गई, साथ ही पढ़ा इलाहाबाद के ला-जर्नल-प्रेस से १०००) की ज़मानत ली गई है।

× × ×

१२. पेशावर की स्थिति

टाइम्स ऑफ़् इंडिया आदि पत्रों से पेशावर की जिस स्थिति का पता चलता है, उससे मालूम हुआ कि वहाँ की हालत उत्तरोत्तर ख़राब होती जा रही है। बहुत जगह गर्मी को शांत करने के लिये दमन-नीति को छोड़कर साम-नीति अख़्तियार की जाती है। सीमा-प्रांत के लोग ऐसे नहीं हैं, जो बराबर दमन सह सकें। आग-पर-आग झोंकते रहने का कभी भयंकर परिणाम प्रस्फोट के रूप से निकलता है। पर भारत-सरकार दमन के प्रभाव से ही उत्तेजना शांत किया करती है। ख़बर है, पेशावर में इस समय ज़िले-भर में मार्शल-ला जारी है, और सीमा-प्रांत के कमिश्नर को इच्छानुसार फ़ौजी क़ानून के प्रयोगोपयोगों के अधिकार मिल गए हैं। बलवाइयों के दमन के लिये उन्होंने ज़िले के कई केंद्र कर हर जगह एक-एक नियंत्रणकारी रख दिया है। बलवाई अफ़रीदियों की, कहते हैं, कांग्रेस से सहानुभूति है, और वे लोग गांधीजी के बड़े भक्त हैं। एक बार एक महिला खद्दर धारण किए रहने के कारण इनके हाथों पड़कर भी बच गई। उसकी समझ में इनका "गांधी मलंग" शब्द ही आया। लिखा है, इस दल के एक नायक ने गांधीजी की मुक्ति के लिये सरकार को लिखा है। बाहर के अफ़रीदी लोगों को गाँववाले छिपा लेते हैं, जिससे दमन करने की असुविधा होती है। समय बरसात का है, इसलिये फ़सल के कारण राह भी नहीं मिलती, जिससे अधिक सैन्यों का संचालन किया

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जाय। और, बलवाई लोग खड़ी फ़सल में छिप जाते हैं। और जातियाँ भी अफ़रीदियों से मिली हुई हैं।

× × ×

१३. पं० रामजीलाल शर्मा का देहांत

यह लिखते हुए हमें अत्यंत शोक है कि अभी हिंदी के हृदय में 'दीनजी' के देहांत का घाव ताज़ा ही था कि एक दूसरा घाव इलाहाबाद के हिंदी-प्रेस के मालिक पं० रामजीलाल शर्मा के स्वर्गवास से फिर लग गया। आप कुछ समय से बीमार थे, पर किसी को यह विश्वास न था कि इतनी जल्द आप मित्र-मंडली से उठ जायँगे। पर ईश्वर की इच्छा पर बस किसका है? ३० अगस्त को शाम साढ़े सात बजे, ५१ साल की उम्र में, आप शरीर त्याग कर गए। आप हिंदी के प्रसिद्ध मनुष्यों में थे। आपने कई पुस्तकों की रचना की। कई साल से इलाहाबाद के आर्य-समाज के सभापति थे। "विद्यार्थी" और "खिलौना" के आप संपादक थे। कई साल तक आप अखिल भारतवर्षीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के प्रधान मंत्री रह चुके थे। एक बार आपने प्रांतीय साहित्य-सम्मेलन का सभापतित्व भी किया था। आपके शरीरांत से हिंदी की बहुत बड़ी क्षति हुई। ईश्वर आपके शोक-संतप्त परिवार को धैर्य तथा आपको शांति दे।

× × ×

१४. समाज और महिलाएँ

इस समय देश-भर की महिलाओं में एक नवीन ज्योति, एक नवीन जागृति के चिह्न देख पड़ते हैं। भारतवर्ष की महिलाओं के लिये यह कुछ बड़े महत्त्व की बात नहीं थी। संस्कारों से वे पहले ही से तैयार थीं। सिर्फ़ एक मार्ग-प्रदर्शक उन्हें चाहिए था। वह मिल गया। इस समय देश के हर प्रांत की महिलाएँ पर्दे से बाहर निकलकर अपने भविष्य-जीवन के निर्माण तथा अधिकारों की आलोचना करने लगी हैं। बहुत पहले महिला-समाज में समाज-प्रदर्शिका के रूप से दो महिलाएँ निकली थीं, एक श्रीमती सरला-देवी चौधरानी बी० ए०, दूसरी भारत-कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू। श्रीसरलादेवी के विवाह में पंजाब और बंगाल, भारत के दो सीमा-प्रांत संमिलित होते हैं, और श्रीसरोजिनीदेवी के विवाह में जातीय प्रथा की जड़ कटती है। श्रीसरलादेवी के विवाह में स्वर्गीय पं० रामभजदत्त चौधरी की तरफ़ से आर्य-समाजानुसार वैदिक विवाह-पद्धति और श्रीसरलादेवी की ओर से ब्राह्मसमाज की प्रचलित विवाह-पद्धति काम में लाई गई थी। इन दो अलग-अलग धर्मों में भी वैवाहिक संबंध स्थापित हुआ था। इसके बाद इस प्रकार के अनेक विवाह हुए। पर स्त्रियों की प्रगति फिर भी मंद थी। अब उन देशों में भी, जहाँ महिलाओं के लिये घोर अवरोध-प्रथा है, निषेधात्मक अनेक द्वार खुल गए, और वे सभा-समितियों में बड़े चाव से भाग लेने लगीं। इससे यह जान पड़ता है, अब समाज-संस्कार में विलंब नहीं। अभी तक बहुत जगह देख पड़ता था कि सामाजिक विषयों में पति-पत्नी की राय नहीं मिलती, और प्राचीन प्रथा के अनुकरण के लिये पति को पत्नी की वश्यता अनिच्छा-पूर्वक भी स्वीकृत करनी पड़ती थी। इस तरह प्रगति में बाधा पहुँचती थी। मसलन गंगा नहाकर दान देने की बात लीजिए। पति कहता है कि इस दान से पंडे लोग अनाचार करते हैं, जुआ खेलते हैं, रंडियों को खिलाते हैं, यह ठीक नहीं; न गंगा नहाओ और न दान दो। पर पत्नी की भक्ति के कारण पति को तदनुकूल आचरण करना पड़ता था। इस तरह की तीर्थ-भ्रमण, विवाह, दहेज़, कौलिन्य-रक्षा आदि अनेक बातें हैं। प्रायः सभी जगह महिलाएँ प्राचीनता की रक्षा के लिये बाधक हो जाती थीं। पर अब इस आंदोलन से और कुछ हो न हो, उनके अंदर विचार करने के अंकुर उठ गए हैं, जिससे भविष्य की आशा आशु-फल-प्रद जान पड़ती है। देश की रक्षा के साथ और कुल समस्याएँ एक जाल में सिमटी हुई तमाम मछलियों की तरह आ जाती हैं, और इस जाल के पकड़ने से वे और सबको आसानी से पकड़ लेंगी।

× × ×

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

१५. समझौते में निराशा

इधर महीने-भर से देश की आँखों के एक निशाना सर तेजबहादुर सप्रू और श्रीयुत जयकर रहे हैं, जब से इन लोगों ने समझौते का सवाल खड़ा किया। जब समझौते के लिये नेताओं की बैठक नहीं हुई थी, सर सप्रू और श्रीयुत जयकर दौड़-धूप कर रहे थे, उस समय, श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू ने लखनऊ की एक सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए कहा था, सरकार ख़ुशामद करनेवालों को ख़ूब पहचानती है—वह सच्चे आदमियों की भी पहचान रखती है, इन एलचियों का परिणाम देखकर आप लोगों को नेताओं के हृदय के भाव मालूम हो जायँगे। वैसा ही हुआ भी। पं० मोतीलालजी तथा पं० जवाहरलालजी यरवदा गए। वहाँ कांग्रेस के प्रमुख कई नेता महात्मा गांधी, श्रीमती सरोजिनी नायडू, सरदार वल्लभभाई पटेल, श्रीजयरामदास-दौलतराम आदि ने मिलकर समझौते का जो रूप तैयार किया, वह बड़े लाट साहब को मंज़ूर नहीं हुआ। नमक-कर का उठ जाना, राजनीतिक क़ैदियों का छुटकारा पाना, राजनीतिक मामले में हरजा उठाए हुए लोगों को हरजाना देना आदि और-और कुछ ऐसी पेशबंदियाँ स्वराज्य के लिये की गई थीं, जिनसे बड़े लाट साहब सहमत नहीं हो सके, और शायद सहमत हो भी नहीं सकते। क्योंकि वह व्यक्तिगत रूप से भारत के जितने भी हितचिंतक हों, जब भारत का समष्टिगत कोई सवाल उनके सामने पेश होगा, उस समय वह अपनी सीमित शक्ति से ही विचार करेंगे। इधर नेता लोग भी दूध के कई बार जले हुए हैं, इसलिये मट्ठा भी फूँक-फूँककर पीते हैं। अब इस साँप-छछूँदर-प्रकरण का कहाँ अंत होगा, यह समझ में नहीं आता। सरकार की तरफ़ से दमन में प्रशमन नहीं हो रहा, पर यह ज़रूर है कि दमन के लिये उसके पास जितनी शक्ति है, उसका पूर्ण रूप से प्रयोग वह नहीं करती, और जहाँ तक हमारा विचार है, इस शांति-युद्ध में उसका पूर्ण प्रयोग हो भी नहीं सकता। जहाँ तक संभव है यानी आंदोलन का समतोल-बल सरकार की तरफ़ से भी लग रहा है। पर समझौते की चर्चा का अभी अंत भी नहीं हुआ। जयकर और सप्रू साहब फिर शिमले में बड़े लाट साहब से मिले थे। जयकर के साथ उनकी तीन घंटे तक बातचीत होती रही। इधर पं० मोतीलालजी का स्वास्थ्य ख़राब रहने पर भी समझौते की चर्चा फिर चल रही है। कहा जाता है, इस समय जयकर और सप्रू नैनी-जेल में उनसे मिलते होंगे।

पूर्व समझौते के समय नेताओं ने एकमत होकर जो यह कहा था, जिसका कुछ पता फ्री-प्रेस के संवाददाता को मिला है, कि देश की सम्मिलित शक्ति से यह युद्ध चल रहा है, देश के लोगों ने इसके लिये यथेष्ट कष्ट तथा त्याग स्वीकार किया है। इस कष्ट-स्वीकार का कारण उनकी कुछ माँगें हैं, जिनका पूर्ण उत्तर-दायित्व नेताओं पर है। अब इस समझौते के लिये नेता लोग बीच में उनकी लालसाओं का ख़ून नहीं कर सकते। फिर भी कम-से-कम अंश पर ही देश को समझा लेने के लिये तैयार होकर उन लोगों ने अपनी माँगे पेश कीं। उन माँगों का पूरा-पूरा हाल अभी, मालूम नहीं हुआ। ऊपर हमने जिन दो-एक बातों का उल्लेख किया है, उनके अतिरिक्त कुछ और भी, संवादपत्रों में, नेताओं की माँग के रूप से, पढ़ने को मिला है।

नेताओं का निश्चय है कि जब तक यह तय न हो जायगा कि गोलमेज़-बैठक में पूर्ण शासनाधिकार देने के संबंध में बातचीत होगी, तब तक वे इस बैठक की तरफ़ क़दम नहीं बढ़ा सकते। शासन लोक-मत का और लोगों के यथार्थ हितों की बुनियाद पर होगा। पर वे साथ ही यह भी मानते हैं कि यदि ऐसी ही आवश्यकता समझी गई, तो कुछ समय के लिये देशी राज्यों, अंतर्राष्ट्रीय नीतियों तथा फ़ौज के संबंध में पूर्णाधिकार अभी चाहे न दिए जायँ, पर व्यवस्था-परिषद् के अधिकारों का दायरा यहाँ तक बढ़ा देना चाहिए कि वे पूर्ण राष्ट्रीय बन जायँ। वे लोग कहते हैं

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कि इन शर्तों को मंज़ूर कर लेने पर भी भारत ब्रिटेन के ही क़ब्ज़े में रहता है, और इन्हें मान लेने में कोई दिक़्क़त भी नहीं हो सकती। उनका कहना है कि वाइसराय और सम्राट् की मज़दूर-सरकार इन शर्तों के लिये हमें निश्चित रूप से विश्वास दिला सकती है, जब कि पार्लामेंट पर इस समय उन्हीं का आधिक्य है। अतः यदि उन्हें ये शर्तें क़बूल हों, तो वे हमें स्वीकृति के साथ समर्थन करने का वचन दें। इस तरह हम सत्याग्रह-आंदोलन को देशवासियों से स्थगित करने के लिये अनुरोध कर गोलमेज़-बैठक के लिये तैयार हो सकते हैं।

× × ×

१६. महामना मालवीयजी को सज़ा

बंबई के जुलूस में गिरफ़्तार होकर तथा जुर्माने की सज़ा पाकर भी किसी अज्ञात व्यक्ति के जुर्माना जमा कर देने के कारण महामना मालवीयजी छूट गए थे, वहीं सरदार वल्लभभाई पटेल आदि कई नेताओं को सज़ा हो गई थी। उस समय बाहर आकर सभाओं में मालवीयजी को पूर्ववत् निर्भय वक्तृता देते हुए सुनकर किसी-किसी ने कहा था कि दोरंगी चाल है। पर अब दिल्ली में पुनश्च गिरफ़्तार तथा सज़ा प्राप्त कर विद्यावयोवृद्ध महापुरुष ने अपनी सचाई के प्रमाण भी दे दिए।

दिल्ली-सरकार द्वारा अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस-कमेटी के ग़ैर-क़ानूनी क़रार दिए जाने पर भी वर्किंग-कमेटी के १३ सदस्यों में १० सदस्य दिल्ली पहुँचे, और गत २७ अगस्त को मालवीयजी के ठहरने की जगह बिड़ला-हाउस में, डॉ० अंसारी के सभापतित्व में, कई प्रस्ताव भी पास कर लिए। इसके बाद वर्किंग-कमेटी की सूचना निकली कि डॉ० अंसारी के मकान पर तीन बजे दिन से कमेटी की बैठक होगी।

जब नेता लोग डॉ० अंसारी के मकान में एकत्र हो गए, उस समय ख़ुफ़िया-महकमे के सुपरिंटेंडेंट मि० सोनियर ने पुलिस लेकर चारो ओर से डॉ० अंसारी का मकान घेर लिया। फिर मकान पर पहुँचकर श्रीयुत दुनीचंद; चौधरी अफ़ज़लहक़, श्रीमती कमला नेहरू तथा श्रीमती हंसा मेहता को छोड़कर और लोगों के नाम वारंट तामील कर १० हज़ार की ज़मानत जमा करने और मुचलका देने के लिये कहा। नेताओं ने इनकार कर दिया, जिससे वे गिरफ़्तार हो गए। इसी बीच डॉ० अंसारी और मौ० अबुलकलाम आज़ाद के घरों की तलाशी ली जा रही थी कि लाला दुनीचंद तथा चौ० अफ़ज़लहक़ के नाम भी वारंट आ गए।

पिछले पहर चार बजे के क़रीब ये लोग—सभापति डॉ० अंसारी, महा० मालवीयजी, श्रीविट्ठलभाई पटेल, डॉ० विधानचंद्र राय, श्रीराजाराव (मंत्री), सरदार मंगलसिंह, श्रीमथुरादास त्रीकमजी, चौ० अफ़ज़लहक़, लाला दुनीचंद (अंबाला) तथा बाबू दीपनारायणसिंह—सेंट्रल जेल भेज दिए गए। जाते समय इन्हें जनता ने पुष्पमालाओं से सुशोभित किया। जनता इनके स्वागत के लिये पहले ही से तैयार थी। कारण, गिरफ़्तारी की ख़बर फैल चुकी थी, और पुलिस के घेराव से उसे निश्चय भी हो गया था।

श्रीयुत विट्ठलभाई पटेल ने कहा, "मुझे अब ख़िताब और पेंशन मिली।" मालवीयजी ने कहा, "आगामी कष्टों तथा संकटों की ज़रा भी परवा न कर देश के लोग अहिंसा-युद्ध को जारी रक्खें। भारत की स्वतंत्रता का लक्ष्य ही इस युद्ध में हमें शक्ति देगा। देश के आबालवृद्ध, युवा को इस स्वाधीनता के युद्ध में त्याग प्रदर्शित करते हुए देख मुझे हर्ष हो रहा है। हमें अपने देश का स्वत्वाधिकार अवश्य ही प्राप्त करना है। यह हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। हमारे प्रयत्नों पर ईश्वर प्रसन्न है।"

नेताओं ने मुक़द्दमे की कार्रवाई नहीं की। सरकारी गवाहों के बयान लेकर फ़ैसला सुना दिया गया, सबको छः-छः महीने की सादी क़ैद।

× × ×

१७. अधिकारी गोरों पर गोली तथा बम

वर्तमान अहिंसात्मक संग्राम के छिड़ने के समय

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

महात्माजी को अहिंसा के अवतार आदि अनेकानेक विशेषणों से विभूषित कर देश के क्रांतिकारी दल के नायकों ने पत्र द्वारा संवर्धना की थी। जहाँ तक हमें स्मरण है, तीन साल तक अपने कार्यों को स्थगित रखने का वादा भी किया था, जिस समय महात्माजी का पहला पत्र बड़े लाट साहब के नाम संवादपत्रों में प्रकाशित हुआ था। इसके बाद बम फूटने की एक-आधी ख़बर के आने पर भी अब तक विशेष बम-दुर्घटना नहीं सुन पड़ी। इधर बंगाल में लगातार दो घटनाएँ हुईं। एक कलकत्ते में, दूसरी ढाके में। कलकत्ते में पुलिस-कमिश्नर सर चार्ल्स टेगार्ट पर बम फेंका गया। दो मनुष्य थे। जब टेगार्ट साहब मोटर पर लाल-बाज़ार पुलिस-स्टेशन, अपने दफ़्तर जा रहे थे, उसी समय दोनो बग़ल से उन पर बम फेंके गए। दो बम के फूटने से बड़ी आवाज़ हुई, लोग दौड़ पड़े। टेगार्ट साहब की मोटर टूट गई, ड्राइवर को कुछ चोट आई, और दो और मोटरें टूट गईं। वहीं एक आदमी ख़ून से तर पड़ा था। देखा गया, तो उसके प्राण निकल चुके थे। वह अनुजसेन गुप्त कहा जाता है। उसके पास दो बम और एक भरा हुआ पिस्तौल बरामद हुआ। उसका एक साथी और था। वह भी कुछ घायल हुआ था। वहीं गिरफ़्तार कर लिया गया। इसके पास भी एक बम और एक तमंचा मिला। यह वकालत पढ़ रहा था। नाम दिनेशचंद्र मजूमदार है। इस दुर्घटना से एक क़ुली बुरी तरह घायल हुआ। पर टेगार्ट साहब बच गए। १९२४ ई० में इन पर एक बार और वार होनेवाला था, पर भ्रम से मि० डे नाम के अँगरेज़ को गोली मार दी गई, जिससे गोपीनाथ साहा को फाँसी हुई थी।

ढाके में बंगाल-पुलिस के इंस्पेक्टर-जनरल मि० एफ़० जे० लोमैन और ढाके के पुलिस-सुपरिंटेंडेंट मिस्टर ई० हडसन को किसी ने गोली मार दी। मि० लोमैन के दो और मि० हडसन के तीन गोलियाँ लगीं। कहते हैं, मि० हडसन की हालत नाज़ुक है, और लोमैन का कई दिन के बाद शरीरांत हो गया, यद्यपि कलकत्ते से दो विशेषज्ञ—एक लेफ़्टिनेंट कर्नल मि० हार्नेट, दूसरे मेडिकल कॉलेज के फ़र्स्ट सार्जन—हवाई जहाज़ से तत्काल ढाके भेज दिए गए थे।

प्रथमोक्त घटना के पश्चात् तलाशी आदि करके अब तक २० आदमी गिरफ़्तार किए गए हैं, जिनमें सब पूर्व-बंगाल के हैं।

इस बम-दुर्घटना की आँच पर तलाशी लेते हुए एक किताब ऐसी पुलिस के हाथ लगी है, जिसमें षड्यंत्रकारियों की भयंकर स्थिति का पता चला है, और उनके नाम तथा पते भी उसमें लिखे हैं। यह दल बंगाल के भिन्न-भिन्न स्थानों तथा कलकत्ते में षड्यंत्र रचने की फ़िक्र में है।

इसके बाद उत्तर-कलकत्ता के जोड़ाबगान थाने में रात ६ बजे बम फेंके गए, फिर ईडन गार्डन की पुलिस-चौकी पर बम मारा गया, जिससे तीन क़ुलियों को चोटें आईं।

कलकत्ते की सार्वजनिक सभा में लोगों ने इस हत्या-कृत्य की निंदा की। हम भी इसके लिये हार्दिक अनुताप प्रकट करते हैं। इस शांति-पूर्ण आंदोलन के दिनों सरकार के दमन को देखकर देशवासियों को किसी तरह विचलित नहीं होना चाहिए। यदि देश में क्रांतिकारियों की कोई संगठित संस्था है, तो उससे हमारा निवेदन है कि वह अपने पूर्व के क़ौल पर ध्यान दे, और यदि कुछ असंयत युवक इस प्रकार फुटकर हत्याओं के द्वारा सुदृढ़ ब्रिटिश-शासन की बुनियाद को ढहा देना चाहते हों, तो वे बहुत बड़ी ग़लती करते हैं। ईश्वर से प्रार्थना है, मि० हडसन शीघ्र क्लेश-मुक्त हों।

× × ×

१८. मांसाहार

भारतवर्ष में धर्म तथा सभ्यता के अनेक प्रकार, अनेक रूप हैं। यहाँ के मनुष्यों को कभी एक प्रकार का धार्मिक परिच्छद पहने हुए देखिए, कभी दूसरे प्रकार का, यद्यपि वैदिक काल से आज तक की स्थिति में सभ्यता का साम्य भी मिला दिया जा

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सकता है। कुछ हो, एक-एक धार्मिक युग के अभ्युदय तथा तिरोधान के साथ मनुष्यों के आचार-व्यवहार भी बनते तथा बदलते गए हैं। साम्य मुख्यतः एक बात का रहा है। वह यह कि यहाँ के प्रतिष्ठित सम्मान्य मनुष्यों में, पश्चिमी सभ्यता के आदर्श की तरह, 'eat, drink and be mer.y' (खाओ, पियो, मौज करो) सिद्धांत नहीं रहा। संसार की नश्वरता और अक्षय स्वर्ग या अचला शांति-स्थिति पर उनका सदैव ध्यान रहा, और इसलिये उनके कार्य भी एतदनुकूल होते रहे।

हिंसा और अहिंसा के संबंध में भी यही धारणा दृढ़ हो जाती है। क्षत्रियों की मृगया और ब्राह्मणों का "विविध मृगन कर आमिष राँधा" आदि प्रकरण देखकर यह विश्वास दृढ़ हो जाता है कि मांस-भक्षण के लिये इस देश में कोई बड़ी रोक न थी। "कान्यकुब्जद्विजः श्रेष्ठः"—लोगों के यहाँ, आज भी, मांस-भक्षण में वैष्णवी अरुचि रहने पर भी, खानेवालों को समाज तिरस्कृत नहीं कर सकता, और इनकी कर्म-कांड की योग्यता पर मुग्ध होकर प्राचीन काल के महाराज आदि शूर जिन पाँच कान्य-कुब्ज-ब्राह्मणों को अपने यहाँ बंगाल ले गए थे, जो लोग मुखर्जी, चटर्जी, गांगुली आदि नामों से प्रसिद्ध हैं, अपने पूर्व-संस्कारों को मत्स्य-बहुल बंगाल में उत्तरोत्तर मार्जित करते गए, और शिक्षा तथा सभ्यता की बात पूछिए, तो कदाचित् भारत में नई बिजली का इन्हीं के मस्तिष्क में अधिक प्रकाश मिलेगा। ब्राह्मणों में और-और संप्रदाय हैं, जो मांस नहीं खाते, पर क्षत्रियों में कोई क़ौम ऐसी भी है, जो मांस नहीं खाती, यह हमें नहीं मालूम। हाँ, अधिकांश वैश्यों में मांस निषिद्ध देखा है। अन्यान्य जातियाँ मांस खाती हैं।

देश में जैसी प्रसिद्धि है, उसके अनुसार हमारा भी अनुमान है कि इस देश में बौद्ध और जैनियों के प्रभाव से मांस-भक्षण कुछ मंद पड़ा। पर कान्य-कुब्जों की तरह प्रभावशाली समाज पर इनका असर नहीं पड़ा, ये लोग अपनी प्राचीन प्रणाली के अनुसार ही चलते गए। बौद्ध और जैन-धर्म के आविर्भाव का कारण तथा उसके पहले की यहाँ की स्थिति पर जब हम विचार करते हैं, तब हमें स्पष्ट जान पड़ता है कि उन दिनों मांस-भोजन का इस देश में ख़ास तौर से प्रचलन था। वैदिक यज्ञों की जीव-हिंसा बुद्ध की चित्त-वृत्ति के परिवर्तन की एक बहुत बड़ी वजह है। दूसरे, किसी वस्तु या विषय का विरोध या प्रतिरोध तभी होता है, जब उसका अत्यंत प्रचलन हो, और इस कारण उसमें बुराइयाँ भी अनेक प्रकार की आ गई हों। बौद्ध और जैनों के बाद वैष्णव-धर्म ने भी मांस का विरोध किया, उत्तर भारत में इसी धर्म का प्रभाव पड़ा, और आज इसीलिये मंत्र-दीक्षित लोग यहाँ मांसाहार नहीं करते। बौद्धों और जैनियों के प्रवर्तन से तैयार की हुई देश की धार्मिक रुचि के अनुकूल वैष्णव-धर्माचार्यों ने भी मांस-निषेध उचित समझा होगा। लोगों की रुचि के अनुसार धर्म का संगठन करने पर वह सुदृढ़ हो जाता है, और लोगों का उस पर विश्वास भी होता है। कबीर यद्यपि रामानंदी थे, फिर भी, ग़ालिब की तरह, उन्होंने उस्ताद से अलग अपनी एक नई राह निकाल ली थी। कबीर निराकार-वादी थे। परंतु वह भी दया-धर्म-प्रभाव को नहीं छोड़ सके। उनके "बकरी मार भेड़ को धाए, दिल में दरद न आई; साधो, पाँड़े निपुन कसाई।" पद्य को पढ़कर यही धारणा बद्धमूल हो जाती है। बुद्ध के लिये कहा जाता है कि वह मत्स्य-भोजन करते थे। जैन-धर्म के प्रव-र्तक महावीर के मना करने पर भी उन्होंने मत्स्य-भोजन नहीं छोड़ा। यह भी प्रसिद्धि है कि शूकर-मांस के भक्षण से बुद्ध का शरीरांत हुआ। ये लिखी बातें, जिनमें पहली तेजोवावृजात्मक की है, कहाँ तक सत्य है, हम नहीं कह सकते। पर यह ज़रूर है, जहाँ-जहाँ समुद्र के किनारों तथा नदी-बहुल देशों में बौद्ध-धर्म का प्रचार रहा है, वहाँ-वहाँ पीछे से मांस-भोजन विशेष रूप से होने लगा था। इस प्रकार सिद्धांत में बुराइयों का प्रवेश हो गया था।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मांस-भक्षण के संबंध में मनु-संहिता की राय भी हम देना चाहते हैं। हिंदू-धर्म के अनुसार मनु-संहिता बुद्ध के आने से पहले की है। पर आधुनिक अन्वेषकों के विचार से हमें नहीं मालूम, बहुत संभव है, पीछे की हो। उस मनु-संहिता में एक जगह है—

"यज्ञाय जग्धि मांसस्येत्येष दैवो विधिः स्मृतः ;
अतोऽन्यथा प्रवृत्तिस्तु राक्षसो विधिरुच्यते।"

यज्ञ से बचा हुआ मांस खाना देवोचित है, अन्यथा मांसाहार की प्रवृत्ति राक्षसोचित।

यह समझ में नहीं आता कि यज्ञ-जैसे पुण्य-कार्य के लिये तो मांस-जैसे अशुद्ध पदार्थ का अनुमोदन-समर्थन किया गया, पर भक्षण और शरीर धारण के निमित्त उसका निषेध क्यों रहा। मारना बुरा है, अगर वह केवल हत्या या तज्जन्य मनोरंजन हो। पर शरीर-धारण के लिये अगर हत्या की गई, तो हमारी समझ में नहीं आता कि उससे किस तरह पाप-स्पर्श होता है।

"यज्ञार्थं ब्राह्मणैर्वध्याः प्रशस्ता मृगपक्षिणः ;
भृत्यानां चैव वृत्यर्थमगस्त्यो ह्याचरत् पुरा।"

यज्ञ के लिये ब्राह्मणों द्वारा मारे जानेवाले पशु-पक्षी प्रशस्त हैं। पालितों के पोषण के लिये उनका वध धर्मानुकूल है। अगस्त्य ने पहले ऐसा आचरण किया था।

यहाँ "ब्राह्मणैर्वध्याः" ध्यान देने लायक है। इस वाक्य से अकारण पशु-हत्या निषिद्ध हुई। ब्राह्मण-वृत्तिवाला मनुष्य अकारण हत्या नहीं कर सकता। उपर्युक्त शब्द से क्षत्रियों के हत्या-संस्कार भी सीमित कर दिए गए। पर शरीर-धारण के लिये मांस-भक्षण की आज्ञा दे दी गई। प्रथम श्लोक में "प्रवृत्ति" के उल्लेख से ही राक्षस-विधि का निर्धारण किया है। यदि "प्रवृत्ति"-शब्द न रहता, तो विधि राक्षसी भी न होती। अन्यान्य अनेक श्लोकों में मनु ने मांस-भक्षण के लिये आज्ञा दी है। पर मनु यह भी कहते हैं—

"वर्षे वर्षेऽश्वमेधेन यो यजेत शतं समाः ;
मांसानि च न खादेत् यस्तयोः पुण्यफलं समम्।"

"सौ वर्ष तक लगातार प्रतिवर्ष अश्वमेध यज्ञ करनेवाला और जो मांस नहीं खाता, इन दोनो के पुण्य बराबर हैं।"

मनु वैदिक वध-विधान को दैवी कहकर टाल गए हैं। अन्यत्र तो अपनी रायज़नी का दावा उन्होंने किया है, पर वैदिक विधियों पर नहीं किया। इससे साबित है कि प्रथम वैदिक काल में यज्ञ करके मांस-भक्षण जब प्रचलित था, तब यह निस्संशय यहाँ की सनातन प्रथा थी। और, यज्ञ के पश्चात् मांस खाने के अर्थ, हम जहाँ तक समझते हैं, पकाया हुआ मांस ही है ; इस समय भी अनेक देशों के लोग कच्चा मांस खाते हैं, और अग्नि-संस्कार से अनभिज्ञ होने के कारण वे असभ्य कहलाते हैं ; इस पकाए हुए मांस से यज्ञकारी अग्नि का प्रथम आविष्कार करनेवाले आर्य अपनी सभ्यता का ही प्रमाण पेश करते हैं, और फिर उस पके मांस को देवता को अर्पित कर खाएँ या ऐसे ही, विशेष अर्थ नहीं रखता। अगर रखता है, तो मांस खानेवालों की ही पुष्टि करता है, क्योंकि जो वस्तु देवता तक को समर्पित की जाती है, उसे मनुष्य अनायास ही भक्षण कर सकता है, उसे धर्म-विरुद्ध कहने का किसी को अधिकार नहीं रह जाता।

धर्म के पीछे से अनेक प्रकार हो गए। गीता में जहाँ अर्जुन को श्रीकृष्ण ने क्षात्र-धर्म का उपदेश किया है, वहाँ बंधु-बांधवों के वध को भी प्राप्य राज्य-श्री को प्राप्त करने के लिये धर्मानुकूल बतलाया है। और, हिंसा का भाव ही उड़ा दिया, आत्मा हिंसा नहीं करती, यह कहकर। आधुनिक जगत् में ही नहीं, जब कि संसार के अधिकांश सभ्य मनुष्य मांसाहार करते हैं, चिरंतन सत्य के विचार से भी श्रीकृष्ण की यही उक्ति संगत जान पड़ती है। हिंसा के संबंध की यह सबसे बड़ी बात है, हिंसा की वृत्ति चित्त में न हो। यह समझना भी कठिन है कि बिना हिंसा-वृत्ति के हिंसा हो कैसे सकती है। उद्धरण की जगह नहीं, शास्त्र इसका अनुमोदन करते हैं। किसी वृत्ति के आने पर चित्त अस्वस्थ हो जाता है, अतः उसके प्रभाव से जो

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कार्य होता है, वह कलुषित हो जाता है—बहुत कुछ बिगड़ भी जाता है। मसलन, युद्ध के समय क्रोध के आने पर बल क्षीण हो जाता, कौशल भूल जाते हैं; पर चित्त स्थिर रहने से अधिक पटुता दिखलाई जा सकती है, और शत्रु का निधन भी संभव है। पर युद्ध के लिये क्रोध आवश्यक नहीं, इसी तरह मारने के लिये हिंसा भी अनावश्यक है। आजकल के विज्ञान-युग में, जब कि अल्पवयस्क विद्यार्थी भी जानता है कि करोड़ों जीवाणु प्रति श्वास-संचार से पेट के अंदर जाते हैं, अहिंसा, मांस-भक्षण-निषेध आदि की चर्चा खिलवाड़ जान पड़ती है। फिर जब "दलिया", भिगोई मूँग आदि कितने परिमाण में रोज़ खाई जाय तो हज़म हो, इस तरह की फ़ेहरिस्त देश के प्रतिष्ठित लोग, लोक-प्रिय पत्रों में, निकालते हैं, उस समय उनकी तजवीज़ से हँसी को मुश्किल से रोकना पड़ता है, जैसे "दलिया", "मूँग", "चने" आदि निष्प्राण हों। जो लोग कहते हैं कि उससे जीव का ज्ञान नहीं होता, उन्हें समझना चाहिए कि यह उन्हीं का अज्ञान है, और इससे "मूँग" निर्जीव नहीं हो जाती। एक अज्ञान को पालते हुए उन्हें इतना बड़ा ज्ञानाडंबर भी नहीं दिखलाना चाहिए। रही बात दूध की, सो मा के स्तनों में ईश्वर का दिया हुआ उतना ही दूध रहता है, जितना उसका बच्चा पी सके। कहीं-कहीं इस विधि का उल्लंघन है, और वहीं यह दुग्ध-दोहन सार्थक भी है, यानी बछड़ा जब पीकर छोड़ दे, तब दुहने पर दोष स्पर्श नहीं होता, अन्यथा बछड़े को धीरे-धीरे (in cold blood) मारने की हत्या अवश्य लगती है। और, बीस सेर दूध देनेवाली गउएँ आस्ट्रेलिया में भले ही हों, गो-भक्त भारत में तो बहुत ही कम हैं कि बछड़े के पीकर छोड़ देने के बाद दुही जायँ, और जब कि सदी-फ़ी-सदी भारत-वासी ऐसा नहीं करते, तब उन्हें समझना चाहिए कि प्रतिदिन वे अंशतः गो-वध करते रहते हैं। मतलब यह कि जीव का आहरण किए बिना जीव का आहार सिद्ध नहीं होता। फिर कम हत्या करेंगे और बचकर करेंगे, धर्म की दोहाई देकर करेंगे, बछड़े को पालकर करेंगे, यह सब ढोंग है। आप बछड़े के बाप तो हैं नहीं, जो उसके लिये आपको इतना दर्द हो, आप अपना मतलब गाँठ रहे हैं, बछड़ा मर गया, तो आपको दूध कहाँ से मिलेगा, उसका सूख जाना भी तो ख़ुदाई नियम है। फिर इन बछड़ों के संबंध में कलकत्ता आदि में जो हाल होता है, वह बड़ा ही बीभत्स है। बछड़ा ज़्यादा क़ीमत पर बेच दिया जाता है। बछड़े की जीभ योरपियनों-अमेरिकनों के लिये सुस्वादु तथा अनमोल खाद्य है, उनको आर्डर-सप्लैयर ख़रीद लेते हैं—मुसलमान वणिक्। इधर लकड़ी का एक बछड़ा बनाकर सफ़ेद कपड़े लपेट, या चूने से रँगकर, ग्वाले लोग गायों के सामने खड़ा कर देते हैं। मृग की मरीचिका की तरह गायों को वत्स का भ्रम होता है, और वैज्ञानिक कारण ख़ास यह है कि तब तक दूध सूख न जाने के कारण गउएँ दुहवा लेना ही पसंद करती हैं, क्योंकि दूध के भार से स्तन बोझीले लगते, जिससे उन्हें तकलीफ़ होती है। वे उसी कृत्रिम वत्स को चाटकर अपनी यह हाजत कि दुह जाने से शरीर हलका हो जाय, रफ़ा करा लेती हैं।

आहार का शंकर ने सूक्ष्मतम आध्यात्मिक अर्थ लिया है। उनका कहना है, जो आहृत हो, वही आहार है; यदि किसी ने तुम्हें गालियाँ दीं और तुम ख़ामोश रह गए, तो तुमने उन गालियों का आहरण किया, इससे तुम्हारा आध्यात्मिक शरीर पुष्ट हुआ। इस तरह भी दूसरे को दुर्बल कर पहला सबल होता है; गालियाँ देनेवाले के प्राण कमज़ोर हो जाते और सहनेवाले को धैर्य के कारण बल प्राप्त होता है। शंकर के बाद के आचार्यों ने आहार का बाह्य रूप लिया, और खाद्य के गुणों का विश्लेषण कर सात्त्विक गुण-वाले भोजन का प्रचार किया। "सात्त्विक" नाम से प्रत्यक्ष हिंसा का भाव भले ही मिट जाता हो, परोक्ष हिंसा बनी रहती है, जैसे कि दलिया के खाने की हिंसा है। शंकर की उक्ति में जो तत्त्व है, वह आध्यात्मिक तौर से दूसरों का ज़हर पीकर, उनके

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रति आनंद के परमाणुओं का प्रक्षेपकर उन्हें पराजित करना है। यह भी युद्ध ही है, और सब मारों से बुरी मार है। शिव के विष-पान करने के रूपक में यही तत्त्व मिलता है। विष कोई सात्त्विक पदार्थ नहीं, और न शिव कोई साधारण कोटि के हैं। शिव हैं साक्षात् कल्याण-स्वरूप, मंगल-मूर्ति। पर वे विष पीते हैं। इस उक्ति में पूर्वोक्त शंकर का ही तत्त्व मिलता है। जिस तरह उन्नतात्मा मनुष्य साधारण मनुष्यों के ईर्ष्या-द्वेष आदि का आहार कर और उन्नत होते हैं, ईर्ष्या का ईर्ष्या से जवाब देकर सार्वकालिक विरोध की जड़ नहीं जमाते, उसी तरह शिव संसार का ज़हर पीकर सदैव कल्याणमय रहते हैं। जो व्यक्ति बुरे परमाणुओं का प्रक्षेप करता है, उसके प्रति महात्मा लोग उन परमाणुओं से बदला न दें, पर प्रकृति तत्काल देती है। उसका शरीर उन्हीं परमाणुओं के अंदर डूब जाता और जलता रहता है। महात्मा इसी तरह साधना से चलते हुए शिवत्व को प्राप्त करते हैं, और मंद प्रकृति के लोग अवनत होते हुए फल-भोग करते रहते हैं—उन्हें शांति नहीं मिलती। आहार के भीतर का इतना बड़ा तत्त्व है। प्रतिक्षण सबल निर्बलों का, धनी दरिद्रों का, विद्वान् मूर्खों का, सुंदर कुरूपों का, पुरुष स्त्रियों का, स्त्रियाँ पुरुषों का, भूत भूतों का, मन मन का, आत्मा आत्मा का आहार कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते तथा प्रतिष्ठित होते रहते हैं। इन बड़े आहारों के मुक़ाबले, जिनके पाप का अंदाज़ा लगाना कठिन, और पाप होता भी है या नहीं, बतलाना भी कठिन, मांसाहार तो बहुत ही स्थूल, नगण्य है। हम यहाँ यह भी बतला देना चाहते हैं कि हमारा मतलब मांसाहार का प्रचार करना नहीं, यद्यपि हम उसे राजसिक भोजन मानते और बासी रोटियों से ताज़े पके हुए मांस को अधिक गुणकारी समझते हैं, ख़ास तौर से जीवन-संग्राम में पड़े हुए सांसारिक लोगों के लिये कर्मोपयुक्त भोजन। हाँ, मांसाहार से हम शाकाहार को श्रेष्ठ समझते हैं।

× × ×

१६. हिंदुस्थानी-एकेडेमी के पारितोषिक

हिंदुस्थानी-एकेडेमी यू० पी०, इलाहाबाद के विद्वान् प्रधान मंत्री डॉक्टर ताराचंद सूचित करते हैं—

"हिंदुस्थानी-एकेडेमी ने निम्न-लिखित विषयों पर लिखित सर्वोत्तम ग्रंथ पर पाँच-पाँच सौ रुपए के तीन पारितोषिक हिंदी में और तीन उर्दू में देने का निश्चय किया है। ग्रंथ पहली जनवरी सन् १९२७ के बाद के प्रकाशित हों—

(१) सर्वोत्तम गद्य-ग्रंथ, जिसका विषय साहित्यिक, समालोचना, निबंध या साहित्यिक इतिहास हो।

(२) निम्न-लिखित विषयों पर लिखे हुए किसी एक सर्वोत्तम ग्रंथ पर—

(क) प्रकृति-विज्ञान—अर्थात् भौतिक, रसायन, पशु-विद्या, वनस्पति-शास्त्र तथा प्रकृति-संबंधी कोई अन्य वैज्ञानिक विषय।

(ख) समाज-विज्ञान—अर्थात् अर्थ-शास्त्र, राज-नीति-शास्त्र, नागरिक शास्त्र, राज्य-प्रबंध-संबंधी इतिहास तथा समाज-संबंधी कोई और वैज्ञानिक विषय।"

एकेडेमी का यह उद्योग सराहनीय है। इससे अच्छी पुस्तकों के निर्माण में लेखकों को यथेष्ट प्रोत्साहन मिलेगा।

हमें यह जानकर ख़ुशी हुई कि प्रसादजी के लिखे स्कंदगुप्त-नाटक पर ५००) का पुरस्कार एकेडेमी ने अभी हाल में दिया है। इसके लिये प्रसादजी को बधाई!

× × ×

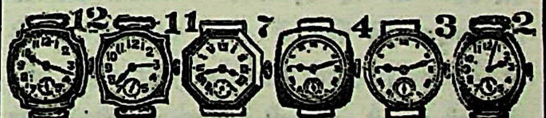

किसी भी सुनहरी घड़ी का, दो वर्ष की गारंटी का रु० ५, वी० पी० अलग, क्याटलॉग मुफ़्त।

एल्० एन्० वसा, वाचमेकर, भुलेश्वर, बंबई

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

२०. लखनऊ-विश्वविद्यालय

इसी अंक में 'लखनऊ-विश्वविद्यालय'-शीर्षक लेख प्रकाशित हो रहा है। लेखक ने विश्वविद्यालय का चित्र इस वर्ष के प्रारंभ में खींचा था। इतने अरसे में विश्वविद्यालय के रूप-रंग में कुछ-न-कुछ अंतर हो जाना स्वाभाविक ही था। डॉक्टर कैमरन के स्थान पर पं० जगतनारायणजी मुल्ला शासन कर रहे हैं। डॉक्टर एम्० बी० रहमान लखनऊ-विश्वविद्यालय छोड़कर इस्लामिया-कॉलेज, बंबई के प्रिंसिपल होकर चले गए। राष्ट्रीय आंदोलन ने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का चोला बदल दिया। युनिवर्सिटी पर राष्ट्रीय झंडा फहराने का आंदोलन चला। विद्यार्थियों ने बड़ा कोहराम मचाया। छात्रों और अधिकारियों में ख़ूब द्वंद्व युद्ध हुआ। अधिकारियों ने राष्ट्रीय झंडा फहराने की अनुमति नहीं दी। लखनऊ-युनिवर्सिटी-यूनियन के पदाधिकारियों ने अधिकारियों की इस नीति के विरोध में इस्तीफ़ा दे दिया। बड़ी सनसनी फैली। उसके बाद विद्यार्थियों की परीक्षा आरंभ हो गई, सन्नाटा छा गया। इस वर्ष विश्वविद्यालय खुलते ही विद्यार्थियों ने कॉलेज-भवन तथा छात्रालयों पर राष्ट्रीय पताकाएँ फहरा दीं, और कॉलेज में धरना बैठा दिया। विश्वविद्यालय का सारा काम ठप पड़ा है। अधिकारियों के हाथ-पैर फूल रहे हैं, नवयुवकों ने रण-भेरी बजा दी है।

हाँ, इसी सिलसिले में हम लखनऊ-विश्वविद्यालय के अधिकारियों का ध्यान दो-एक खटकनेवाली बातों की ओर आकर्षित करना चाहते हैं। एक युग से हम कहते आ रहे हैं, मगर अभी तक लखनऊ-विश्वविद्यालय में हिंदी में एम्० ए०-क्लास खोलने का कोई आयोजन नहीं हुआ। यह बड़ी ग्लानि और लज्जा की बात है। हाल ही में सहयोगी 'लीडर' और 'आई० डी० टी०' में भी दो-एक उलहने छपे थे। शिकायतें उचित भी थीं। अन्य विश्वविद्यालयों में छात्रों को बहुत-सी सुविधाएँ हैं, जो कि लखनऊ-विश्वविद्यालय में दुर्लभ हैं। यहाँ न तो विद्यार्थी को उसे अपने परीक्षा-फल के अतिरिक्त कक्षा में अपनी पोज़ीशन का ज्ञान ही हो सकता है, न किसी प्रकार नंबर मालूम हो सकते हैं, और न फ़ेल हो जानेवाले छात्रों की कॉपी ही दुबारा जाँची जा सकती है। भला इस विश्वविद्यालय में क्या विशेषता है, क्या सुर्खाब के पर लगे हैं, जो इसकी नीति निराली ही रहे? बेचारे विद्यार्थियों को इन सुविधाओं से क्यों वंचित रक्खा जाता है? उनके अधिकारों की इस प्रकार क्यों अवहेलना की जाती है?

आशा है, पं० जगतनारायणजी मुल्ला-जैसे न्यायशील व्यक्ति के राज्य में यह धींगा-धाँगी बहुत दिनों तक न चलेगी। हमें विश्वास है, पंडितजी इन त्रुटियों को दूर करने और राष्ट्रभाषा को उसका उचित स्थान देने में अधिक विलंब न करेंगे।

× × ×

२१. संधि का अंत

सर सप्रू और जयकर की संधि के संबंध में हम अपने पिछले नोट में लिख चुके हैं। पर, पत्रिका के निकलते-निकलते, संवाद-पत्रों में संधि का पूरा विवरण निकल गया, और पहले की जितनी अस्पष्ट बातें थीं, सब स्पष्ट कर दी गईं, यहाँ तक कि गांधीजी, पं० जवाहरलाल नेहरू तथा बड़े लाट लॉर्ड इरविन साहब के पत्र तक, जो इस संबंध में लिखे गए थे, प्रकाशित हो गए, नेताओं की जो शर्तें थीं, वे भी ज़ाहिर कर दी गईं।

संधि-संबंधी कुल बातों को पढ़ने से मालूम हो जाता है कि इसके लिये बड़े लाट साहब की तरफ़ से कोई विशेष आग्रह नहीं था, कम-से-कम ऐसा ज़ाहिर नहीं होता। यह केवल सप्रू और जयकर का दौत्य जान पड़ता है। श्रीगणेश इस तरह हुआ—देश की दशा से अत्यंत दुखी होकर, उसके उद्धार की कोशिश करते हुए, इन्होंने बड़े लाट साहब को पत्र लिखकर, यरवदा तथा नैनी-जेलों में बंद गांधीजी तथा नेहरू आदि से मिलने की आज्ञा माँगी, जिसके लिये बड़े

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लाट साहब ने उन्हें हर तरह का सुबीता कर दिया। गांधीजी से मिलकर, उनकी जो शर्तें नेहरुओं के पास ये लोग लाए, उनमें पहली ही श्रीयुत जवाहरलाल को लचर मालूम दी और उन्होंने गांधीजी को पत्र लिखते हुए लिखा—आपकी पहली शर्त मुझे पसंद नहीं आई, पिताजी को भी नहीं। पर महात्माजी ने जहाँ लिखा था कि वे किसी भी वैसी संधि में भाग लेना नहीं चाहते, जो उनके अब तक के प्रयत्न को बरबाद कर रही हो, उस अंश से जवाहरलालजी सहमत थे, और आंदोलन से उन्हें जीवन मिल रहा है, ऐसा लिखा था।

इसके बाद यरवदा में महात्मा गांधी, पं० मोतीलाल नेहरू, पं० जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती सरोजिनी नायडू, सरदार वल्लभभाई पटेल आदि नेताओं के सम्मेलन से कुछ शर्तें तैयार की गईं—

नेताओं को वह निर्णय पसंद न होगा, (१) जिसमें भारत को विलायत से अलग हो जाने का प्रस्ताव स्वीकृत न हो, (२) जिसमें भारत को प्रजातंत्र न दिया गया हो, (३) जिसमें भारत को विलायत के क़र्ज़ आदि के संबंध में निष्पेक्ष अदालत से विचार कराने का अधिकार न दिया गया हो। (गांधीजी की ११ शर्तों में पूर्ण राष्ट्रीय शासन सूचित है)

विलायती वस्तुओं तथा मादक द्रव्यों का बहिष्कार बंद न होगा, यद्यपि सत्याग्रह-आंदोलन को बंद कर देने की सलाह कांग्रेस-कमेटी को दी जायगी।

सत्याग्रह के स्थगित करने के साथ ही सरकार को सत्याग्रही क़ैदियों को छोड़ देना होगा।

ज़ब्त जायदादें वापस करनी होंगी।

ज़मानतें लौटानी होंगी।

सरकारी नौकरों के दिए हुए इस्तीफ़े, यदि वे फिर नौकरी करना चाहें तो, वापस करने होंगे।

वाइसराय के आर्डिनेंस फेर लिए जायँगे।

गोलमेज़ के लिये जाने का चुनाव इसके बाद होगा।

सरकार के पास अब भी काफ़ी शक्ति है, लिहाज़ा इतना नीचा देखना सरकार कैसे पसंद कर सकती है? देश के लोग देश की आत्मा नेताओं के साथ हैं, वे भी किस तरह इतना बढ़कर पीछे हट सकते हैं? अस्तु, बड़े लाट साहब को ये शर्तें मंज़ूर न हुईं। तब देश के दुःख से दुखी होकर सप्रू-जयकर ने मेल की जो शर्तें, इन्हीं के आधार पर, तैयार कीं, उन्हें लिखकर हम क्यों देश को दुखी करें? उन शर्तों पर सप्रू-जयकर को विश्वास है कि लाट साहब को वे मंज़ूर हो जायँगी, और इसी विश्वास के आधार पर नेता और देश के लोग उन शर्तों को मान लें। ज़रा पहली शर्त सुनिए—महात्मा गांधी गोलमेज़-सम्मेलन में यह प्रस्ताव रक्खें कि हिंदोस्तान को विलायत से अलग हो जाने का अधिकार दिया जाय। यह वही बात हुई कि आप कहें, तो हम आपका सर काट लें। अतएव आपकी राय पहले ही समझ में आ जाती है। सप्रू और जयकर महाशय की समझ में क्यों नहीं आई, यह ईश्वर जाने। पर उनकी कुछ शर्तें मेल के उपयुक्त भी हैं, जैसे ज़ब्तशुदह जिन जायदादों पर दूसरों के नाम चढ़ गए हैं, उनका वापस करना साधारण शक्ति से बाहर है। जब तक सरकार को बहुत बड़ी ग़रज़ न हो, न वह ऐसे मामलों में विशेष शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकती।

अंतिम बार महात्माजी से मिलने पर गांधीजी, श्रीमती सरोजिनी नायडू, श्रीयुत वल्लभभाई पटेल और श्रीयुत जयरामदास-दौलतराम के हस्ताक्षरों से जो पत्र इन लोगों ने लिखा है, उससे जान पड़ता है कि नेताओं और बड़े लाट साहब की राय नहीं मिलती। नेताओं ने कहा है कि शिमला-शिखर की ऊँचाई से वह जनता, जो नीचे घोर दुःखों का सामना करती है, नहीं देख पड़ती। नमक-कर को उठाकर दूसरा कर बैठाना घाव पर नमक छिड़कना है। जान पड़ता है, सरकार की लुटेरी नीति अब तक बंद नहीं हुई। अँगरेज़ों से कांग्रेस का द्वेष नहीं, पर वह पूर्ण प्रयत्न करेगी कि असहनीय ब्रिटिश आधिपत्य चला जाय। मेल न होने का कारण नेताओं ने

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बतलाया है कि स्त्रोकों और पं० मोतीलाल की जो बातचीत हुई थी, वह बड़े लाट साहब को स्वीकृत नहीं हुई ।

× × ×

२२. चित्र-परिचय

गंगा-पुस्तकमाला का पूर्णोत्सव

गत वसंत-पंचमी के दिन गंगा-पुस्तकमाला के पूर्ण होने—माला की १०८ गुरिकाओं के समान पुस्तक-माला में १०८ पुस्तक-पुष्प ग्रथित हो जाने—के उपलक्ष्य में एक उत्सव मनाया गया था । हिंदी-संसार के लिये यह एक नई बात थी । कारण, अभी तक हिंदी की केवल इसी एक माला में १०८ ग्रंथ निकले हैं। जो हो, उस दिन अपराह्न काल में प्रीति-भोज के उपरांत साहित्य-सेवियों की एक सभा हुई, जिसमें गंगा-पुस्तकमाला के स्वामी, संपादक और संचालक को उनकी इस सेवा के लिये धन्यवाद और बधाइयाँ दी गईं । सभा के सभापति सुहृद्वर पं० बदरीनाथजी भट्ट, हिंदी-अध्यापक लखनऊ-विश्वविद्यालय थे । अनेक विद्वान् साहित्य-सेवियों के व्याख्यानों, बधाइयों और कविताओं के पहले कुछ उपस्थित विशिष्ट सज्जनों का एक फ़ोटो भी लिया गया था । यह चित्र उसी की प्रतिलिपि है । चित्र में वर्णित सज्जनों के अतिरिक्त निम्न-लिखित सज्जन भी उसमें सम्मिलित थे—

बाईं ओर से खड़े हुए १ली पंक्ति—श्रीरतनलाल भार्गव, श्री० गौरीशंकरजी वैश्य, पं० विश्वनाथ वाजपेयी (मंत्री चुटकी-भंडार राष्ट्रीय पाठशाला), (बीच में बैठे हुए श्री० चंद्रिकाप्रसादजी 'जिज्ञासु'), श्री० छुंगामलजी मालवीय एम्० ए०, श्री० राजाराम सरना, लाला वसंतलाल, श्री० मुहम्मद हकीम ख़ाँ चित्रकार, श्री० पृथ्वीपालसिंहजी बी० ए०, एक सज्जन, (पीछे एक लड़का), श्री० हरनामसिंहजी नैयर, श्री० जवाहरलाल भार्गव, श्री० डॉक्टर मेहरा ।

खड़े हुए २री लाइन में—श्री० धर्मचंद्र, एक सज्जन, श्रीयुत धर्मसिंह (एजेंट), डॉक्टर दीनानाथ सेठ बी० एस्-सी०, एम्० बी० बी० एस्०, सरदार साधोसिंह, पं० दीवानचंद शर्मा कालिया, पं० ज्योतिलाल भार्गव बी० ए०, एल्-एल्० बी० ।

एक सुशिक्षित परिवार

हमें हर्ष है, डॉक्टर रामचंद्रजी की चौथी कन्या ने भी हिंदी-भूषण पास कर लिया है । इस परिवार से हिंदी-संसार को बड़ी आशाएँ हैं ।

नूरजहाँ और जहाँगीर

नूरजहाँ बचपन में मेहरुन्निसा कहलाती थी । उसका पालन-पोषण सम्राट् अकबर के महलों में हुआ था । उसने अपने अनुपम सौंदर्य और लोकोत्तर मुग्ध स्वभाव से युवराज सलीम को—जो कि आगे जाकर जहाँगीर नाम से संसार में प्रसिद्ध हुआ—अपने वश में कर लिया था । सलीम का कोई खेल मेहरुन्निसा के बिना पूरा न होता । प्रातःकाल से सायंकाल तक सलीम, छाया की तरह, मेहरुन्निसा को घेरे रहता । एक दिन सलीम अपने तीन कबूतरों को लेकर शाही बाग़ में मेहर के साथ घूम रहा था कि एकाएक एक कबूतर हाथ से छूट गया, और पास के एक पेड़ पर जा बैठा । सलीम ने शेष दोनो कबूतरों को मेहर के सुपुर्द किया, और स्वयं उस भगोड़े को पकड़ने चल दिया । लौटकर आने पर उसने देखा कि मेहर के हाथ में केवल एक ही कबूतर है । सलीम ने आश्चर्यान्वित होकर पूछा—"कबूतर कहाँ गया ?"

मेहर ने कहा—"कुलबुला रहा था, इसलिये मेरे हाथ से छूटकर उड़ गया ।"

सलीम ने कहा—"कैसे उड़ गया ?"

मेहर—"ऐसे ।"

यह कहकर उसने दूसरा कबूतर भी छोड़ दिया । उसके इस भोलेपन ने सलीम का हृदय और भी अपना लिया । उसी दृश्य को इस चित्र में चित्रित किया गया है । मुग़ल-क़लम का यह पाश्चात्य 'सेटिंग' कितना सुंदर हुआ है, पाठक स्वयं देख सकते हैं ।

नारद-मोह

श्रीतुलसीदास की रामायण में नारद-मोह की जो कथा वर्णित है, वह प्रत्येक हिंदू-मात्र को अवगत

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

LIBRARY ... ACC No. ...

है। उसी के आधार पर यह चित्र बनाया गया है। अभिमानी नारद मुनि का मोह भंग करने के लिये, उनके सुंदर रूप का वरदान माँगने पर, भगवान् विष्णु ने उन्हें वानर-रूप प्रदान किया था। उसी रूप में वह स्वयंवर में पधारे थे, जहाँ उनके इस विचित्र रूप को देखकर शिवजी के दो गणों को हँसी आ गई, उन्होंने नारदजी को उनकी दशा अवगत करा दी। क्रुद्ध नारदजी जल में अपनी प्रतिच्छाया देख रहे हैं। उक्त चित्र गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय से शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाली सचित्र तुलसी-कृत रामायण से लिया गया है। इस रामायण में १०० से ऊपर रंगीन चित्र होंगे।

श्रीमती ऊर्मिलादेवी शास्त्री

आप मेरठ-कॉलेज के संस्कृत-प्रोफ़ेसर और सुधा के अपने लेखक पं० धर्मेंद्रनाथजी शास्त्री एम्० ए०, तर्कशिरोमणि की धर्मपत्नी तथा मेरठ-सत्याग्रह-आंदोलन की प्रमुख कार्यकर्त्री हैं। हाल में ही आपको सरकार ने ६ मास के लिये कारावास में डाल दिया है।

ऊर्मिलादेवीजी, अगस्त सन् १६०६ में, श्रीनगर (काश्मीर) में, लाला चिरंजीतलालजी आर्य, प्रधान आर्य-समाज, श्रीनगर के घर पैदा हुई थीं। हिंदी-मिडिल-परीक्षा पास करने के बाद देवीजी ने स्वाध्याय से ही 'सिद्धांत-विशारदा', 'हिंदी-प्रभाकरा' आदि परीक्षाएँ पास कर लीं। तदुपरांत आप समाज-सेवा के कार्य में संलग्न हो गईं। आप बाल-विधवा थीं। पिछले साल ६ ऑक्टोबर, १६२८ को आपका विवाह, जाति-पाँति के बंधन तोड़कर, 'सिविल-मैरिज-ऐक्ट' के अनुसार, प्रोफ़ेसर धर्मेंद्रनाथजी के साथ हो गया, और वह मेरठ आ गईं। यहाँ आते ही उन्होंने अपना सुधार-कार्य प्रारंभ कर दिया। नौचंदी के मेले में पिकेटिंग का संगठन आपके ही परिश्रम का फल था। मेरठ में विदेशी कपड़े पर धरना देनेवाले महिला-दल की कैप्टेन भी आप ही थीं। मेरठ की महिलाओं को एक बार देश-प्रेम में मतवाला बना देना आपका ही कार्य था। १८ जुलाई को नौकरशाही ने आपको गिरफ़्तार कर लिया, और ६ महीने के लिये जेल भेज दिया।

कुमारी रामेश्वरीदेवी गोयल बी० ए०

कुमारीजी झाँसी की प्रमुख कांग्रेस-कार्यकर्त्री, सुकवि श्रीमती विद्यादेवीजी की पुत्री हैं। आपके पिता बा० भगवानदयालजी वैश्य जी० आई० पी० में रेलवे के पदाधिकारी हैं। कुमारीजी बड़ी विद्या-व्यसनी और भोले स्वभाव की हैं। आपने देहली के इंद्रप्रस्थ गवर्नमेंट इंटरमिजिएट कॉलेज से फ़र्स्ट डिवीज़न में एफ़्० ए० पास किया, और इसी साल प्रयाग-विश्वविद्यालय से द्वितीय श्रेणी में बी० ए० पास किया है। बी० ए० में आपने हिंदी ली थी। आप हिंदी में अच्छी कविता कर लेती हैं। 'सुधा' पर आपकी विशेष कृपा है। आप अच्छी व्याख्यानदात्री तथा संगीत-प्रिय महिला हैं। 'दिलरुबा' आप बहुत अच्छा बजाती हैं। अपने मुग्ध स्वभाव, उत्तम गुणों तथा मनोमोहक व्यवहार से आप जिससे मिलती हैं, उस पर अपना एकाधिपत्य जमा लेती हैं।

श्रीयुत जंगबहादुरसिंह बी० ए० और श्रीमती ज्ञानदेवीजी स्नातिका, विशारदा

हाल ही में जाति-पाँति तथा प्रांतीयता के बंधनों को तोड़कर 'सिंहजी' और श्रीज्ञानदेवीजी का शुभ विवाह हुआ है। श्रीमती ज्ञानदेवीजी जालंधर-निवासी लाला दीवानचंदजी की सुपुत्री हैं। आपका जन्म उस जाति में हुआ है, जिसकी गोद में भारत के गौरव श्रीबाबू पुरुषोत्तमदास टंडन प्रभृति लाल खेल रहे हैं। देवीजी जालंधर-कन्या-महाविद्यालय की स्नातिका हैं, विशारदा भी हैं तथा हाल ही में आपने पंजाब-विश्वविद्यालय से एफ़्० ए० की परीक्षा पास की है। आपको चित्रकारी में कमाल हासिल है। संगीत-कला से बड़ा प्रेम है। आपने धर्म और समाज-सेवा द्वारा सिंध और पंजाब-प्रांत में ख़ासी प्रसिद्धि प्राप्त कर ली है। आप हिंदी की एक अच्छी लेखिका भी हो सकती हैं, किंतु उधर आपका ध्यान कम है।

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
LIBRARY Jangamwadi Math, Varanasi ACC No. 8379

हमारे मित्र सिंहजी आज़मगढ़-निवासी वयोवृद्ध श्री० श्यामसिंहजी के सुपुत्र हैं। सिंहजी भी उसी जाति के एक रत्न हैं, जिसने श्रद्धेय प्रेसीडेंट पटेल और सरदार वल्लभभाई-सरीखे बहुमूल्य हीरे पैदा किए हैं। 'सिंहजी' से तो हिंदी-संसार ख़ूब ही परिचित होगा। आप हिंदी और अँगरेज़ी के बड़े ओजस्वी लेखक हैं। आज से कई वर्ष पहले आपके लेख 'माधुरी', 'प्रभा', 'शारदा', 'हिंदीगल्पमाला', 'प्रताप' आदि में बड़ी धूम से निकला करते थे। 'पतितोद्धार' के अतिरिक्त हाल ही में आपकी 'बारडोली-विजय'-नामक पुस्तक प्रताप-कार्यालय, कानपुर से प्रकाशित हुई है। सिंहजी का 'धिक् धर्म' धिक् भगवान्'-शीर्षक लेख 'सुधा' की आगामी संख्या में प्रकाशित हो रहा है। पाठक पढ़ेंगे, और उनके क्रांतिकारी भावों और ज़ोरदार शैली से स्वयं ही परिचित हो जायँगे। सिंहजी आजकल अँगरेज़ी सरस्वती के पुजारी हैं। संतोष की बात है, आपने हिंदी को बिल्कुल ही भुला नहीं दिया। आपको बचपन ही से साहित्य और समाज-सेवा की लगन रही है। तेईस वर्ष की आयु में ही लाहौर से प्रकाशित होनेवाले सुप्रसिद्ध स्वराजिस्ट अँगरेज़ी दैनिक 'दि नेशन' का संपादन-भार आपने अपने कंधों पर ले लिया। दो वर्ष तक सिंहजी ने इस कमाल के साथ इस दैनिक का संपादन किया कि देखनेवालों ने दाँतों-तले उँगली दबाई! आजकल आप पंजाब के प्रमुख अँगरेज़ी दैनिक 'दि ट्रिब्यून' के उप-संपादक हैं।

क्रांति के उपासक मित्रवर सिंहजी तथा श्रीमती ज्ञानदेवीजी ने हिंदू-समाज के मुख की कालिमा इस जाति-पाँति की लचढ़ प्रथा को तोड़कर हिंदू-समाज के सामने एक आदर्श उपस्थित कर दिया है। वे हमारी बधाई के पात्र हैं। हमारी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि यह युगल जोड़ी चिरजीवी हो, और इसी प्रकार निरंतर साहित्य और समाज की सेवा करती रहे।

क्यों ज़िंदगी बरबाद कर रहे हो?

विद्यार्थियों का सच्चा मित्र

की एक प्रति मँगाकर अपने जीवन को आदर्श और सुखमय बना लो। स्कूल, कॉलेज, पाठशाला तथा विद्यालय के प्रत्येक विद्यार्थी के पास यह पुस्तक अवश्य होनी चाहिए। मूल्य केवल ।।।=)

रमा-सुलभ-कार्यालय, महेंद्रू, पटना

सफ़ेद बाल १५ दिन में जड़ से काला

दाम बड़ा बक्स ६), छोटा ४), नमूना २)

यह ख़िज़ाब नहीं तेल है, जिसकी मालिश से जो बाल पकने लगा है, वह यदि काला न हो जाय, तो दाम वापस देंगे। विश्वास न हो, तो शर्त लिखा लें। यदि बाल अधिक पका है, तो खाने की दवा मँगावें। दवा १०) रु०।

पता—वीर विरता स्टोर्स, पोस्ट कनसी सिमरी, दरभंगा

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वागत

(मौलाना शौकतअली का, लखनऊ में)

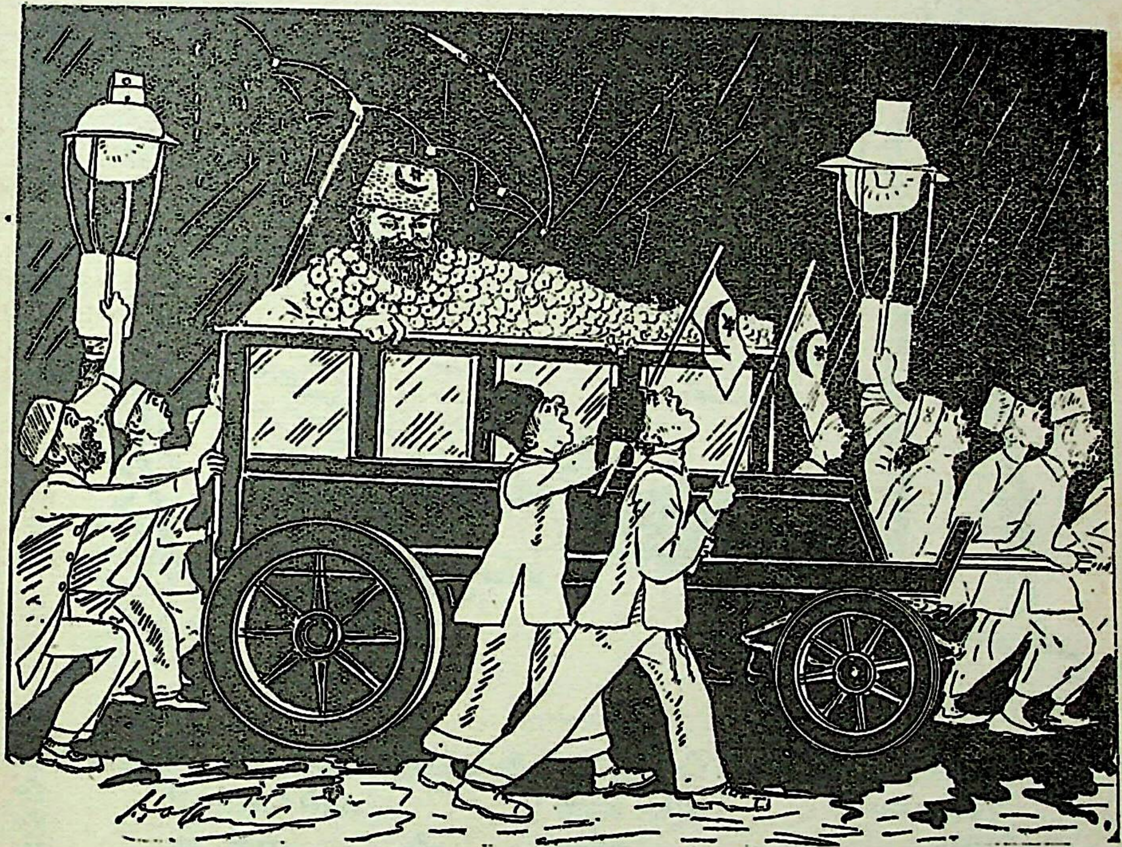

वर्षा से भीग रही, अँधेरी रात में यह जुलूस निकल रहा है या जनाज़ा ?

बूढ़े से जवान बनो

यदि आप ५ मिनट में सफ़ेद बाल काले मुलायम व चमकीले किया चाहें, तो मिर्ज़ापुरी ख़िज़ाब लगाइए। क़ीमत फ़ी बक्स १), छोटा ॥), डा० ख़र्च ।–), एजेंट चाहिए।

दाद की अमीरी दवा।

न लगे, न बदबू दे, न कपड़े पर दाग़ पड़े। पुराने-से-पुराना दाद क्यों न हो, एक ही बार के लगाने से लाभ होगा। क़ी० ।=), ख़र्च डाक १ से ४ तक ।=)

पता—वैद्य सूरजप्रसाद
ऊमर वैश्य-औषधालय, मिर्ज़ापुर सिटी

अगर अपना रुपया बरबाद न करना चाहो, तो

हमारे कारख़ाने का मशहूर पापुलर हारमोनियम ख़रीदो। स्वर मधुर और बुलंद। सिंगल रीड ३ सप्तक २०), २२), २५); डबल रीड ३०), ३५), ४०) सूट केस या बेग-हारमोनियम दाम ४०), ४५); पेशगी ५)-सहित ऑर्डर दीजिए।

पापुलर हारमोनियम को
पोस्ट-बक्स नं० १२ (सु) कलकत्ता

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वराज्य की मिठाई

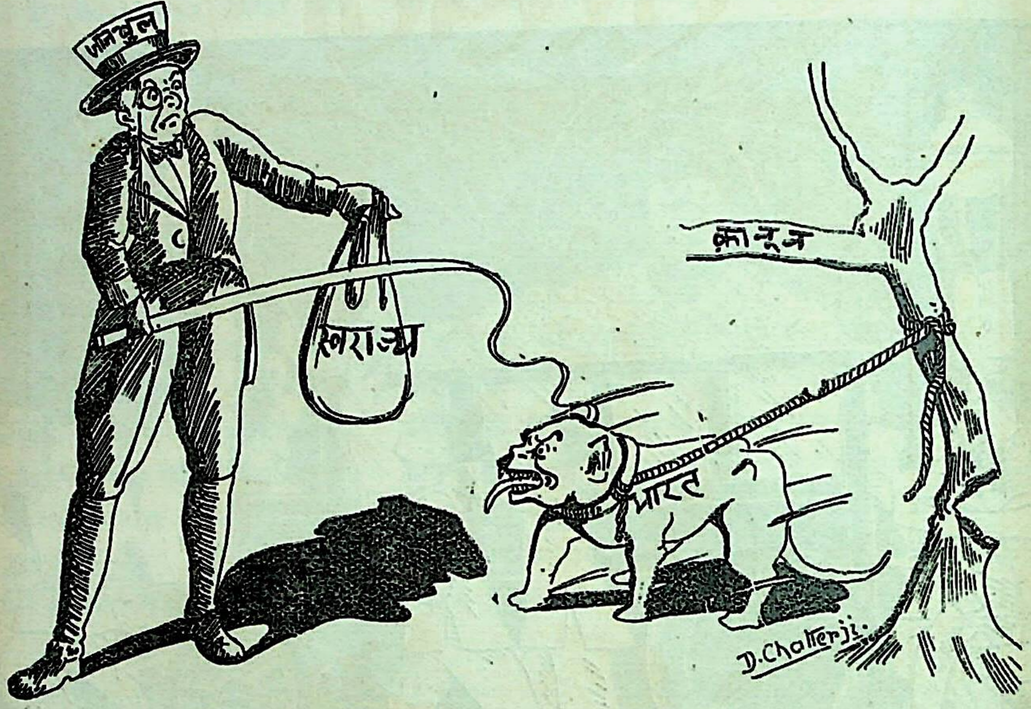

सबसे सस्ता ! सबसे अच्छा !! सबसे निराला !!!

जीवन, जागृति, बलिदान और क्रांति का
पुजारी

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक पत्र

लोकमान्य

प्रति सोमवार को जानदार राष्ट्रीय कविताओं, मनोहर कहानियों, उच्च कोटि के राजनीतिक, सामाजिक और व्यापारिक लेखों तथा एसोसिएटेड-प्रेस और फ़्री-प्रेस के ताज़े समाचारों तथा चित्रों से अलंकृत होकर बड़े-बड़े १२ पृष्ठों में, बड़ी सजधज से, प्रकाशित होता है। वार्षिक मूल्य २॥), प्रति अंक का सिर्फ़ दो पैसा। नमूना मँगाइए और ग्राहक बनिए।

दीनदयाल, प्रधान व्यवस्थापक लोकमान्य
१६०, हरिसन रोड, कलकत्ता

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi